

॥ श्री शांतिनाथायनमः ॥

श्री स्वामीजी श्री ऋखराजजी ॥

॥ महाराज कृत ॥

श्री सत्यार्थ सागर नवीन ग्रंथ

श्रीचरण, प्रश्नोत्तर, धर्मसार, सम्यक्त स्थिर करण

ए चारो भाग सुधर्म उपदेशके लिये अनेक

शास्त्रानुं सारेण संग्रह किया

इह ग्रंथ

साधु, साध्वी, श्रावक, श्राविका तथा सम्यक्ति

साधर्मी भाईयां वास्ते ज्ञान वृध्यर्थ रारल

भाषामे किया सो

नाना दादाजी गुंड इएने

पुनामे आपका "व्यापारी" छापेखानेमे छपायाहै

सवत १९९२ अने सन १८९९

ओ पुस्तक पुना पेट नानाकी आठे

भाई भगवानदासजी लालचदजी नाहारकी

दुकान उपर मिलशी

किंमत २ रुपया.

प्रस्तावना

समस्त चतुरविधि संघको विदित होके इस पाचमे आरेमे शुद्ध सम्यक्त ब्रतादि धर्म आराध्यासे इस लोक और परलोकमे तेह जीव सुखी होय सिद्ध स्थानक प्राप्त होय ऐसा श्री जैन धर्म अनादी श्री बीतराग उपदेश दयामय धर्म नव्य जीवोंको आनंद करता है जिसते अंतस्करण शुद्ध होता है इस ग्रंथ सत्यार्थ सागर नाम का प्रथम भाग नाम धर्माचरण रक्खा है जो इसको शीखणे वा वाचनेका उद्यम करेगा शुद्ध श्रावक धर्म वा साधु धर्म मारगकी पहचान होगी और विना शास्त्रके पढे इस जीवकी कुमति दूर नही होती और शास्त्रके पढने वालो को ज्ञान दर्शन चारित्र तपका जाणपना शुद्ध होता है सो इस वास्ते इस पुस्तकमे धर्म मारग प्रधान लक्षण सम्यक दृष्टी जीवोंके योग्य दरसाया है और एह पुस्तक नव्य जीवोंके उपगारार्थ श्री स्वामी ऋखराजजीने सत्यार्थ सागर का धर्माचरण नाम प्रथम भाग प्रसिद्ध किया

समस्त चतुर विधि संघसे ग्रंथ करता पूर्वक यह प्रार्थना करता है कि शीघ्रता लिखनेमे वा तुव बुद्धिके प्रभावसे कोई लिपी दोष जरूर रह्या होगा यह निश्चै नियम है और इस ग्रंथमे जो कोई सूत्र पाठो वा अर्थमे मेरी अज्ञान बुद्धीके दोषकर जो अर्थ

वा पाठ अशुद्ध लिखे होय तो सज्जन पुरुषोंसे भेरी
 प्रार्थना है कि कृपा नजरसे शुद्ध कर वाचना उचित
 है और जो इस ग्रंथमे सूत्र पाठ लिखे है सो सूत्रों
 से मिलते हुए है जो कही अक्षर मात्रा का फरक हो
 तो शुद्ध कर लेना और धर्म श्री जीव दया जिना
 ज्ञा परिमाण जहां होय वोही धर्म प्रधान है ग्रंथ
 की जो रचना बुद्धिमान जन करते है सो दूष्ट जनो
 के वास्ते नहीं करते परंत तत्वार्थि वा सम्यक्ती जी
 वोके लिये तथा गुण ग्राहिक मनुष्योंके लिये जो जि
 नेश्वर देव धर्मके रागी पुरुष है उनको सनातन धर्म
 मे लानेके वास्ते ग्रंथ करता उद्यम ग्रंथ रचनेका
 करते है और इस ग्रंथमे किसीका नान से निंदा
 रूप कथन नहीं लिखा फकत् प्रश्नोका ज्ञावार्थ सि
 द्ध किया है और ग्रंथ संग्रह करताने अपनी बडाई
 करानेका आशय नहीं रक्खा सिर्फ विवेकी जन
 जो जलसे नकलके जैन मतको यथार्थ समझते है सो
 तिनोके उद्धारके लिये सत्य धर्म असली तप संज
 मादि मार्ग दरसानेके लिये इस सत्यार्थ सागर के
 द्वार जाग अनेक सूत्र वा ग्रंथोके परिमाणसे संग्र
 ह करने का परिश्रम करा है जो कोई ग्रंथको समझ
 कर वाचकर देखेंगेतो सुध देव सुधगुर सुध धर्म
 सुध शास्त्रको परख लेंगे.

साधु श्रावको को चाहिये कि एकांत वादी नहो

य क्यों कि श्री. वीतरागदेवका उपदेश, अनेकांत नय
 मत करिकेहै, एकेक बात पहिले जिस अपेक्षासे नि
 पेथ करी है, फिर वोही बात दुसरी अपेक्षासे लीन
 करीहै और जगवती सूत्रमेजी साधुबंधा मोहनी क
 र्म बांधता कहा सोई ऐसी अपेक्षा अर्थात् (री
 ती) जाननेसे साधु कंधा मोहनी कर्म बांधे तो अब चा
 हिये कि शुद्ध धर्म पहिचानकर समकित निर्मल
 करे और इस सत्यार्थ सागर के तीसरे जागमे सूत्र
 पाठ वहोत लिखेहै वो समजने बांचने योग्यहै परंत राग
 द्वेष बडाना योग्य नहींहै फकत तत्व बातको समज तथा
 सरध कर अंगीकार करलेनी योग्यहै और यथा शक्ति
 साधु तथा श्रावक धर्म पालना युक्तहै और पराई निंदा
 वा ईर्ष्या करणी युक्त नहीं दस पूर्वधारी तथा १४ पूर्व
 धारीयोके प्रश्नोके उत्तर यथार्थ केवली महाराजने
 दीये है तथा आहारीक लब्धधारी मुनीओने लव
 धि से प्रश्न पूछे है जब उनके संदेह दुर हुये अवपूर्ण शु
 द्ध शब्द शास्त्रार्थ तो समजने आताही नहीं बुद्धी तुच्छ
 प्रश्न समुद्र सरीखे गंजार बुद्धी बिना कैसे समजे जाय
 इस वास्ते साधु श्रावको को विद्या वा शास्त्रार्थ का
 जाणपणा चाहोतो व्याकरण तथा संस्कृत ग्रंथादि
 पढकर अनेक अपेक्षासे गुरु महाराजके उपदेश से दे
 खो तब न्यायवंत होकर शुद्ध मारग मुक्तिका समजो
 और प्रश्न व्याकरण सूत्र वा अनुयोग द्वार सूत्रमे व्या

कर्णशास्त्र पढनेकी आज्ञा है और जो नही इतना बोध होय तो दया सहित देस वृत्ती तथा सर्व वृत्ती धर्म वा शुद्ध जावसे दान देणा दया पालणी पंच इंद्रि दमन अर्थात् बस्य करणी इत्यादि ऐसे श्रद्धावान गुरुकी सम्यक्त सहित आज्ञा आराधन करो ज्युं मनुष्य जनम सुफल होय ॥ तथास्तु ॥

इस सत्यार्थ सागर ग्रंथमे जैन मतके अनेक मत जो हो रहे है तिनके प्रश्न उत्तर लिखे है प्रथम तो जैन धर्म निश्चयमे एक धर्म है परंतु इस समेके प्रचा वसे जैन धर्म वृद्धमेसे कितनी साखा प्रतिसाखा हो रही है अपनी अपनी ग्रहण करी साखा वा प्रति साखा पर खैचतान कर रहे है सो तत्त्वार्थी पुरुषो को चाहिये कि जिन धर्ममे ईर्ष्या जाव न करे और यथार्थ बातको समजे कोई सा जैन शास्त्र हो तिरुका जावार्थ वा हेय ज्ञेय उपादेय इनको जाणकर गुण ग्राहिक होवे अवगुण ग्राहिक होनेसे अनेक दोषोमे सामिल होना पडता है और इस समेकी मूजिव श्री जिन धर्ममे बहोत साध साधवी श्रावक श्राविका धर्ममे स्थिर हो रहे है और कोई चतुर्थ कालकी वृत्ती ऊपर ख्याल करे तो इसकालमे बड़ उतनी वृत्ती नही क्यों कि सरीरके शक्ति प्रमाण मे वृत्ती साधु वो साधवी श्रावक वा श्राविकाओंकी है कि जैसे पाहिले वक्तो के संघेण संठाण आयु सरीरकी उचाई वैसी नही

हैं तैसेही उतनी बृत्ती नहीं है परंतु जगवांन श्री महावीर के वचन हैं कि मेरा धर्म २१ हजार वर्ष तक साध साधवी श्रावक श्राविका इन चारों तीर्थोंसे रहेगा पाचमे आरे के उतरते समे ताई इस वास्ते चाहिये कि जो समाकित सहित महाव्रतादि तथा देस व्रतादि धर्म पालते हैं ते येही च्यार तीर्थ प्रधान हैं, शुद्ध जावाश्री जिन धर्मको पालनेसे स्वर्गापवर्ग के धारक होते हैं.

चूक दुरुस्ती

इस ग्रंथके पहिले भागके पृष्ठ २९ केमे आठमा बडा व्रतके आगे नवमा बडा व्रत ठापना चूलसे रह गया है सो नवमा बडा व्रत इसतरे है सो लिख्यते

॥ नवमा सामायिक व्रत सावज्जं जोगं पचखामि जाव नेम पज्जवासामी दुविहं तिविहेणं नकरेमि न कारवोमि मनसा वयसा कायसा एहवी सदहणा परू पणा फरसना करुं तिवारे सुद्ध यहवा नवमा सामायिक विरतना पंच अइयारा पियाला जाणीयवा नस मारियवा तंजहा ते आलोकं मण दूप्पडीहाणे वय दूप्पडीहाणे काय दूप्पडी हाणे सामायियस्स अके रणियाए सामायियस्स अणवठियस्स करणियाए जो मे देवसी अइयारको तस्सं मिच्चामि दुक्कं ॥ ९ ॥

॥ अथ सत्यार्थ सागर ग्रंथकी अनुक्रमणिका ॥	
विषयांक ॥ प्रथम जागस्य अनुक्रमणिका ॥ पृष्ठांक	
१ श्री पंचपरमेष्ठी स्तुति ॥ मंगलाचरण ॥	१
२ वीस वेहरमान स्तवन	१
३ उपदेशी लावणी	३
४ उपदेश लावणी	४
५ उपदेश लावणी	५
६ चौवीसी स्तवन	६
७ दस लक्षण मुनि धर्मके जुलणे दोहा	७
८ श्री नवकार मंत्र	१४
९ सामायिक विधि श्रावकाकी	१४
१० श्रावक पंडिकमणा	१७
११ निणयानव अतिचारकापाठ	१८
१२ पांचपदोकु वंदणा	३३
१३ चौवीसी	३८
१४ महावीर जिनस्तवन	३९
१५ दिगंबर मतकी उत्पत्ति स्थेवर कल्पी साधुसेहै	३९
१६ सम्यक्त परिह्वाकी वचनका	४५
१७ नवतत्वके नाम	७६
१८ पंचमहा विदेहमे २० जगवान जैवंता विचरेवे तेना नाम	७६
१९ परदेसिराय गुण स्तवन	७६
२० प्रथम जाग समाप्ती	७९

वेपथीक द्वितीय जागस्थ अनुक्रमणिका पृष्ठांक

१ मंगलाचरणम् श्लोक ३	८०
२ ग्रथकी जमावट दोहे ५४ नवसे असी वसें पुस्तकादि लिखनेके विषय वर्णनसे	८०
३ पद्माधर्ती सुधर्मा स्वामिसे	८४
४ ग्रंथकी महिमा	९४
५ सूत्रोके ७२ नाम तथा ८१	९६
६ पूर्व पश्चात् सूत्र कथन	९८
७ महानसीथ अंग सूत्रोंसे पीठिकाकह्या	९८
८ टीकावनाने वालोके नाम	९९
९ श्रावण श्राविका सूत्रप्रमाणसे	१०३
१० सुबुद्धि दिवानका प्रश्नउत्तर	१०६
११ स्वइंजाकार्य तथामिश्र कर्तव्यादिक	१०७
१२ कालिमोरीका प्रश्नउत्तर	१०९
१३ साठ नाम दयाकेसे पूयाशब्दका अर्थ	१११
१४ नदी उतरनेके प्रश्न उत्तर	११२
१५ जिन बिंबकी असातना नही करे	११४
१६ सिद्धायतनका अर्थ	११६
१७ प्रतिमाके सर्णोका अर्थ	११७
१८ असंख्याते कालकी वस्तुका उत्तर	११९
१९ मुहपतीमे डोरामहानसीथसे	१२०
२० मुहपतीसे सूक्ष्मजीवरक्षा	१२१
२१ सैत्रंजादी जात्रामे धर्म प्रश्न उत्तर	१२१

२२	सेत्रंजाशास्वताकिम	१२२
२३	कयवलिकमा शदका प्रश्नउत्तर	१२५
२४	देहरेको सिद्धायतन नाम अर्थ	१२८
२५	अष्टापदपै गोत्मजीका प्रश्नउत्तर	१३०
२६	सूर्यकिर्ण पडनेकी कोणसीलाविधतेविषे	१३२
२७	१५०० के केवली परंत सूत्रमे ७००	१३२
२८	नमोथुणंका अधिक किसतर	१३३
२९	४ निखेपा वर्णन	१३९
३०	नमुंनाके विषे प्रश्नउत्तर	१४७
३१	नमोवंजीए लिवएका शद अर्थ	१४८
३२	जंघाचारण विद्याचारणके विषे	१५२
३३	आणंद श्रावण प्रतिमा नही वांढीते विषे	१५५
३४	अंबड प्रतिमा न वांढी	१५६
३५	७ क्षेत्रको प्रमाण चोथे आरेमे नही	१५७
३६	द्रोपदीका प्रश्न प्रतिमा पूजा ते ससारमे मोक्ष वास्ते नही	१६८
३७	सूर्यानादिक देव पूजा जीतव्यवहारमे	१८९
३८	साध साधवीके लावणे पहोचावणे विषे	१९२
३९	चित्रचित्रके विषे	१९४
४०	मदिरसे देव लोक कहने वालोको उत्तर	१९४
४१	प्रतिमाकी साधु वेयावच्च न करे ते विषे	१९५
४२	हिंस्र्यामे धर्मथापे तेकुगुरु कहे नद्रवाहुजिने	१९७
४३	४ कालमे मंदिर बहोत कहने वा लोकोउत्र	१९९

- ४४ महानसीथमे प्रतिमादि द्रव्य पूजा करावै ते
संजमसे भ्रष्ट २०१
- ४५ स्याद्वादवाणीका निर्णय २०८
- ४६ दया और हिंस्याके जेद २०८
- ४७ उत्सर्गापवाद निर्णय २१०
- ४८ कल्पसूत्रमे प्रतिभा नही पूजा २१०
- ४९ शिक्षा प्रश्न २११
- ५० ११ अंगचतुथे आरेके नही तिनकी
अनुसारे कथनहै २१३
- ५१ किन्तीये वंदिये महिआकाशद्वार्थ २१३
- ५२ बाहिरदिसाजाना रात्रिके समेते विषे २१४
- ५३ कालिक उत्कालिक सूत्राके विषे २१४
- ५४ चार प्रमाणके विषे और संग्रह कर्ताके विषे २२०
- तेरेपंथीयोके प्रश्नोत्तर अनुक्रमणिका
- ५५ सम्यक्त विना निरवद्य क्रियामे धर्म कहै
तेहने उत्तर २२०
- ५६ जिन आज्ञा बाहिर करणी पुन्यरूपहै पाप
तेविषे २२३
- ५७ अनमती पुन्यफल पामे ते करणी आज्ञामे
कहैते उत्र १५४
- ५८ मिथ्याती समकितमे आवे परंत तप संजम ते
हिज ते उत्र २२६
- ५९ तालावदृष्टात करणीपै कहै तिसका उत्तर २२५

- ६० मिथ्यातीने २ निर्जरा कहे ते विषे उत्र २२७
- ६१ मिथ्यातीने सुवृत्तकरणी कहे ते विषे २२८
- ६२ साध श्रावण २ मालारतनाकी बडी गोटी
कहे तेविषे २२९
- ६३ पुन्य पाप दोनो बुरा कहे ते विषे उत्तर २३५
- ६४ शुजा शुज कर्मनो उत्तर २३५
- ६५ सम्यक्त मोहनी मिथ्यात मिश्र ३ इनके विषे २३५
- ६६ गोशाला वचाया पाप लाग्याकहे ते उत्र २३६
- ६७ जगवानने २ साधु किम न वचाये कहे ते २३७
- ६८ मिथ्याती जीव बुडावता पाप कहे ते उत्र २४०
- ६९ सीतल लेस्याना पुद्गल जगवानने लिये
ते आज्ञा विना कहे ते उत्तर २४०
- ७० सीत उष्ण पुद्गल एकठा होनेमे हिंस्या
कहे ते उत्तर २४१
- ७१ गोत्मजी आणंद घरमे चूल्या तिम
जगवंतने कहे ते उत्तर २४२
- ७२ गोशाला जीव वचाया अशुज योग
कहे ते उत्तर २४२
- ७३ जगवंत गोशालाजीने वचाया दूजाने
उपदेश क्यो नदे ते विषे २४२
- ७४ महावीर स्वामीने लब्धनो प्रायचित्त
कहे ते उत्तर २४४
- ७५ गोशाला वचाया तो २ साधु वाल्या ते

- क्या गुण कहे ते उत्तर २४४
- ७६ गोशाला जीव वचायानो प्रायञ्चित
कहे ते उत्र २४६
- ७७ बदमस्त जिनमे कपाय कुसील नियंठा
व. ६ लेस्या कहे ते उत्र २४६
- ७८ गोशालाने न वचावतातो १ अठेरे
घटतो कहे ते उत्र २४८
- ७९ साधसाधवीनो संज्ञोग एकठे तिणसे
नदीमेसे कोठे ते विषे २४९
- ८० एक दोसमे साधुको असाधु सरदहे
कहे ते उत्र २५३
- ८१ त्रस जीवने बांधता खोलता प्रायञ्चित २५४
- ८२ जिणरक्कीयाने रैणा देवकी अनुकंपाकरी २५७
- ८३ चूलणी पिया माताने वचाई तेहनो उत्र २५७
- ८४ अर्णक श्रावक जिनधर्म न ढोडया ते विषे २५९
- ८५ नमी राजाने अनूकंपा नगर लोकांकी नकरी २६०
- ८६ अज्ञानी कहे साधूने इम न कहणो
जीवाने मतिमारे ते उत्र २६३
- ८७ समुद्र पालीने चोर किमन बुडाया कहैते उत्र २६३
- ८८ नेमनाथने जलती द्वारका किम न
वचाई ते उत्र २६४
- ८९ चेडा कौणकरी लडाई नगवंत किमन
वरजी कहे ते उत्र २६६

- ९० श्रेणक अमारि ढंढोरा वजवाया ते राज
नीति कहे ते उत्र २६७
- ९१ श्रेणक राजा सिवाय ओर राजाओने
अमार ढंढोरा न करा २६८
- ९२ श्रेणककाई महोत्तव वास्ते अमारि ढंढोरा
कराया ते उत्र २७०
- ९३ श्रावकने जीव वचावा कहा कह्या ते उत्र २७१
- ९४ परदेशीना गुण वास्ते कह्या जीव वचावा
वास्ते नहीं कहे २७३
- ९५ जीवाने स्या गुण गुण परदेसीन कहे ते उत्र २७३
- ९६ ए पाठ पाचो संरवद्वारमे २७३
- ९७ रस्तेसे जीवको धूपसे बाहमे करे नहीं ते
कहे तेहने उत्तर २७५
- ९८ ठाणा उठाणा करतां दोष होय कहे ते उत्र २७६
- ९९ असंजतीकी वियावच ते विषे २७७
- १०० उणजीवके काममे वियावचकहे ते उत्र २७७
- १०१ आणंद पासे गौत्म आये धर्म लाज वास्ते
जीव उठावे नहीं २७८
- १०२ श्रावक गिरे तो तुम उठावो क्यों
नहीं कहे ते उत्र २८०
- १०३ आज्ञा उपदेशमे निर्णय मध्ये प्रश्न ६५ २८६
- १०४ अग्नी लगावे ते घणो पाप वरेज तो थोडा
पुण्यनेहा कहे ते उत्र २८८

- १०५ दूसरेका पाप टलावामे क्या गुण
कहे ते उत्तर २८८
- १०६ असंजमी गोमावनेके प्रश्न उत्तर २८९
- १०७ नारकी देव किसने गोडावे ते उत्र २९१
- १०८ आहारादिक देखे जीव वचावो किम
नही कहे ते उत्र २९१
- १०९ सिंहादि जीव हणवामे धर्म नही ते विपे २९२
- ११० दो बेस्यांकां दृष्टांत प्रश्न उत्तर २९३
- १११ माधु ९ जोगे हणे हणावे हणताने जला
जाणे नही ते विपे २९५
- ११२ भारता जीव वचावे तीजे करणमे
दिरया कहे ते उत्र २९७
- ११३ आपर्जाव नहणे दूसरेके जगमे किम
पडे कहे ते उत्र २९९
- ११४ जीव वचायां धर्म तो जगे २ पूजो किम
नही कहे ते उत्र २९९
- ११५ श्रावण पोसेमे जगे २ पूजे किम
नही कहे तेहने उत्र २९९
- ११६ साधु उपदेश देवे निर्जरा हेन
जीवां वास्ते कहे ते उत्र ३००
- ११७ पाप कर्म न बांधे पिण जीव रिद्धा उपदेश
कहां कहे ते विपे ३०१
- ११८ स्वजावे जीव मरे ते पुण्य न पाप ते विपे ३०२

- ११९ दो बेटा दृष्टांत कहे तेहनो उत्तर ३०३
- १२० आप आपणा कर्म जोगवे साधु किण २
ने ढोडावे ते विषे ३०३
- १२१ नेमनाथ पशु ढोडाये ते विषे ३०६
- १२२ मेघ कुमार हाथीके जव विषे १ मुसेकी
दया ते विषे ३०८
- १२३ अनुकंपा पराई करवी ते विषे ३०८
- १२४ जिनजी कहता देवासे मन्नादिकोसे
जीव बचावो ते विषे ३०९
- १२५ नावडीयाने साधु पाणी आवता बतावे
क्यों नही ते विषे ३११
- १२६ साधु जीवणो बांढे नही ते विषे ३१३
- १२७ साधु जीतवनी आसा नही ते विषे ११३
- १२८ साधु पारको जीतव बांढे ते विषे ३१४
- १२९ साधु साधवी का संजोग एक ते जीवानो
उपाय ते उत्र ३१५
- १३० साधुकी अनुकंपा ग्रहस्त करे ते विषे ३१६
- १३१ ध्यानमे अतरायके विषे उत्र ३१८
- १३२ साधुने पाणी माहिसे काढे ते विषे ३२०
- १३३ हिंस्र्या न करे ते विषे ३२१
- १३४ अविरती जीवने ढोडावे ते विषे ३२२
- १३५ दाम देई ढोडावे जीवतो धर्म ते विषे ३२४
- १३६ अनुकंपा दानोमे सर्वजगे पुण्यहै ते विषे ३२९

१३७ मिथ्याती दानसे नंदन मणीघार	
मिंडक हुयो	३२९
१३८ आणंदने नेम असंजती दानका	
कीया ते विषे	३३१
१३९ निखु अन तीर्थी वा स्वतीर्थीमे ते विषे	३३१
१४० १५ मे कर्मादान के विषे उत्तर	३३४
१४१ परदेसीकी दान शाला अविरतमे ते विषे	३३५
१४२ साधु साधवी वास्ते किमाड उघाडा	
कहै ते उत्र	३३६
१४३ साधु विन ओरपुण्य किहांते उत्र	३३८
१४४ पाच वादीकी चर्चा विषे प्रश्न उत्र	३३९
१४५ ३६३ मत निर्णय ते विषे	३४३
१४६ चेईय शब्दके अर्थ ते विषे	३४६
१४७ दोहे पद्यावली ग्रंथ करताके नाम की	३४७
१४८ गाथा सजाय	३४८
विषयाक तृतीय जागरुय अनुक्रमणिका	पृष्ठाक
१ श्री सम्यक्तनो अधिकार	३५१
२ हिंस्राना परूपक अनार्य वचनना बोलन	
हार कहा	३५२
३ जे आसवा ते परिसवा तेहनो अर्थ	३५३
४ दयामे मोक्ष पुंडरीक अध्ययन मध्ये	३५४
५ हिंस्रों तथा दयापरूप्याना फल	३५६
६ नदीना प्रत्युत्तर	३५७

७	द्रुपदीना प्रत्युत्तर	३६८
८	पंच महावृतादि घणा बोलना फल कथा	३६६
९	लवण समुद्रने अधिकारे अरिहंता दिना प्रजाव	३७१
१०	सूर्याग्नि देवताना प्रत्युत्तर	३७२
११	जंघा चारण विद्या चारणना उत्तर	३७४
१२	चमरेंद्रनो प्रत्युत्तर	३७५
१३	अंबड श्रावगनो प्रत्युत्तर	३७६
१४	आणंद श्रावकनो प्रत्युत्तर	३७६
१५	चेईअठे निज्जारठे नो उत्तर	३७७
१६	प्रतिमा अधर्म द्वारमा कही मंद बुद्धी ना उत्तर	३७८
१७	दयामे धर्म कह्यो आज्ञा दयामे कही	३८२
१८	चउबिहे सञ्जेनाम सञ्जे ठवणा सञ्जे नो उत्तर	३८३
१९	स्थापना अवस्यकनो उत्तर	३८४
२०	न्हाया घोडा हाथी लेय गथा नो उत्तर	३८५
२१	मंदीश्वरनो उत्तर	३८५
२२	प्रतिमानी अवस्था तथा गुण वंदनीक	३८७
२३	प्रतिमा रत्नादि वस्तुओंमे केहनी करावी	३८७
२४	प्रतिमानी ८४ आसातना किहां कहीवे	२८७
२५	प्रतिमानी प्रतिष्ठी कोण करे	३८७
२६	दिगंबर कहे प्रतिमा न कीजे	३८७
२७	तीर्थकर मोक्ष पहोता अणसण की	

धा ते आकार	३८७
३८ प्रतिमा त्रणकाल माहि किहे काले पूजा	३८७
३९ प्रतिमा पुजता केहा फूल चढे	३८८
३० प्रतिमा २४ मांहीं केही मूल नायक कीजे	३८८
३१ तीर्थकरनो सरीर ऊंचो प्रतिमा ऊची केवनी कीजे	३८८
३२ प्रतिमा प्रतिष्ठी अण प्रतिष्ठीनो स्युं विशेष	३८८
३३ प्रतिमा आगे जो वस्तु चढावीये तेहने स्युं कीजे	३८८
३४ अठोत्तरी सनाननो पूढवो	३८९
३५ तीर्थना अधिकार	३८९
३६ ठवण चारीनो पूढवो	३८९
३७ सेत्रुंजानो पूढवो	३९०
३८ सेत्रुंजाना उत्तर	३९०
३९ सणतकुमार नव सिद्धी हियकामए	३९०
४० नावना २५ उपरांति वृति मध्ये अधिकी	३९१
४१ श्रावकने परिग्रह परिमाण मांहीं फेर	३९२
४२ तुगीया नगरीना श्रावक	३९३
४३ श्रावकना मनोरथ	३९४
४४ सेआयवलेणायवले श्री आचारांगेध्ययन	३९५
४५ श्री साधुनो उपदेस	३९५

४६	दया ऊपर श्री सूर्यगडांगनी गाथा	३९८
४७	आरंभपरिग्रह पांडूआजाणे तो धर्मलड्डे	३९९
४८	स्याता अस्याता बंदनी	४००
४९	जीवजोगी पिण अजीव जोगी नही	४०१
५०	केवलीनी चापा निरवद्य	४०१
५१	तीर्थयात्रा आलंबन	४०२
५२	फूलना जीव	४०२
५३	सूचिना उत्तर सूचिधर्मना उत्तर	४०३
५४	यक्षना देहरा घणाळे	४०७
५५	वृत्ति चूर्णिना अधिकार	४०८
५६	जीव दयाई करी मोक्ष	४०८
५७	तीर्थकर साधुनाव निखेपे बंदनीक	४०९
५८	तीर्थकर साधुनी चाक्ते आरंभमे किम	४०९
५९	गुण बंदनीकके आकार बंदनीक	४०९
६०	प्रतिमां मांहीं केही अवस्थाळे	४०९
६१	देव मोटा कि गुरु मोटा	४०९
६२	राजादि फूजादि साधुनें संघटे नही	४०९
६३	प्रतिमां श्रावकसे पूजावे साधू किमनपूजे	४१०
६४	प्रतिमा बंदेमे कि वतिराग बंदन होय	४१०
६५	देव गुरु निरारंजी	४१०
६६	चित्रनीतका प्रत्युत्तर	४१०
६७	हिंस्याते अहिंस्यानों उत्तर	४११
६८	नेम नव जांगे लेइ ओरने उपदेसे	४११

- ६७ हिंस्र्याते अहिंस्र्यानो उत्तर ४११
- ६८ नेम नव चांगे लेइ ओरने उपदेसे ४११
- ६९ ज्ञान दर्सन चारित्र वंदनीकळे ४११
- ७० धर्म जिन आज्ञामे कि विन जिन आज्ञामे ४१३
- ७१ धर्म व्रतमे कि अव्रतमे ४१४
- ७२ मिथ्याती कोणसे ध्यानसे पुण्य बांधे ४१४
- ७३ असंजती दानके दानके प्रश्नका उत्तर ४१६
- ७४ सातादीया सातापामे ते विषे ४१६
- ७५ आश्रव ५ जिनमे ४ पुण्य कर्ता के पाप ४१७
- ७६ उपसम समकितके उदेमे मिथ्यात ते विषे ४१८
- ७७ जिस कषायमे आउखा बांधे उसीमे
कालकरे कि ओरमे ४१८
- ७८ साधुपणा किसतरे आवे ४१८
- ७९ पुलाक लब्धि पुलाक नियंठा एक वा दोहै ४१९
- ८० अनुयोग द्वारमे ४ निखेपेहे ते किसतरे ४२२
- ८१ सुत्तथो खलुपडमो इण गाथाका अर्थ ४२३
- ८२ अनुयोग ४ तिनका चावार्थ ४२६
- ८३ द्रव्य ओर जीव हिंस्र्याक्याहै ४२६
- ८४ केवलीका उपदेस सावद्य कि निरवद्य ४२७
- ८५ सचित फूल पाणिके आरंजका प्रश्नउत्तर ४२८
- ८६ सूत्र ३२ माने तथा ४५ माने
तिनके विषे उत्तर ४२८
- ८७ देव प्रतिमा सम दृष्टी पजे कि मिथ्याती

वा दोनो पूजे	४३०
८८ पूया जग्य शत्रु दयामे तिस विषे	४३१
८९ पखी की चर्चा	४३४
९० संवत्सरी पंचमी की करणी तिसकी चर्चा प्रश्नः १२	४३९
९१ लघुनीत वर्डनीतकी असिजाई टालकर सूत्र पढे तिस विषे	४४०
९२ जिस गुरुसे सम्यक्त वा संजम लीया तिस गुरुके अवगुनवादन बोले	४४३
९३ मुहपती कौनसे सूत्रमे कही तिस विषे	४४३
९४ रजोहर्ण प्रमाण कौनसे सूत्रमे तिस विषे	४४३
९५ मेलावस्त्र बहुत ज्यादा रखे नही तिस विषे	४४३
९६ साधुको रोगमे उषधी साधुला कर देवे तिस विषे	४४३
९७ सूत्र सात प्रकारके कहे तिस विषे	४४५
९८ श्रावक ४ प्रकारके तिस विषे	४४६
९९ श्रावक १४ प्रकारके ते विषे और ज्ञानकी लब्धिके दसबोल	४४७
१०० मुहपती बांधनी तिस विषे	४४८
१०१ धर्मसार संग्रह करताके विषे श्लोक अनुष्टुप् वृतम्	४४९
विपयांक चतुर्थ जागस्यानुक्रमणिका	पृष्ठांक
१ सम्यक्त निर्णय	४४९

२ मिश्र चर्चा	४९५
३ तेरा पंथीकी चर्चा	५०४
४ जिष्म पंथीयासे चर्चा	५०५
५ चैत्य मतीयासे चर्चा	५११
६ तेरा पंथीयासे चर्चा	५१३
७ मिश्र चर्चा	५१७
८ चेइय मतीयासे चर्चा	५२२
९ सामाईक सूत्रके शब्दार्थ	५२६
१० दस पचखाण सूत्र शब्दार्थ	५३८
११ सामाईक करने की विधि	५४४
१२ अष्टदश दोष रहित स्तवन	५४५
१३ नमीराज ऋषी की सजाय	५४६
१४ राम लठमण कथा सजाय	५४७
१५ श्री कृष्ण जन्म सजाय	५५५
१६ उपदेश सजाय	५६१
१७ वारा जावना सजाय	५६२
१८ वारा जावना नाम	५६३
१९ स्याद्वाद सिजाय	५६४
२० स्याद्वादके प्रश्न उत्तर	५६६
२१ ग्रंथ संग्रह कर्ताके विषे	५६७
२२ ग्रंथ समाप्ति श्लोक ३	५६८

इस ग्रंथका सर्व हक रजिष्टर करके छापने वालों अपने
स्वाधीन रखोह कोई दुसरा छापने न पाव

सत्यार्थ सागर शुद्धि पत्र चार पाने आगे है पांचवा पाना पहले एहै सो जानना

अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति
बुडता	बूडता	४८३	१२	पूँजी	पूजी	५२३	२१
अज्ञानी	अज्ञानी	४८५	२३	वालोजी	वालोजी	५२५	१९
हाय	होय	४८६	५	नपारेपि	नपारेपि	५३०	११
काहेकहे	कायकहे	४८७	१४	उझोयगेर	उझोयगेर	५३०	१६
समडे	समेछे	४८८	१७	विचार	निवार	५४६	१३
महाज	मदारज	४९०	१९	कछव	कच्छप	५४७	१४
आज्ञा	ज्ञाता	४९४	१	और	अरे	५४९	४
भपरो	भाख्यारो	४९७	१९	कहैथी	कहैथी	५५०	१०
वाजे	बीजे	४९९	९	दूख	दुख	"	१६
तारतीने	तीर्थाने	४९९	१८	कार	कर्ण	"	२२
वतारे	वतावेरे	४९९	२३	पुष्फनाम	पुष्पकनाम	५५१	२१
नहा	नही	५०२	९	मुहपति	मुहमति	५५२	१४
थापोरे	ठामोरे	५०२	१३	गवा	गदा	५५८	६
दोपदो	दोपता	५०६	७	किसको	किसकी	"	१४
उपना	उपना	५०६	१०	नजरांढ	नजरांजद	५५९	२
त्यागी	त्यागी	५११	२३	प्राय	मिय	"	७
उठायी	उठायी	५१३	११	शुध	शुध	"	१५
भाग	भाग	५१३	१६	दूरमे	दुरमे	५६०	२
जगाने	जगाने पाप	५१४	२	लीनी	लानी	"	८
वताके	वतावे	"	२	॥ टेक	टेक ॥	५६१	११
दुष्ट	दुष्ट	"	२	ग्रामेरे	ग्राममेरे	५६२	१०
पुतजी	पूतजी	"	१६	भाखी	भाखीवाोर	"	१४
धीगजी	धीगजी	५१५	१८	मनटा	मनमानादी	"	२२
स्त्री	स्त्री	५१७	१५	सदाही	सदा	५६३	१
भागाछे	भागाछे	५१८	१	धन	घन	"	१५
उठपर	उठरप	"	४	दुर	दूर	५६५	२३
ठाणेरे	ठाणेरे	"	२२	च्यार	०	५६८	९
उलखीख	उलख	५२१	१२	होवैगा	होवैगा	"	१३
भागोती	भगोती	५२२	१५	तावद	तावद	"	२१

॥ अथ सत्यार्थ सागर शुद्धी पत्र लिख्यते ॥

अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति
दुर	दूर	३	३	"	यच्चा	३०	१
समकीत	समकित	३	७	पहणीया	पेहणीया	३०	२२
पशु	पशू	३	१९	सर्वं	सर्व्वं	३१	२०
तार	तारो	४	७	पार	पर	३२	११
दिधा	दीधा	४	१२	"	नवदर्सना	३४	८
सुद	सुध	४	२२	"	वयसम	"	"
चालिस	छयालिस	५	६	"	धारणया	३६	१५
चास्त्र	चाख	५	१३	"	कायस	"	"
करनेको	करनको	५	१९	मधारणया	३६	"	"
नहीआखे	नहीभाखे	५	२३	अत	अंत	३६	२०
साल	साठ	६	१	सर्वं	सर्व्वं	३७	१६
जगा	जग्ग	६	२	वरिस्स	वीरस्स	३९	२१
होज	होजग	८	६	दिडी	दिठी	३९	२१
"	साध	९	२	इमाण	प्रमाण	४३	५
जीवकी	जीवाकी	९	४	कुछेक	कुछेक	४३	१६
यात्रा	पात्रा	१२	११	समझावा	समझावो	४५	३
पाईजी	प्याईजी	१३	१०	नही	"	४७	६
"	तीज	१३	२३	मिण	पिण	४७	८
लौय	लोये	१४	७	झुटो	झुठो	४८	१६
महा	मह	१४	१३	सास्त्र	सस्त्र	५०	२२
भगवान	भगवन्	१४	२०	"	किम	५९	९
तिन्हंगुणं	तिन्हगुत्तीण	१७	१८	बुद्धो	बुद्धी	५९	१४
"	परिभोग	२२	५	आहारीका	आहारीके	६१	८
"	कोई	२३	८	आहारना	आहारनी	६१	८
घुडी	घुद्धी	२७	२०	करता	करना	६१	१७
करी	कारी	२८	८	सुधा	शुध्द	६२	१८
"	तत्स्थणंजेते	२८	१२	तेहनो	देहनो	६३	३
"	कम्मोयस	"	१३	वातेछे	खातेछे	६३	२२
"	मणो	"	"	निरमे	निरमे	६४	७
कीवाछे	कीथीछे	२९	१५	निधा	निधा	६४	८
"	नसमारि	३०	२१	उतानं	उनानं	६६	१५

अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति
अकर	अक	७१	७	पछ	पन्व	१२२	३
वाई	खाई	७१	७	णनहा	न्हाया	"	७
लागरहे	लागस्ये	७४	७	यव	यव्वं	१२३	३
ऋपभा	ऋपभा	७६	१२	मंज्ञाण	मंज्ण	"	४
स्वामी	स्वामि	७७	१	वस्त्रहिरी	वस्त्रपहिरी	"	६
"	मारीयोजी	७८	४	हसीतरें	इसीतरें	"	१९
जिमछै	जिमवै	"	११	सिखना	लिखना	"	२२
वाणीना	वाणीया	"	१२	लिकम्मा	"	"	२२
लीवेजी	लीयेजी	"	१३	शब्दनो अ,	"	"	"
विषेजी	हिवेजी	"	१६	थ जिन म,,	"	"	२३
देवदी	देवढी	८८	१४	तिमा पूजा,,	"	"	"
देवढीगाणी	देवढीगणी	"	१९	नो अ	"	"	"
पगपंढावे	पगमंढावे	८९	१०	दुवाक्षिता	दुवाक्षता	१२४	६
पर्व	पूर्व	"	१४	अर्थात्	अर्थात्	"	११
भगवंरो	भगवंतरो	९२	११	पूर्वइति	इतिपूर्व	"	२२
रुख	रिख	९२	१४	प्रतिओके	प्रतिमाओके	१२९	१०
पार	पर	९३	८	वझए	वझए	"	१८
सूचां	सूत्रां	९४	२२	वढ	वढ	१३२	२३
हिस्या	हिस्या	९५	३	कुच	कुछ	१३६	११
वखण	वखाण	९६	१	जिनो	जनो	"	१४
गणिविक	गणिविज्ञा	९८	१०	एव	एध	१३६	२०
लियते	लिख्यते	"	२०	जीयंस	सीयंस	१३८	११
अहं	अद्द	"	२१	गरु	गऊ	१३९	"
सूत्रो	सूत्रों	१००	७	तुकडा	टुकडा	१४२	१४
"	प्रश्न	१०६	२	प्रतिमाकुं	"	"	"
कासी	किसी	११०	"	देखके	"	"	१८
गदबुधकी	गजबुधकी	"	८	विकाणस	ठिकाणसे	१४३	६
वचनाथा	वचनात्	"	१९	उपरजा	उपरजा	"	७
नंदी	नदी	११२	११	पणा	पणा	१४४	१५
लागनेस	लगनेस	११३	१८	मलव	मतलव	१४७	१२
नाव	नाम	११६	१	करी	करा	"	१५
वांधयवा	वधायवा	११८	२३	पझवा	पझवा	१५१	१९
काहिके	काहिये	१२०	१९	रुक्वा	रुक्वा	१५२	१

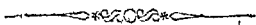
अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति
रक्खे	रुक्खे	१५२	४	अभिला	अभिला	१७२	१३
साधुका	साधुको	"	७	खा	खी	"	"
उपास	उवास	"	"	करीसें	कारीसें	"	१८
दसा	गदसा	"	११	राकधो	येकधो	१७३	७
पुडि	पुडिबि	१५२	५०	परिएसा	परितसंसा	१७५	१७
वुंदु	वंदु	१५३	१४	रीए	रीए	"	"
कारण	करणा	१५४	२१	पखेवे	पखेवे	१७६	१
पझु	पझुं	१५५	१६	थीरथी	सीरथी	१७७	२३
जेन	जेन	"	१७	पुजतेहै	पूजतेहै	१७८	१०
तिसरा	तीसरा	१५६	३	उचरा	उंदरा	१८१	१८
रुद्धि	ऋद्धि	१५७	१८	महिमाने	प्रतिमाने	१८८	८
भरतार	भरतार	१५८	१४	होततो	होतातो	१९७	२१
वांछयो	वांछयो	१५९	२०	खाटयो	खाटयो	२००	१६
हिस्या	हिस्या	१६०	१५	अनेकार्थी	अनेकार्थी	२०१	१२
तिरथकी	तिरथकरकी	१६०	२२	सगृह	संगृह	२०२	२१
वीतरागो	वीतरागो	१६२	१३	वर्गणा	वर्गणा	२०४	१५
संभलना	संभलगो	१६६	९	ओरके	ओरके	२१०	१४
परिक्षा	"	"	१३	वीदीया	वीदीया	२१७	२
थलयनी	वलयनी	१७०	१६	निरमला	निरमलो	"	२१
विउव्वई	विउव्वई	"	"	काले	"	२१८	२०
"	विउव्वई	"	२१	जिन	जन	२२०	५
खेट	खेट	१७१	७	आघा	आघा	२२१	१३
कीटे:	कोटे:	"	१०	उववाई	उववाई	"	२१
घृष्य	घृष्य	"	१४	सी	सीत	२२२	४
सधर्म	खधर्म	"	१५	सहहणा	सहहणा	"	१४
मुज्वल	सुज्वल	"	१६	काकानो	कापानो	२२४	४
ध्वजां द्वि	ध्वजांऽहि	"	१७	मध्ये	मध्ये	"	८
चतुर्मुखां	चतुर्मुखा	"	१८	निनुव	निनुव	"	"
कंटका	कंटकाः	"	१९	तोअकाम	"	२२७	३
द्रमान	इशमान	"	"	तो	"	"	"
कुलत्व	कुलत्व	"	२२	दिसे	हिसे	२२९	१५
श्वतुसि	श्वतुसि	"	"	गर्भता	गर्भता	२३०	१५
शत्र	शत्र	"	२३	मायचित्	मायचित्त	२३२	१८

अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति
मो	"	२३९	१८
क	"	२४०	१
"	ल	"	१४
वालवो	वालोलो	"	१८
केताला	केतला	"	"
एक	एक	"	१८
वतिने	वर्तिने	२४७	५
सिलादिक	सीलादिक	२४८	७
लेना	लेतां	२५२	८
एए	एदोयमा	"	१८
जाड	उजाड	२५६	५
केरो	फेरचो	२६७	२२
सोनीनी	सोनानी	२६८	५
हिएयं	हिरायं	२७०	८
उथापकर्ना	उथापता	"	१८
वदणं	वदणं	२७५	१०
देना	देतां	२८२	१०
वरजैछ	वरजसी	२८३	११
दरगण	दरसण	२८५	८
अधमी	अधरमी	२८५	१२
तत्तणं	तत्तेणं	३०७	३
गामाणगाम	गामाणुगामं	३१०	१३
लझइ	लभइ	३१७	१४
कोई	कोई	३२२	२३
मार	भार	३२३	४
कमी	कर्मी	३३३	१८
भोगसु	भोगेंसु	३४१	२०
वाली	वली	३५४	८
एव्वएसु	पव्वयेसु	३६६	५
महदिथाउ	महदिथाओ	"	१२
प्रातके	अतके	३६८	८
सभ्याय	सभ्पाय	४०२	८
भ्याणा	झाणा	"	"

अशुद्ध	शुद्ध	पंक्ति	पंक्ति
एवंवयाति	एवंवयासि	४०३	२
गंधवदि	गंधवट्टि	४०४	१७
पूजानिक	पूजनीक	४११	१०
थडलो	थंडलो	४१२	१२
कहगं	कहेगो	४१४	३
आहरादि	आहारादि	४१५	१७
मनसं	मनसुं	४२१	९
थास्याहै	स्थाप्याहै	४२२	८
सस्यक्तदृष्टी	सम्यक्तदृष्टी	"	८
मिथ्यादृष्टी	मिथ्यादृष्टी	"	१०
जोगम	जोगमं	४२४	१४
मानेछे	मानेछै	४२५	९
साठा	साठ	४३०	२१
अव्वमि	अठमि	४३२	१७
सजोपकारी	सजमोपकारी	४३५	"
हुई	हुई	४३७	९
"	कार्णे	४४०	१६
दुरो	गुरो	४४३	६
समजणें	सत्त्वजणे	४४७	१९
पुरा	पूरा	४५३	९
मसग्गन्ना	मग्गसन्ना	४५५	१४
मसग्गाना	मग्गसन्ना	"	१५
अजोव	अजीव	"	१५
दुर	दूर	४५६	९
कावा	कीधा	४६६	६
सुग	सूग	"	१७
मयवा	मयवा	४६९	"
देसको	देसके	४७४	२०
वंदनी	वंदना	४७५	२१
अर्थ	अर्थ	४७६	९
गुणम	गुणमे	४८०	३
समभिरुद्ध	समभिरुद्ध	"	१४
सक्तने	संभ्यक्तने	४८३	१०

॥ श्रीशांतिनाथाय नमः ॥

॥ अथ सत्यार्थसागर ग्रंथस्य प्रथमोऽङ्गप्रारंभः ॥



॥ अथ श्री पंचपरमेष्ठी स्तुति ॥ मंगला चरण ॥

अर्हंतो ज्ञाननाजः सुरवरमहिताः सिद्धिसौधस्थ
सिद्धाः । पचाचार प्रवीणाः प्रगुण गणधराः पाठका
श्यागमानां ॥ लोके लोकेश वन्द्याः सकल यतिवराः
साधुधर्माग्नि लीनाः ॥ पञ्चाप्पेतसदाप्ता विदधतु कुग
लं विघ्ननाशं विधाय ॥ १ ॥ श्रीवीरं क्षीरसिंधूदक
विमलगुणं मन्मथारिप्रवातं ॥ श्रीपार्श्वं विघ्न वल्ली बन्
दलन विधौ विस्फुरत् कान्तिधारं ॥ सानदं चन्द्रचू
व्याहृत वचन रसं दत्तदृक्कर्णबोधं ॥ वन्देहं भूरि
चक्षुषा त्रिजुवन महितं वाङ्मनः काय योगै ॥ २ ॥

॥ दोहा ॥ सुमति देव प्रणमी कहूं, धर्माचरण इत
नाम ॥ सत्यार्थसागरतनां, प्रथमनाग सुखधाम ॥ १ ॥
स्याद्वाद वाणी कठिन् बहोसुरती मुनिराय ॥ सुगम
करी उपदेसदें, समकित योतिदिपाय ॥ २ ॥

॥ श्रीर्त्तु नमः सिद्धं ॥

॥ अथ प्रथम वीस वेहरमान स्तवन लिख्यते ॥

श्रीसीमंदिर साहिबाजी, प्रणमं तुह्यारे पाय ॥ जुग
मंदिर मुजऊपरेजी, मेहर करो महाराय ॥ जिनेश्वर
धन धन तुम अवतार ॥ १ ॥ बाहूस्वामी, सेवताजी,
जनम जनम दुःख जाय ॥ सुबाहू, जिन ध्यावताजी,

संकट दूर पलाय ॥ जि० ॥ ध० ॥ २ ॥ ध्याऊं श्री
 सुजातनेजी, स्वयंप्रभू जगवान ॥ ऋषिज्ञानन वंदू
 सदाजी, धर तन मनसै ध्यान ॥ जि० ॥ ३ ॥ अनंत
 वीर्य सुरै प्रभूजी, विशाल प्रभू जिनराय ॥ बज्रधर
 चद्राननेजी, चंद्रवाहू सुखदाय ॥ जि० ॥ ४ ॥ भुजं
 गम ईश्वर प्रभूजी, नैमीश्वर जगतात ॥ वरिसेन
 महाभद्रजेजी, देवजस्स विख्यात ॥ जि० ॥ ५ ॥ अ
 जितवीर जिनदीपताजी, महाविदेहमें जान ॥ दोय
 कोमले केवलीजी, जघनकहे जगवान ॥ जि० ॥ ६ ॥
 लाख चौरासी पूर्वनीजी, आयू तने परिमान ॥ काया
 पाचसै धनुपनीजी, दीपे सोवनवान ॥ जि० ॥ ७ ॥
 जंबूद्वीपना भरथमेंजी, ध्याऊं तुम्हारा ध्यान ॥ सुख
 दायक तुम नामसैजी, होवें परम कल्याण ॥ जि० ॥
 ॥ ८ ॥ जंबूद्वीपने धात्रकीजी, पुरस्कर अर्द्ध बखान ॥
 महा विदेह इन पंचमेजी, बीस कहे जगवान ॥ जि०
 ॥ ९ ॥ इनका ध्यान धरूं सदाजी, मन वचनें करि
 काय ॥ मनुष जन्म सुफलो करूंजी, श्रीजिनना गुण
 गाय ॥ जि० ॥ १० ॥ संवत उन्नीसे जाणयिजी,
 विक्रम अवधि प्रमाण सैतालिस उपर कहाजी,
 लिसाढ ग्राम परधान ॥ जि० ॥ ११ ॥ चतुरमासमे
 वीनतीजी, एम कहे ऋखराय ॥ देव धर्म गुर आदरो
 जी, भव भवमें सुख दाय ॥ जिनेश्वर धन धन तुम
 अवतार ॥ १२ ॥ इति

॥ अथ उपदेश लावणी लिख्यते ॥

इस जगमे फिरता समकित दुर्लज पाई, पिण सु
णी घणाने सरधा विरलें आई ॥ दोष अठारह दुर
करें जिन देवा, निग्रथ गुरुकी कीजो मनसे सेवा ॥ न
य निखेपा परिमान कही जिनवांनी, बहुश्रुती मुनि रा
य अपेक्षा जानी ॥ इनका सत गुरसें जेद लहो तुम
जाई ॥ इस जगमें फिरतां समकित दुर्लज पाई ॥ १ ॥
ज्ञानज्ञानसें देख धर्म सुधताई, थिर श्रद्धा मनआन
कुमत तजि जाई ॥ सुध चारितसे रोक कर्मकी नाली,
तपकर पूर्व कर्म इधन कर जाली ॥ जब चेतनतज करम
अचल पद पावे, जनम जरा और मरन रोग टल
जावे ॥ तज अब मनसें क्रोध सुमति चित लाई ॥ इ
स० ॥ २ ॥ जबहो अधिका पाप नरकमें जावे, और
पुत्र परजावे देवगती नर पावे ॥ दगा कपट कर पशुजों
न दुख पायो, जब बढ्यो पुण्य तव मानुप कुलमे आ
यो ॥ तु सत गुरुकी कर सेव सुनो जिनवांनी, धरम
तनी कर परख दया मन आनी ॥ अब देस विरत
वा सरध विरत कर जाई ॥ इस० ॥ ३ ॥ समकित स
रधा सहित विरतजो पाले, ते पशुजोन और नरक त
ना दुख टाले ॥ उत्तम आरज देश मनुप कुलपावे,
आराधिकहोकर देवलोकमें जावे ॥ ए विक्रम संवत उ
त्रीसे उनचासें, बडसत ग्रामके मांहि कीया चोमासे,
॥ यह धर्म तना उपदेश कहे ऋष राइ, इस जगमें

फिरता समकित दुर्लभ पाई० ॥ ४ ॥ इती

॥ अथ उपदेश लावणी दुमरी लिख्यते ॥

तु मुन सतगुरकी सीख समऊकर प्राणी, अथ कर तु
 सरधा शुद्ध परख जिनवानी ॥ यह उतम नरजव पाय
 झाड़मांगवानी, निश्चे कर मनधार विरतहित आनी ॥
 विन समकित पाये जीव अनंत जव धारो ॥ नवग्रीवेग
 के माहिलीयो अवतारे ॥ जहां इकतीस सागर लगे
 सुख बहुपायो, फिर विन समकित सुर लाख चौरासी
 आयो ॥ १ ॥ रागद्वेषके जीत कहे जिनदेवा, सुरनर
 इंद्र जास करतहे सेवा ॥ जिनवचनोंके परमान धर
 म सुध पालो, समकितको कीजे सुद्ध कुमति तुम टा
 लो ॥ निरमल सरधा धार प्रदेसी राया, राणीने दिधा
 जहर क्रोध नहीं आया ॥ तव समकितका रस शुद्ध
 जावसे पायो, फिर विन समकित सुर लाख चौरासी
 आयो ॥ २ ॥ देवधरम गुर पायो राय उदाई, समकि
 तमें परधान हुयो मन जाई ॥ वैरिने मारा वृत पोस
 हके माहिं, नहीं आना मन क्रोध करी द्रिढताई ॥
 करमतना सहु दोष दोस नहीं केहना, औसा उजला
 ध्यान हुवा तव तेहना ॥ तीर्थकर गोत्र बांध तव सुर
 जव पायो ॥ फिर वि० ॥ २ ॥ विनसमकित मिथ्यात
 मतीकी करनी, कहीं सूत्रोंके माहिसक नहीं धरनी ॥
 सूत्राध्यैनके बीच देखो सुद्ध ज्ञानी, नोमें अध्येनके
 माहिं कथा जिन आनी ॥ जो मास मासका कष्ट करे

अज्ञानी, तो त्रिन जिन आज्ञा परिमान नहीं सुध
 प्राणी ॥ तिन करनीके परिमान देव सुख पायो ॥
 फिर० ॥ ३ ॥ मनुष्य जनमको पाय सुफल मन करे,
 तु सुन नरकाके दुःख उतोसें करे ॥ गरजा वासका
 वास महा दुख दाई, सो जाने जिनदेव कहु कहाताई ॥
 यह सवत उन्नीसे उपर चालिस जानो, वरसत ग्राम
 के बीच चोमासा मानो ॥ ऋखराज कहें अब प्रज्ञ
 चरणे चितलायो ॥ सरनचितलायो ॥ फिर० ॥ ५ ॥

॥ अथ उपदेश लावणी त्रीजी लिख्यते ॥

तु सुन सतगुरके वचन सुमत कर प्राणी, यह
 भवजीवाके काज कही जिन बानी ॥ चारगतीके मा-
 हिमनुष्य देह पाई, करले श्रीजिनधरम सुफल कर
 जाई ॥ समता रसको चाख दया दिल लाई, जिनमा-
 रगका सार समज सुखदाई ॥ ठोरु कुमतिका संग
 मुमतिकर प्राणी, अब इक चित्त कर सुनो जिनेसर
 चाणी ॥ १ ॥ तीर्थकरके समोसरण सुर आवें, फूलों-
 के वादल करी फूल वरसावें ॥ रायप्रमेनीके बीच
 अचित्त तुम जानो, मत कीजो कोई संक दया मन
 आनो ॥ राजादिक जो दर्शन करनेको आवें, फूला-
 दिकको त्याग दरस मन आवे ॥ बहु सूत्राके माहि
 कहें सुधज्ञानी ॥ अब० ॥ २ ॥ अबसुनो प्रश्नव्याकर-
 णकी साखे, पहिलें हिंस्या द्वार श्रीजिन जालें ॥ ज-
 हां ठहकायाके आरजमें कारन, नही आखे जिनराज

यही कहीं तारन ॥ दयातणे - कहे नाम, सालके ताई,
 पूजा जाव और जगा दयाके मांहीं ॥ फिर हिंस्या
 करिके धरम कहे अजिमाती ॥ अबइक० ॥ ३ ॥ म-
 नुप गती परधान कहे जिनदेवा, इंद्रादिक, जिनकी
 आन करतहे सेवा ॥ साध श्रावकका धर्म इहांसे
 पावे, जनम मरणका दोष सजी टल जावे ॥ सुर-
 थितका कुल करम अविरती जानो, तीनों गतिसें
 नहीं मुक्त कही जिनवानो ॥ पालो सुधबिरती सम-
 कितमें हितआनी ॥ अबइक० ॥ ४ ॥ अब धन वो
 दिवस होय कब मेरा, जिन आज्ञा आराध मिटे
 नव फेरा, ऋखराज कहे करजोड मुके नव नवमें,
 ए जिनवरजीको धर्म लहु इस जगमे ॥ ए संवत उ-
 न्नीससे ब्यालिस वडसत जानो, आसोज सुदीकी ती-
 ज शुक्र दिन मानो ॥ यह कही लावणी सरधा
 त्रिदमन आणी, अब इक चित्तकर ० ॥ ५ ॥

॥ अथ चौवीसी स्तवन - लिख्यंत ॥

ए नर नव आई मिल्याहो, पुर्व पुंन्यजु सार ॥ दुख
 संकट दूरें टल्याहो, पाम्या धर्म उदार ॥ ए टेक ॥ ऋपन
 अजित जिन ध्यावताहो, होवें शुभ परिणामें ॥ संन
 व अजिनंदन प्रचूहो, आनंदकारी स्वामें ॥ सुमत
 पदम मुक मन वसोहो, वीतराग नगवाने ॥ सुपारस
 चंदा प्रचूहो, चंद्रसरिखाध्यानें ॥ ए न० ॥ १ ॥ सुवदनाथ
 सीतल प्रचूहो, बंधा सीतल जावें ॥ श्रेआंस वासप

जजीहो, सिमरया मिवसुख पावें ॥ विमल अनंत अ
 रिहंतजीहो, अनंत गुणोंके धामे ॥ धर्मनाथ अरु शां
 तिजीहो, साता कारी स्वामें ॥ ए न० ॥ २ ॥ कुंथुना
 थ अर्हेनाथजीहो, अतिसें चौतीस धारें ॥ महि मुनिमुत्रत
 स्वामिजीहो, पेंतीसवांणी उचारें ॥ नमीनाथ अरु नेम
 जीहो, सब जीवा हितकारें ॥ पारस प्रनु महावीर
 जीहो, सासणके सिरदारें ॥ ए न० ॥ ३ ॥ चौदासे वाव
 न नमंहो, गणधरमहा गुणधारें ॥ चौबीसों जिनजी त
 णाहो, आगम अर्थ जंडारे ॥ वेहेरमान वंदुसदाहो बी
 स जुहे जिनरायें ॥ मन वचनें काया करीहो, ध्यान
 धरुं चितलायें ॥ ए न० ॥ ४ ॥ आर्य देस उत्तम कुलें
 हो, मनुष तणा जव पायें ॥ श्रीजिनवर गुण गावतांहो,
 जनम सुफल होजायें ॥ संवत उन्नीस पंचासमेहो क
 रनाल नगर चोमासें ॥ ऋखराज कहें जिन ध्यावतां
 हो, पुरें मनकी जु आसें ॥ ए नरजव आई ० ॥ ५ ॥
 ॥ अथ साधुजी ऋषिराज कृत ॥ दस लक्षण मुनीधर्मके
 कुलणे दोहा सहित लिख्यते

दोहा ॥ सिव सुख दायक जिन चरन, नमता होय
 कल्याण ॥ मुनिके दस लक्षण कहूं, द्यो बांणी बरदान
 ॥ १ ॥ कुलणा ॥ अजी द्यो बांणी बरदानके, मानजो सेवगनें
 सुखकारीजी ॥ तुमरी कीरत अब मुखसें गाऊं, सुनो
 सह नर नारीजी ॥ अष्ट करम को जीत लीये तुम, दु
 ये सुद्ध आचारीजी ॥ ऋपराज कहे में, बेकर जोड़ि, तु

महो गुणके धारीजी ॥ २ ॥ दोहा ॥ अतिसे चोतिस
 के धणी, बांणी गुण पैतीस ॥ एक सहिस अठ
 लक्षणें, तुम तन सोने ईस ॥ ३ ॥ जुलणा ॥ अजी
 तुमतन सोने ईसके, निस दिन सुरपत सेवा सारेजी
 इस जव दधिके बीच, तुमारो नामतणो
 आधारेजी ॥ तिरण तारण तुम होज स्वामी,
 काजो खेवा पारेजी ॥ ऋपराज कहे में तुम परसादे,
 कहं धरम सुविचारेजी ॥ ४ ॥ दोहा ॥ बीतरागके ब
 चनमें ॥ दस विध धर्म बखान ॥ तिनका अब वरन
 न करूं ॥ सुनो चतुर दे ग्यान ॥ ५ ॥ जुलणा ॥ अजी
 सुनो चतुर दे ग्यानके, ध्यान जो निरमल होवे धारा
 जी ॥ तुम धरम जावना धर कर मनमें, करोजु सुध
 विचाराजी ॥ नरक देव तिरजंघ मनुषमें, जमतां अंत
 न पाराजी ॥ ऋप राज कहे अब धरम रतन, कोई
 पुण्य उदेसें धाराजी ॥ ६ ॥ दोहा ॥ मनुष जन्म
 अब पाईके ॥ सुफल करो हित आण ॥ दुरगतिके दुख
 से मरो ॥ तजो मिथ्या अग्यांन ॥ ७ ॥ जुलणा ॥
 अजी तजो मिथ्या अज्ञानके, ज्ञान दिल अंतर मांहि
 विचारोजी ॥ ए नर जव रतन चिंतामणि सम तुम,
 कुमति संग मति हारोजी ॥ सुमत जावसें बिरत आ
 राधो, अरु समकित सुख कारोजी ॥ ऋपराज क
 हे धन जिन बाणीको ॥ जिस तें हो निस्तारोजी
 ॥ ८ ॥ दोहा ॥ तारण तिरण मुनिश्वरू, बहकायाके

॥ १५ ॥ पांचों इंद्रों वसकरें ॥ टाले मोह-मिथ्यात ॥ १५ ॥
 जुलणा ॥ अजी टाले मोह मिथ्यातके, कुटबको तिन
 प्राग्याहै ॥ तन मन को वस कर धरें ध्यान, मुनि मु
 ५ पंथ चित्त लाग्याहै ॥ दया करतहैं सब जीवकी, ति
 ॥ कमतीमें मन जाग्याहै ॥ ऋपराजकहे धन ते मुनिव
 को, जो मोह नीदसें जाग्याहै ॥ १० ॥ दोहा ॥ पहिला
 ५क्षण धरमका ॥ सुनो सवि चित लाय ॥ मुक्तिपंथ
 साधनतणा ॥ कह्या श्री जिनराय ॥ ११ ॥ जुलणा ॥
 प्रजी कह्या श्री जिनरायके, लायक भव जीवके ता
 जी ॥ द्विमा धरमकी करी बरुई, प्रथम मुनीके मां
 हैंजी ॥ कठिन वचन लोकोके सुनके, द्विमा करे सु-
 त्त दाईजी ॥ ऋपराज कहे धन ते मुनिवरको, सिव
 सणी जिनपाईजी ॥ १२ ॥ दोहा ॥ क्रोध अगन सी
 ल करे, धरें द्विमा परिणाम ॥ आतम गुण आरा
 प्रतां, पांमे अविचल ठाम ॥ १३ ॥ जुलणा ॥ अजी
 पांमे अविचल ठामके, तामस मनका जिन सब मारा
 है ॥ अरी मितर जानें एक सरीखे, तब समण-बिर
 त गुण धाराहै, जो कंचन काच बराबर जाएं ॥ चा
 कर ठाकर इक साराहै, ऋपराज कहे ए परधम ल
 क्षण, धारत मुनि सुखकाराहै ॥ १४ ॥ दोहा ॥ दूजा
 लक्षण मनि लणा, कह्या आप जगवान ॥ श्रोता ज
 न सुणज्यो हिवे, मनमें धरिके ज्ञान ॥ १५ ॥ जुलणा
 अजी मनमें धरिके ज्ञानके, जानत जिन वानिकु सुख

दाईजी, तो तजे जगतसे लोच महा मुनि, ते जाने
 दुरगतिकी, शाईजी ॥ मात पिता नारी सुत ममता,
 त्यागे चितने समजाईजी ॥ ऋपराज कहे मुनिवर ते
 बैठे, जिन चरणो चितलाईजी ॥ १६ ॥ दोहा ॥ अब
 तीजा लक्षण कहूं, आगमके परिमाण ॥ नविजन इक
 चित साजलो, जिनवाणी हित आण ॥ १७ ॥ जूलणा ॥
 अजी जिन वाणी हित आणके, मानत चव चवमे
 सुख कारीहे, अथिर जान संसार जगतसे, मुनि महा
 व्रत धारीहे ॥ जिन आज्ञा परिमाण करी मुनि, कप
 टाई दूर निवारीहे ॥ ऋखराज कहे काया सरल जाव,
 जिन आत्म को निस्तारीहे ॥ १८ ॥ दोहा ॥ नविजन
 कपटाई तजो, सरल जाव मन राख ॥ धरम ध्यान
 चित लाईये, जिन वाणी रस चाख ॥ १९ ॥ जूलणा ॥
 अजी जिन वाणी रस चाखके, जापत मुखसे मीठी
 वाणीजी ॥ करम मेलको दूर करत हे, मुनि आत्मने
 हित जाणीजी, जप तप करिके जो पूर्व जवके, करम
 इठे दुःख दानीजी ॥ ऋपराज कहे तत्र ते सिवपुर
 पावे, जगमें उत्तम प्राणीजी ॥ २० ॥ दोहा ॥ चौथा ल
 क्षण मुनि तणा, कहा श्री अरिहंत ॥ नविजन अ
 ब तुम साजलो, राखी मन एकांत ॥ २१ ॥ जूलणा ॥
 अजी राखी मन एकांतके, भांति सब दूर करी नवि
 प्राणीजी, मद आठ तजो मन अपनेसे ए, खोटी
 गतिके दानीजी, मान त्यागके विने करे मुनि ते जगमें

कहिए ग्यानीजी ॥ ऋषराज कहे जे सिव-पद साधे,
 मुनिवर आत्म ध्यानीजी ॥ २२ ॥ दोहा ॥ सुध-संजम,
 मुनिवर धरे, करे नही अजिमान ॥ ग्यात हरिसन
 घारित्र तप, इनमें राखे ध्यान ॥ २३ ॥ जुलणा ॥ अ-
 जी इनमें राखे ध्यानके, दान अन्न जिन दीनाहे, कु-
 रणा करतहे सब जीवापर, तत्व धरम जित लीनाहे ॥
 ज्ञानादिक गुणका मद नही आणे, क्रिया माहि पर-
 वीनाहे ॥ ऋषराज कहे मुनि अथिरे जान जग उत्तम
 कारज कीनाहे ॥ २४ ॥ दोहा ॥ पांचो इंद्रो वस करे,
 पाले सुद्ध आचार ॥ तिनका लक्षण पांचमां सुणो
 सहु नर नार ॥ २५ ॥ जुलणा ॥ अजी सुनां सहु नर-
 नारके, तारक मनी महा विरत धारीजी, बख पात्र
 हलके राखे, ठोडे बहु मोला चारीजी ॥ राग द्वेष आ-
 र हास रितारत, जिन माहे दसा को टारीजी ॥ ऋ-
 पराज कहे धन उनकी करणी, जिन तनसे ममत
 निवारीजी ॥ २६ ॥ दोहा ॥ वह कायाके नाथजी, ब-
 ठा लक्षण धार ॥ नाम कहे अब तेहना, जवि जन
 सुणो विचार ॥ २७ ॥ जुलणा ॥ जविजन सुणो वि-
 चारके, सार बचन नग सत बाणीजी, ऊठी जापा
 टाले मुनिवर, सत्य कहे हित आणीजी ॥ कोई नर
 खडगादिक करे मारे, होकर दष्ट अग्यानीजी, ऋ-
 पराजकहे तहुं ऊठन वाले, दोष असतका
 जानीजी ॥ २८ ॥ दोहा ॥ अब कहे ल

कृष्ण सातमा, सुणो सवि हित लाय ॥ संजम
 सतरे जेदका, पालें श्री मुनिराय ॥ २९ ॥ जुलणा
 ॥ अजी पालें श्री मुनिरायके, राज मुक्तिका ते पा
 वेजी, धर ध्यान जतनसे संजम साधे, जीव दया
 मन ल्यावेजी ॥ पांचो थावर चार तरस का, संजम जि
 नजी वतावेजी ॥ ऋपराज कहें ए नव परकारे, संजम
 तो मन जावेजी ॥ ३० ॥ दोहा ॥ जतना वस्त्र पा
 की, लेई धरें मुनि आप ॥ पडिलेहन विध आदरे,
 संजममें मन थाप ॥ ३१ ॥ जुलणा ॥ अजी संजममें
 मन थापके, आप मुनि चित्तन चलावेजी ॥ परिठवणे
 की विध सुध देखे, दया धरम मन जावेजी ॥ यात्रादि
 कको आठी विध करिके, देखत धरम कहावेजी ॥ ऋ
 पराज कहें मन बचन काया करि ये, सतरा सं
 जम थावेजी ॥ ३२ ॥ दोहा ॥ अब मुनि लक्षण आ
 ठमा, सुणिये मन धरज्ञान ॥ धारा जेदी तप तपे, तिनका
 करु बखान ॥ ३३ ॥ जुलणा ॥ अजी तीनका करु बखान
 के, ध्यानवान मुनि तप साधे ॥ धरें नही देही परम
 मता, जिन आज्ञा आराधे ॥ पांचो इंद्रा जीत करे वस
 मन तो, ध्यान धरम अति बाधे ॥ ऋपराज कहें ते
 मुनिवर जगने, सिव पदधीका लाधे ॥ ३४ ॥ दोहा
 ॥ अनसन और अनोदरी, निह्नाचरी प्रवान ॥ रस
 परित्याग मुनिकर कायकिलस बखान ॥ ३५ ॥ जुल
 णा ॥ अजी काय किलेस बखानके, पमिसलेहन जा

णोजी ॥ प्रायश्चित्त और विनय विद्यावच, सिद्धाय ध्या
 न मन आणोजी ॥ द्वादसमा तप विवसग मुनिवर
 का, श्री जिनराज वखाणोजी ॥ ऋषराज कहे ए तप आ
 राध्या, पावे कोड कल्याणोजी ॥ ३६ ॥ दोहा ॥ नों
 मा लक्षण अब कहूं, सुणिये नविजन लोग ॥ ग्या
 न धरम चितमें बसे, जब मुनि साधे जोग ॥ ३७ ॥
 कूलणा ॥ अजी जब मुनि साधे जोग के, जोग तजे
 दुःख दाईजी, समकित ज्ञान करी सह जानें, जो कि
 रिया जिनबतलाईजी ॥ आप तिरें औरोको त्यारे,
 समकित का रस पाईजी ॥ ऋषराज कहे जो ग्यान
 सहित मुनि, सिव रमणी तिन पाईजी ॥ ३८ ॥ दोहा ॥
 दसमें लक्षणमे मुनी, पाले सील रतन ॥ सब विरता
 में मोटका, बस कर राखे मन्त्र ॥ ३९ ॥ कूलणा ॥
 अजी बसकर राखे मन्त्रके, तन साधक गुणधारीहे ॥
 निद्या विकथा दूर तजे मुनि, सुध मार्ग सुविचारीहे ॥
 सुध बुध करिके बहु जीवाकी, दुरगतिती दरि निवारी
 हे, ऋषराज कहे ए दस लक्षण मुनिके, आतम गुण
 हित कारीहे ॥ ४० ॥ दोहा ॥ दस लक्षण मुनि कू
 लण, दोहे बाच विखान, कहे निरपडे ग्राममें ॥ जिन
 आज्ञा परिमाण ॥ ४१ ॥ कूलणा ॥ अजि जिन आ
 ज्ञा परिमाणके, ग्यान करि समजे उत्तम प्राणीजी ॥ अ
 सुप्त करमको टाली होवे, ते नर अमर विमाणीजी
 उनीस ॥ ॥ चुमालास सबत, ॥ ॥ नोदो ॥ सुकल ॥ ॥ व

खाणीजी ॥ ऋपराज, कहे जव जीव अरांधो, श्री जित
 वरकी, बाणीजी ॥ ४२ ॥ इति, दस लक्षण मुनी ध-
 र्मके जूलणे दोहे सहित साधु ऋपराज कृत सपूर्ण ॥
 ॥ अथ सामाईक पडिकोणा श्रावकका लिख्यते ॥
 ॥ श्रीजिनायनमः ॥ एमो अरिहंताणं ॥ एमोसि
 द्वाणं ॥ एमो आचरीयाणं ॥ एमो जवजायाणं ॥ एमो
 लोयेसवसाहूणं ॥ एसो पंचपासोकारो ॥ सवेपावपु-
 णासणं ॥ मंगलाणंचसवेसि ॥ पढस हवई मंगल ॥
 ॥ १ ॥ नव पदके, सरव अडसट् चणं ॥ ६८ ॥
 ॥ श्रीगुरुभ्योनमः ॥ तिखुत्तो आयाहीणं ॥ पयाही
 णं ॥ करिकरिता वंदामी नमो स्वामी ॥
 सकारिसि ॥ समानेसि ॥ कलाणं ॥ मंगल ॥ देवयं ॥ चइयं
 पञ्जुवास्वामी ॥ मथेण वंदामि ॥ १ ॥ अरिहंतोमहा
 देवो ॥ जाव जीव सुसाहूणं गुरुणं जिनपनत्तं तत्तं
 एसमत्तं ॥ मंगहियं पंचिंदियसंजरनो ॥ तहय ॥ नव
 विह वंजचेरं गुत्तिधरो, चउविहकसायमुको ॥ ए अ
 ठारे गुण संजुतो, पंचम हवए जुतो ॥ पंचवीहे अ
 यार पालणा समत्तो ॥ पंचसमाइतिगुतो, इहवत्तो
 सो गुणं गुरमजे ॥ १ ॥ इठा कारेण संदेसह जग
 वान इरिया बहियं परुकमामि ॥ इठम इठामि पडक
 मीयो, इरिया बहियाए विराहणाए ॥ गमणा गमणे
 पाणकमणे, बीयकमणे ॥ हरी एकमणे ॥ वसाउतिगा ॥
 पणगदग ॥ माटी मकडा ॥ संताणा संकमणे ॥ जामे

जीव विराहिया ॥ इकंदिया वेइंदिया तेइंदीया ॥ चउ
 इंदिया ॥ पचेदीया ॥ अजिहया ॥ वत्तीया लैसीया ॥
 सिंघाईया ॥ सघट्टिया ॥ पराविया किलामिया उदवीया ॥
 ठाणउठाण संकामिया ॥ जीविया उविवरोविया ॥ जी
 में देवसी ॥ अइयारको तस्स मिठामि तुकडं ॥ २ ॥ त
 स्सौत्तरी करणेण, प्रायचित्तकरणेण ॥ विसोही करणे
 ण ॥ विसल्ली करणेण ॥ पावाणं, कम्माणं निग्घाणं ॥
 नठाए, ठामिकंडसग्गं ॥ अनेत्थे ऊसैसीणं नीसैसीणं
 ॥ खासिएणं ॥ ठीएणं जन्नाइएणं उरुवेणं ॥ बायनि
 संग्गेणं नमलीए ॥ पित्तमुग्गए सुहु मेहुं अंगसंचा
 लेहं ॥ सुहुमेहुं खेळं संचालेहि सुहुमेहिंदिठसं
 चालेहं ॥ एवमायेहं आगारेहं अनग्गो ॥ अविरा
 हियो ॥ हूजम्मै कावसग्गं ॥ जीव ॥ अरिहंताणं ॥ जी
 गवत्ताणं नमोकारोमि ॥ नप्पारेमि ॥ ताउ काईयं ठा
 णेणं ॥ मोणेण जाणेणं अप्पाणं बोसरामि ॥ ३ ॥ लोभास्सउ
 ज्जायगरे, धम्मं तित्थयरे जिणे ॥ अरिहंते, कित्थिय
 सं ॥ चउवीसंपि केवेली ॥ १ ॥ उसन्नमजीयंच व्वी
 दे ॥ संजवत्तं नींदनं च सुप्रियंच ॥ पउमप्पहं सुं
 पासं जिणं चा चंद एपहं वदे ॥ २ ॥ सुव्विहं च
 पुप्फदंतं ॥ सीयलं सीयंस वासपुज्जंच ॥ विमल
 मणं तच्च जिणं धम्मसांतिच वंदामि ॥ ३ ॥ कुंथुअ
 रि च मेलिं नी वद्रे सुनि सुव्वयं ॥ नमी जिणंच वंदामि ॥
 रिठनेमो पासंतहे वद्वमाणंच ॥ ४ ॥ एवमुए अजि

थुवा ॥ विदुय रय मिला पहीण, जर मरणा ॥ ॥ चउ
 वीसंपिजिनवरा, तित्थयरामेप्रसियंतु ॥ ॥ ॥ ॥ कित्तिद्व
 वंदियमहिया ॥ जेयेलोगस्सेउत्तमासिद्धा ॥ ॥ आरुंगी
 बोहिलाजं, समाहिबरमुत्तमं दितु ॥ ॥ ॥ ॥ चदेसुनिम्न
 लयरा ॥ आइच्चेमुअहिये पया सागरा सागरध्वरगं
 चीरा ॥ सिद्धासिद्धं ममदिसंतु ॥ ॥ ७ ॥ ॥ करेमिजिते
 सामाईयं ॥ सावजजोग पचखामी, जावनेममहूरत प्र
 ज्जुवास्वामी ॥ दुबिहं तिविहेणं ॥ न करेमि नकारवे
 मि ॥ मनसा वायसा कायसा तस जित्ते पडकमामि ॥
 निंदामि गिरिहामि अप्पाणं बोसरामि ॥ ६ ॥ एमो
 त्युणं अरिइंताणं ॥ जगवंत्ताणं, आदिगिराणं ॥ ति
 त्यगिराणं, सयंसुवुद्धाणं पुरिसुत्तमाणं ॥ पुरिससिहाणं पु
 रिसवर पुंडरीयाणं ॥ पुरिसवरगंध हत्थिणं, लोगतुत्तमाणं
 ॥ लोगतोहाणं लोगाहियाणं ॥ लोगपईवाणं, लोगपज्जोय
 गराणं ॥ अज्जयदयाणं, चखुदयाणं ॥ मग्गदयाणं सरणं
 दयाणं जीवदयाणं ॥ बोहीदयाणं धम्मं दयाणं, धम्मदे
 सियाणं धम्मनायगाणं धम्मसरिहीणं ॥ धम्मोवर चाउ
 रंतचंक्कवट्टीणं ॥ दीवोत्ताणं सरणं गईपईठा, अप्पनी
 है वरंणाणं ॥ दसणधराणं, वियट्ठ उउमाणं ॥ जिन्नाणं
 जावियाणं ॥ तिन्नाणं तारियाणं बुद्धीणं ॥ बोहियाणं
 मुत्ताणं मोयगाणं ॥ सवनुणं सव दरसीणं सिव मयल
 मरुय मणंत मखै मवावाह ॥ मपुणरावती ॥ सिद्धगतिं न्ति
 मधेयं ॥ ठाणं संपत्ताणं नमोजिणाणं जियजयाणं ठा

णं सपावियो कामस्स नमो जिणाणं जियजयाणं ॥ ७ ॥
 । नोमासामाईक विरतके विपे जोकोई अतिचारला
 ग्याहोय ते आलोउं ॥ मन वचन कायाकाजोग पाड
 वाध्यानं ॥ माठा परवरतायाहोय, समायकमे समतान
 आणीहोय बिन पुगेंपारी होय ॥ पारतां विसारी
 होय ॥ दस मनके दस वचनके वारे कायाके यह व
 तीस दोषां माहिं जोकोई पापदोष लगायाहोय तस
 मिठामिदुकं ॥ ८ ॥

॥ अथ श्रावक पडिकमणा लिख्यते ॥

आवसही इत्ता कारेण संदेसह जगवन् ॥ देवसी प
 डिकमणाउठायमि देवसी ग्यान दरसन चरिता च
 रिते तप अतीचार चितवणा अरथं करेमि काव
 सग्गं ॥ १ ॥ एमोअरिहंताणं ॥ पांच पद कहना ॥ करे
 मिचंतेकी पट्टी कहणी ॥ इत्तामिठायमी कावसग्गं ॥
 जोमे देवसी अईयारको काईयो वाईयो माणसीयो उ
 सुत्तो उमग्गो अकप्पो अकरणीज्जोदुक्काउं दुचितियो
 अणियारो अणवियवो असावगो पावगो नाणतह
 दंसण चरिता चरित्त सुयसमाहियं ॥ तिन्हगुणं ॥
 चउन्ह कसायाणं ॥ पचन्हं अणुवयाणं तिन्हंगुणब
 याणं ॥ चउन्हं ॥ सिखावयाणं ॥ वाररस विहस्स सा
 वग धम्मस्स जंखंडियं जविराहियं ॥ जोमेदेवसी अई
 यारको तसमिठामिदुकडां ॥ १ ॥ तसोत्तरीकी पट्टी पढणी ॥
निन्याण्वे अतिचारका ध्यानकरणा ॥ एमोअरिहं

ताणं ॥ ध्यानके विषे मन बचन कायाका जोग माठा
 परबरताया होय तसभिठामि दुक्कणं॥पहिला आवसक
 पूराहुवा॥दुंजे,आवसककी आज्ञा लोगस्स उजोयगरे॥
 सर्व पाठ कहे ॥ दूजा आवसक पूरा हुवा ॥ तीजे आव
 सककी आज्ञा इठामि खिमासमणो ॥ वंदिए ॥ जव
 णिजाए ॥ निस्सहीआए ॥ अणुक्काणहमेमी ॥ उग्ग
 हं निस्सही ॥ अहो कायं काय ॥ संफासं खमणजोने
 ॥ कल्लामो ॥ अप्प ॥ किलंताणं बहुसत्तेनत्ते ॥
 देवसी वइकंतो ॥ जत्तात्तेजवणी जंचत्ते खामेमि खि
 मासमणो ॥ देवसी बईकम्मं ॥ आवसीयाए ॥ पडक
 मामी ॥ खिमासमणो देवसीआए ॥ आसायणाए ॥
 तेतीसणयराए ॥ जंकिंचि मिठ्ठाए ॥ मन दुक्कडाए
 बय दुक्कडाए कायदुकडाए ॥ कोहाए ॥ माणाए ॥
 मायाए ॥ लोहाए ॥ सबकालियाए ॥ सवमिठ्ठोबियाराए
 सब धम्म अईकम्मणाए ॥ जोमें देवसी अईयारको
 तस्स खिमा समणो ॥ परुकमामी निदामि ॥ गिरिहा
 मि ॥ अप्पाणंबोसरामि ॥ एहपाठ दो बार पढणा
 ॥ गुरुको वंदना करिके कहे, तीन आवसग पूराहुवा
 ॥ चोथे आवसग की आज्ञा.

अथ निन्याणवे अतिचारका पाठ लिख्यते.

आगमें तिविहे पन्नते तंजहा सुत्तागममें अत्थागमें ॥
 तदुत्तयागमें ॥ येहवा श्रुतज्ञानके विषे जो कोई अ
 तिचार लाग्या होयते आलोक ॥ जंनार्इद्वं १ वच्चा

मेलियं २ हीणखरं ३ अचखरं ४ पयहीणं ५ विने
 हीण ६ जोगहीणं ७ घोपहीणं ८ सुठुदिन्नं ९ दुठुप
 निवियं १० अकालेको सिजाउ ११ कालेनको सिजा
 उ १२ असिजाय सिजाईय १३ सिजाय नसिजाईय
 १४ जोमें देवसी अईयारको तरस मिठामि दुकडं ॥
 दरसण श्रीसमकत रतन पदारथके विषे जो कोई अ
 तिचार लाग्याहोय ते आलोउं ॥ श्री जिन वचन स
 में साचा सरधा न होय प्रतिता ना होय रुचा ना
 होय ॥ १ ॥ पर दरसनीकी करूया कीधी होय ॥२॥
 फल परते सदेह आण्याहोय ॥ ३ ॥ पर पाखंडी
 की पररंमा कीधीहोय ॥ ४ ॥ पर पाखंडीसें संचा
 परचा कीधा होय ॥ ५ ॥ जोमें देवसी अईयारको
 तस मिठामि दुकडं ॥ पहिला थूला प्राणाति
 पात बेरमन बरतके विषे जो कोई अतिचार लाग्या
 होय ते आलोउं ॥ रीस बसें गाढा वधन बांधा होय
 ॥ १ ॥ गाढा घाव घाला होय ॥ २ ॥ अती चार घा
 ला होय ॥ ३ ॥ अबयवना विवेद कीधा होय ॥
 ॥ ४ ॥ ज्ञात पाणीना विवेद कीधा होय ॥ ५ ॥
 जोमें देवसी अईयारको तस मिठामि दुकडं ॥ १ ॥
 बीजा थूल मृखा वाद बेरमण बरतके विषे जो कोई
 अतीचार लाग्या होय ते आलोउं, सहसातकारें क
 ही परतें कूडा आल दीधा होय ॥ १ ॥ रहस ठानी
 बात परगट कीधी होय ॥ २ ॥ इस्त्री पुरसका मर

म प्रकासया होय ॥३॥ कही परतें पाय पाडवा जणी मृषा
 उपदेस दीधा होय ॥ ४ ॥ कूना लेख लिखा होय ॥
 ॥ ५ ॥ जोमें देवसी अईयार को तस्स मिळामि दुक
 ड ॥ २ ॥ तीजा थूल अदत्ता दान बेरमन, विरतके
 विषे जे कोई अतिचार लाग्या होय ॥ ते आलोकं
 चोरकी चुराई बसत लीधी होय ॥ १ ॥ चोरकुं
 साहज दीधा होय ॥ २ ॥ राज बिरुद्ध कीधा होय ॥
 ॥ ३ ॥ कूडा तोल कूडा माप कीधा होय ॥ ४ ॥ बस
 तु मांहि जेल संजेल कीधा होय ॥ ५ ॥ जोमें देव
 सी अईयारको तस्स मिळामि दुकडं ॥ ३ ॥ चौथा
 थूल मेहुणान, बेरमण वरतके विषे जे कोई अतीचा
 र लाग्या होय ते आलोकं ॥ इतरिया थोडा कालकी
 राखीसैं गमण कीधा होय ॥ १ ॥ अपारि गहियासैं
 गमण कीधा होय ॥ २ ॥ अनंग क्रीडा कीधा होय ॥
 ॥ ३ ॥ पर विवाहना नाता जोडाय होय ॥ ४ ॥
 काम जोगकी तिव्र अनिलापा कीधा होय ॥ ५ ॥
 जोमें देवसी अईयारको, तस्स मिळामि दुकडं ॥ ६ ॥
 पांचमा थूल परिग्रह परिमान बेरमन विरत के विषे
 जो कोई, अतिचार लाग्या होय ते आलोकं खेत्र ब
 थु प्पमाणार्इ कम्मे ॥ १ ॥ हिरन सुवन पमाणार्इ
 कम्मे ॥ २ ॥ धन धान पमाणार्इ कम्मे ॥ ३ ॥ दोप
 द चोपद पमाणार्इ कम्मे ॥ ४ ॥ कुंवि धात पमाणार्इ
 कम्मे ॥ ५ ॥ जोमें देवसी अईयारको तस मिळामि

दुकडं ॥ ६ ॥ ठठा दिस परमाण वेरमन विरतके वि
 पे जो कोई अतीचार लाग्या होय ते आलौउं ॥ उंची
 दिस पमाणई कम्मे ॥ १ ॥ नीची दिस पमाणई क
 म्मे ॥ २ ॥ तिरिबी दिस पमाणई कम्मे ॥ ३ ॥ पे
 त्रवधायाहोय ॥ ४ ॥ पंथना संदेह पडा आगें चलां हो
 य ॥ ५ ॥ जोमें देवसी अईयारको तस मिळामि दुकंरुं
 ॥ ६ ॥ सातमा जोग परिजोग वेरमन वरतके विपे जे
 कोई अतीचार लाग्या होय ते आलौउं ॥ पचखान
 उप्रांत, सुचितनों आहार कीधा होय ॥ १ ॥ सुचित
 पढी बधनो आहार कीधा होय ॥ २ ॥ अपकना आ
 हार कीधा होय ॥ ३ ॥ दुपकना आहार कीधा होय
 ॥ ४ ॥ तुठ वसतु ना आहार कीधा होय ॥
 ॥ ५ ॥ जोमें देवसी अईयारको तस्स मिळामि दुकरुं
 ॥ ७ ॥ पंदरा करमादान समणो वासएणं जाणीय
 वा नसमारीयवा तजहा ते आलौउं ॥ इंगाल कम्मे ॥
 ॥ १ ॥ वण कम्मे ॥ साडी कम्मे ॥ ३ ॥ जाडी कम्मे
 ॥ ४ ॥ फोडी कम्मे ॥ ५ ॥ दंत बणिजे ॥ ६ ॥ लख
 बणिजे ॥ ७ ॥ रस बणिजे ॥ ८ ॥ विस बणिजे ॥ ९ ॥
 केस बणिजे ॥ १० ॥ जंतु पिलणीया कम्मे ॥ ११ ॥
 नलंबणीया कम्मे ॥ १२ ॥ दवग दावणीया कम्मे ॥ १३ ॥
 सरदह तलाव सोसणीया कम्मे ॥ १४ ॥ असई जन
 पोसणीया कम्मे ॥ १५ ॥ जोमें देवसी, अईयारको त
 स्स मिळामि दुकडं ॥ ७ ॥ आठमा अनरथा दंड वे

रमन बरतके विषे जो कोई अतिचार लाग्या होय
 ते आलौउं, कंदरप्पनी कथा कीधी होय ॥ १ ॥ नंब
 चेष्टा कीधी होय ॥ २ ॥ मुखारी वचन बोला होय
 ॥ ३ ॥ अधिकरण जोनी मुका होय ॥ ४ ॥ उप
 जोग अधिका बधाया होय ॥ ५ ॥ जोमें देवसी अई
 यारको तस्स मिञ्चामि दुकडं ॥ ८ ॥ नवमा समायक
 विरतके विषे जो कोई, अतीचार लाग्या होय ते
 आलौउं मन १ वचन २ कायाका ३ जोग पाकव
 ध्यान परवरताया होय समायकमें समता न कीधी हो
 य ४ विन पूर्णें पारी होय ५ जोमें देवसी अईयार
 को तस्स मिञ्चामि दुकडं ॥ ९ ॥ दसमा दिसा बिगा
 सी बरतके विषे जो कोई, अतीचार लाग्या होय ते
 आलौउं, निवी नूमिका बाहरथी बस्तु अनाई होय
 १ अथवा भोकलाई होय २ सबद करी जनाई होय
 ३ रूप करि दिषाई होय ४ पुदगल नाखीनें अपना
 आपा जणाया होय ॥ ५ ॥ जोमें देवसी अईयारको तस्स
 मिञ्चामि दुकडं ॥ १० ॥ ग्यारमा पन्निपुन पोपद
 विरत के विषे जो कोई अतिचार लाग्या होय ते
 आलौउं ॥ अपनीलेहिये, दुपडीलेहिये सिञ्जा सं
 थारा ॥ १ ॥ अप्पडी लेहीये दुप्पडी लेहीये उच्चार पा
 ल बण नोमिका ॥ २ ॥ अप्पमंजिए दुप्प मंजिए
 सिञ्जा संथारा ॥ ३ ॥ अप्प मंजिए दुप्पमंजीए उच्चा
 एपास बणनोमिका ॥ ४ ॥ पोसह मांहि जो बि

कथा परमाद कीधा होय ॥ ५ ॥ जोमें देवसी
 अईयारको, तस्स मिञ्जामि दुक्कं ॥ ११ ॥
 वारमा अतित्थ सविजाग वरतके विखे जोकोई अ
 तीचार लाग्या होय ते आलोउं ॥ सुज्जती वसतु सु
 चित उपर मुकी होय ॥ १ ॥ सुचित करढांकी होय
 ॥२॥ काल अतिक्रमा होय ॥३॥ अपनी वसतु पारकी
 कीधी होय ॥ ४ ॥ मउर जवे दान दीधा होय ॥ ५ ॥
 जोमें देवसी अईयार को तस मिञ्जामि दुक्कं ॥१२॥
 संलेपनाके विखे जो अतीचार लाग्या होय ते आलो
 उं ॥ इहलोगा संसपउंगा ॥ १ ॥ परलोगा संसप
 उंग ॥ २ ॥ जीवीयासंसपउंगा ॥ ३ ॥ मरना संसप
 उंगा ॥ ४ ॥ कामजोगा संसपउंगा ॥ ५ ॥ जोमें देव
 सी अईयारको तस्स मिञ्जामि दुक्कंडं ॥ चउदाग्यानके
 ॥ पांचसमकतके ॥ साठ वारा वरतांके ॥ पंदराकरमादा
 नके ॥ पांचसंलेपनाके ॥ ए निन्याणवे अतिचार मां
 हिं कोई दोष पाप लाग्या होय जोमें देवसी अईयार
 को तस्स मिञ्जामि दुक्कं ॥ अठारे पाप थानक ते
 आलोउं प्राणातिपात १ मृपाबाद २ अदत्तादान ३
 मैथुन ४ परिग्रह ५ क्रोध ६ मान ७ माया ८ लोचन राग
 ९ द्वेष ११ कलह १२ अनिख्यान १३ पिशुन १४
 परपरवाद १५ रत्तारत्त १६ मायामोसो १७ मिथ्या दं
 सन सल्ल १८ ए अठारे पाप थानक सेवेहोय १ से
 वाये होय २ सेवता प्रते अनुमोद्या होय ३ जोमें दे

वसी अईयारको तस्स मिठामि दुकडं ॥ पच अनुव्रत
 मूल गुन सात सिपा वरत उतरगुन ॥ इनविषे कोई
 अतिकरम ॥ बतीकरम अतीचार अणाचार नाण
 तें अजाणतें ॥ कोई दोष पाप लाग्या होय जोमें देव
 सी अईयारको तस मिठामि दुकडं ॥ इठामि ठामि
 आलोइयं जोमें देवसी अईयारकोसर्व पाठ कहणा ॥
 सब सवदेवसीयं दुचासियं दुचितियं दुचिठियं हिवे
 समणो वासग सूत्र जणोमि बंदना करिकहे ॥ श्रावक
 सूत्र पढनेकी आग्या ॥ नवकार कहना ॥ करेमिजंते
 का पाठ कहना ॥ चत्तारिमंगलं॥अरिहंतामंगलं॥सिद्धा
 मंगलं॥साधु मंगलं केवली पन्नते धम्मो मंगलं॥ चत्ता
 रि लोगुत्तमा॥ अरिहंता लोगुत्तमा॥सिद्धा लोगुत्तमा॥
 साधु लोगुत्तमा॥केवली पन्नते धम्मो लोगुत्तमा॥चित्तरि
 रि सर्ण पवज्जामि ॥ अरिहंता सर्ण पवज्जामि ॥ सिद्धा
 सर्ण पवज्जामि ॥ साधु सर्ण पवज्जामि ॥केवली पन्नते
 धम्मो सर्ण पवज्जामि ॥ इठामिठामि पडकमीयो जो
 में देवसी अईयारको सरव पाठ कहणा॥इठ्ठाकारेणका
 पाठ कहणा॥ आगमें तिबिहे पन्नते का पाठ कहणा॥
 दरसन समकत परमथ सथवोवा सुदिठ परमथ से
 वणा वावि॥वावन्न कुदंसन बज्जणाए ॥ ए समत्त सद्वह
 णा ॥ येहवा समकतना ॥ समणो वासएणं, समत्त
 स पंच अइयारा ॥ पियाळा जानियवा नसमारीयवा,
 तंजहा ते आलोउं ॥ संख्या ॥ कंख्या ॥ विदिगिंठा

॥ पर पाखंडीकी प्रसंसी, पर पाखंडीसंथोवा ॥ जोमें दे
 वसी अइयारको, तंस्समिठामि दुकडं ॥ १ ॥ पहि
 ला अनुविरत थूलाठी पानाईयायिउ वेरमणं तंस्सजी
 वावेइंतीइद्री, उइद्री पंत्तइद्री जानी पूगी संकल
 पीसिगा सबंधीसिरीर माहिला पीडाकारी सअपरा
 धी तिसउपरींतनिरअप्राथी ॥ आकूटीने हणवांनी वु
 दसे हणवांतोउलपचखाण ॥ १ ॥ जाव जिवाय दुविहं
 ॥ तिविहेणं ॥ नकरेमि नकारवेमि ॥ ॥ मत्तसी वायसा
 कायसा येहवा पहिला थूल परनातपीता वेरमन
 विरतनां पंचअइयारा पिवाला जातीयवा तंस्समी
 रीयवा तंजहाते अलोउं ॥ वंधेवा वहे ववी वेय अ
 ईनारे नातपाणी वावेये जीमें देवसी अइयारको, तं
 स्समिठामि दुकडं ॥ १ ॥ तीजा अनुविरत थूलाठीमुसो
 धियाउवेरमणाकडाली, गीवाली, जोमाली, थापनमो सा
 मोटकीकुडीसाख ॥ १ ॥ इत्यादिक मोटका कुठ, बोल
 नेका पंचखांत जावजीवाए दुविहं तिविहेतं नकरेमि
 नकारवेमी मिनसा वायसां कायसा येहवा तीजा थूल
 मृप्रावादे वेरमणं विरतना पंचअइयारी पिवाला जा
 णियवा तंस्समीरीयवा तंजहाते अलोउं ॥ सहसानखा
 ने रहसानखाने ॥ सदारमतजेये मुसो नयेसे कूडले
 हंकरने ॥ जोमें देवसी अइयारको तंस्समिठामि दुकडं
 ॥ २ ॥ तीजा अनुविरत थूलाउ अदिनीदाणउ
 वेरमणं खातरखणी ॥ गाठडी बोडी २ तालापडंकची ३

बाटपाणी ४। पंडी विसंतू मोटकी धनातीजाणी ५। इत्या
 दिक मोटका अदत्तादान सिगा संबंधी पडी विसंतु नि
 रंजरमी इत्यादिक मोटका अदत्ता दान लेवानो पत्र
 खानं ॥ जावजिवाए दुबिहं तिबिहेनं, नकरेमि नकार
 वेमी मनसा वायसा येहवा तीजाथूल अदत्ता
 दान विरमन विरतना ॥ पंच अईयारा पियाला जानी
 थवा नसमारीयवा ॥ तंजहा ते आलोजं ॥ तेनाइरे तक
 रंपणे विरुधरजाई । कम्मे कुमंतोले कूडमाणे तप्प
 डी रुवग विबहारे ॥ जोमें देवसी अईयारको तस्स
 मिळामि दुकडं ॥ ३ ॥ चौथा अणुवरत थूलाउं मेहु
 णाउं वेरमाणं सदार संतोस ॥ अवसेसा मेहुण सेवा
 नो पंचखाने जावजिवाये देवता देवी संबंधी दुबिहं
 तिबिहेणं न करेमी नकारवेमी मनसा वायसा का
 यसा तथा मनुष्य तिरजं च संबंधी इकबिहं इकबीहे
 णं नकरेमी कायसा येहवा चौथा थूल मेहुणका वेरम
 ण विरतना पंच अईयारा पियाला जाणियवा नस
 मारीयवा तंजहां ते आलोजं ॥ इत्तरीया परिगहिया रा
 मणे अपरी ग्रहिया गमणे अनंग कीडा परविबहक
 रणे कामजोगतिवा निलासा जोमें देवसी अईयारको
 तस्स मिळामि दुकडं ॥ ४ ॥ प्राचमाथूल परिगहाउं
 वेरमाणं ॥ पेत्रवथूनो यथा परिमाणं ॥ हिरन सोवननो
 यथा परिमाणं ॥ धन धाननो यथा परिमाणं ॥ दोपद
 चोपदनो यथा परिमाणं ॥ कुविधातनो यथा परिमा

ए येहवा यथा परिमाणकीधावे तेउपरांत पोताना
 करी परिग्रह राखवाना पचखाण ॥ जाव जिवाए इक
 विहं तिविहेणं नकरेमि वयसा कायसा येहवा पांचमा
 थल परिग्रह परिमाण वेरमेन विरतना पंच अईयारा
 पियाला जानियवा नसमारीयवा तंजहा तेअलाउं ॥
 पेत्रवथ पमाणाई कम्मे हिरन सोवनपमाणाई
 कम्मे ॥ धनधान पमाणाई कम्मे ॥ दोपद
 चौपद पमाणाई कम्मे कुविधात पमाणाई कम्मे ॥
 जोमेंदेवसी अईयारको ॥ तस्समिञ्चामि दुकडं ॥ ५ ॥
 ठा दिस विरत उहदिसनो जथा परमान ॥ अधो
 दिसनो जथा परिमाण तिरगी दिसनो यथा परिमाण
 येहवा यथा परिमाण कीधावे ते उप्रांठ पोतानी सइ
 णा कायाकरी जाईने ॥ पाच आश्रव सेवानो पचखान
 जाव जिवाए दुविहं तिविहेणं नकरेमि ॥ नकारवेमी
 मनसा वयसा कायसा ॥ तथा ॥ मांहि रहींने इक
 वीहं तिविहेणं नकरेमी मनसा वायसा कायसा येहवा
 ठा दिस वेरमाण विरतनां पंच अईयारा पियाला
 जाणियवा ॥ नसमारीयवा तंजहा तेअलाउं ॥ उहदि
 स पमाणाई कम्मे अधो दिस पमाणाई कम्मे तिरगी
 दिस पमाणाई कम्मे खेतर बुद्दी सयंतरधा ॥ जोमें
 देवसी अईयारको तस्स मिञ्चामि दुकडं ॥ ६ ॥ सातमा
 उपजोग परिजोग विरत विहंपचखायमाने ॥ उल्ल
 णियावीहं ॥ १ ॥ दंतनवीहं २ फलविहं ३ अजंगण

विहं १४ उवद्वेण विहं १५ मंजुण विहं १६ अथ विहं १७
 विलेवण विहं १८ पुष्कविहं १९ अजरन विहं १९० धूप
 विहं १९१ पेजविहं १९२ नखण विहं १९३ उवद्वेण विहं
 १९४ सुप विहं १९५ विधे विहं १९६ साग विहं १९७
 मंहोर विहं १९८ जीमन विहं १९९ प्राण विहं २०० मु
 खवासविहं २०१ बोहन विहं २०२ ॥ पणही विहं २०३
 संयन विहं २०४ सुचित विहं २०५ दरव विहं २०६ पो
 ताना भोग विना हिरया करी तथा सय विकारी
 संबद रूपादिक पदारथ उदारनि जीवा जीवार्जो पच
 खान जीवा जीवाए दुविहेति विहेण न करेमि न करिवेमि
 मनसा वयसा कायसा एहवा सातमा भोग परिभोग ॥
 दुविहे पन्नते ॥ तजहा भोयनाय ॥ कम्मोय ॥ भोयना
 य ॥ वासएण ॥ पच अइयारको पियाला जानियवा नस
 मारियवा ॥ तजहा त असुचित आहार सुचित प
 डी बध आहारो अपालोसही नखेनाया ॥ १ ॥ दोला
 सही नखणीया ॥ तुवासहा नखणीया ॥ २ ॥ जीमे देव
 सी अइयारको तरस मिठामि दुकम ॥ ७ ॥ कम्मो
 य पन्नरस्स कम्मोदाणाय ॥ जाणियवा ॥ नसमारी
 यवा तजहा त आलाज इंगालकम्म ॥ १ ॥ जाव अ
 सई जन पोसणीयाकम्म ॥ १५ ॥ जामे देवसी अइ
 यारको तरस मिठामि दुकड ॥ ७ ॥ आठमा अनर
 थादरु ॥ चउ बोहे ॥ पन्नते ॥ तजहा ॥ अवजाय च
 रिय ॥ पनायचरिय ॥ हिसप्पयाण ॥ पावकम्मो व

यस्स ॥ येहवा अनरथा देड सेवानो पचखान ॥ जा
 वाजिवाये दुविहांतिविहेण ॥ नकरेसि नकारवेमी मन
 सा वायसा कायसा येहवा आठमा अनरथादरु वेर
 मन विरतना पचअईयारणी ॥ पियाला जानीयवा न
 समारीयवा ॥ तंजहा तिते आलोउं ॥ कंदपे ॥ कुकुई
 ए ॥ मोहरीए ॥ संजुता अहिगरणे ॥ जोग परिजोग
 अईरते ॥ जोमें देवसी, अईयारको तस्स मिठामि दुक
 ढ ॥ ८ ॥ दसमा दिसा विगासी वरतना दिन दिन प्र
 रते परनातथी प्रारंजने परवादिक ठहंदिस मांहि ॥ जे
 तली नमिका मोकली राखीवते ॥ उपरात सडवा का
 याकरी ॥ जाईने पांच आश्रक सेवानो पंचखान जा
 व अहोरत्त ॥ पुजवास्वामी दुविहंतिविहेण नकरेसि
 नकारवेमी मनसा वायसा कायसा तथा जेतली न
 मिका मोकली राखीव ॥ तिसाहि जे दरवादिकर्ता ॥ म
 रजादा कीधावे ॥ ते उपरात जोग परिजोग जोगवा
 ॥ निमतं जोगवानो पचखान जाव दिवस पुजवा
 स्वामी इकवीहंतिविहेण नकरेमी मनसा वायसा का
 यसा एहवी सरंधना परुपना फरसना करु तिवारैसु
 घा येहवा दसमा दिसा विगासी वरतना पंच अईया
 रा पियाला जानीयवा नसमारीयवा तंजहा तिते आलो
 उं आणमणी पउगे पेसमणे पउगे ॥ सदाणुवाये ती रू
 वाणवाए ॥ वहिया ॥ पोगले परिखेवे जोमें देवसी
 अईयारको तस्स मिठामि दुकनं ॥ १० ॥ इयारमा

पद्मीपुनः पोषदः विरतः चउविहंपी- आहारं असणं
 पाणं खायमं सायमं नो पचखान- अत्रंन- सेवानो पच-
 खाणं उमुकमणी सेवानो पचखाण- माला विले वणतो
 पचखाणः ससतर- मूसलादिक- सावज- जोगनों पच-
 खान- जाव- अहोरत्तं- पुजवास्वामी दुविहं तिबिहेणं- न-
 करेमी नकारवेमी मनसा- वायसा- कायसा- येहवी सर-
 धना- परूपना- फरसना- करुं तिवारे- सुध ॥ येहवा- म्या
 रमा- पोषध- बरतना- पंच- अईयारा- पियाला- जानीयवा-
 न- समारीयवा- तंजहा- ते- आलोउं- अप्पडीलेहिय- दुप्पडी-
 लहियेसिजा- संधारा ॥ अप्पडीलेहिय- दुप्पडीलेहियउच्च-
 रं- पास- वण- नोमिका- अप्पमंजीए- दुप्पमंजीए- सिज्या- सं-
 थारा ॥ अप्पमंजीए- दुप्पमंजीए- उच्च- र- पास- वण- नोमि-
 का ॥ पोसह- सम- अणुपालणया- जोमें- देवसी- अईयारका-
 तस्स- मिज्जामि- दुकडं ॥ ११ ॥ बारमा- अतिथ- सविजागी-
 वरत- समणे- निगंथे- फासुएसणीजेणं ॥ असणं १-
 पाणं २- खायमं ३- सायमं ४- वत्थं ५- पडिग्गहं ६- क-
 वलं ७- पाय- पुबणं ८- पडिहारे ॥ पीढ, ९- फलग- १०-
 सिज्या ११- संधारा १२- वसही १३- नेसेजेणं १४- पडि-
 लाजैमाणे ॥ विहरामि- येहवी- सरधना- परूपना- फरस-
 ना- करुं- तिवारे- सुध- अहवा- नारमा- अतिथ- सविजा-
 ग- विरतना- पंच- अईयारा- पियाला- जानीयवा- तंजहा-
 ते- आलोउं- सुचितं- निव्वेणीया- सुचितपहणीया- कालाई-
 कम्मे- परोवयसे- मठरीयाये- जोमें- देवसी- अईयारको- त-

स्सेमिहामि दुकंडं ॥ १२ ॥ अपठिमा मरणं तीय संलेहणा
 कृमणा आराहणा पोपदमाला पुंजी पुजीने ॥ उच्चारपा
 स-बणजोमिका पमिलेही पमिलेहीने ॥ गमणा गमणे
 पडकम्मी पडकम्मीने ॥ दाजादिक संथारा संथरी संथरी
 ने दाजादिक संथारा दुरही दुरहीने ॥ पर्व तथा उत्तर
 दिस पलंकादि ॥ आसण बैसी बैसीने करयल संप
 गहियं सिरसावतं मत्थए अजली कट्टु एवं बयासी ने
 मोथुणं अरिहंताणं ॥ जगवंताणं ॥ जाव संपत्ताणं ॥
 इम ॥ वरतमान ॥ तीरथंकर ॥ तथा अनंते सिद्धजी
 ने ॥ नमस्कार करीने ॥ पोताना धरमांचार्जजीने न
 मस्कार करीने ॥ पूरवें जे विरत आदरघावे ॥ ते आली
 ई पडकम्मी निंदी साधु प्रमुख चार तीरथ खमाईने
 ॥ निसल्लथईने ॥ सब पाणाईबायाउ पचखामी ॥ सब
 मुसावायाउ पचखामी ॥ सब अदिनादाणाउ पचखामी
 सबमेहणाउ पचखामी ॥ ॥ सब परिगाहाउ पचखामी
 सब कोहं माणं माया लोचं जाव ॥ मिठा ॥ दंसण स
 ल्ल ॥ अकरणीळं जोगं पचखामी ॥ जावजिवाए ॥
 तिबिहं तिबिहेणं ॥ नकरेमी ॥ नकारवेमी करंतं पि
 नाणु जाणामी मनसा वायसा कायसा इम अठारा
 पाप-थानकते पचखीने सब असनं पाणं खाइमं सा
 इमं पचखामी जावजिवाए इमचार आहार-पचखीने
 जंपीयं इमं सरीरं इठं ॥ कंतं ॥ पीयं मणुणं ॥ मणा
 मं ॥ धिळं बेसासियं समयं ॥ अणुमयं बहुमयं ॥ नं

डंकरुं गं सिमानं ॥ खण ॥ करुंग जुयं ॥ माणं सीय
 ॥ माण उरेंहं ॥ माण खुहा ॥ माण पिवासा ॥ माण वाला
 माण चोरा ॥ माण डसमसगा ॥ माण वाइया पोता
 या कप्फिया सर्व सन्निवाइया विविहा रोगायका परी
 सा उवसग्गा ॥ फासा फसाति इम्म पयिण चरिम्महि
 जसास निसासाहि वासरामा तिकड्ड इम सरार वास
 रामानि काल अणव कख माण विहरइ ॥ यहवा सर
 धना ॥ परुपणा फरसना करुतवार सुध एहवा अ
 पविमा सरणति सलेहणा जूसणा आराहणाना पच
 अइयारणा पिप्याला जानीयना नसमारीयवा तंजहा
 ते आलोज इहलोणा संपपतगा पारलोणी संसपपतगा
 जीवीया संसपपतगा मरणा संसपपतगा कामाजोगा
 संसपपतगा ॥ मामुजहुज मरणतेना जोमै दिवसी अ
 इयारकोत समिठामि दुकनं ॥ १ ॥ इम समकत ॥ पर्व
 क वारा विरत सिलेखना सहित इनविखे कोई अती
 करमा वती करमा अती चार अणो चारणा जीणते ॥ अ
 जीणते ॥ कोई दोप पापलीगा होय ॥ जोमै दिवसी अ
 इयारको ॥ तस्समिठामि दुकडंगा १ ॥ अठारे पापका
 पाठ कहणा ॥ तस्सघम्मरस केवली पन्नतस्स अजुठि
 योमि आराहणाए ॥ विरोमि विरहिणाए ॥ बिदामी जिन
 चोवासं ॥ इति वडे वारा वरत संपूर्णी ॥ १ ॥ फिर
 पाचो पदाको वदना कहणा ॥

॥ अथ पांच पदोंक वंदना लिख्यते ॥

एमो अरिहंताणं ॥ एमो कहता नमस्कारहजो अरिहंताणं कहता अरिहतजीने ॥ अरिहतजी कहवाठ चौतीस अतिसै पैतीसवाणा करी विराजमान चउस ठ इंद्रोके पुजनीक एकहजार आठ लक्षणा के धरण हार अठारा दोष रहित वारे गुण करी विराजमान जघन बीस तीर्थकर उत्कृष्ट एकसोसाठ तथा एकसो सत्तर तीर्थकर जघन दाय कोरु केवली उत्कृष्ट नवकोड केवली पाच महाविदेह क्षेत्रामाहि जैवता वरत मान काले विचरे व अनंता ज्ञान अनंता दरसन अनंता चारित्र्य अनंता तप अनंता बलवीर्य पांच अनंता के धरणहार जव्य जीवांके त्यारण हार हाथजोडी मान मोडी मनवचनकायाकरी यहवा श्री अरिहतजी महा राज प्रते हमारी वंदना नमस्कार त्रिकाल त्रिकाल तीखुत्ताक पाटसे १००८ बार बारंवार मथएण वदामो हुजो ॥ १ ॥ एमोसिद्धाणं ॥ एमो कहता नमस्कार हुजो सिद्धाणं कहता सिद्धजीने ॥ सिद्धजी कहवाठ निरंजननि राकार ज्योति सरूप ॥ आठ करम खपाई सिद्ध सिद्धालय पहोचा इकतिस अतिसै इकतीस गुणकरी विराजमान पंदरे जेदी सिद्ध सोद्धा जिज्ञासिद्धा १ अजिन सिद्धा २ तित्थसिद्धा ३ अतित्थसिद्धा ४ सय लिंगसिद्धा ५ अनलिंग सिद्धा ६ अहीलिंगसिद्धा ७ स्त्रीलिंग सिद्धा ८ पुरस लिंगसिद्धा ९ नपसक लिंग

सिद्धा १० स्वयंबुद्धी सिद्धा ११ प्रत्येक बुद्धीसिद्धा १२
 बुद्धवोहि सिद्धा १३ एक सिद्धा १४ अनेकसिद्धा १५
 पांच वर्ण नही पांचरसनही पांचसंठाण नही टफरसन
 ही रंगंधनही ३ वेद नही काया नही करमनही ओता
 रनही अलेसी अवेदी अजोगी अकपाई जरानही ज
 नम नही मरण नही रोगनही सोगनही विजोगनही
 ५ ज्ञानावरणी करम खय कीया अनंता केवलज्ञान पा
 या दरसनावरणी कर्मखय कीया अनंता केवल दर्सन
 पाया २ वेदनी करम खय कीया व्याधपीनासे रहित
 हुये २ मोहनी कर्म खय कीया द्वायक सम्यक्तकेधणी
 हुये च्यार आऊखा कर्म खय कीये अमूरती हूए दो
 गोत्र कर्म खय कीये अगुरलघुहुए पांच अंतराय क
 र्म खय कीये अनंत सक्तकेधणी हुये एहवा श्रीसिद्धजी
 महाराज प्रते हमारी वंदना नमस्कार त्रिकाल त्रिकाल
 तिखुतोके पाटसे १००८ वार वारंवार हुजो ॥२॥ ए
 मो गणधराणां नमस्कार करूं गणधरजी महाराज प्रते
 ४ ज्ञान १४ पूर्वो के पाठी सूत्रार्थके गूथनाहार २४ ती
 र्थ करोंके १४५२ गणधरांजी महाराज प्रते हमारी
 वंदना नमस्कार त्रिकाल त्रिकाल तिखुतोके पाठ पढ
 कर १००८ वारंवार हुजो ॥ एमो आयेरियाणं॥ नमो
 कहता नमस्कार हुजो आयरीयाणं कहता आचार्य
 जीने आचार्यजी केहवाले पांच आचार आपपाले ओ
 रोंको पलावे ज्ञानाचार दरसन आचार चारित्रा चार

तप आचार बलवीर्य आचार पाच महाव्रत पालें ५ इं
 द्री जीतें ४ कपाय टालें ९ वाड ब्रह्मचर्य पालें ५ सुम
 ति ३ गुण करी सहित ३६ गुण करी विराजमान ५६
 बोलोंके धरण हार आठ आचार्यजीकी संपदाके धा
 रनहार गड नायक जिन संघ टोला परवरतावें यह
 वा श्री आचार्यजी महाराज प्रते हमारी बंदना नम
 स्कार तिखुत्तोके पाटसे १००८ वार त्रिकाल त्रिका
 ल हुज्यो ॥ ३ ॥ एमो धर्मायरीयस्स नमस्कार करूं
 पोताना धर्म गुरु आचार्यकुं ते श्रीपरम पंडित
 जिन बाणीको प्रकास कर मिथ्यात तिमिरको
 टालें जिनधर्मको दिपावें सम्यकतरतनकेदातार
 धर्म उपदेसके उपकार सुध मारगधर्मका बतावें यह
 वा धर्मगुरु वरतमान श्री ऋखराजजी महाराज प्रते
 हमारी बंदना नमस्कार तिखुत्तोके पाटसे १००८ वा
 र वारंवार हुज्यो ॥ एमो उवजायाणं ॥ नमो कहता नम
 स्कार हुज्यो उवजायाणं कहता उवजायजीने उवजाय
 जी केहवावें २५ गुण करी विराजमान आचारांग १ सू
 यगगांग २ टाणांग ३ समवायांग ४ जगवती ५
 गिनाता ३ उवासगदसा ७ अंतगढ ८ अनुत्रोव
 चाई ९ प्रश्नव्याकरण १० विपाक ११ उवाई, राय
 प्पसेणी २ जीवानीगम ३ पन्नवणा ४ जंबुद्वीव
 पन्नती ५ चंद पन्नती ६ सुर पन्नती ७ काप्पिया ८ काप्पव
 डे सिया ९ पुफिया १० पुप्फ चूलिया ११ वन्हिदसा

१२ ग्यारा अंग बरि उपांग च्यार मूल सूत्र दसवीकाल
 क १ उत्तराध्ययन २ नदी ३ अणुयोगद्वार ४ उचार
 बंद सूत्र दशाश्रुत स्कंध १ व्यवहार २ वृहत्कल्प ३
 नसीत ४ आविश्यक सूत्र १४ पूर्वके पाठी द्वादशांग
 वाणिके धरणहार आपपठे औरोंको पढावे एहवाश्री
 उपाध्यायजी प्रते हमारी बंदना नमस्कार त्रिकाल
 त्रिकाल तिखुत्तो के पाटसे १००८ वार वार वार हूज्यो
 ॥४॥ एमो लोए सब साहूणं नमो कहता नमस्कार हूजो
 लोए कहतां डाईद्वीप पंदरां क्षेत्रां मांहिं सब साहूणं
 कहता सर्व साधुजीनें सर्व साधुजी केहवाबे जघन
 दाय हजार क्रोड साध साधवी उत्कृष्टे नव हजार
 कोड साध साधवी बहकायाके दियाल बहकाया के
 रिठपाल बह कायाके पीहर ५ महाव्रत पाले ५ इंद्री
 जीते ४ कषायटाले ९ बाड ब्रम्हचर्य पाले मनसच्चे
 जावसच्चे जागसच्चे करणसच्चे मनसम धारणया का
 यसमधारणया वयसमधारणया नाण संप्पन्ने दंसण
 संप्पन्ने चारित्र संप्पन्ने खिमावंत वैराग वंत सीतादिक
 वेदना सहै मरणांति उपसर्ग सहै पाच सुमते सुम
 ता तीनगुप्ते गुप्ता ४२ दोपाके टालनहार २२ परी
 साके जीतन हार १० विधिजती धर्मके धारनहार अ
 त अहारी पंत अहारी अरस अहारी विरस अहा
 री लुक्क अहारी तुळ अहारी अंतजीवी पंतजीवी अ
 रसजीवी विरसजीवी लुक्खजीवी तुळजीवी यहवा सर्व

साधसाधधीजी प्रते हमारी बंदनां नमस्कार त्रिकाल
 त्रिकाल तिखुतोके पाठसे १००८ वार वारंवारहुज्यो ॥
 ॥ ५ ॥ दोहा ॥ अनंत चौबीसी जे नमं, सिद्ध अनंत
 कोड ॥केवल ज्ञानी थेवरसदो, बंदु बेकर जोमा ॥ १ ॥ दो
 य कोनि केवलधरग, विहरमान जिनबीसा ॥सहसजुगल
 कोटिनमु, साधनमुनिसदीसा ॥ २ ॥ जोमें जीवविराहिया, से
 वेपाप अठार ॥ प्रचु तुहारी साखसे वारवार धिकार ॥ ३ ॥
 सातलाख पृथवी काय ७ लाख अप्पकाय ७ लाख
 तेजकाय ७ लाखबाजकाय १० लाख प्रत्येक विन्स्प
 ती १४ लाख कंदमूलकी जाति दीयलाख बेइद्री २ ला
 ख तेइद्री २ लाख चजरिद्री ४ लाख तिर्यच पचेद्री
 ४ लाख देवता ४ लाख नारकी १४ लाख मनुपकी
 जात ४ गति एवं ८४ लाख जीवा जोनसे वारंवार खि
 माजं ॥ गार्था ॥ खामेमी सवेजीवा सवेजीवा खम्म तुम्मे ॥
 मितिमे सवे न्येसु वैरमज्जं नकेणइ ॥ ३ ॥ एवं महं आ
 लोइयं, निदियं गिरहियं दुगंभियं ॥ सवं तिविहेण पडि
 कत्तो, वंदामी जिण चौबीसं ॥ २ ॥ चार आवसग पूरा
 हुवा पांचमे आवसग की आज्ञा ॥ इठामि खिमास
 मणो का पाठ दोबेर कहणा, आवस्सही इठकारेण
 ॥ सदेसह जगवान् देवसी पायछित, विसोधनां अर
 थं करेमी कावसगं ॥ इठामि ठामीका पाठ कहणा,
 तिसोत्तरीका पाठ कहणा ॥ लोगस्सका ध्यान करणा
 ॥ नवकार कह कर ॥ ध्यान पारणा ॥ खुली लोगस्स

पठणा ॥ पांच आवसग पूराहूवा ॥ ठठा आवसगकी
 आज्ञा ॥ इठामि खिमासमणा दो बार कहणा ॥ प
 चखान करणा ॥ समायक एक ॥ चौवीसस्था दो
 बंदना तीन ॥ पडकोंनाचार कावसग्ग पांच ॥ पचखां
 न बह ॥ इन विषे कोई दोष पाप लाग्या होय ॥ जो
 में देवसी अइयारको तसमिठामि टुकडं ॥ दो नमो
 थुणं पढें ॥ इति श्रावग पडिकमणा संपूर्ण ॥

॥ अथ चौवीसी लिख्यते ॥

श्री ऋपच अजित संजव अजिनंदन ॥ निरंजन
 निराकारो ॥ सुमत पदम सुपारस चंदाप्रभु ॥ करग
 ये खेवापारो ॥ श्री जिन मुऊनें पारउतारो, म्हारी आ
 वागमण निवारो ॥ श्री जिन मुऊनें पार उतारो, अजी में
 सेवगचरणारो, श्री जिन मुऊनें पारउतारो ॥ एटेक ॥ १ ॥
 सुवध सीतल श्री अंस वासपूज ॥ मुकत तणा दा
 तारो ॥ विमल अनंत धरम शांति जिनेश्वर, सांति
 तणा करतारो ॥ श्री जिन ० ॥ २ ॥ कुंथ अरहे मल्लि
 मुनसुवृत्तजी ॥ जगत्यारण संसारो ॥ नमीय नेम पा
 रस महावीरजी ॥ सासनरा सिरदारो ॥ श्री ० ॥ ३ ॥ ग्या
 राही गणधर वीस विहरमान ॥ साधसती गुणधारो ॥
 अनंत चौवीसीनें नित प्रत बंदुं ॥ तो नमस्कार बा
 रंबारो ॥ श्री ० ॥ ४ ॥ रागेद्वेष दोनों वैरीजीते, अष्ट
 करम कीये चारो ॥ केवल ज्ञान अरु केवलदरसन,
 अष्टगुणतुम लारो ॥ श्री ० ॥ ५ ॥ तिरन त्यारन तुम

विरुद्ध सुनीनें, सरना लीयामें तुम्हारो ॥ ऋष लाल
चंदकी एही बीनती, तो मेरा करो निस्तारो ॥ श्री जिन
मुऊनें पार उतारो ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ महावीर जिनस्तवन लिख्यते ॥

श्री सिद्धार्थकुल सिणगार ॥ तिसला नंदन जग
त आधार ॥ स्वामी सुंदर सोवन बान ॥ सरणतुम्हारो
श्री वृद्धिमान ॥ १ ॥ तुमनामें लहिये संपदा, तुमना
मे मनबबंत तमुदा ॥ तुम नामें दिन दिन कल्याण ॥
सर्ण ॥ २ ॥ तुम नामें नही आवे आपदा, भूत प्रे
तव्यतर नही कदा ॥ रोग सोगचिंत्या नही जान ॥
सर्ण ॥ ३ ॥ दुरजन दुष्ट वैरी बिकराल ॥ तुम नामें
नासें ततकाल ॥ तुमनामें आदर सनमान ॥ सर्ण ॥ ४ ॥
ग्रहगोचर पीडानकरे, सर्ण तुम्हारी जो चितधरे ॥
धरम सिंहमुनी नाव प्रधान, सर्ण तुम्हारी श्रीवृद्धि
मान ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ दिगांबर मतकी उतपत्ती स्थेवरकल्पी साधु ॥

॥ वासें है ते लिख्यते ॥

श्री महावीरके निर्वाण पीठे जब ६०९ वर्ष गये
तब आठमा महा निन्दव बहुतर विसम्वादी शिव
भूति वोटिक हूवा ॥ गाथा ॥ ठवासएहिंनवुत्तरोहिं,
तइया सिद्धिगयस्सवरिस्स, तो वीमिआणदिडी र
हवीरपुरेस मुप्पन्ना ॥ १ ॥ ओर जिन सेनाचार्य दि
गंबर आमनाके अपने कीये ग्रंथमें लिखताहै ॥ गाथा ॥

बत्तीस-वाससए विक्रम, निवस्समरणपत्तस्स, सोर
 ठेवल्लहीये, सेयवस्स संघ समुपन्नो॥१॥ अर्थः—विक्रमरा
 जासें १३६ वर्ष पठे सोरठ देसकी वल्लनी नगरीमें
 रवेतांवर संघउत्पन्नहूवा इत्यर्थ और स्वेतांवर मतमें
 जिनजद्रगणि क्कमाश्रमण विक्रम संवत् ४०० में
 हुवा सो लिखतेहैं॥श्लोक॥ न वाधिकैःशतैः पाद्भिः अद्वा
 ना वीरतोगतैः॥महात्सर्व-विसंवादात्, सोष्टमो वाटि
 को जवेत् ॥१॥ अर्थः—श्री महावीरसें ६०९ वर्षे रथ
 वीर-पुरमें दीपकोद्याने आर्य कृष्णाचार्य समोसरे
 तिन-अवसरे-एक राजाका शिवज्जतीनामें सहश्रम
 ल्ल सुजट राजाको बहोत प्याराथा तिसने माता त
 या स्त्रीसें क्रोधकर श्री कृष्णआचार्य पास दिक्का
 लीधी तब तिहांसें और देसमें विचरने लगे फिर
 केतनेकबरसा पठे रथवीर पुरमें आये तबराजा
 बंदनार्थ आयकर गुराकी आज्ञासें शिवज्जतीको अ
 धने घर लाया पहिले विशेष राग करिके रत्न कंब
 ल दीधा ते लेई गुरुपास आण दिखाया गुरुने क
 ह्या की यह बहु मालका बस्त्रहै एह तुमको लेना जो
 ना नहीथा परंतु अबतो तुम इसको अपने सरीरमें
 धारण करो आगे ऐसा बस्त्र नही धारण करना अ
 था सुनते शिवज्जति ममता जावसे धरलोया कवी
 कवी पडिलेहणा करता देखकर खसीहोताथा तब
 गुरुने देखाकी इसको रत्न कंबलका ममत्ताव होग

या तब गुरुने उसके विना पूरे तिस रतन कंबु
 लके खंड खंड कर साधुवाको पग पूरने वास्ते
 बाट दीए जबसिष्य बहात क्रोधसे हुया परंत कुबगू
 रुको कहनसक्या एकदासमे गुरुजीने साधुवाके
 कल्पका व्याख्यान दिया तिसमे ६ प्रकारके कल्प
 के साधु कहे बृहत्कल्प सत्रसे जाणलेने (ब्रह्मिहाकप्पाठि
 ई पन्नता तंजहा समाइसंजयकप्पाठिय १ वेडवगाणिय
 संजयकप्पाठिए २ णिविसमाण कप्पाठिई ३ त्रिविठ
 काइयकप्पाठिय ४ जिणकप्पाठिई ५ थवरकप्पाठिई ६
 तिवेमी) इन वहां कल्प स्थितिका जुदी जुदी मया
 दहे जिसमे जिनकल्पका उणनकराकोजिनकल्पी मुना
 ८ प्रकारके होतेहे तिनमेसे सब उत्कृष्ट जिनकल्पी
 मुनिके दो उपकरणहे एक तो रजोहरण १ मुखपा
 तिय २ जब सिष्य पूरने लगाकी तम असा मारगकी
 ब्रती क्योंनही करते गुरुने कहाक जब स्वामी पूरे
 १० बोल व्यवबेद होगये यथाख्यातचारित्र १ सु
 क्ष्म संप्रायचारित्र २ परिहार विगच्छिचारित्र ३ परमा
 वाधिज्ञान ४ मनः पर्यायज्ञान ५ केवल ज्ञान ६ जिन
 कल्प ७ पुलाकलविध ८ आहारिकलविध ९ मुक्तिहोवा
 १० सो जिनकल्पमार्ग इसकालमेंनही तबशिष्यनेकहा
 क्योंनही जो परलोकार्थी होयतो असा कठिन मारग धा
 रण करे सर्वथा परिग्रह रहित होय ते अठहे गुरुने
 उत्सर्ग अपवाद मार्गदर्शाया सिष्य प्रते उक्त जो धरम

उपकरणहै ते नही परिग्रहमें संजम निर्वाहअर्थहै ॥
 श्लोक ॥ जन्तवा वहवः सन्ति, दुर्दश्यामासचक्षुपा॥ते
 भ्यः स्मृतदयार्थतु, रजोहरणधारणम्॥१॥ आसनेशयने
 स्थाने, निक्षेपग्रहणेतथा॥गात्रसंकुचनेचष्टं, तेनपूर्वश्मा
 र्जनं॥२॥ तथासम्पातिमासत्वा, सुक्ष्माश्रव्यापनापर ते
 पां रक्षानिमित्तं च, विज्ञेयामुखवस्त्रिका॥३॥ जवन्तिजन्त
 वोय स्माहन्नपानेपुकुत्रचित् ॥ तस्मातेषांपरीक्षार्थं पात्र
 ग्रहणमिष्यते॥४॥ सम्यक्तज्ञानशीलानि, तपश्चेतोहसिद्ध
 ये॥तेषामुपग्रहाथाय स्मृतजीवरधारणम्॥५॥ शीतवाता
 तपैदंशै, र्मशकै श्चापिखेदिताः॥मासस्यक्तादिपुध्यानम्
 नसम्यक् सम्बिधास्यति॥६॥ तस्यत्वग्रहणयस्मात् क्षुद्र
 प्राणि विनाशनम् ॥ ज्ञानध्यानोपघातोवा, महानदोष
 स्तदैवतु॥७॥ यएतान् वज्जये दोषान्, धर्मोपकरणोद्भ
 त्तै, तस्यत्व ग्रहणं युक्तं, यस्याज्जिनइवप्रभुः॥८॥ तव
 सिष्यने कहा के ये सब वस्त्रादि परिग्रहमेंहै गुरुने
 कहा की (मुठा परिग्रहो वृत्तो) समत्व कर तो परि
 ग्रहमें होय इत्यादि उपदेश मानानही तवसिष्यने क
 ह्या तुमसे यह रूती पलती नही भे पालुंगा इमकह
 वस्त्रगोरु दीये. तिसकी बहन उत्तराने उनको देख व
 स्त्रतजदीये जब नगरमें आहारके वास्ते आई तब
 एक गणिकाने ऊपरसे वस्त्र गेरा तो उसकानग्रपणा
 दूर कीया जाईसे कहाकी मुऊको देवागणाने वस्त्र दी
 याहै जब जाईने समऊकर कहाके तु वस्त्र रखले परं

त इसकारणसे स्त्रीको मुक्त न होय औसा कथन करा,
 तब शिवजुतीके चलेर हुये॥ कोमिन्य १ कोष्टवीर २
 तब तिनके सिष्य जुतिवल आर पुष्पदंतने श्रीमहा
 वीरसे ६८३ वर्ष पीठे ज्येष्ठ सुदी ५केदिने ३ साखर
 चे धवलनामाग्रंथ ७०००० श्लोक शमाणजयधवलनामा
 ग्रंथ ६०००० श्लोक महाधवलनामा ग्रंथ ४०००० श्लोक
 ए तीनों ग्रंथ करणाटक देसकी लिपीमें लिखेगये आर
 शिवजुतीके नम्रसाधु बहोतसे करणाटक देसकी तर्फ
 फिरतेहैं क्योंकि दण्डदेसमें शीत कमहै जब उनके
 मतकी वृद्धि होगई तब महावीरसे १००० बरस पीठे
 इसमतके धारक आचार्योंके ४ नाम परसिद्धकीये न
 दीसेन देवसिंहने जैसे पद्मनादि १ जिनसेन २ योगि
 द्र देव ३ विजयसिंह ४ इनके लगनग कुंदकुंद नेम
 चंद्र विद्यानंदी वसुनंदी आदि आचार्यों जबहुये तब
 तिनो श्वेतांबरकी निद्या तथा हीनता करनेवास्ते मु
 नीकेआचार विवहारके अपने बुद्धीप्रमाणक ठेक जि
 न वैणक ठेक स्वकुबुद्धिकर स्वमत कल्पित अनेक
 ग्रंथरचे जिनसे श्वेतांबरोको कोईजी साधु नमाने ब
 हुत कठिन वृत्ती वर्णन करी आर दिगावरोंने अपने
 मनकी उक्तसे श्वेतांबर धर्मके अवगुण वादकरे परंत
 सनातन धर्म श्वेतांबरका उत्सर्गापवादमार्ग जा
 णा नही, एकांतवादी होकर बहोत निद्या शास्त्रोंमें क
 री सोई इनके शास्त्र परसिद्धहै जिसको संदेह होय

वह देखलना श्वतांबरक शास्त्राम इनके मतका कहीं
 निया नहीं इस वास्ते निश्चय मालुम होता है कि स्व
 तांबर मतमेंसे दिगांबरमत निकला परंतु इन दिगा
 बरके ग्रंथ करता आने दिगांबर मतके गुरुका विच्छेद
 कर दिया क्योंकि ऐसा कठिन वृत्ति पालने वाला चर
 त द्वारेके इस पांचम आरंभ होनहीं सक्ता क्योंकि
 ऐसा संघण अर्थात् बलधारक सरार नहीं होता आ
 र एकसा सम आरंभ नहीं है द्रव खेत्र काल जाव
 की अपेक्षा नहीं जाणी तब दिगांबरमें कपाई उत्प
 न्न नई जब इनके ४ संघहूया॥ काष्ठासंघ १ मूलसंघ २
 माथुर संघ ३ गोप्पसंघ ४ चमरी गांधके वालाकी
 पीठी काष्ठासंघमें रखतेहैं॥ मूलसंघमें मोर पीठीरखते
 हैं॥ माथुरसंघमें पीठी रखतेनहीं॥ और गोप्पसंघमें मो
 र पीठी रखें और स्त्रीकोजी मोक्षकहें॥ बाकी ३ म
 स्त्रीको मुक्त नहीं कहें और गोप्पसंघवाले बंदना क
 रने वालको धर्म लाजकहें॥ बाकी ३ धर्म वृद्धिकहें॥
 अब इस पांचम आरंभ इसमतके २० पंथी वा १३
 पंथी वा गमान पंथी इत्यादि जेद वरतमान कालमें
 बरत रहे हैं तिनमें २० पंथी पुराने कहलातहें॥ बाकी
 दोनो नवाने कहलाते हैं॥ अब इनके मतका सरधान
 तथा शास्त्र और श्वतांबर आम्नास कितनेक फरक
 हैं ते चर्चा विस्तार सहित ग्रंथ संग्रह करता प्रथम
 क परिक्षाकी वचनका लिख्यते

श्रीजिनराज बीतरागदेव मारगें मुक्तिनो प्रका
 स्यो पिण पंचमा कालना दीपथी आतेम ग्यानको जे
 द अम्ह सरीखा मोही जीवने समजावो कठिन ठे ॥
 मूलजबोधी हलुकरमी जीवने नवस्थित जे जीवनी
 पाकी थईवे ते उत्तमजीवने आतम ग्याननो रस चा
 ख्योवे ते संसार समुद्रथी तिरयावे तिरवे अने अतिर
 सी पिण हिवडा सुध सामगरी पिण कठिनठे सुध ध
 रम परूपक थोडा दीसेवे अने गोरुनी प्रवाहवत दे
 खा देखा पक्ष ग्राही आबोध जण मत पक्षना वा
 ह्या घणादीसेवे ॥ पिण जिन राजना वचनामै खांच
 करणी उचित नहीवे परिक्षा करणी उचित वे ॥ परि
 क्षा सुधसमकितनो कारणठे सम्यकठे ते मोक्षमारग
 नो मलठे ते नणी सम्यक्त धरमनी परिक्षा बुद्धि अ
 नुसार किंचत कहे ठइये बीतरागदेव श्रीजिनेद्र देव
 शास्त्रपरुष्या ते माहि कह्योठे ॥ नाणदंसणस्सन्नाणं नाणे
 विनां न हंति चरण गुणां अगुणस्स नस्थिता मोखो ॥
 नत्थी अमाखस्स निवाणं ॥ १ ॥ इहां दंसण सम्यक्त
 ने कह्यो सुध दृष्ट करीने निज स्वरूप देखवो, ते
 हिज सम्यक्त कहिजे ॥ ते सुध समकित विनां अने
 क क्रिया कलाप तपश्चरण परमुख करे ठे ते सरव
 बंध रूपठे पिण मोक्ष रूप नथी अरु सुध समकित
 सहित क्रिया तपश्चरण मोक्ष रूपठे ॥ दंसणजठाजी
 वा आराहण दबचरणसुहजोगे ते सबेहिसुजवंधो मो

खससाहणो नथी ॥ १ ॥ इति वचनात्, सम्यक्त
 धरम तो मूलवे ते सम्यक्त दोष प्रकारनीवे ते वि
 वहार सम्यक्त १ अने निश्चै सम्यक्त २ ए दोष ने
 द विचारवा जोग्यवे जे जीव संसार भ्रमणथी जय
 नक जीव संसारथी मोक्ष थावाने अजिलाखीवे तेहि
 ज जीव सुध सम्यक्तनी परिहा करिस्ये ते जणी अ
 हो जव्यजीव मत पक्ष गोडी जिनराज श्री जिनै
 देवता बचतनी सुधता करीने कीजे ॥ इति उपदेशः ॥
 हिवे बेकर जोमी सिष्य प्रश्न करे वे अहो दीन दय
 ल संसाररूप समुद्रना तारक गुरुजी सम्यक्तनी
 निश्चय विवहार पणो जिमवे तिम कृपा करिने सुणा
 यो चाहिजे ॥ हिवे गुरु उत्तर कहे वे ॥ अहो सिष्य
 निश्चय सम्यक्ततो एह कहिजे जे जीवने काल
 लवधिना जोगथी दसण मोहनी जे सम्यक्तावरणी
 कर्म ते सम्यक्तनी हांकणी वे ते करमना स्थिति पा
 कां द्वयोपसम जावथी ॥ ते आत्मनो उज्वल पणो
 थयो ते गुणथी पुदगलनी जे आसा अने पुदगली
 क सुखथी उजग्या आतमाना निजगुण ॥ सम्य
 क ज्ञान सम्यकी दरसण ॥ सम्यक चारित्र गुणमें रमण
 थाय निज स्वभावमे रमण वे आत्मा अनुभवमे रक्त
 वे निश्चै सम्यक्त कहिज्ये वे ते ॥ उपसम १ द्वाइकर
 द्वयोपसम ३ जेदवे तेहना गुणस्थान क्रमारो इण
 थी जाणज्यो अत्र विस्तार नही लिख्यो ॥ एहनो वि

चार कठिनते, ते तत्त्ववेत्ता विचारस्ये अने विवहारा
 र समकित ते कहिज्ये ॥ जे सम्यक्तीनो विवहार मु-
 ध देव १ सुधगुरु २ सुधधर्म साखी ३ जेहनी प्रती-
 त ज्योरा हिरदाविषे थिईवै ॥ कुदेव कुगुरु कुसाखनी
 रुची नही करे त्याने सेवन नही करे देव गुरु धर्म
 ने नमस्कार नही करे इत्यादि कृतव्यथी विवहार स-
 म्यक्त कहिज्ये ॥ अत्र सिष्या प्रश्न करेते निश्चय सम्यक्त
 नो विचार सुद्धमतासुं जेणायामिण विवहारा सम्यक्त
 नो जेद दया करीने वतायो चाहिज्ये देव गुरु साखनी
 परिक्षा किण जात कीजे ॥ तव गुरु उत्तर कहेवै अहो
 सिष्य, देव अरिहंत ३४ अतिसय ३५ वाणी ३६
 दोष रहित ३७ गुण ३८ महा प्रतिहार्य ३९ एक ह
 हजार आठलक्षण करीने संजुक्त सो देव ॥ १ ॥ और रागी
 द्वेष संजुक्त आयुध आज्ञाषण बाहण करीने सहितते कु-
 देव ॥ अने गुरु साधु सुध मारग परुपक २ ७ गुण संजु-
 क्त ते गुरु ॥ अने असुध मारग परुपक ३ जिन वचनोंसे
 विपर जे परुपेते कुगुरु ॥ २ ॥ अने जे साख माहिं पू-
 र्वापर विरोध नथी जे साखमें किणी मतनो नाम
 धरीने निद्या नथी पेट द्रव्य नव पदार्थनो द्रव्य गुण
 परजाय जंग नय निक्षेप परिणाम सहित वै ते साख
 ३ अने जे साखमें पूर्वापर विरोधबे, नाम लेइते नि-
 द्या वचनबे ॥ ३ ॥ एक साखने बीजो साख उडावेबे
 ते रागी द्वेषी, अनुप्य कृत्य मत प्रकृथापकना कृत्य

ते कुशाख्वा ॥ ३ ॥ सिष्य पूरे साख्वा कुशाख्वाती परि
 द्वा करघासुं गुण नीपजे ॥ गुरु कहे साख्वा कुसाख्वासुं
 देव गुरु धर्मनो जेद जणायवे तिण कारण साख्वा
 कुसाख्वाती परिद्वा अवश्य कीजे ती किर्या जणी ॥
 साख्वा सुणतां ग्यान विग्यान परगटे ॥ कुसाख्वा
 सुणवार्थी मिथ्यात प्रदीपन थायवे ॥ ते माटे सम्य
 की जीवने कुसाख्वा सुणवो बरजेवे अत्र प्रश्न अहो
 गुरु ग्यान सागर साख्वा तो नाम धणाही कहावेवे
 ते साख्वा कहिज्ये अर्थवा कुसाख्वा कहिज्ये हिवे उत्तर
 अहो जेव्य पंचम कालमें जेतला मत मतातरवे ते
 सबही साख्वा करी मानवे पिण जे एक साख्वा वीजो
 साख्वा उडावेवे साख्वा साख्वा परस्पर लगे एकने
 बीजो जुटो कहेवे अने श्रोता पिण पद्म जालीने निर
 णयन करे असा शाख्वा सुणवार्थी जव जवमें अम
 णो पदस्ये ते माटे कुशाख्वा सुणवो बरजे कुसाख्वा सुणवा
 र्थी समकित मेलीन थायवे असो सांचली श्रोता पूरे य
 क्ति युक्तिकरी सनजावो किण किण जातिसुं पूर्वापर वि
 रोध जाणज्ये इम पूंथी गुरु कहेवे परित्तिद्वा परिमाण
 थी परिद्वा सांचलो अनमतीनां साख्वा नो विरोधतो क
 हां ताई कहिज्ये पिण लोकांमि जैनी कहावेवे २४
 तीरथं करीना वचनाने परिमाण कहेवे ॥ पंच परमेष्ठी
 सुंमरे वे ॥ अने विवहार पिण जिन धरमनो राखेवे
 जोजन कंद मुलादिकतो आहार त्यागेंवे पिण शाख्वा

कुशास्त्रनी परिहृता नकरे जिम करवी सरव रसमें फि
 रे पिण जदता स्वभावसु स्वादि न चाख सके तिम म
 त माही शास्त्र सुणे पिण गहिलता स्वभावसु परि
 हृता नकरे येहवा अबाध जतन सम्यक ग्यान दरस
 ण किहार्थी थाइ अपीत तथाइ तिन कारणसु सुध
 सम्यक्त अनिलापा शास्त्रना पत्रापर वचन मिले त परि
 माण कीजे तव अस्य पुण्या तमने गुरुजी किसा
 शास्त्र परिणाम कीधा तव गुरु कहव ॥ श्री जिन
 ज्ञापित गणधर रचित आगम हमने परिमाणव
 तव मिस्य कहे अहो गुरुजी सास्त्र तो सर्वही सर्व
 जना वचन जाणव ॥ इस पठ्या गुरु कहव जे
 शास्त्रम निद्या वचन विरुद्ध वचनव त सर्वजना वच
 न तथा ते बद्धस्तना वचन जाणव्या जहन प्रत्यक्ष
 पणो दिखावेवे अतमतीना शास्त्रमती विपरजय ब
 धन घणाव तेहना विस्तार आगले काहस्य पिण हि
 वडां वरतमान काले पंचमकालना दोसथी जिणमतमे
 पिण मतना बाह्या जीवने मत पद्ध थापण जणी
 विरुद्ध वचन घणा कहव तेहना ब्योरा दिगावर म
 तना शास्त्रमे सितावर शास्त्रानी निद्या घणी करव
 ते माहि केतलाएक ऊठ घाल्यावे ते दिगावरना शास्त्र
 कहव स्वतांवरना शास्त्रमे एतला ऊठा वचन लिख्या
 वे तेहना ब्योरा केवलीक केवली नसस्कार कर केव
 ली स्तुति पढे रे निदक मारका पाप नही ३ श्री

महावीर-जगवानकीबेटी मालीने व्याही ४ कपिल
 नारायणने केवल ज्ञान उपन्या अने कपिल धातकी
 खरुसं अठे आयो ६केवल ज्ञान उपन्या पठे नाच्यो
 ७ और कोई साधको मास बहरवितो मासका आ
 हार करे ८ सुलसा श्रावकणीके देवतासे पुत्र हुवा ९
 चक्रवर्तके बहु हजार अस्त्री १० त्रिपृष्ठवासुदेवने विषा
 के कुलमे जन्म लीयो ११ चौथे आरे असजमीयां कु
 वती पूजते १२ प्रलय-कालके समेमे वहात्र जुगल
 का देवता उमाय लेजाय बिलामे पहुचावे १३ जुग
 लीया परस्पर लडे १४ बाहुवलने मुगल रूप धारया
 १५ सावतफल खातां दोष नही १६ अरु पहिले स्व
 र्गका स्वामी दूजा इंद्र होय अने दूजा स्वर्गका स्वा
 मी प्रथम इंद्र होय १७ मुनिने कामी जाण श्रावण
 बनीता देह स्थिर करे १८ गंगादेवीसे जरतजीने
 ६५ हजार बरस जाग करया १९ अश्वगणधर २०
 इत्यादिक बोल कहा ए स्वतावरनां सास्त्रमे कहा ते
 दिगावर कहे ते ऊठ कहे ते ए पाठला बोल स्वतां
 वरनां मल सास्त्रमे असंजी नही पिण जो सूत्र गण
 धर रचितहे ॥ तिण माहिती मल नथा अणहुतां बो
 ल लिख्याते ते ऊठा बोल लिख्याते ते माटां ऊठते
 निनमे ए बोल लिख्याते अरु उनकु सास्त्र करि मा
 नेहें तो सास्त्र कोणसा होईगा ॥ सास्त्रता एक नवमे
 दुःख दाई हे कुसास्त्रकी सरधानसे नव नवमे नम

वे ॥ अत्र शिष्य कहे कोई बचनानंबर लेईने कहेगो
 ये बोल जूठ नही लिख्या ॥ तब गुरु उत्तर कहेवे,
 जो कहे जूठ नही उनसे कहणा ॥ जिन साखम एह
 बाता लिखाहे तिन साखका नाम बतावो, वह सा
 ख हम बुम्हारे आग रखतहे ॥ तुम हमन लिखान
 ही दिखावोगे, तुम एकांत पढ़ ग्राही ॥ हठग्राही,
 मिथ्याती ठहरागे ॥ जिन साखम एसा मोटा जूठ
 हे अरु जो साख करा मानगे, उनका दाप अनक ज
 वलग दुःख दाइवे ॥ मिथ्यात पष्ट थाइवे, असा सा
 खने स्वारण तिरण जाणा सणतो सम्यक्त रूप रत
 न हारिजाय, इम जाणनि कसाख सणवा बरजे ॥
 इतज्ञप्र ॥ अरु दिगांबर मतना वाह्या और निद्या
 स्वतावरना साखनी करेवे, स्वतावरना साखम ज
 रत दप्पण यह केवल ॥ १ ॥ माता मारादवीने
 गजहादे केवल ॥ २ ॥ चेलके कांधे चढाने केवल
 ज्ञान उपन्या ॥ ३ ॥ आहार करता आहार साह्या
 थक्या चेलाने समता करताने केवल ॥ ४ ॥ एण
 प्रकार केवल ज्ञान उपन्या, तो गहिलानी परे कहे ॥
 ए बचन देवदि किमासमणनावे, ते देवदि किमाश्रम
 एने यहवा जूठ लिख्या काइ निग्रंथपद विना केवल
 ज्ञान किम परघट थाय इम काइने अवोध जणने अ
 भावेवे, आपणा मनम अनिमान राखे, अहाने ज
 लो ज्ञानवे, पिण ए ४ बोजानी, निद्या करेवे ॥

ते जिन मारगनां सलीनां अजाणवे, सुधी वातने उ
 लटी बोलतो ॥ आपणा जीवने दुःखदाईवे ॥ जिमट
 प्यांत ॥ काई पाडोसिन अपसकुन करवा जणी पाता
 नां नाक कटाईने, पाडोसिन सनमुख आवे ते पा
 डोसिने तो अपसकुनथया ॥ १ ॥ कारजमे घातधया
 पिण नाक कटावन वालाने १ वारतो हरप मा
 न्यो पिण पवे साराहा जन्म लजावे उपहास कराव,
 तिम सुध वस्तुनी निद्या करता मिथ्यात मोहनी कर
 म बंधावे, ते घणो संसारमे दुःख पामस्ये ॥ इम क
 ह्यां श्रोतां कहे वे, एतो पारतद्ध परिमाण दीसेवे ॥
 नियंथ पद विनां केवल किम ऊपजे, इम पठया गु
 रु उत्तर कहेवे ॥ एतो सत्यवे, पिण दीघ बुद्धिस वि
 चारयांथी सुखे समजो ॥ द्रव्य नियंथ ॥ १ ॥ बीजा
 जाव नियंथ ॥ २ ॥ ए विचारवा चाहिज्ये द्रव्य नि
 ग्रंथ ते द्रव्य पुढगलना गाठरहित जाव नियंथ ॥ सु
 नि व्रतना घातक करम काल लबधया क्षय थया ॥
 तद जाव नियंथ पद पाम्या तथा चारित्रावरणी क
 रम क्षय हुवा केवलग्यान प्रगट थावाना कारणवे,
 पिण आत्म करमना स्वरूपना अजाण मठरताद्वप
 संयुक्त अबोध जण कुहेतु लगावेठ जालाजीवान वि
 प्रतारवे पिण सास्त्र देखतातो ॥ निसर्ग ॥ १ ॥ उपदे
 स ॥ २ ॥ ए दो कारण सम्यक्त तथा ॥ ज्ञानता ॥ क
 हेवे ॥ ते कारण विचारता तो ए ४ न केवल

उपजावो सत्यव, अने बाऊ हिट्टी मतं पक्का ग्राही
 अंतरात्मानां अजाण एहने निदवे ॥ मिथ्यात भा
 हनी करम बांधे तब सिष्यकहे, स्वामी जावनिग्र
 थ पद किण जातसु जाणजे तब गरुकहे अंतरात्मा
 १ बाहिर आत्मा २ सध आत्मा ३ ए तीन आत्मानां स्वर
 रूप जाण्यावे जेहन येहनो जर्म नथा अने जे अजा
 णवे, ते मिथ्यातनी गहिलतासु ॥ मद्य पानीनी परे,
 अचेत थडे रहावे ॥ तेहन अंतरात्मा कह्यो गि बाहि
 रात्मा सधात्मा, तानना जेद ॥ स्यु जाणे ॥ अ
 ने दिगावर मतना, सास्त्रम कह्यावे, अपूर्व कारण ॥
 १ ॥ जथा परबुत करण ॥ २ ॥ निबुत करण ॥
 ३ ॥ ए ३ करण घणा सास्त्रम वे, तिहा पिण करम
 ना क्यथा ॥ आत्मानां सुध पणार्था तान करण क
 ह्यावे, तिण न्याय जावता ॥ केवल ज्ञान उपजवा त
 दावरणी तद गण घाता करमना क्यथा केवल उप
 जवे, तथा गणस्थान मारगणा ॥ गोमठ सारम, क
 ह्यावे, तिहा पिण करमना परकिरत द्विपवानी गण
 नी श्रेण चढव, इण न्याय विचारता तो जरता दि
 कने केवल उपजवा सत्यव अने जे निषेद करेवे ते जि
 न मारगणा अजाणवे ॥ इति उत्तर ॥ अने आर पि
 ण कहव स्वतावरना सास्त्रमा केवलीने राग ॥ १ ॥ के
 वलीने आहार ॥ २ ॥ केवलीने निहार ॥ ३ ॥ केव
 लीने विहार ॥ ४ ॥ केवलीने उपसर्ग ॥ ५ ॥ ए वो

ल केवलानि कहेवे ते सांजलीने अण विवेकी परव
 जाणें ॥ ए वात विरुद्धे ते माट पक्ष जालीने अ
 जाणतां जित् वचनानी निद्या कर वे. पिण पोता
 ना पगते कुठार नाहेवे ते घणा दुःखनी कारणे दि
 गांबर मत्तनां ग्रंथमध्ये. पिण रागादि केवलाने स
 जवेवे ॥ तेहनी व्योस ॥ सुधानुभवधारी आत्म तत्व
 वेता जित् धरमनां अनेकांत स्वरूपता जाणजा ॥ क
 पा करिते ते परोपकार निमित्ते उपदेस करिते जि
 न वाणी दिढावेवे ॥ हे जाई तम कहा हम जेना श्रि
 तवां ॥ पिण जेने धरम रहस्य जाणता नथा दोसा
 वो ॥ तेहनी व्योरो दिगावरके ग्रंथामे गामठ सा
 र गुणस्थान मारगणामे १३ म गुणस्थान ४२
 प्रकृतिनी उदय कहेवे ॥ ते ४२ माही साता असा
 ता दोनां प्रकृतिनी उदय अने ८५ प्रकृतिनी सता
 वे ॥ तेहनी उत्तर ॥ काई कहेगा ४२ प्रकृतिनी उदये
 पिण जरी जेवरी समानवे इम कहे तेहन पगीए
 मनुष आऊतो उदये ॥ ते पिण जरी जेवरी समानवे
 तेतो जोगव्या विना साह्य कथोन जाय, इण न्यायि
 साता असाता जोगव्या विना साह्य किम जाय, उ
 दे जाववे ते जोगव्या विना साह्य किम जाय इम
 देखतां निश्चे नयनी अपेक्षाय चारीत्रावरणी करम
 काल लवधना प्रयोगथा ह्य हवा केवलरयान पर
 गट थाईवे घातीया करमनी प्रकृति स्थिति सुध अ

न नव अनित्यादि जावनाथी अनुक्रमे ॥ क्लिय थया
 केवल ग्यान उपजे ॥ तो किती संदेहे वे पिण एसा
 विचार ॥ सुबोध जनने ऊलकस्ये, कृपन सार लवधि
 सारनो ॥ रहस्ये विचारिता, जे करम क्लिय थयो ॥
 ते क्लियथी, क्लायक निज गुणनी लवधि उपजी ॥ पि
 ण जे करम उदेवे, तेहना उदेथीना जीवने साता अ
 साता क्लुधा तृपानी संजवे ॥ इतिज्ञेय ॥ तथा स
 मयसार समाधी तत्र चरचो सतकमे ११ परी
 सहना उदेवे, तेरमे गुणस्थाने कहेवे जे वेदनी कर
 मथी जे परीसह थायवे ते केवलीने कल्या वे ॥ पतिहा
 क्लुधा १ तृपा २ साति ३ उष्ण ४ नासमासि ५ चरि
 या ६ सिध्या ७ बध ८ रोग ९ उतृणरूपसे १० जल
 ११ संवाधिसिंधी टीका नवमा सूत्र मध्ये कल्या परी
 सह कहेवे, ते सास्त्रना अर्थ उलटा ऊलकेवे ते कि
 हे वे क्लुधा तृपा परिसह जरीजेवरी समानवे इम क
 हे ॥ तेतो सत्यवे पिण आउखाजी जरी जेवरी समा
 नवे ते पिण क्लिय थयो विना मुक्ति न जाय, तिम
 वेदनी ॥ पुद्गलना ॥ गुजासुजनने संनागर्था, क्लुध्या
 तृपा उपजे वे ॥ जद केवलीने इच्छा अने शिग द्वेष
 न उपजे ॥ किम मोहनी करम क्लिय ग्या तेहथी, अने
 वेदनी करमना उदेवे, तिथी पुद्गलने विपाकादिवे ति
 कारणी ॥ साता असता क्लुधा तृपानी उदेवे, नि
 रागी पण पुद्गलने आहारे वे ॥ इम कल्या थका प्र

लिः पक्षी । कुहेतुः लगावेवे नरकादिकमें, जीव दुः
 खतां पावेछे तृष्णा लोकेमें असुन पुद्गल कवल
 ज्ञानमें सर्व दीसेवे ॥ ते दीखतां केवल ग्यानी
 आहार किम करे तेहतो उत्तर केवलीने कि
 सो रांग द्वेष वे दुगंवादी करम क्लय थयावे ते माटे
 ए कुहेतु ऊठो दीसेवे ॥ इम उत्तर पदुत्तर हेतु कुहेतु
 घणावे; पिण एक अर्थ पूबीएवे ॥ घातीया करमना
 क्लयथी, केवल ज्ञान थयो ॥ पिण क्लया तृषा क्लिया
 करम क्लयथी नहोय, ग्यान अरुपी ॥ पदार्थ ज्ञेय
 गुणवे पिण पुद्गल पलटण कहांथी आयो ॥ इम प
 र्यां सूधी सरधा नउपजे, पक्षता हटथी अजाग व
 चन काठो ॥ जिम दृष्टांत धतूरोखाया स्वेत वस्तु पी
 ली दीसे; कोई कहे ए वस्तु स्वेतवे ॥ पिण पीली न
 हीवे, ते ऊठा पक्ष ऊलीने ॥ पीली थापवा जणी अ
 नेक कुहेतु लगावे ॥ पिण धतूरो उतरथा विना, स्वे
 त न केहे ॥ तिम पक्ष गोडया विना सुध सरदह
 णान होय ॥ इति विचार देखो, अहो गुणज्ञाता ॥
 पक्ष गोडी; नीगे कर विचारो ॥ जिण बाणीका रह
 स्थ देखो ॥ सास्त्रका मूल अर्थ समजा केवलीने आ
 हार निहार उपसर्गही एम ऊलकस्ये, जिम दृष्टांत
 कोई बिलोरकी खंडने हीरा मान गांठीनी बांध्यो ॥
 तब उस पुरपको कोई बुद्धिवानने हीरा ओर बिलोर
 की परिक्षा सिखाई जद आपणा मनमें बिलोर खं

ड जाएंगी ॥ तिम येह साखनों, परिमाण, दिखायो
 ते समझ्यां सुधी सरदहणा होइस्ये ॥ इति ज्ञेयं ॥ औ
 रहमारे सतगुरु ग्यान दाता, जिन मारग प्रभावक
 धरम बुद्धि दाता ग्यान समुद्र, गुरांनं हमारे सरखे
 व्या मोही जीव पामर, जीवा ऊपर चला करया
 जिन धरमना मारग बताया जिन बाणीनी, परिक्षा
 बताई तेहनें, ऐसी विद्य बताई ॥ जे जे सुत्र गणध
 र बचन निरबद्य बचने काल वचन नय करी संयुक्त
 ऐसा वचन रचित सूत्र है, तिणमें प्रथमानुयोग १
 चरणानुयोग २, करणानुयोग ३, द्रव्यानु योग ४
 है, एहवा सूत्रवे ॥ जिनमें हमारे संदेह कूठ नहीं है,
 अरु उदमस्त आचार्या कृत ग्रंथ घणा है, तिणमें
 पिण ४, अणुयोग है नव पदार्थ, पट द्रव्यना निरण
 यहै पिण उदमस्त प्रणानी लहिरसुं कोई वचनका सं
 देह पिण होइ तिसका पक्ष न करणा जिण ग्रंथामें
 जिन नापित सूत्र प्रमाण जो वचनबे अनें उपदेस
 रूप सब सत्य जाणेबे ॥ पिण जिन ग्रंथाकी साख
 नहीं ठहरती, जैसें टकसाली रूपक एक टक
 सालसे बाहिरका रूपक, एतला अतर गणधर र
 चित उर उदमस्त रचित ग्रंथमें है ॥ ऐसा सुध
 उपदेस हमारे सतगुरुका है ॥ अने, ऐसा मनुष
 प्रत्यक्ष दीसेहै ग्रंथामें प्रत्यक्ष कूठ वचन सुणेहे पि
 ण मद्य पानीनी परे गहिलतासं समजे नहीं ए ग्रंथ

में प्रत्यक्ष विरुद्ध बात है ॥ निरणो करयो जोइज्ये सो
 निरणो नाहि करे ॥ एक पुराणमें लिख्या कीचक न
 रक गया ॥ १ ॥ बीजे पुराणमें कीचक राजा मुक्त
 गया, बहुर सीता चरित्रमें सीताका पिता जिनक ॥
 माता विदेहा, जामंडल सीता जुगल पणें जनस्यां ॥
 पद्म पुराणमें रावणकी बेटी मंदोदरी सीताजोनी
 माता और एक पुराणमें श्री जगवान, नेमनाथ वा
 ईसमां जिन राजनां गर्ज जन्म कल्याणक सोरी पुरमे
 थियां ॥ और बीजा पुराणमें दोइ कल्याणक द्वारकामे
 थियां द्वारकामे सोरीपुर पाडा कहे ॥ अरु सिखर महातम
 में सिरखंजीकी जात्रा करे, सो नरक तिरजंचकी गति
 न जाय, अरु पदम पुराणमें रावण लक्ष्मण, दो
 नाने सिखरजीकी जात्रा करी ॥ रावणने दिगाविजय
 करी जद लक्ष्मणजी कोडसिला उठाइवाने गया,
 जब अरु वह दोइ विलयमें पहुंच्या इत्यादिक ठा
 म २ विरुद्ध बचनठे पिण पंचम कालना दोसथी
 आंधाने आंधा मारग बतावे ठे ऐसा विरुद्ध बचन
 संजुक्त सास्त्र सुणने अवोध जण नरममें पढ्या सु
 णेठे, सुध न करे और कोई बतावे तो जैसे नकटा
 ने दरप्पण दिखायां खीजे तिम क्रोध उपजे परिह्ता
 परधानी होइ सो विचार हिवे स्वेतांबरना सास्त्रनी
 दिगांबर खंण इणें बोलासुं करेठे स्वेतांबरी स्त्रीको
 महा व्रत कहे ॥ और मुक्ति कहे ॥ ए बात सुणने अ

बोध जण बोधा लोक जरममें आवे एहनो न्याय को
 ई कहे मेंतो बाऊ पुत्रगो तिम ए पिण जाणवा ॥ ते
 किम गोमट सार आश्रव तृजगी चरचा सतकमे दे
 खो नौमा गुणस्थान ताई ॥ स्त्री १ पुरप २ नपसक ३
 ए तीन वेदनो उदे कह्यावे ॥ घणा साखमें नौमा गु
 णस्थान लगे स्त्री होइ, पिण ठठो न होइ ॥ बुद्धि व
 त होइ सो विचारे, आख सहित पुरपने दीपक उ
 द्योत करे, पिण अंधे परपने दीपक उद्योत न करे
 तिण दृष्टाते रूढ पक्षीने ग्यान आवे ॥ नौमा गुण
 स्थानतो होय, अने महा व्रत न होइ ॥ इसी विप्री
 त किम संजवे, और कोई सुबुद्धि पूवेतो कु हेतु
 लगायने जरमावेवे, कुहेतु इम कहेवे ॥ नौमा गुण
 स्थान जाव इस्त्रीने द्रव्य इस्त्रीने नथी, इम सुणने मं
 द बुद्धो हरष माने ॥ अने जाणे साचो कह्यो पिण
 तेहने पूवे द्रव्यइस्त्रीमे घणा मैला परिणाम होय, त
 था जाव इस्त्रीमे मैला परिणाम होइ ॥ जाव असु
 द्वयी द्रव्य सुध होइ अक नही, तद कहे पूर्वापि
 क्षया अस्त्रीवे पूवे ॥ पुरुपने इस्त्रीना परिणाम हुंता,
 त अस्त्रीने नौमा गुणस्थान कह्या वे ते पिण विपरजय
 वचन दीसवे ॥ इम करतां तो अनतानुबंधी अप्रत्या
 ख्यानी ॥ प्रत्याख्यानी परमुख प्रकृतिनो पिण उदे
 कह्यो जोडज्ये ॥ इम जाणी सुबोध विचारेतो स्त्री
 ने महाव्रत अस्त्रीने मुक्ति सुखे संजवेवे, ति

ए किण ठामे गाथा पिणवे ॥ पट पाहुडना तीजा पा
 हुडा मध्ये गाथा ॥ बीसिनपुंसकबया इत्थी बेयाहुंति
 चालीसा; पुवेया अमियाला समयणे गेणसि ज्जंति ॥१॥
 तथा एह गाथा गोमठ सारमे कहीवे ॥ इति बचनात्
 ॥ अस्त्रीने मुक्त कहीवे ॥ दिगांवर कहे अस्त्री असुद्धवे,
 तेहंथी मुक्तनही ॥ तेहने पुगीए अस्त्री असुद्ध वे तो पु
 रपे पिण असुद्धवे सप्त धातु सप्त उपधातुवे ते सर्व
 अपवित्रवे इमजाणीने सुध विचार करो जेद मुखें स
 मऊस्यो, जिम दरप्पणमें सुधो मुख करी देखे सुधो
 दीसे ॥ वांको मुख करीने देखतो वाको मुखदीखे, ति
 णन्याये निज गुण निजे स्वभाव देखतां तो सर्व वा
 त सुधी परगमें ॥ विवहार दृष्टे, खेचता उलटा परि
 णाम परिगमें ॥ और दिगांवरी कहे, स्वेतांवर सुद्र
 का आहार लेवे ॥ इम करिने स्वेतांवरने, निदेवे तेह
 नो न्याय इम पृबजो ॥ चौथा आरामे ४ वर्ष
 का वरताराहोता, च्यारुही वर्षका खान पान मिलता
 था ॥ कदाचित् परिणीजन पिण होइथा सो मिल
 ब्राम्हणकी बेटीसे परणेतकी इडा कृष्णजीने करी
 थी तेतली प्रधानने पोटला सुनारी व्याहीथी ॥ इण
 कारणे शुद्रका आहारकी निषेधनही, सास्त्रामे अब पं
 चम कलकालमे श्रावक कहावे वे ते पिण विरुद्ध दो
 पी ठहरवे किसवास्ते प्रथमतो अग्रवाल खंडलवा
 ल परमुख क्षत्री वर्ष गेड कर, न्याति बांधीवे ॥

अने आपणा मनमे वैस्य वरणमे ठहरेहे ॥ पिण चो
 था आरामे वैस्य वर्णमेथा, उंसवर्णमे ठहरोतो ॥ अ
 गरराजासे उतप्रति क्यो कहते हो अरु अगररा
 जा क्त्रीथा सो मांसा आहारीथा, तुम वैस्य किस
 रीतिस्युं कहोवो इण न्यायसे, वर्णसे विवर्ण थया ॥ शु
 द्र आपणी जातिसे पूरांहे तुम सुद्रके आहारकु अ
 जोगी कहोतो जोग किसका कहोवो कदाचित् मांसा
 आहारीका घरका आहारीनां हीलणा, कहोवो तो
 मांसा आहारीने सिष्य करणा कैसे ठहरेगा पदम
 पुराणमे राजा सिवदास मनुपका सुरदार मांस खाया
 तथा पठे वालक मांस खाया ते पातर सुध किम थ
 या तो मुनी पद किस प्राप्त्यो ते मांसा आहारीने
 सिख कीधोतो, मांसाहारीतो घरनो आहार किम
 निषेधो ॥ पिण जे पात्रमे मांस रांधे ते पातरनो
 आहार न लेवे, मांसना संघटा चणी न लेवो ॥ अ
 हो नव्य सुध अनुभव विचारने कुलानिमान, बो
 फिते, विचार करता उचितहे ॥ पुनः दिगांवरी कहे
 स्वतांवर घरघरकी निक्ता करे हे ॥ उपाश्रय जमने कि
 वाड जमने आहार करे ॥ तेइतो उत्तर, पठजो, यह
 वा अवोध जण आपणा घर देख्या बिना मरख
 तासुं कहेवे ॥ जिसका परिमाण, मूलाचारमे जत्या
 चार मे ॥ आहारना ४६ दोष कयावे, सुवाधजणा
 विचारस्ये, जामरके आहारमे अंतरायतो संजवेवे

पिण आधाकरमीयादी दोष नामरके। आहारमें
 किम संजवे, थापना उद्देशिक परमुख मिश्र-जाति ए
 दोष किएरीतिसें टलें ॥ अने जाचना परीसह आ
 लाज परीसह किएरीतिसुं होइ पिण मलाचारने अ
 नुस्वार घरघरकी निह्ता संजवे, एक घरकी नि
 ह्ता मुनीने संजवती नही अने अतिग्रह पिण कोई
 कोई घर घरनी निप्या विना नही दीसेहे ॥ इतिज्ञे
 यं ॥ और दिगांबरी कहे ठे स्वतांबर सास्त्रमें मुनीजे व
 स्त्र धारण करे ठे ते वस्त्र परीग्रहठे ते माटे वस्त्र
 धारिने पांच महा विरत न होइ सर्वथा परिग्रह
 त्याग न थयो इम कहेठे ते अजाण दीसेठे, ते कि
 म, परिसह २२ कहेते माहि, पहिलो कुंध्या परिस
 ह ॥ अने ठठा अचेल परिसह, ए दोष परिसह क
 ह्या ॥ ते दोइ एक सरीखा विचारज्ये, जोजने आ
 वादन ॥ देह धारण जणी कहेते, पिण एकेक मूरख
 पद्धना ग्राही एक आंखने मीचे, एक आंखने खो
 ले ॥ तेहने जिन धरमनो लाने किहाथी थाइ तेहना
 इम विचार ॥ कुंध्या परिसह उपजे जद, सुधा आ
 हार निमत्त गृहस्तना द्वारा ॥ पेखण करे ॥ अन्नादिक
 ३२ कवलका आहार लेईजे, ति आहार परिग्रहमे
 नगिणे ॥ अने अचेल परिसह थयो वस्त्रनी गवेष
 णा करेतो परिग्रहमे कहे, ईसा किदाग्राही ॥ हठ ग्रा
 ही जीवाने कहां लग गुरु समजावे ॥ बालवृद्धीनी

समझे जोजन थोमो परिग्रह बख अधिक परिग्रह
 साधने थोडो तथा परिग्रह ॥ घणो नो त्यागवे, तव
 वादी कहेहे आहार परिग्रहमे नही ॥ एतो तेहनो
 आधागवे, तव सुधज्ञानी कहेवे ॥ जो नव्य जनों व
 ख किरयो मोक्ष कारणवे ए पिण देहनो आधा
 रवे, तद वादी कहे आहारनी मरजादा ३२ कवल
 नी वे तेहने कहिजे ॥ वखनी मरजादा परिमाणें
 कह्योवे, पवे कहे वखने जूवादिक पनेतो अजय
 णा थाइ ॥ तेहने कहिजे, जोजनधी पेटमें चुरणादि
 पडेतो अजेणां थाइ, तद वादी कहे वखनी ममता
 रक्षा करणी थाइ तेहने कहिजे, जोजननी ममता बि
 ना गवेपणा किम करे इम उत्तर पडुतर घणावे पि
 ण सुध मारगनी देह धारण जणी ॥ देहसुं धरम सा
 धन जणी तिमज वख देह धारण निमतवे सोतो
 परिग्रह नही कह्योवे ॥ आहार तथा वखनी मम
 तावे सो परिग्रहवे ॥ सुर्वा परिग्रहो वुत्तो ॥ इति वच
 नात्, दोनोही पुदगलवे हेय प्रदीर्थे वे निश्चैनय आ
 हार वख दोनोही त्यागवा जोग्यवे, पिण दोनोही
 देह धारवा जणी कह्या वे ॥ जिम माल क्रियाणानो
 चाडो, ते क्रियाणां ठिकाणे पहुंचावण जणी दीयेवे ॥
 तिमहीज जोजन आर्वादनवे, इम समझे तो ॥ जो
 जन वख एक वातेवे, जो नव्य कदाग्रह बोडी
 आत्मानु नव विचारतां वख मरयाद वरती परि

गृहमे नथी अने नोजनः पिण मरयाद वरती परिगृ
 हमे नथी यह बातका अर्थ अनेकांत तथा निज प
 र तथा कारण कारण निमित्त उपादान निश्चये विव
 हार अंतरंग वाह्य तत्त्वां तत्त्वे इत्यादिक घणा बोल जि
 न धरममें कहावे ॥ तेह विचारयां सुधता थाइवे ॥ क
 दागृह रूढसतीथी न्यारो थाइ, हिवे दिगांवरी वारे कु
 ल आहार १ चर्म निरमे २ तथा धोवणादि पाणी ले
 वे जिसकी निद्या करे ॥ अने चीनी खांड खांचीमे अ
 नंत निगोद राम पडे है, नीच जाति मरदन करे पं
 चेंद्रीयादी जीवाका पिण सरीर खांचीमे गलेहे ॥ क
 लेवरा पिण परतिह्ण खांडमें दीसेवे तथा सांजर लू
 णकी उत्पति पिण देखता महा अपावतवे अने क
 दाचित दूध पिण कच्चा मांसथी उत्पति प्रत्यहवे
 तेहनेतो खाणो ठोमे नही अने चास नीरमे अनंता
 दोस बतावे एहवा अबोध जणते गुरु समजावेतो
 हठ जालीने वचनांडबरथी विषवादे जाले पिण क
 दागृह न मुके ॥ हिवे दिगांवरी कहेवे स्वेतांबरना
 दोस काडे ते इस श्री वीर उपसरग ॥ १ ॥ श्री वीर गर्ज
 प्रहार ॥ २ ॥ श्री महावीरजीरी प्रथम वाणी निफल ॥ ३ ॥
 चंद्र सूर्ज मूल विमाण गमण ॥ ४ ॥ चमर इंद्र नव
 णपतीता इंद्र प्रथम देव लोके गया ॥ ५ ॥ मल्लीना
 थ श्री लिंग तीर्थकर ॥ ६ ॥ कृष्ण अमर कंका गमण
 द्रोपदी पंच नरतारी ॥ ७ ॥ इरीवास द्वैत्रका युगली

या नरक वासी ॥ ८ ॥ उतकृष्ट अवगाहणाका धणी
 १०८ एक समें सीजें ॥ ९ ॥ सुवधनाथजीके सास
 नमें असंजतीकी पूजा हुई ॥ १० ॥ इत्यादि अठेरा
 स्वेतांबरी कहेवे, ऐसी अजोग वारता जिन साखामें है ॥
 इत्यादि कहींनिं बोधा लोकाने नरमावे ठे पिण तेहनो
 परमारथ समजे नही और आपणा आचारजीना
 वचनतो पूर्वा पर विगोध देखीने कुहेतु कहि कहिने
 अनेक कुजुगति कर्गिनें दिढावेवे, कीचक नरक मुक्त
 ॥ इत्यादिक पूर्वे कहरावे ॥ और स्वेतांबराचार्य, अ
 ठेरा नमानता तो किरयां पद अटकेथा ॥ इम विचा
 रता तो, मतकल्पनासे कहरा नही दीसे है तो किम
 जाणजे ॥ तेहनों ए विचार करणों चाहिज्ये ए बोल
 आश्चर्य रूपठे ॥ ते इमठे, अनंतज्ञानी श्री जिनराज
 ने ॥ अतीतकालकी अनंत अवसर्पणी उतसर्प
 णी केवल ग्यानसें जाणें, केवल दरसणसें देख्या ॥
 अनें ते काल चक्रका द्रव्य क्षेत्र काल जाव अनें का
 ल चक्रका द्रव्य गुण परजाय सर्व देख्या, तिस का
 लचक्रका द्रव्य गुण परजायमें पट गुणी हानि वृ
 द्धि देखी कालका नियत पिण अनेकात स्वरूप का
 लका जाण्या देख्या ॥ पठे वाणीका प्रकाश हुवा अ
 मोघ धारासें वाणी प्रकासी, जद नव जीवा प्रते ॥
 कालका जेद प्रकास्या ॥ जैसे १२ महीनांमे सीत
 उष्ण प्रमुख कालका प्रवरतनहोय ॥ तिस काल च

ऋका जुदा जुदा परबरतनहै, ऐसा स्वरूप काल
 का अनंत रूप जायया देख्यावे ॥ जिस मध्ये १
 हुंदा नाम अवसर्पणी आवेवे जिसमें, ए दस अ
 श्रय नियमा होयवे ॥ ए नियत जाववे, हुंदा नाम अ
 वसर्पणी आवेवे जद आश्रयकारी होइवानी नि
 यमावे, इसमें संदेह नहीहै पिण कूपका मीरक सम
 द्रकी लहिर काई जाणे दिगांबर मतना आचार्य
 कुंदकुदाचार्य स्वतावर धर्मसुं नीकल्या तिवारे जुदा
 पदक थापण जणी, आश्रय रूप वात निषेध करी
 पिण कुबतो लोकीक विरुद्ध जाणीने ॥ कुब ग्यानकी
 हीणतासे, बुद्धि विस्तरि नही ॥ अरु गुरुके वचन उ
 थापण जणी अपणी बुद्धिना अजिमानथी निषेध
 स्वतावरकी करी ॥ प्राचीन ग्रंथामे निषेध करी, थो
 डीसीतो पवे मत ग्राही ॥ जिन धर्मना अजाण, कदा
 गही सोधमती सरावण नाम कहाया ॥ उताने अ
 धिक अधिक स्वतावर निषेधताईसे घणी बात नि
 षेध करीवे ॥ पिण ए स्वरूप अणंत ज्ञानी ज्ञेय पदा
 र्थ अणंत स्वरूप ठदमस्त मंद बुद्धी काइ जाणे ॥
 ए सांजलीने सिष्य प्रश्न करेवे ॥ नियत जाव आ
 श्रय होइतो अठेरा कयो कहो ॥ इम पूठया गुरु उत्तर
 कहेंवे अहो सिष्य! प्रश्न जला करया ॥ इसको उत्तर
 एहहै, कि जे वस्तु अनंता काल पवे होइहै इसका
 रणे विवहार पदकमें अश्रय कहणा पडेहे ॥ श्री जि

श राजको मारग निश्चय विवहार २ नय कर
 ने युक्तते, विवहार पद्धमें जिम कोई हजार बरसां
 वे ॥ कारण होइ तिसकुं लौकीकमें, आश्चर्य कहहे ।
 तिण न्यायमें अणंत काल पढे होइतो आश्चर्य क
 इणा पढे, पिण कालकी परजाय नियत जावहे ॥ दि
 गांबरमती ऐसा ग्यान समजें नाहि, जिम ६३ सल
 का पुरप कोडा कोरु सागर जाऊरामे नियत
 हे, तिमज अनंत काल पढे हुंदा उतसर्पणी १०
 अहेरा नियत जावहे सो ए दिगांबरका आचार्यानि
 मत कल्पनासे उठायाहे जिसमे कोई बैसनव सिव
 मतकी सरदहणा मिलाईहे ॥ सोधि तथा पद पर
 मुखका बणाव गावणा, कुठ जातिका मद आपणा उं
 च पणा जाणने ॥ अजिमानसे कुठ जिन धरमकी
 सग्धा लई रात्रीजो जन त्याग, कंद मूल अजहका
 त्याग ॥ तीर्थकर नाम पंच परमेष्ठी स्मरण, इत्यादि
 क जिन धरमकी सरदहणलई कुठ मन कल्पनासे
 मिलाया ॥ कुठ गुरुना द्वेषणणी गुरुके वचनाकी उथा
 पना कीधी ॥ इम दिगांबर मत श्री जगवानजीना
 निरवाणथी ठमों नों ६०९ बरसा पढे थयो ठे कोई
 कहेगो तुम काई जाणो स्वेतांबरथी नीकल्यो, जिस
 को परिमाण प्रत्यह दीसेठे दिगांबरना सास्त्रमे ठा
 म ठाम ॥ स्वेतांबर मतनो खंन कीधीठे, अने स्वे
 तांबरना ४५ आगममें दिगांबर मतनो नामची

दीसे नहीं, तिण परमाणसुं जणायेवे ॥ स्वेतांबरधी
 पठे वणाया प्रत्यक्षदीसे वे पहिलानी निंद्या पाठला
 करे वे ते सुबोध जन होस्ये सो विचारस्ये हठ ग्राही
 मत पक्षी कुजुकघणी बोलस्ये अने जो ठढमस्त
 कृत ग्रंथ बहोतहे तिणमे न्युनाधिक वचन होइ तेह
 ना पक्ष न करणा ॥ सूत्र सो मिलें सो परिमाणवे अने
 आगम ४५ माहि जे परूपणावे ते प्रमाणछे, सर्व
 ज्ञ ज्ञाखित वचनामें ॥ संदेह नाहि कग्णा सर्वज्ञ अ
 णंत नयात्मक ग्यानीछे तेहने किसो कार्णजासुं वि
 प्रीत वचन बोलस्ये पिण जे ज्ञ रूयो ते सर्व सत्य
 छे जो कोई चतुर नर दीर्घ दृष्टीसु विचारे सो तत्व
 ग्यान पावे ॥ अरु जिन ग्रंथामे निंद्या करीहै नांम
 लेइने, अधिकी उगी विप्रीत बात बहोतमीहै ॥ ठ
 ढमस्त रागद्वेषीयाका बणायाहै ॥ जिणकी आसता
 रुढमती, घणी राखेतो आपणने बीतरागना वचन
 किसीकी निंद्या नहीं ॥ आपणी अस्तुत नहीं धारा
 प्रवाह वचन जिसकी आसता विसंप रखणा उचित
 है सुणवा जोगहे ॥ सुणवाथी ममकित निग्मल थाडा ॥
 इतिज्ञेयं ॥ हिवे दिगावरी कहे स्वेतावर स्वप्न १४ मा
 ने १६ न मानें एहनो उत्तर इमछे स्वप्न १४ कह्या
 छे पिण १६ न कह्या इणमें कुठ विसैस विरुध नहीं ॥
 ते किम ग्यारसैं स्वप्न समुद्र देस्या ते माहि मत्त वि
 ण गरजितछे ॥ नारकसे तीर्थकर आवे तेहनी माता,

नवणदेखे अने विमाणकथी तीर्थकर आवे तेहनी भा
 ता विमाण देखे ॥ ते कारणे १४ कहेवे ॥ मच्च पाणी
 विना देखवो मंगलीक नही इत्यादिक अनेक हेतू
 जाणवा ॥ दिगांवरी कहे 'बाहूवलजोरी अवगाहना
 ५२५ धनुपकी कहे वे, पिण विचारतां सास्त्रयी वि
 प्रीत वचन दीसेवे ॥ ते किम पांचसे धनुप वालो मु
 क्ति पहुंचे, तेहनी अवगाहना ३५९ धनुपनी, चा
 हिज्ये ॥ ते विचारतां सास्त्र विप्रीत दीसेवे, बुद्धिमान
 होइसो विचारी जो जो ॥ जगवान श्री महावीरजीका
 माता पिता जगवान दीक्षा लीया पहिली देवलोका
 गए इस बातमें किसा धरमकी हानि थई ॥ ए किस्यो
 विप्रीत पणो थयो दिगांबर कहे स्वेतांवरी सलाका ६३
 पुरसाने नर जुगलीयाने निहार माने ॥ इसी स्वेताव
 रना सास्त्रमें विरुधवे, इम कहे ॥ तेहने पृठणो ॥ आ
 हार होइतो निहार किम न होइ एतो प्रत्यक्त प्रमा
 णवे सलाका पुरपाने न कहोतो प्रत्यक्त दीसेवे ॥ इ
 तिज्ञेयं ॥ दिगांवरी १६ स्वर्ग माने स्वेतांवरी १२ स्व
 र्गमाने एहमेंतो मात्र विरुधवे ॥ दिगांबर ८ जु
 गना १६ कहे स्वेतावर ४ जुग विचला च्यारमें द
 क्षिणोत्तर जेद नथी एक एकवे ॥ तिण न्याये १२
 मानेवे ॥ इतिज्ञेयं ॥ स्वेतांवरी जादवानें मांस नक्षी
 माने तेहने दिगावरी विरुध कहे ॥ तेहनो परिमाण
 सास्त्रयी जाणव्येवे नेमनाथजीग व्याहमे पशु पंखी

ना बाडा पिंजरा जरया तेहनें रूढमती थया कहे
 ठे, कृष्णजी कपट करयो ॥ श्री नेमनाथजीने घरधी
 काढण जणी येहवो अमुध वाक्य कहेठे ऐसा श्री
 कृष्ण वासुदेव जूध सूरामरजादा पुगसोत्तम एहवो
 कपट करे ऐसो अन्याय बोलोठो ॥ और कृष्णजीने
 सम्यक्त वंत कहोठो, बासकी मूल कपट करयो देव
 एप्रिया ॥ एहवो कहा संसार जमण क्यों बधावो
 ठो ॥ स्वेतांवरीयारो जादवांमुं किसो द्वेष कूडो आल
 मांस जहणनो देइ ॥ तथा बीजो परमाण जादवाने
 कुमरे मद्य पान पीधां द्विपायनने संतायो, एहमें पि
 ण कुहेतु लगायने जाला जीवाने विप्रतारेठे ॥ तेहना
 कुवाद्धना जूमाया कव सुगुरारो बचन मानस्ये ॥ का
 मदेव न माने इस्यो कहेंठे सो कामदेवकी स्वेतांवर
 उथापनाची नहीं, विसेप थापनाची नहीं प्रकरणाभें
 कामदेव मानेठे ॥ अने नाचिराजा सोरादेवाने जुग
 लीया न माने तेहनो प्रत्युत्तर विचारज्यो जिणाग ब
 चनामे बध नहीं कहेतो कहे ॥ जुगला धरम श्री ऋष
 जदेवजी दूर करयो ॥ कहे कहे ऋषजदेवजी जन
 म्या पहिले जुगले पणो दूर थयो ए बिरुद्ध देखतां
 तो ऊठा दीसेठे अने स्वेतांवरना ४५ आगममें मू
 ल पाठमे नाचिराजा सोरादेवी, जुगलीया इसा अ
 क्हर किहांई दीसता नहीं ॥ पिण अनुमान, परिमा
 णसें बिचारतां ए कहेठे ॥ जुगला धरम ऋषजदेव

जी निवाग्याते ते प्रमाणथी जाणज्येते ॥ तत्व केव
 ली गम्यं ॥ इणरो कुठ पद्ध नही ॥ तीर्थकरको पांच
 धावकी हिंस्या नमानें सजोगी पिण कहं ए दिगांवर
 रनो माछ्छे जिम कोई गहिलो बोल बोल्यानी पद्ध
 नही निम ए दीसैं ठे ॥ ते किम जांगठे ते व्यापारठे
 सकंपमाणठे, ते सक्रियठे, तेथी हिंस्या पिण ठे
 पिण तें हिंस्या तीर्थकरनें लागे अकरवाई
 माटे सुत्र जोग थयो इरियाबही क्रियाठे पिण
 पाप नही ॥ इतिज्ञेयं ॥ दिगांवर अनारज देसमें जग
 वान महावीरजी ते नमाने ते पिण जगवंतजिनें तु
 ठे गिणता हुस्ये पिण हमतो जगवानजिने अनें
 त बली जाणाठे कलपावतीत ठे ॥ ते माटे अनारज
 देसमें विहार करवो असंजव नही करम द्य निम
 त कीधोठे ॥ तप पिण मोटो थयोठे, आहारना आ
 लाजथी ॥ इतिज्ञेयं ॥ अनें तीर्थकरजके सरीरकुं दाग
 इंद्रादि देइ ते नमाने, ते जिम मारगरा अजाणठे ॥
 ते कहे तीर्थकरके सरीरका पुद्गल खिरजाइ ॥ ते वा
 त विप्रीतठे तीर्थकर जगवानका सरीर उदारीकठे ॥
 परमौदारीकठे वज्ररूपन नारायच संघेणठे तेहत्तो खि
 रण स्वजाव नथी जे पिरणा कहे ॥ तेहनें पूरणो उ
 दारीक, सरीरमें स्वयमेव पिरवानो गुणकिसा करम
 नी पराकिरताठे तथा जीवनो गुणठे ते बतायो चाहि
 ज्ये वेक्रिय स्वजावठे पिरणतो उदारीकतो स्वजाव

पिग्वानो नही संघेण सहितले ॥ बंधन संघातन स
 हितले त माटे सरीरनो पिरण स्वभाव विरुद्धवे ॥ इति
 ज्ञेयं ॥ दिगांवरी कहे द्रव्य चारित्र विना मोक्ष नही इ
 म कहते, ते निजगुण परगुणना अजाणले तेहने इम
 पूछणो द्रव्य चारित्र स्वभावले तथा परस्वभावले स्व
 स्वभाव कहोतो अज्ञव्यने पिए द्रव्य चारित्र हो
 इवे तेहने पिए स्व स्वभावनो लान कहो परस्वभा
 व कहोतो मुक्त परस्वभाव विना न होइ इम कहो,
 जिण मारगरा अजाण चारित्रना गुणने कांइ सम
 जे मत पढना चूल्या द्वेष जाव लीया मुद्ध मार
 ग स्वेतावरने, निदवा जणी कुबुद्धि लगावेवे ॥ चारित्र
 जोग ॥ संघेण अकंप अवस्था आत्मीक गुणवे, चा
 रित्रावरणी करमना विद्विषथी परगट थाइवे ॥ ते नि
 श्चे चारित्र कहिज्येवे ॥ ते काल लवधथी जिम निस
 रग समकते, तिमहीज चारित्र वे पिए जोलाजीव ॥
 मिथ्यातने काल लवधथी क्षय हुवा निसर्ग समकित
 कहेले ॥ पिए चारित्रावरणी करमने काल लवधथी
 क्षयनथी कहता ते चूल्या जनेले ॥ इती ॥ अने दिगां
 वरी शुद्रने दिद्वाने मोक्ष न माने तेह जाति करम
 ने मुक्ति जाणेले ॥ अने जिन मारगने जाति करम
 से मुक्ति नथी उंच जातादिकसे मोक्ष कहेले ते करम
 थी मोक्ष नथाया ॥ तेहने समकित बरीले ॥ केवल ज्ञा
 वडोले ॥ दंसणपुविनाण ॥ इति द्रव्य संग्रहजो ॥ इति ॥

प्रने क्रिया कोस परमुख ग्रंथामें निंद्या करीहे ॥ दुं
 ोया साधांकी मुहके मुहपती राखें ॥ सुद्रके घरका
 प्राहार गारिके जाजनके अणगल नीरका ॥ अण
 मोध्या आहार पानी दीनतासुं माग ल्यावें ॥ अरु प
 ननादिक जीवाकी जतना करे ॥ मुहपतीमें समुर्धम
 होय तिणकुं गिणें नहीं ॥ दिगावरी स्वेतांवरके साधा
 की इत्यादिक निंद्या घणी करे ठे सो उत्तर ॥ जो मु
 हपती मुह आगे रहेसो मुखकी गरमाईके फरससे
 समुर्धम नहीं होय ॥ तेजस अगन अंतरसें मुख मां
 हे आवे है ॥ तिसकी सहायतासे समुर्धम नहीं हो
 या ॥ मुखपती सूत्रामें रखणी चलीहे, जगवती उत्राध्ये
 नादिकमें पडेलहणादि विध सुद्ध करि रखतेंहे ॥ सो
 ई समुर्धम नहीं होया ॥ जो कोई कहे समुर्धम होय हे,
 तेह अजाण पणसे तथा मूर्खतासे तथा देखसें कहे
 हे ॥ तिसके कहणेकुं सत्य नहीं समजनां जिनराजके
 बचनोमे संक्या नहीं करणी एहनी परिद्धा प्रत्यद्धहे ॥
 प्रथमतो बचननो बंध नहीं रह्यो ते किम जवानसे क
 हता दीसेठे ॥ ए साधू दुंढीये तो तीनसे वरसांसे हु
 ये हे अने सास्त्रमे मुहपती सुद्र घरका आहार इत्या
 दि निंद्या करेठे पिण मूढमती समजे नहीं दुंढीया
 साध तीनसे वरसांसे कहुं तुं तो अने क्रिया कोस प
 रमुख सास्त्र कहुं तुं तो ॥ जिस सास्त्रमें दुंढीयारी निंद्या
 ठे ते सास्त्र दुंढीयां हूवा पठे वणायोठे निंदक मनुषो

पिग्वानो नही संघेण सहितछे ॥ बंधन संघातन स
 हितछे ते माटे सरीरनो पिरण स्वभाव विरुद्धछे॥इति
 जेयं॥दिगावरी कहे द्रव्य चारित्र विना मोक्ष नही इ
 म कहेंछे, ते निजगुण परगुणना अजाणछे तेहने इम
 पृच्छणो द्रव्य चारित्र स्वभावछे तथा परस्वभावछे एव
 स्वभाव कहोतो अज्ञव्यने पिए द्रव्य चारित्र हो
 इछे तेहने पिए स्व स्वभावनो लाज कहो परस्वभा
 व कहोतो मुक्त परस्वभाव विना न होइ इम कहो,
 जिए मारगरा अजाण चारित्रना गुणने कांइ सम
 जे मत पढ़ना चूल्या द्वेष भाव लीया मुद्ध मार
 ग स्वेतांबरने, निंदवा जणी कुबुद्धि लगावेछे॥चारित्र
 जोग ॥ रुंधण अकंप अवस्था आत्मीक गुणछे, चा
 रित्रावरणी करमना विद्विषथी परगट थाइछे ॥ ते नि
 श्चे चारित्र कहिज्येछे ॥ ते काल लवधथी जिम निस
 रग समक्तछे, तिमहीज चारित्र छे पिए जोलाजीव ॥
 मिथ्यातने काल लवधथी क्षय हुवा निसर्ग समकित
 कहेछे ॥ पिए चारित्रावरणी, करमने काल लवधथी
 क्षयनथी कहता ते चूल्या जनेछे ॥इती॥अने दिगां
 वरी शुद्रने दिद्वाने मोक्ष न माने तेह जाति करम
 ने मुक्ति जाणेंछे ॥ अने जिन मारगने जाति करम
 से मुक्ति नथी उंच जातादिकसे मोक्ष कहेंछे ते करम
 थी मोक्ष नथाय॥तेहने समकित बनीछे ॥ केवल ज्ञा
 वडोछे॥ दंसणपुविनाणं॥इति द्रव्य संग्रहजो॥इति॥

अने क्रिया कोस परमुख ग्रंथामें निद्या करीहे ॥ ठुं
 ढीया साधांकी मुहके मुहपती राखें ॥ सुद्रके घरका
 आहार गारिके जाजनके अणगल नीरका ॥ अण
 सोध्या आहार पानी दीनतासुं माग ल्यावे ॥ अरु प
 वनादिक जीवाकी जतना करे ॥ मुहपतीमें समुर्भम
 होय तिणकुं गिणें नहीं ॥ दिगावरी स्वैलांवरके साधा
 की इत्यादिक निद्या घणी करे ठे सो उत्तरं ॥ जो
 हपती मुह आगे रहेसो मुखकी गरमाईके फरससे
 समुर्भम नहीं होय ॥ तेजस अगन अंतरसें मुख मां
 हि आवे है ॥ तिसकी सहायतासे समुर्भम नहीं हो
 या ॥ मुखपती सूत्रामें रखणी चलीहे, जगवती उत्राध्ये
 नादिकमें पडेलहणादि विध सुद्ध करि रखतेहे ॥ सो
 ई समुर्भम नहीं होया ॥ जो कोई कहे समुर्भम होय हे,
 तेह अजाण पणेंसे तथा मुखतासे तथा देखसें कहे
 हे ॥ तिसके कहणेकुं सत्य नहीं समजनां जिनराजके
 बचनोमे संक्या नहीं कही ॥ एहनीं परिक्ता प्रत्यक्त्तहे ॥
 प्रथमतो बचननो बंध नहीं रह्यो ते किम जबानसे क
 इता दीसेठे ॥ ए साधुं ठुंढीये तो तीनसे वरसासे हुं
 ये हे अने सास्त्रमें मुहपती सुद्र घरका आहार इत्या
 दि निद्या करेठे पिण मुहपती समजे नहीं ठुंढीया
 साध तीनसे वरसासे कहुं ठुं तो अने क्रिया कोस प
 रमुख सास्त्र कहुं ठुं तो ॥ जिस सास्त्रमें 'ठुंढीयारी' निद्या
 ठे ते सास्त्र ठुंढीयां हवा पठे वणायेठे निदक मनुष्यो

ने ॥ रागी द्वेषीयानें निंदा करीते पिण आंगुण या
 ही मुहपती आदिकी निंदातो करे पिण तप जपका
 गुण देखीने मुह मचकोडेहे ॥ ते जीव जोषका साथीते
 जोप लोही पीवे पिण दूध नही पीवे ॥ तिम निंदक
 आंगुण देखे पिण गुण न देखे ऐसा व्यामोही मूढ
 मती अपणी आत्माने जारी करे ते अने मनमे जां
 एे हम ग्यानीते पिण ए ग्याननो फल लागरहे तत्र
 घणोही पछतावस्ये पिण अपणा अवगुण न देखे सु
 द्रके घरका अणगल पाणी गारिके जाजनका आहार
 पाणीकीं निंदा करे पिण आप सोध राखेतो ॥ गाय जै
 सका दुध कच्चा मास मांहीसुं जरया अने खांकी खा
 ची मांहसुं काढीनें मासका पिंडवत पचेंद्री आदि जि
 वांका सरीरना पुदगल संजुक्त और गुम नीचजात
 बनावे सांजरलुण असुध पुदगल सहित हींग चर्ममे
 बंद होय इत्यादि गोमताते सुद्रके घरका आहरकी
 निंदा करता तो यहजी स्ये ॥ पिण जिणराजके
 मारगमे दया प्रधान कहीकरा राखीने सोध करे
 तो उचितछे पिण दया खोयने सोध करे ते घणा सं
 सार नमस्ये दुंढीया साधु दया जल कायके जीवांकी
 राखवा निमतते सुद्रके घरका पाणी लेवेछे ॥ धरम पालने
 के निमत ते विचारेनही तो जिण धरम कांई विचार
 स्ये ॥ इती ॥ और तीर्थकर नगवान १८ दोष
 रहितते ३८ दोषांमे फेर पाडयोते ते मत थापण

वास्ते पिण जो बुद्धिनो विरतार करीने हृदयमे संम
 जेतो लवधिसार क्षिपनसारमे दीर्घ उपियोग देता
 इम विचारिए क्लृवा तृषा किस्या करमने उदेवइ ॥
 अने किसा करम खपायाथी लवधि तीर्थकरने थई ॥
 तृषा क्लृध्यानो उदय टल्यो ते विचारज्यो ॥ इती ॥ त
 था दिगांवरी कहंठे स्वेतांवरी अगन पक्क कंदमूल
 ना आहार करेठे ते अजक्कठे ॥ ते विरुद्ध कहंठे ॥ ते
 दिगावराम्नाका ग्रंथ मूलाचारनी ॥ आणगार जावना
 धिकारे नोमे समुद्धसे गाथा ५७ ॥ ५८ ॥ फल कंदमूल
 बीजं, आणगिगपक्कंतुआमयकिंचि ॥ एच्चाअणिसणियं,
 एविपय पडीठंतीधीरा ॥ १ ॥ जंहवइअणिवीयं, णि
 यट्ठीमं फासुयंकयंचेव ॥ एणणएसणीयं, तंजिखुमुणी
 पकिठंती ॥ २ ॥ इति पाठ ॥ प्रामुक कंद मूल मुनि
 ग्राह्या तथा घर घरकी जिक्का मुनीने दिगांवरी निप
 धे ॥ तेह विरुद्ध कहंठे ते मूलाचार अणगार जावना
 नवमे समुद्धसे कह्याठे ॥ अणादमणुणादं जिखं णि
 च्चुच्चमण्णिम कुलेसु ॥ घरपतादिहिडंताय भोणेणमुणी
 समादिति ॥ १ ॥ सीदलगसीदलंवा सुक्क लुखंसाणिद्ध
 सुद्धंवा ॥ लोणिदम लोणिदवा जुजंती मुणीअणासा
 दा ॥ गाथा ३६ मी ३७ मी ॥ तेणेज ठामे गाथा ५०
 मी ५१ मी ॥ मुहणयणदंतधोयण, मुच्चट्टणपाद धो
 यणंचेव ॥ संबाहण परिमद्धण सरीर संठावणंसवं ॥ १ ॥ धु
 वण वमण विरेयण, अजण अजंगलेवणंचेव ॥ एणंठ १

विज्ञियकम्मं, सिरवेजं अप्पणोसवं ॥ २ ॥ इति ॥

नवतत्वके नाम जीव तत्व १ अजीव तत्व २ पुन तत्व ३ पाप तत्व ४ आश्रव तत्व ५ संबर तत्व ६ निरजरा तत्व ७ बंध तत्व ८ मोक्ष तत्व ९ ॥ अर्थ—जीव चेतन १ अजीव जठ २ पुन सुजकरम ३ पाप असुज क रम ४ आश्रव कर्म आगमण ५ संबर करम रोकन ६ निर्जरा पूर्व करम सोसन ७ बंध मुजा मुज कर म बंधन ८ मोक्ष कर्मासैं जुदाहोणा ॥ ९ ॥

पांचमहा विदेह क्षेत्रां महिं २० जगवान जैवंता विच रेठे तिनोके नाम ॥ श्रीसिमंदरस्वामी १ जुगमंदरस्वा मी २ बाहुस्वामी ३ सुबाहुस्वामी ४ सुजातस्वामी ५ स्वयंप्रभुस्वामी ६ ऋषिपुत्रस्वामी ७ अनंतवीरस्वा मी ८ सुरप्रभुस्वामी ९ विसालस्वामी १० वज्रध रस्वामी ११ चंद्राननस्वामी १२ चंद्रबाहुस्वामी १३ श्रीजुजंगस्वामी १४ ईश्वरस्वामी १५ नेमीश्वरस्वामी १६ वीरसेनस्वामी १७ महाचंद्रस्वामी १८ देवजस स्वामी १९ अजितवीरस्वामी २० ॥ इति ॥

॥ अथ परदेसीराय गुणस्तवन लिख्यते ॥

सुगुरुध्यान मनमें धरीजी, वंदू श्री वृद्धिमान ॥ अ मलकंपामे आवीयाजी, श्री जिन पुन परिमान ॥ खिमावंत श्री जिन धर्म प्रधान ॥ १ ॥ सुरियाज जुं सुर लो कधीजी, जावसहित हित आंन ॥ दरसनकर नाटक की योनी, जीतकल्प परिमान ॥ खिमावंत श्री जिन

धर्म प्रधान ॥ २ ॥ गोतम पूछें स्वामीनेंजी, कहे श्रो जग
 वान ॥ सेतंत्रकानगरी तणोजी, परदेसी राजान ॥ खिमा
 वंत धन परदेसीराय ॥ ३ ॥ सुर्ग कंता मुर कंतनेजी,
 नारीपुत्र सुजांन ॥ चितनामे जाई तिहांजी, राजाका पर
 धान ॥ खि० ॥ ४ ॥ अधरमी मिथ्यामतीजी, श्रद्धा
 खोटीजान ॥ जीव काया एकी कहेजी, नही परभवको मा
 न ॥ खि० ॥ ५ ॥ सावर्थांमे एकदाजी, जितसत्रु नृ
 प पाम ॥ नेट दई तिहा नेटीयाजी, चितकेगी हुलास
 ॥ खि० ॥ ६ ॥ वाराव्रत तिन धारकेजी, अर्ज करी पर
 धान ॥ सेतंत्रकामें लावीयाजी, परदेसीप्रतें आन ॥ खि०
 ॥ ७ ॥ जोडे अश्वनेअर्थमेंजी, देखोतेहनीचाल ॥ मंत्रीला
 या बागमेंजी, वैठातवचूपाल ॥ खि० ॥ ८ ॥ ह्यारावाग
 इण रांकीयाजी, कथा कहे विख्यात ॥ चितप्रतें कहआ
 वीयाजी, गुरकहीमननीवात ॥ खि० ॥ ९ ॥ पापीदादा नरक
 सेजी, समजावे मुऊआया ॥ नारीलंपटवाधीयोजी, जिम न
 ही ठामेराय ॥ खि० ॥ १० ॥ नगेश्वर जुदा मान जीव का
 या ॥ एटेक ॥ दादी जो सुरलोकमेजी, आई नहीं महारा
 य ॥ दुरगंध कारणजा णयेजी, नवा स्नेहलगाय ॥ न०
 ॥ ११ ॥ कुंजीसेंजीव किमगयाजी जैसें कुंटागार ॥ माहि
 थकीवाजातणोजी, निकलेसोरतिवार ॥ न० ॥ १२ ॥
 कुंजीमें जी आवीयाजी, विद्रनपडीयो कोय ॥ लोह तपा
 व्यो अगनमेंजी ॥ अगनसमाई जोय ॥ न० ॥ १३ ॥
 तरुण चलावे वाणनेंजी, बालजीवसत्रजाण ॥ तूटी ध

नृप न चलावेजी, बुद्धीबल नही ज्ञान ॥ न० ॥ १४ ॥
 तरुण वृद्धजो चारमेजी, जो बलधारकहोय ॥ ठीका
 डोरी तूटतांजी, तिमवृद्ध जीर्णजोय ॥ न० ॥ १५ ॥
 कंठनीच नरमारीयो, वध्यो न उगो होय ॥ वायं चरी
 खालीकीयाजी, चामनाथडीजोय ॥ न० ॥ १६ ॥ दो
 य खंडकर देखीयाजी, जीव नही मुनिराय ॥ अगनी
 अरणी काठमेजी, खंडनदीसे राय ॥ न० ॥ १७ ॥ जी
 व दिखावोकाठनेंजी, वायु न दीसे नूप ॥ गुरू लघू
 ए केमठेजी, दीवे कैसो रूप ॥ न० ॥ जु० ॥ १८ ॥
 जुदाजीवकायाकहीजी, श्रद्धाशब्दवखान ॥ पिण जि
 म वै तिमरहणदोजी, धर्मकठिन असमान ॥ न० ॥
 ॥ १९ ॥ लोहवाणीनासारखाजी, मतहोवेनूपाल ॥ सु
 णी विरत वारेंलीवेजी, जाण्या धर्मविशाल ॥ न० ॥
 ॥ २० ॥ राणी सुन्नटखजानमेजी, चौथाजागजु दांन, धे
 लेवेलेंपारणाजी, जावजीवलगजाण ॥ न० ॥ २१ ॥
 स्वार्थबिनराणी विपेजी, कहेकंवरसेवात ॥ राजहुकमवर
 तावीयेजी, करोपितानी घाता ॥ खि० ॥ २२ ॥ मोनक
 रीनें उठीयाजी, मानीनही तिणवात ॥ राणीमनचिंत्याथ
 ईजी करुं रायनीघात ॥ खि० ॥ २३ ॥ करजोमी म
 स्तक नमीजी, मेहर करो महाराय ॥ तेरवें वेलें पारणा
 जी, मुऊधरकीजेआय ॥ खि० ॥ २४ ॥ तालकुट जो
 जन विषेंजी, करतांपांम्याजेदा ॥ खिमा चाव मन धारकें
 जी, नहीआण्यातिनखेद ॥ खि० ॥ २५ ॥ समताजावें

उठकेंजी, अधिरजान संसार ॥ च्यार आहार त्यागेति,
 हाजी, धारेसरणे चार ॥ खि० ॥ २६ ॥ गणीदरसनके
 मिसेजी, गलेअंगुठादीध ॥ मुधर्मासुरलोकमेंजी, जाईवा
 सालीध ॥ खि० ॥ २७ ॥ रायप्रभेनीमें कह्याजी, श्री
 जिन बहु विस्तार ॥ महा विदेहमें पामसीजी, मुक्तन
 णापदसार ॥ खि० ॥ २८ ॥ विक्रम संवत जाणीयेजी,
 उन्नीसे पंचास ॥ शुक्ल पक्ष त्रियोदसीजी,
 प्रथम आषाढजुमास ॥ खि० ॥ २९ ॥ यह गुनपरेदशा
 तनाजी, बरुसतमेंऋषराज ॥ जावधरीनें वरणव्याजी,
 पूर्णबंठितकाज ॥ खिमावंत धनपरदेसीराय ॥ ३० ॥
 ॥ इती परदेसीरायगुणस्तवन सपूर्ण ॥

॥ श्लोक ॥

॥ नमोऽङ्गायतेगीतं ॥ नमोऽक्षजस्मलेपनं ॥

॥ नमोऽक्षवनवासीच ॥ मोऽक्षइंद्रीयनिग्रहं ॥ १ ॥

॥ नमोऽक्षभ्रमतेतीर्थं ॥ नमोऽक्षनग्नमोनेषु ॥

॥ नमोऽक्षकदजक्षेण ॥ मोऽक्षइंद्रीयनिग्रह ॥ २ ॥

॥ उद इन्द्रवज्राव्रतम् कथ्यते ॥

येदृष्टिदोषात्प्रतिविभ्रमाद्वा । यदिकिंचदुनं
 लखितम्प्रयात्र ॥ तत्सर्वमायैपरिशोवनीयं ।

दोषोनदेयंखलुग्रंथकारम् ॥ १ ॥

इति श्री स्वामिजी ऋषराज ग्रंथ संग्रह करता
 सत्यार्थ सागरका धर्माचरन नाम प्रथमो जाग
 ॥ संपूर्णम् ॥

॥ अथ सत्यार्थ सागर ग्रंथस्य द्वितीय चाग प्रारंभः ॥

॥ श्रीगुरु ज्योत्सनामः ॥ अथ मंगलाचरणं ॥

॥ श्लोक ॥ अनुष्ठुव् व्रतम् ॥ प्रणम्यपरमं ज्योतिः ।
पंचापिपरमेष्ठिनः ॥ दिक्षाज्ञानगुरुश्चापि । ममोपकृ-
तिकारकान् ॥ १ ॥

बंद ॥ इद्रवज्जा व्रतम् ॥ श्रीवर्द्धमानस्यजिनेश्वर-
स्य । जयतसद्वाक्यसुधाप्रवाहः ॥ वेपाश्रुतिस्पर्शनज-
प्रसते । नैव्याजवैयुर्विभलात्मजासः ॥ २ ॥

बंद ॥ वसन्ततिलका व्रतम् ॥ श्रीगौतमो गणधरः प्र-
कट प्रजावः । सल्लब्धिसिद्धिनिधिरंचितवाव प्रबंधः ॥
॥ विघ्नाधकारहरणोत्तरणेः प्रकासः । साहायकृद्भवतुमे-
जिनैर्वीरशिष्य ॥ ३ ॥

॥ अथ ग्रथकी जमावट दोहे ५४ लिख्यते ॥

॥ सतगुरपय प्रणमीकरी, बंनुं श्रीवर्द्धिमान ॥ स-
त्यार्थसागरकहुं, विविध प्रश्नकोज्ञान ॥ १ ॥ वीरपठे
चौसठवरस, केवलज्ञान न होय ॥ गायपाचभेकाल
की, वरतीआनसुजोय ॥ २ ॥ वरसएकसोसत्तरे, पंच
मधेवरविचार ॥ स्वामन्नद्रवाहुहुवा, चौदहपुर्वधारा ॥ ३ ॥
॥ तिनकेवारेसुं सही, हुई धरमकीहान ॥ कालपडयो
वारहवरस, जानेंसकलजहांन ॥ ४ ॥ सबहुनियाको
सुख गयो, दुखव्याप्योअसमान ॥ अन्नविहुंनामान
यी, तजेप्रानकुलकांन ॥ ५ ॥ नचंकारसंसारमें, बर-
त्योहाहाकार ॥ नुखेकलिपतदेखीये, पशुपंखीनरनार

॥ ६ ॥ तजीकंतकोकामनी, तजेकामनीकंत ॥ तजी
 मातसंतानको, तजीजातसावंत ॥ ७ ॥ ठगफासीगर
 चोरटा, लूटखोसधनखाय ॥ दुरनिहमहादुकालमें,
 नेमधरमसबजाय ॥ ८ ॥ उपसरगवनमेंअतिहुवा, जु
 खानरतिरजंच ॥ हिसकहनेंसुसाधको, नरदईदयानरंच
 ॥ ९ ॥ तव श्रावग मिल येकठा, करी अरज अरदा
 स ॥ वस्तीमें वासावसो, तजो आज बनवास ॥ १० ॥
 ॥ साधा समोविचारीयो, पंचम कालकरूर ॥ तिनदि
 नसें वस्तीविपें, वसे साधसवदूर ॥ ११ ॥ असना दि
 क काजें मुनी, जमे बहुत बेरान ॥ निह्वाचर दूख व
 हु दिये, लाठीलही निदान ॥ १२ ॥ पेटचरें बहु
 स्वांगधर, फिरजावे निजगेह ॥ ता कारन करवरती
 या, सिथल अचारीतेह ॥ १३ ॥ सेंठा जरुकर वार
 ना, आहार करे अणगार ॥ बाहिर उजा आरडें, क
 रें कमीनपूकार ॥ १४ ॥ किनकिनसें कुरनाकरें, नही
 मुनिवर आचार ॥ नवर कराई चावसें, भोजन जग
 त अपार ॥ १५ ॥ कानें शब्दसुनां नही, जबलग
 करा आहार ॥ तव विचार कर यहकीयो ॥ वाजाको
 ऊणकार ॥ १६ ॥ निज निज ठांदे विचरतां, करतां
 जूमि विहार ॥ जुदी जुदी सरधानसुं, जुदो जुदो व्य
 वहार ॥ १७ ॥ किरियाहीन जतीहुवा, आचारज मि
 लिपंच ॥ तवयह कीधीथापना, प्रतिमादरसणसंच ॥
 ॥ १८ ॥ फिरपीठे पुजारची, मिले उपाधी आय ॥

रचना लीधी सुरतनी, समकित जाव दिखाय ॥ १९ ॥
 आश्रव परिग्रहद्वारमें, प्रतिमासुर कुलकर्म ॥ जोदुं नूत
 जर्ममे, जाण्या नही जिन धर्म ॥ २० ॥ तीर्थजात पर
 पणा, सिवपुर सुगम उषाय ॥ विकलमती मानें नही
 धर्म कर्म किम थाय ॥ २१ ॥ पूरवगया विवेदसंब
 के थेवर बुधवंत ॥ वरस अरुसी नवसे गया, पुस्तक
 लिख्या सिद्धंत ॥ २२ ॥ आगमसब खंडित हुवा,
 ह्या सुलपसा मूल, नूलचूक तामे बहुत, संसेमिटे न
 मूल ॥ २३ ॥ कुठतो अपनी उक्तसुं, कुठ केवल बुध
 धार ॥ जोडमेल आगमकीया, करयो बहुत उपगा
 ॥ २४ ॥ पिण विचारकीनोतिने, स्याद वाद सरध
 न ॥ येह जिन बानीमें सही, जेदकीयो परमान
 ॥ २५ ॥ गह चौरासी जूजूवा, हुवा परसपर द्वेष
 कहुं कहालग कुमतिको, जोरो जयो विशेष ॥ २६ ॥
 कुगुर कुविद्याफोरवे, मंत्र जंत्र कर जेर ॥ करामात
 सुं वसकीया, राजापरजा घेर ॥ २७ ॥ आचारज
 कलि कालके, कुमती कुमत विचार ॥ कलपित वाता
 नवनवी, गूथे ग्रंथ अपार ॥ २८ ॥ च्यारों विकथा र
 स कथा, पूजी पांच पुराण ॥ लोकरीजावे रागसुं, चो
 पई ढाल वखाण ॥ २९ ॥ कुलगुरु जेम अजीवका,
 करे दरसनी जैन ॥ आगम तो वाचे नही, वाचे
 विकलकुर्वेन ॥ ३० ॥ दान दिढावे देहरा, प्रतिमा पूजे
 हमेस ॥ दरसन करिकें जीमीये, यही कगर उपदेस

॥ ३१ ॥ केई करवे देहरा, केई वनावे बिंबा ॥ केई खनावे
 वावनी, केई लगावे अंब ॥ ३२ ॥ मदिरापानी दे
 वता, देहरासरके द्वार ॥ देखो जैनी जायके, सीसन
 मावे प्यार ॥ ३३ ॥ कंद मूल जोजन करें, नही करु
 ना किरपाल ॥ रसित रसोई रोटीयां, यह महिमा क
 लिकाल ॥ ३४ ॥ करम करनकु सूरमा, रागद्वेषका
 जोर ॥ राग रुपरमनीरता, कलह कदाग्रह सोर ॥
 ३५ ॥ गामी बहिल घोमा घरे, जोडी पगां मंजार ॥ थ
 या दरसनी करसनी, बनज करें व्योपार ॥ ३६ ॥ बा
 सखेप देवन लग्या, पोशाला चटशाल ॥ वहिरो
 पूजे चावसुं ॥ नोनेजे जरथाल ॥ ३७ ॥ सागर साखा
 रिखमती, कूडोकुटिलाचाल ॥ महाविरोधी वरतीया,
 वरते पंचमकाल ॥ ३८ ॥ दोई हजार गयावरस, इ
 नपरकाल व्यतीत ॥ नरुम ग्रह जब ऊतरयो, तव
 यह मिटी अनीत ॥ ३९ ॥ आगम किम परगट हू
 वा, किन विधवरती नीत ॥ ते चाखुं विगतायके, सु
 नो धरमके मीत ॥ ४० ॥ इन अवसर पोसालीया,
 गढजालोर मंजार ॥ तारु पत्र जीरन हूवा, कुलगुर
 करे विचार ॥ ४१ ॥ लोको मुहतो तिहावसै, अह्दर
 खरा सुबांच ॥ आगम सोप्या लिखनकु, लिखे अर्थ
 सुखजाच ॥ ४२ ॥ ज्ञान अपूरव निरखीयो, जबला
 ग्यो, चितनेह ॥ साधु श्रावग समकती, तिनका तो गु
 न एह ॥ ४३ ॥ ग्रंथ लिखुं बानाघरे, राखुं अपने पा

स ॥ जो एह आगम विस्तरे, होय जैन प्रकास ॥
 ॥ ४४ ॥ यह विचारकर जबतिने, कुलगुरसे परपंच
 बतीसे आगम सहु, गुप्तज्ञान गुणसंच ॥ ४५ ॥ वा
 चे मुहतो मनरली, वारूकरे वखान ॥ लोकाटोली नि
 रमली, लोक कहें इम वांन ॥ ४६ ॥ लोके लिखा
 आगम नवा, धर जेज्या गुजरात ॥ फिर जेजा नागोर
 में, वाचें बुध विख्यात ॥ ४७ ॥ सुनें ज्ञान चरचा
 चतुर, धरम मरम मनलाय ॥ प्रतिमाको पूजे नहीं,
 लोकानामधराय ॥ ४८ ॥ प्रतिमा आश्रवद्वारमें, लो
 का करी उथाप ॥ थापी निर्जर जावना, कर संवरसुं
 जाप ॥ ४९ ॥ धरम सहित करनी करें, श्रावग संवरद्वार
 ॥ आश्रवतो तजिवो कह्यो, यह तुमकरो विचार ॥
 ॥ ५० ॥ जग्यो जरम मिथ्यातको, जग्यो जैनको जो
 र ॥ गुजराती गुजरातमे, नागोरी नागोर ॥ ५१ ॥
 हीर रूप पंचायनी, चारतियां सुविसेस ॥ जागी जै
 न तणी दशा, महिमादेश विदेश ॥ ५२ ॥ लोका ऊ
 ठा उमंगके, थयो धरम उद्योत ॥ मूल धरम परगट
 कीयो, आगम बल जगजोत ॥ ५३ ॥ आश्रवके था
 नक सहु, किया निखेध तिवार ॥ संवरमारग मुकत
 को, ताको कह्यो आचार ॥ ५४ ॥

वखाण--हिवे श्री जगवती सूत्रमध्ये सतग २० में उदे
 शे टमें श्री जगवंत महावीर प्रते गौतमस्वामीजिनें पु
 उयो तुम पबे पूर्वाको ज्ञान कितनें कालताई रहसी ॥

हे गोतम १ हजार वर्षताई रहसी महावीरजी मोक्ष
 गयापठें १२ वर्षे गोतम मुक्त गया ॥ वीर पठें २०
 वर्षे सूधर्मजी मुक्तहुये. वीरसे ६४ वरसे जंबुस्वामी
 मुक्त हुये. वीरसे ९८ वर्षे प्रजवा देवलोक गये वीरसे
 १७० वर्षे नद्रबाहु हुवा श्रीमहावीरसे २१४ वसे अ
 व्यक्तवादी निन्हव हुवा ते सूत्र मानता नही वीरसे
 २१५ वर्षे थूलनद्रजी हुवा. वीरपठें २२० वर्षे सुन्य
 वादी चौथा निन्हव हुवा. वीरपठें २२८ वर्षे २ क्रिया
 वादी पाचमो निन्हव हुवा ते एकसमें २ क्रिया लगे.
 वीरपठे ३३५ वर्षे प्रथम कालिकाचार्य हुवा. वीरसे
 ४५२ वर्षे दुजा कालिकाचार्य हुवा सरस्वती वहिन
 वालण हुवा. श्रीवीरसे ४७० वर्षे राजा वीर विक्रमा
 दित्य हुवा ॥ वीरपठे ४५४ वर्षे चलाचल निन्हव
 हुवा. वीरपठे ५८४ वर्षे वयरस्वामी हुवा वीरपठे
 ५८४ वर्षे च्यार साखा हुइ तेहनों बिस्तार कहेठे-
 १२ वरसनो तथा ७ वरसनो काल पडयो तिवारे
 घणा साधू आचार्य हुंता तिण महापुरसाने संथारो
 करीने आपणा कार्य सारयो मोटा मुनीस्वर थया ते
 तो दूकालमे डिग्या नही क्रिया थकी चुक्या नही
 आराधिक हुवा देवलोक गयो आगमीये काले मुक्ती
 जासी केइएक कायर थया परीसा खम्या नही ते
 मोकला हुवा. केइएक महापुरस परदेसे उतर गया
 विहार करया पाठे रह्या ते भ्रष्टथया खुध्याखमाय

नहीं सुजतो अन्न पाणी मिले नहीं कदाचित् मिले
 तो निहारी आगे अन्न पाणी आवे नहीं नेप
 लिंगधारीथया साधूना गुणरहित थया असुजता
 आहार लेणहार थया तिहां साधुने सुजतो आहार
 पाणी मिले नहीं तिवारे सिदाणा साधु वृती चांजी
 प्रीसा २२ खम्या जायनही तिवारे मोकला विशेष
 प्रक्या संजमथी चांगा मंत्र जंत्र उपध नेपज कर
 वा लाग्या इतने एक मोटा साहुकारने परवार घणो
 वेटा बेटी बंधव जाति न्याति घणी अने धन घणो
 पिण अन्न थोडोसो अन्न खावणवाला घणा द्रव्यदेवे
 वरावरका तोही अन्न न मिले खातां खातां ठेहडे
 अवसरे थोमोसो अन्न रह्यो तिवारे साहुकार
 लाज्यो समरहती दीसे नहीं हीण दीनथया तिवारे
 घरनी स्त्रीये कह्यो थोडसा अन्नसूं काम चलावो वली
 स्त्रीवोली शेटजी अन्न खूटो तिवारे साहुकार कहे
 खुणेखचूणे होयतो एकठोकरीने ते सोधीने ते राव करा
 वो करावीने तेहमे विप घालीने पीलेस्यां ऐसो विचार
 कीधों तिवारे पठे स्त्री विप वाटेवे एतलेसमे लिंग
 धारी साधु गुरुना मोकला आव्या तिवारे घरनो
 घणी सेठबोल्या थोडीसी रावडी विप विना होवेतो द्या
 थोडीसी बासणमे हुंती ते दीधी तिवारे साधु नेप
 धारी बोल्या बाई तुमकाई वाटोगे समजी बाईकहे
 स्वामी ग्रहाना काम पुठणा जाग्य नहीं जदसेठने

साधुयें कह्यो आ 'वाई काई बाटेवे तिवारे' सेठकहे
हारे धनघणो पिण साधजी अन्न नही ते. जणी विप
पीसेवे. रावमे घाली पीयने सोइरहस्यां. तदसाधुने
यहवचन सुणीने दया उपनी सेठने कह्यो हूं गुराकने
जावुंतुं एतले रावडीमे विपघालोमती सेठने मानी
चले गुरापासे जाई सर्व वातकही गुरु बोलया चेला
वेठ हूं जाउतुं गुरुआया जोतसने बलेकरी गुरु बोलया
सेठजी बातसाची कहो सेठजी कह्यो मरणो आयो
दीसेवे जव गुरुकहे इतना मनुप आवारो मरोवो
जो मे सर्वने उवारूं तो काई देवो सेठ बोलया जे क
हस्यो ते देस्यूं जद गुरे कह्यो तुहारे बेटा घणावे
तिणा मांहिथी ४ बेटा हमने द्यो सेठने कह्यो थे कहो
सो ठीकवे गुरे कह्यो थे दोहरा सोहरा दिन सात का
ढो आजथी दिन ७ पवे धानना जिहाज आवसी
देसमे सुकाल सुनिहोसी चिंत्या मतिकरो दुकाल
निकाल जासी सुकाल होसी साइजी वचन सुणयो
वचन प्रमाणकीधो सातमे दिन १ जिहाज आया
सेठने ४ बेटा दीधा साधाने लोकमे सुख पाम्या
ते पुत्रना नाम नगजी १ नगोदरजी २ नंदमती ३
वियज्ञधर ४ इणा जेपलीधो तिवारे शास्त्र जण्या
गीतार्थ हुवा पवे साधु आव्या साधा कह्यो थे सुद्ध
क्रीया करो पिण मान्या नही तिहांथी. मत निकल्यो
चारोंजाई गळ काढयो ४शाखा हुई चंद्रशाखा १ नागिंद्र.

शाखा २ निवतशाखा ३ विद्याधरशाखा ४ इनशाखा
 ओसे पाहिले १२ वरसी तथा ७ वरसी काल पन्थो
 तिसके वाद यहशाखा निकली इण च्यारने आपणा
 आपणा मत जुदा जुदा चलाया जे जगवंतनी प्रति
 मा करावी तिणां विचारयो जे आपणे जावे ते आ
 वसी ते माटे घणो लाज होसी तव श्रावण लिंग
 धारीयांना उपदेस सुणीने देहरा तथा चैत्याला उपा
 श्रै ठाम ठाम कराया आप आपणी गठ समुदाय वं
 धाणी आपआपणा श्रावण कीया तिणें आपणी पू
 जा करावे विशेष मोकला पर्या पठे शिवचुती आ
 चार्यसे दिगांबर ६०९ वर्षे हूवा. श्रीवीर पठे ८८२ वर्षे
 चैतवासी हूवा धरमखाते देहरा मंडाणा श्रीवीर प
 ठे ९८० वर्षे पुस्तकांरूढ लिखण की थई॥ गाथा॥ बल्ल
 ही पुरनयरे, देवद्विप मुहसी साण सवेण ॥ पुठे आगम
 लिहिया, नवसे असीयानु वीराज॥१॥ बल्लनपुर नगरने
 विपे तेकिम नवसे अरसी वर्ष हूवा पठे देवद्विआ
 चार्य एकदा प्रस्तावे सुंठनो गांठियो कान उपर मे
 लो हुंतो ते विसर गयो काल अतिक्रम गया पठे या
 द आठ्ठो तद देवद्विगाणी विचारयो कांईक बुद्धि
 हीण हूवा ते माटे सूत्र मुखथी विसरसी तिहांथकी
 तिणे पुस्तक लिख्या आचारांगनो सातमो अध्येन
 महाप्रज्ञा नामे तेहना उदेशा १६ ते कांई कारण
 जाणी दिवटी खिमासमण लिख्यो नही ते बिबेद्यो ॥ ए

तलालमें २७ पाटे सुद्ध मार्ग चाल्यो परंत वीच वी
 चमें औरऔर मत निकलते गये. तद पीठे दुकाल
 नारी पडयो लिंगधारी साधु रह्या सिद्धांतना पाना
 हुंता ते चंडारमाहि राख्या पोताने वंदे जोड कीधी
 प्रकर्ण तथा चोपाई, वंद चाल, श्लोक, गाथा, काव्य,
 संस्कृतादि ग्रंथ तथा स्तोत्र सेतुंजो महात्म इम पो
 तानी अनेक मतनी कल्पना करी हिंस्र्या धर्म परु
 प्यो तथा गुरुअंग पूजा पोथीनी पूजा गौतम पडघा
 खमासमण बहिरावे गुरुना सामेला करावे गाजा
 वाजासे नगरमे ले आवे पगपंडावे इत्यादि सूत्र विरु
 द्ध परुपणा करे तिवारे पठे ९०४ वर्षे विद्यासंत्र
 लब्धि विवेदगया वोर पठे ९९३ वर्षे तिसरा कालिका
 र्यने पाचमथीचोथ थापी वीर पठे ९९४ वर्षे पद्धी फेरी
 १४ थापी ॥ वीरसे १ हजार ८ वर्षे उप्रांत सर्व प
 र्व विवेद गया षोसाल मंराणी वीरसे १४६४ वर्षे
 बडगठ हुवा ॥ ८४ ॥ श्री वीरसे १६२९ वर्षे पुनमीया
 गठ निकल्यो श्रीवीरसे १६५४ वर्षे आचलीया गठ
 निकल्यो वीर पठे १६७० वर्षे खरतर गठ निकल्यो.
 वीर पठे १७२० आगमीयागठ हुवा. वीर पठे १७५५
 तप गठ हुवा. पोनाल थापी ॥ वीर पठे २०२३ वर्षे
 जिन मती लोका हुवा ते किम हुवा ते कहेठे पुस्तक चं
 डार मांहि हुतां तद लोके मुहुतो श्रावग कारकुन
 दफतरी हुंतो एकदा प्रस्तावे उपाश्रे जतीया पासे

आव्यो हुंतो जतीया कह्यो जे सिद्धांतना पाना बुदे
 ही खाधावे तेह मने लिखी आपोतो कल्याणनो कार
 णवे घणो लाज थासी इम कह्याथकां लुंकेमुहते व
 चन परमाण कीधो तिवारे वेपधारीया एक दसमी
 कालकनी परत आपी ते लुंके मुहते बाची यहवो वि
 चार कीधो जे श्री तीर्थकरनो मारग तो दसमी
 कालक सूत्रमेवे दया धरमनो मारग बांडीने हिं
 स्या धर्मनी परुपणा तो पोते मोकला पाम्या ते मा
 टे हिवडा कहिये नही तिसवास्ते दसमी कालकादि
 सूत्राकी दो दो परत उतारी तद पीवे लुंके मुहते
 पौताना घरे सूत्रनी परुपणा मांडी तिवारे घणा न
 व्य जीव समऊवा लाग्या घणे जीवाने दया धरम
 रुचिवा लाग्या तिण काले अरहट्ट बाडीना वाणीया
 ते संघ काढीने नीकल्यावे बाटे वरखा हुई जे गामे
 लुंकेमुहुतो दया धरमनी परुपणा करेवे ते गामे
 संघनो पडावथयो तिवारे संघ सर्व लुंका मुहताकने
 सिद्धांत सुणेवे ते अपूर्व वाणीवे ते इसो जाणी
 घणा लोग सुणवा लाग्या तद लुंके साधश्रावगनो
 धर्म सुणायो ते संघरे मनमें मारग रुच्यो ते केतला
 एक दिन सुणतां गया तद संघमे जेपधारी हुंता गुरु
 ते संघने इम कहे संघजी चालो लोग खरचीने का
 जे तंगथायवे तिवारे संघजी बोल्यो मारगमें अजय
 णा घणीवे एकेंद्रीयादी जीवानी उतपति घणीवे ते

मांटे सुसता रहो तिवारे जतीजी बोलया साहजी धर्म
 के काम मांहिं हिंस्या गिणवी नही तिवारे संघमन
 में बिचारयो जे लोंके मुहुते पासे सुएयोठे जे जेपधारी
 आणाचारी ठहकायानी अनुकंपा रहित एहिज दी
 सेठे ते सेठ बोलया थांकी इच्छाहो सो करो म्हेतो अ
 वी चाला नही पठे ते जती पाठा गया. संघनें सि
 द्धांत सुएयासे वैराग उपनो ४५ जणसुं संजम ली
 धो संजती थया ते संवत १५३१ ते ॥ साधसश्
 वो १ साधुजाण २ साधनुणो ३साधजगनो ४ इत्या
 दी ४५ साधमिलिने दया धरम परुपवा लाग्या तिवारे
 घणे जवजीवा धरम आदरयो संजम पालता विचरेठे
 जेपधारीया नाम दीधो ए लोंका मतीठे तिवारे
 कितराएक जेपधारी अनेक विध तप करवा लाग
 तिवारे लोका घणाथा ते इणारो कष्ट देखी सुसता पदा
 अने तपा हुता तेहना श्रावग पूजारादि दया धरमना
 साधाने घणा उपसर्ग दीधा तिण महापुरपे परीसा
 सह्या तिवारे रुपजीसाह पाटणनो वासी वाणी सु
 णी दिद्धा लीधी ते रुपऋष थया ॥ लोंकाना पहिला
 पाट ॥१॥ तिवारे सुरतनो वासी जीवोसाह ते रुपऋ
 ख पासे ऋधि ठोडी संजम लीधो ते जीवो ऋखीथयो इ
 तरा. लगे साध जाण तिवारे पठे थानक आहार पानी
 वख पात्रनी मर्याद लोपी दोष सेवण लाग्या. एतले
 आचार गोचरमे ठीला पदा संवत १७०९ सुरतनो

वासीबहुरा वीरजी श्रीमाल लोंकामे कोमी धज तेह
 नी बेटी फूला बाई तेहने पासें लवजीसाह सिद्धांत
 घणा नरया लवजीने वैराग जपनो बहुरावीरजीनेरुपे
 दीक्षानी आज्ञा मागी तिवारे ते कहिवा लाग्यो
 तुमे लोंकाना गहमे दीक्षा लो तो आज्ञा द्युं लवजी
 साह औसर विचारयो हिवडां अवसर एहवोहीज
 ठे इसो जाणीने लोंका गहमे दीक्षालीधी तिवारे वैर
 जंघजी पासे घणा शास्त्र चणी पंडीत हुवा तिवारे
 वर्ष २ पठे पोताना गुरु पासे पूठे स्वामी साधुनो
 आचार सुध किमपले दसमी कालककी तरे तिवारे
 लवजी कह्यो जगवंरो मारग २१ हजार वरसता
 ई चालसी ते माटे लोंका सांहिथी निकलो तो तुम
 गुरु हुं शिष्य तिवारे वैरजंघजी बोलया लोंका मा
 हिसुं निकलो जाय नही तिवारे रुखलवजी गह बो
 सरावी नीसरया तेहने साथे रिखथोजणजी १ ऋष
 संखियोजी २ ए दो दीक्षा लीधी घणा गाम नगर वि
 चरया तिवारे बीतराग धर्मनी परुपणा कीधी तिवारे
 लोग घणा समजा तिवारे लोका हुंढीयो नाम दीधो ति
 वारे अमदाबादथी कालपुरनो वासी सोमजीसाहते मध्ये
 घणी सूर्जनी आतापना कीधी घणी ताढखभी तपका
 उंसगकीना घणा साधसाधवीनो परिवार हुवो. तेहनो
 नाम हरिदासजी १ ऋषपेमजी २ रुषकानोजी ३ रिप
 गिरधरजी ४ प्रमुख घणा जाणवा वैरजंघ जतीना ग

छथी नीकल्या अने कुवरजीना गच्छथी नीकल्या तहनो
 नाम ऋखअमीपालजी १ ऋप श्रीपालजी २ ऋखधर्म
 सीजी ३ ऋपहरजी ४ रिपजीउजी ५ ऋपकरमणाजी
 ६ रिपगोटाहरजी ७ रिपकेशोजी ८ एतला महापुरप
 गठ बोमी दीक्षा लीधी घणा जिन मार्ग दिपायो
 घणा-परिवार थयो पठे टोला हुंता जायठे समर्थजी
 रिपधर्मदासजी गोधोजी इत्यादि और नागोरके दे
 समे सूत्र परकट कीये लुंका नागोरी पार सिद्ध थया
 श्रीसदारंगजीरा आदेस लेई श्रीपुज्य मनोहरदास
 जी क्रिया उद्धार कीधो तपश्चरणकीधो मुनी खेतसी
 जी साथे तपकीधो श्रीमनोहरदासजी जाति सुरा
 णा नागोर वासी १ श्रीनागचंदजी जात ओसवाल
 सुराणा २ श्रीसीतारामजी जाति अग्रवाला नार
 नोलवासी ३ श्रीस्यौरामदासजी जाति श्रीमाल दि
 ल्लीके बासी ४ श्री हरजीमल्लजी ५ श्रीपरम पंडित
 रतनचंदजी ६ श्रीकुंवरसेन जात अग्रवाल अमी
 नगर वासी ७ तत् सिष्य ऋखराज वरतमान नामठे.
 अत्र कोई कहे हु उक्कठोवुं ते अपणे बंदे कहेवे
 अने नद्रवाहुस्वामी कहेवे रतन जांखा दी
 ठा ते चारित्र सर्व दोषीठे पिण अल्प समणठे घ
 णा मुढे.

॥ दोहा ॥ सकल करम अरी जीतके, सिद्ध हुये
 जगवान ॥ सो बंदु सिर नायके, केवल दरसन ग्यान

॥ १ ॥ आदि पंचनवसादि गिन, पवन आदि खट
 साज ॥ चंद्रकुमादिक च्यार मिल, चतुर बीस जि
 नराज ॥ २ ॥ बीतराग पद पायके, कीया धर्म उपदे
 श ॥ कुमति निवारन सुख करन, टाले सकल कलेश
 ॥ ३ ॥ जिन बाणी जयवंत है, कारण जग उद्धार
 ॥ जो नर श्रद्धे जावसुं, ते उतरे जव पार ॥ ४ ॥

वखाण--- श्रीजिन राज देवने मोह्न मारगका र
 स्ता दया धर्मादिकका कहाहे परंत इस पाचमे
 आरेके परजावसे तत्व ज्ञानका समजना मद्दा कठि
 नहे लेकिन जो हलकरमी जीवहे तेह धरमकी परि
 द्धा करेहें अगर जिन पुरषोकी संसारमें करम पर
 किरत बहुत ज्यादाहे तो उनको बीतराग देवके व
 चन अठे मालुम नही होते सो क्या करिये संसार
 में अमणके कारणे करी जिन वचनको मिथ्या कर
 तेहे याने ऊठे करतेहे आत्मके उद्धार करनका जो
 रस्ताहे जिसते चूल रहेहें और धरमकी परिद्वानी
 नही करतेहें मत कल्पनाके बधारणे वास्ते अनेक
 कुहेतु लगातेहे संसारके रूलनेका जिनको जय न
 हीहे और अज्ञानी जीवोको जरमातेहे आपणे मन
 मे कितनेक जैन मतके धारीयो कहतेहे कि हमारा ध
 र्म सच्चाहे परंतु यों नही समजते कि धर्म किसकुं
 कहतेहे और क्या महिमा धरमकी है सो रहस सूचां
 की नही समजते और हिंस्रयामे धरमकी दिवावणा

करतेहे परंतु दयाका ज्ञेद नहीं जानते और वहकायाकुं
 हणकर यानें हिरया करिके धर्मका लाज कहतेहे औ
 र हिंस्याका दोष नहीं समझने तिनको जैन मती न
 कहिए ॥ क्योंकि जैन धरमतो जतन करे जीवोंका
 तिनको जैनी कहतेहे और जैनी नाम धरायेसे जी
 वकी कुब गरज नहीं सरती इस वास्ते जो लोग
 जैन धरमी नाममे वहोतसे आरंभ हिंस्या वह
 कायाकी करके मोक्ष मारगका खाता कहतेहे सो
 तिनोके पूढनेके लीये यह प्रश्नोका संग्रह लिखतेहे
 और जो कितनेक सकस यों कहतेहे कि हमारे सा
 थ चरचा करो सो तिन लोगोंके वास्ते पूढनेके सू
 त्रोंके अनुस्वार धरम मारगका ज्ञेद कहतेहे और
 हम कुब मत पद्धकी वार्ता नहीं कहते फक्त हिंस्या
 का मारग दूर करनेको सूत्र पाटके साद्धसे दया ध
 रमका ज्ञेद परगट करतेहे वास्ते जो किसी साधू
 श्रावकोंके दिलमे संदेह नहीं पके जों की दीपककी
 रोसनीसे मकानके बीच चांदणा होताहे ऐसेही इस
 प्रश्नोत्तर संग्रहके पढनेसे और धारणेसे मिथ्यात अं
 धेरको दूर करता यह ग्रंथकी वचनिकाहे ॥ हिवे
 सिद्धांत सूत्र प्रमाण करी दया धरमपर सिद्धका
 लक्षण कहतेहे ॥

॥ दोहा ॥ वीतराग उपदेशमे, दया धरम परधान
 ॥ जो धारे मन सुद्धसुं, ते पावें सिवथान ॥ १ ॥

धखण- हिवे कितनेक बादी यों कहतेहे की तुम
 सूत्र ३२ मानतेहो सो सूत्र तो ८४ कहेहें तिनो
 का इहां जुबाब देनेके वास्ते असली और नकली
 सूत्रोंका सरधान लिखतेहे सो लंबी बुद्धिसें सम
 जना चाहिये धर्ममे पहिचान करणी जोगहे लेकिन
 वाद करना जोग नहींहे सो आगम तिविहे पन्नते
 तंजहा सुत्तागम्मे अत्यागम्मे तदुत्तयागम्मे इति
 वचनात सूत्र मूल पाठ १ तस्य तेह सूत्रका अर्थ
 २ याने खुलासा किया वास्ते जव जीवाके समजावनेके
 तिसको अर्थ कहतेहे उन्नयागम्मे याने सूत्र पाठ
 दोनोका प्रकाशक ३ तेह आगम तीन प्रकारका
 कहा श्री जिनराज देवानें तेह मांहे अब पांचमा
 आरामांहे किनेही आचार्य ३२ सूत्रकी आम्ना
 को मानतेहे और कितनेही आचार्य ४५ सूत्र मान
 तेहे कितनेही आचार्य ७२ सूत्र मानतेहे कितनेही
 आचार्य ८१ सूत्र मानतेहे कितनेही आचार्य ८४
 सूत्र मानतेहे तेहनो निरणय करणो जोग्यहे तेह नं
 दी सूत्रमे जो सूत्राके नाम कहेहे ते नाम कहतेहे
 दसवै कालक १ कृष्णिया कृष्णियं २ चूलकल्प
 सूत्र ३ महा कल्पसूत्र ४ उववाई ५ राय प्रसेनी ६
 जीवाग्निगम ७ पन्नवणा ८ महा पन्नवणा ९ पमाय
 पमायं १० नंदी ११ अणुजोगद्वार १२ देविंदथुई
 १३ तंडुलवयालीया १४ चंदगविजया १५ सुरप

च्छती-१६ संकल प्रवेश १७ पोरसी १८ विज्ञाचरण
 विणिथेय १९ गणिविज्ञा २० जाणविजती २१
 मरण विजती २२ आतमविसोही २३ वैराग सूत्र २४
 संलेखणा सूत्र २५ विवहार कल्प २६ चरण विधी
 २७ आउरपचखाण २८ महापचखाण २९ येह
 सूत्र उत्कालिक कहातेहे और इनकी असिफाई
 टालिके आठ प्रहर पढणे कहेहे ॥ अब ३० सूत्र का
 लिक तेहना नाम लिख्यतेहे ते उत्राध्येन १ दसा
 श्रुतरुध २ वृहत्कल्प ३ विविहार ४ नसीत ५
 महानसीत ६ ऋपनापित ७ जंबूदीप पन्नती ८
 द्वीवसागर पन्नती ९ खुनियापमाणएविजती १० स
 लिया विमाण एविजती ११ अगचूलीया १२ बंगचूली
 या १३ विवाहचूलीया १४ अरुणोववाई १५ वरुणोव
 वाई १६ गुरुलोववाई १७ धरणोववाई १८ वेसम
 णोववाई १९ बेलंधरोववाई २० देविंदोववाई २१
 उठाणसूय २२ समुठाणसूय २३ नागपरिधावाणि
 या २४ निरावलीया २५ कप्पिया २६ कप्पवडिसया
 २७ पुप्फिया २८ पुप्फचूलीया २९ बनिहदसा ३०
 यह ३० सूत्रकालिककहातेहे दिन रात्रीका पहिला च
 उथा पहिरं वाचना करणी ॥ एह सरव सूत्र ५९ एक
 आवस्यक एह ६० और आचारांगादिक १२ अ
 ग ॥ आचारांग १ सूयगडांग २ ठाणांग ३ सामायांग
 ४ जगवती ५ गिनाता ६ उवासगदसा ७ अतग

६ अनत्रोववाइ ९ प्रश्नठ्याकरण १० विपक्ति
 ११ दिष्टिवाइ १२ एह ७२ सूत्र और पांच सूत्राना
 नाम विवहारमध्येते एव ७७ सूत्र और १० सूत्रो
 का नाम ठाणांगमध्येते ते १० दसमांहिं बहता ७७
 में आयैहै बाकीचाररह्या तेह ७७ मांहिं मिलावता ८१
 थया तेह ८१ सूत्रोका नाम सूत्रामें कह्याहै तेह पर
 माणते तिणमांहिथी कितनेक सूत्र बिठेदगया यानि
 इसवक्तमें वे सूत्र हैं नही और कितनेक लोग ४५
 सूत्र मानतेहै तिणसूत्रामांहिं देविंद थूवो १ तंदुल
 बयालियो २ गणि विक ३ मरण विजती ४ आ
 जरपचखाण ५ महापचखाण ६ महानसीत ७ एह
 ७ सात सूत्र नंदीमें कहेहैं तेह सत्यते लेकिन इन
 मांहिं इतनी संख्यापडतीहै की तेह मूलसूत्र पाहिले
 नही मालुम पन्ते अगर कोईकहे तुमको क्या प
 हिचानहै जो तुम मूलसूत्र इन ७ सातोको नही
 समजते अगर इसतरे जो कोई वादा कहे तो ति
 सको जुवाव देनेके वास्ते शास्त्रकी रीतिसें लिख्य
 तेहै जो महा नसीत नंदीजीमें नाम लिखाहै अगर अ
 बजो बरतमान कालमें महानसीत जो सूत्रहै तिस
 के चउथे अध्येनमें ऐसा लिख्याहै तेह पाठ लियते
 है ॥ पुठिअवा पुठिअद्धवा सिलोयवा सिलोयअद्धवा
 अद्धरपतियावावे तीन पन्नगाणि सिडियवा ॥ ऐसा
 कहिकें पीठे कह्याहै ॥ कुलीयो दोसोनादायवो ॥ इम क

हा है जो, इण सूत्रमे हीण अधिक लिख्या होय ते
 इमका दोस नही यह वचन तोथकर तथा मल सूत्र
 करता गणधर तिणका कह्या हुवा नही क्योंकि ग
 णधरजी ऐसा सह नही कहे जरा विचार कर द
 खो यह पाठ किसका कह्या हुया है सो ८ आचार्याका को
 या हुया महानसीतहे तिनके नाम यह हरिन्द्र १
 सिद्धसेन २ दिवाकर ३ बुद्धावादी ४ यपसेन ५ दे
 व गुप्ता ६ यशोधर ७ रावगुप्ता ८ इतने आचार्या
 के नामसे नवा वणाया दीसेहे इसपर कितनेक मत
 पत्ता ऐसा कहतेहे की महानसीथ सूत्र अंग उपां
 गोसेनी पुराणाहे सो अंग उपांगोसे पुराणाधाने पहिला
 केसेहे ॥ तिससूत्रके अध्ययन तिसरेका पाठ ॥ तथवहू
 एहि सुयहरोहे संमिलितणसंगोवंग दुवालसंगानं सुय
 समुद्धानं अन्नमन्न अंगानं वंगसुय स्कंध असयणहे
 सगाणं समुच्चिणं किंचि किंचि संवठमाणं एणिले
 हिण तिणितण सकवकयति ॥ अर्थ :- ॥ बहुत आचा
 र्योंने मिलकर पूर्वले १२ अंग सूत्ररूप सागरमेसे थोडे
 थोडे अंग उपांगादि सूत्र नये लिखने लायक पुस्त
 कोमे लिखेहे एतले अबके समयमें जो श्रुतज्ञान
 रूप सूत्र मौजूदहे ॥ तो इस पाठमें मालुम होता
 है की अंगादि सूत्र पहिले रचे हुयेहे और महान
 सीथ सूत्र पीठका रचा हुआहे जो इस पाठमें ऐसा
 पाठह तो पहिले सूत्र अंगादिकहे पीठ महान

साथेह इस वास्ते निश्चय नही मानते इस सूत्रको ऐ
 सही और सूत्रकी घणे नवे बणाये मालुम होतेह
 और कितनेक आचार्य ४५ मानतेह जिसमे सात
 तो पहिले लिखअथिहे और ६ सूत्र और लिख्यते
 हे चउसरण १ नत्तपईत्रा २ चंदबिजा ३ संधारप
 इत्रा ४ जीतकल्प ५ पिणनिरयुक्ति ६ इण उहो सू
 त्राका नामतो सूत्र नंदीमे नहीहे तो यह ग्रंथ कि
 सने बणायेह इसका जवाब देना चाहिये तो यह
 सूत्र किसतरे माने जिनका नामकी कही कह्यांनही
 सो इनके बनाने वाले आचार्य पांचवे आरेके जाण
 पस्तेह क्योंकि पहिले वक्तोके यह सूत्र होते तो नंदी
 आदिक सूत्रासे नाम दरज होता इस वास्ते नवे
 जोडे हुयेह अगर जो कितनेक लोग ४५ सूत्र मा
 नतेह ते मांहे कितनेक ७२ सूत्र मानते हो तो ३२
 सूत्रासे बाहिर और ७२ के चितर महानसीत ना
 भा सूत्रमे पांचवां अध्येन नवनीत सार नामे क्यों
 नही मानतेहो तिसमांहे देहरा प्रतिमा धूपदीप क
 रवाका उपदेतां जो साधू संसार बढावे और संज
 सकाचिष्टाचारी कहाहे इस पाठको क्यों नही मान
 ते इसका जवाब कागजपे लिखदेना चाहिये ज्यु हम
 लोगोकी तस्सलीहोवे और जीतकल्पका नाम नंदी
 सूत्रमें नहीहे यह सूत्रकहांसे आया और किसने ब
 नायाहे ॥ और वृत्तिचूर्ण तो अब वरतमान काल

के आरे पांचमे घण्टाएहे तेह टीकादिकके करणह
 रतिनोके नाम टीका वगरे माहि दरजहे तेह आ
 चारांग सयगडांगजीकी टीका सीलांग आचार्यने क
 रीहे वाकी नव जो अंग सूत्रोकी टीका ठाणांगादिककी
 टीका वृत्ति अज्ञेदेव सूरिजीने बणाईहे नंदीजी अ
 णुजोगद्वारकी टीका मलियागिरी आचार्यने करीहे
 और दसमाकालककी टीका हरीचद्र सूरिने करीहे
 औरजी घणे आचार्योने टीकाचूर्णनास निर्युक्ती आ
 दिक अपणी अपणी बुद्धि प्रमाणे करीहे लेकिन उ
 नोंनेजी खुलासा कहाहे इस पाटका अरथमें इस
 माफिक कराहे और कोई आचार्योने औरतरह क
 राहे कोई इस माफिक करतेहे इस माफिक कराहे
 निश्चेजानी सकारे सो तहत अपणे करे हुये अर
 थोके निश्चे नही करा ज्ञानी महाराजके वचनोको
 संत्यकर माने और अपणे उदमस्त पणाका अरथां
 कुं निश्चे नही कहा और मूल पाठकुं निश्चे परिमा
 णकरा इस माफिक जैसा टीकाकारजीने कहा तैसा
 ही हम लोग कहतेहे जिसवक्त अज्ञेदेवजीने टीका
 करी तव तो पूर्वाका ग्यान विवेद गयेकुं ३०० व
 रस आसरे हो चुकेथे सूत्र जगतीका मूल पाठहे
 जगवान मुक्त पधारे पीठे १ हजार वर्षे वात जावें
 जब पूर्वाका ज्ञान विवेद जावेगा खुलासा देखलेना
 अज्ञेदेव सूरिजी १२९५ वर्ष आसरे पीठे हुयेहे

लेकिन उनोंने तो साफ खलासा सूत्र जगवती ठा
 णागमे कहदीया निश्चे केवली सकारे सो खरा जो
 उठा अधिका कहा होयतो मिठामि दुकडं और
 अबकितनेक लोग इनके करे हुये अर्थोकुं निश्चे केव
 ली सरीखे वचन माने है वो किसके आधारस निश्चे
 य मानेहें फकत अपने मनकी लहिर करतेहें लोकि
 न उनकुं कुठ शास्त्रका आधार नहींहै इस वास्ते
 टीकाकारकी और केवलिजी महाराजकी दोनोंकी आ
 सातना करतेहै और हम लोगोंका और टीकाका
 रजीका एक सरीखा समाधानहै उनोंने मूलसूत्रोकुं
 तो निश्चय रक्खाहै और अरथकरा जिस्कुं कहा में
 उदमस्तहुं मेरी अल्प बुद्धी माफिक अर्थ कराहै
 ऐसा कहा लेकिन निश्चे सर्वज्ञ वचन प्रमाण कीये
 है इसतरे नवे नवे औरनी शास्त्र वहोतसे बणायहै
 इनके उपांत अनेक चरित्र ग्रंथ नवे नवे जोर कर
 परसिद्ध करेहै तेह शास्त्रोमें जो उपदेश रुप वार्ता
 आत्मका कल्याण कारक जो कहीहै उनकुं हम लो
 ग परिमाण करतेहै लेकिन आरंज हिंस्यादिककी वा
 रता परिमाण जही कर सकते जो जिन आज्ञा वा
 हिर वचनहै और उदमस्त जीवोको पदपात मत
 का अधिक होताहै तत्वज्ञानके समजने वाले थोडे
 जीव होतेहै तिसवारते जो सूत्रास मिलते वचन त
 था उपदेशादि वारता सर्व प्रमाणहै जो सूत्रोकी अ

पेक्षा आचार्योंने रखी है (वह बंधुश्रुतियांसे) जान प
 डती हैं और जो सूत्रोंमें श्रावण श्राविकाओंके नाम
 अथवा जिनभक्तिकारकों राजाओंके नाम और
 उनके लक्षण धर्म और भक्तिके करणे का जो
 अधिकार याने समास सूत्रोंमें कहा है तिनके मुता
 बिक लिखते हैं की देखो उनोंने कहीं मंदिर नहीं बना
 या और पहाड पर्वतोंकी जात्राजी नहीं करी और फू
 लादिकके चढानेकी कहीं रीत कहीं नहीं है सो कि
 तनेक वादीयों कहते हैं की जगै जगे पूजाका कर
 णा फरमाया है सो अब हम उनोके वास्ते पूजनेके
 लिये सूत्रोंमें देखकर श्रावण श्राविकाओंके नाम
 और उनका धर्म और गुणोंका समास लिखते हैं अ
 वलतो आचारांग सूत्रमें सिद्धार्थ राजा १ और
 त्रिसलाराणी २ सूयगमांगे लेपनामें ३ ठाणांगिमे
 सुलसा ४ और जगवतीमे सुदरसनसेठ ५ ऋषभद्र
 पुत्र ६ संखजी ७ पोखली ८ उदाईराजा ९ आ
 चीचकुंमार १० कारतिकसेठ ११ मंडुक श्रावण १२
 सोमिलब्राह्मण १३ वरणनागनतुओ १४ और मि
 नाताजी सूत्रमें सेलग राजा १५ पंथकपरमुख १६
 परधान १६ सुदरसणी श्राविका १७ अरणकश्रावि
 क १८ कुंजरजा १९ प्रजावतीराणी २० जितसत्रु
 जा २१ सुवुद्धी परधान २२ नंदनमणीयार २३ तैत
 लीपुत्र २४ कनकध्वज राजा २५ पुंनरीकराजा २६

उवासगदशा सूत्रमें १० श्रावक कहेहे ते लिख्यते
 आणंद १ कामदेव २ चूलणी पिया ३ सुरादेव ४
 चूलसत्तक ५ कुडकोलीया ६ सिकमालपुत्र ७ महा
 सत्तक ८ नंदणी पिता ९ सालणी पिता १० औ
 र अंतगढ सूत्रमें सुदरण श्रावक १ विपाकमाहिं सु
 वाहु कुमार २ जदरनंदी कुमार ३ सुजात कुमार
 ४ सुवास कुमार ५ जिणदास कुमार ६ वेसमण
 कुमार ७ महावल कुमार ८ जदरनंदी कुमार ९
 महाजदर कुमार १० वरदत्त कुमार ११ और उव
 वाई सूत्रमें अंबक श्रावकजी १ और ७०० अंब
 कजीकाशिष्य कहे रायप्रसेणीमें - रायप्रदेसी-१ और
 चितस्वारथी २ जंबूदीव पन्नतीमे श्रेअंसश्राविका नि
 रावलिका सूत्रमें सौमिल ब्राह्मण निखढकुमार १
 अतिवेह कुमार २ वेहल कुमार ३ परिकिरती
 कुमार ४ जुतिकुमार ५ दसरथकुमार ६ जदरथ
 कुमार ७ महाधनुकुमार ८ सतधनुकुमार ९ दिढ
 रथकुमार १० अथवा सिवा नंदा श्राविका १ जद
 रा २ स्यामा ३ धन्ना ४ बहुला ५ पुंसा ६ आ
 गीमित्रा ७ असणिका ८ फल्गुनी गिनातामे पा
 टिला ९ उत्राध्येनमें समुद्र पालक निरावलकामे
 सुजदरा ११ जगवतीमें उत्तपला १२ जयंती १३
 मृगावती १४ आचारांगमें त्रिसला १५ इत्यादि व
 गेरे धणेही श्रावक श्राविकाओंका अधिकार याने

बयान बहोतसा कीयाहे और राजग्रहीनगरी चंपान
 गरी द्वारकानगरी आलंभीयानगरी सावथी न
 गरी वाणीयगांम हथणापुर तुंगीयानगरी इत्यादि
 क नगरीयोमे जगवंत श्री महावीरजी विचरयाहैं औ
 र गणधर आचार्योंने नगरी कोट किला खाई दर
 वाजा वाग वाडी और जह्नुपूरणजह्नु इत्यादिकोंका
 वर्णनकीयाहै और तीर्थकरोके समोसर्णकाजी अधि
 कार वर्णन कीया, परंत जिन मंदिरका बयान अथवा प
 रतिष्ठा अथवा पूजा ऐसा बयान तो किसी नगरमें
 नहीं कीया और घणेही राजे जगवान महाराजके द
 रसन करणकुं गयेहैं लेकिन सचित फूलादिक कही
 किसीने चढाये नहीं और मंदिर बणाया नहीं अग
 र जो कही श्रावकोने मंदिर बणाया होयतो इस प्र
 श्नका जवाब देना जोग्यहै और राजा नरतजी १
 बाहुबल २ श्रीअंसकुमार ३ कृष्ण वासुदेव ४
 श्रेणकराजा ५ कौणकराजा ६ ब्रह्मदत्त चक्रवर्त ७ इ
 त्यादिक घणे राजा धरमके परनाविक हुवा धर्मके
 कराणे वाले हुये धरमके साहज देणे वाले हुये या
 ने धरमकी दलाली कराणे वाले श्रीकृष्ण महाराज
 हुये और कितनेक राजा और श्रावकोने साधुवा
 को थानककी आज्ञादई कितनेही राजाओंने अ
 न्नपाणी खादिम सादिम वगरे १४ प्रकारका दान
 दीयाहै और पोसह सामायक आदिक बहुत धरम

ध्यान किया है अगर जिहां कहीं संदह पमा तहाहा
 प्रथम धर्म चर्चाके पूठेहें और धरम ध्यानकरणेकी
 पोषद साला राजा और श्रावकोकी कहीहै परंत ध
 न खरचकर देहरा करणा तथा संघका काढणा त
 था प्रतिमाका करणा अथवा पूजणा और नम
 स्कारका करणा प्रतिमाकुं और परवतांकी जात्रा क
 रणा इत्यादिकका लाज सूत्रमें कही नहीं और इन
 वातोमे मोक्षका कारणजी नहीं कही कह्याहै और
 करम निर्जराजी नहीं कही अगर जो कही अस्स
 ल सिद्धांत सूत्रमे जगवान वा केवली महाराजोनें फ
 रमाई होई जात्रा परवतोकी और पुष्पादिकोकी पू
 जा करिके किसी राजा अथवा श्रावगने करी होतो
 इस प्रश्नका जुवाव सूत्रके परमाण यानें साखसे दे
 ना चाहिये अगर कितनेक लोग इस प्रश्नपर ऐसा
 कहतेहै की तुम जो पूजामे अथवा जात्रा करणमें
 हिंस्या बतातेहो तो देखो सूत्रामे पहिले हिंस्याकरी
 पावे धर्ममें समजाया सुबुद्धी दीवानजीने अपणे रा
 जाकुं द्रह वावडीको पानी समारनेकी कितनी हिं
 स्या हुई ऐसे कितनेही प्रश्नहै ऐसेही जो हम पूजा
 आदिक करतेहैं सो वास्ते धरमके करतेहैं सो पाप
 ह्य होतेहै ऐसा जो कोई वचन इहा कहेतो तिस
 को जुवाव देनेके प्रश्न लिखतेहै अगर जो देखो सु
 बुद्धी दीवानजीने द्रह वावडीका पानी समराया सो

वह श्री महाराजका उपदेशका पाठ आज्ञाका नहीं है वह तो उसकी अन्तर याने अंदर बुद्धीके परजा वसे पाणीको सुद्धकीया परंतु श्री महाराज तीर्थकर ऐसे आरंभकी आज्ञा नहीं देवे और नलाची नहीं जानें देखो परतिद्ध सूत्र प्रश्नव्याकरणमे लिख्या है की जो प्राणी अर्थ धर्म काम इन तीनोंके वास्ते हिंस्या करें तेह आश्रवका कारण कह्याहै सोई आज्ञा बाहिर जीव जवताईरहेगा तवताई आज्ञाका आराधिक नहीं होगा आज्ञा आराधे बिगर याने आज्ञाधारे विना मोक्ष पद सिद्ध नहीं हो सका ऐसा शास्त्रोका अजिप्रायहै अगर जो जिन आज्ञाके बाहिर कारजहै सो उनसे मुक्त पदकी सिद्धी नहीं है सो भगवानका मारग तो सर्व जीवाकुं सुखकारक हैं ॥ इति पूर्व प्रश्नउत्तर ॥ १ ॥ जो कितनेक लोग हिंस्या करिके धरम करतेहैं सो अपबंदे करते हो की भगवानकी आज्ञा करिके करतेहो की अपने मन इच्छा करतेहो सो इस प्रश्नका जवाब देना योग्यहै अगर जो सावद करतव जितने सूत्र में लिखेहैं इनमांहि भगवानकी आज्ञा सूत्रांमें नहीं कहे जो सावद याने हिंस्याकारी काम जो कीयेहैं जो संसारकी रितिहै और अपने मन इच्छाके कामहै जैसे सुबुद्धी परधानजीनें बावडीका पानी सम गन्ना राजाको समजाया ते अपणीं इच्छाए मिश्र ध

र्म तथा पुन धर्महै और इह काम मन इत्ताएकरी
 कीयाहै १ और मल्लीनाथजीने गोहन घर कराया
 ते अपणी इत्ताए कीयाहै २ और आणंद श्रावण
 जीने जात जिमाइ पुत्रको सेठ पदवी दई ते मन
 इत्ता कारजकीया ३ और कौणकादिक राजाओंने
 नगर सिणगारकीया ते अपणी सोच्या कारणे की
 या ४ धर्मघोष आचार्यने नागश्री ब्राह्मणी निंदी
 ते अपणी इत्ताए निंदा करी ५ परदेशी राजाने
 दानसाला कराई ते अपणी दिलकी मरजादा करी
 ६ और चित्तस्वारथी घोडांका मिस करया ते मन
 इत्ता काम कीयाहै ७ और सुरियाजादिक देवता
 ओने नाटिक कीयाहै ते अपणे मनके मुरादें की
 याहै ८ कौणक राजा नित बधाई लेता ते आपणी
 अखत्यारीका काम कीया ९ कृष्ण महाराजने दिक्का
 वास्ते ढंढोरा बजवाया ते मनके अखत्यारे बजवा
 या १० और दिक्का महोत्तव करया ते मनकी इत्ता
 थी करयो ११ और देवता इंद्र जनम दिक्का केव
 ल निर्वाण समे महोत्तवकीधा ते अपणी मरजीके
 साथ करया अथवा उनका कुल विवहारहे १२ औ
 र अनेक देवता और इंद्र नंदीस्वर दीपमे अठाई महो
 त्तवकरें ते उनका पुराणा मरजादके माफिक कार
 ज करतेहे १३ और जंघाचारणसाधूने लब्ध फोरी
 ते अपणी इत्ताए नंदीश्वर द्वीपमे गया तिहां जग

वानकी आज्ञा नहींहे १४ और अंबड श्रावगजी
 सौरुपकरी बेक्रे सेती सोघरो पारणा करया ते अ
 पणे मन इच्छाए कीया १५ और संखश्रावगजीने जिमन
 नो कोल कीया ते अपणे मनसे कीया १६ और महास
 तग श्रावगने ८ अस्त्रीकुं कठोर जापा कही और पोटे
 ला देवने दगावाजीकर तेतली परधान समजाया ते म
 नके इरादे करी समजाया १७ और तीर्थकरजी ब
 रसी दान देवे ते अपणी इच्छाए दीधाहे १८ और दे
 वता प्रतिमा वा दाढा पूजे ते आपणी मन इच्छाथकी पू
 जतेहें १९ और जो धरमके वारते जो हिंस्या करते
 हैं तेह ते अपणे मत कल्पनाके लीये वहकायाकी
 हिंस्या करिके धर्मकहें तिहां जगवांनकी आज्ञा नहीं
 हे अगर जिन आज्ञाके बाहिर कार्जमें मोक्षका पद
 जीवांकुं नहीं प्राप्त होगा अथवा कही जिन आज्ञा
 बाहिरसे मोक्ष हुई होयतो किसी जीवकी तो लि
 खना चाहिये इति प्रथम प्रश्नोत्तर ॥ १ ॥ और
 कितनेक मत पढ़ी ऐसा प्रश्न करतेहे की कीसी
 सकसने काली शोरीका सर्प बणायकर थापन कर
 रक्खीहे और कोई उस कालीशोरीके सापको तोडे
 तो पाप लागताहे अथवा घोडा हाथी मिठाई के
 जो बणतेहे उनके खानेका तुम दोस समजते हो
 तो इसीतरेसे जिन प्रतिमा पूजनेसे धरमक्यो नहीं
 कहतेहो ऐसा प्रश्न जो कितनेहीक लोग करतेहे सो

तिनके जवाब देनेके लिये प्रश्न लिखतेहे की जैसे
 कांसी सकसने कागजके ऊपर गऊकी मूरत निका
 ल कर और फिर उसको ठेदन जेदन करे तो पा
 प बर जरूर लगताहे इह सरधा हमारे ताई है और
 खांडके खिलोनेके खानेकानी पाप लगताहै लेकि
 न उन खांडके खिलोनेका आकार हाथी घोडेका
 है सो वह असवारीके कामके नहींहे और पापा
 एकी गडु बुधकी दातार नहींहै जैसी चाहे पूजा
 पत्थरकी गऊकी करो परंत कारण साधक नहींहे
 जैसे ब्रह्मा विष्णुजीकी मूरतीके फोरनेका पाप ल
 गताहे लेकिन उनके पूजनेसे धर्म नहीं होता अ
 हो सुबिबेकी जनो अंदर दिलके जरा अगीतरे
 समजोतो सही पाप राग द्वेषथी लगताहे अगर
 धर्म तो राग द्वेषके उपसमावाथी होताहे और राग द्वेष
 वधारणसे तो संसारमेंही जीवरहताहै और खय
 करणसे राग द्वेष बीतरागके पदमें प्राप्त होताहे इस
 रीतीसे प्रतिमाकी आसातना करणसे निजदेवनी असा
 तना लगतीहे 'देवाणु आसायणाए देवीणु आसायणाए'
 इति बचनाथा लेकिन द्रव्य पूजा करनेसे आश्रवका
 कारणहे तिन वास्ते पूजा ओर बंदना प्रतिमाको
 करणसे कुब धर्मकी अधिकता नहीं होती ओर ज्ञान
 गुण आतिसय विगर बंदनीक नहीं ओर थापनाथी प
 र्गमर्थकी सिद्धी नहीं मंत्रांमे किसी ठिकाणें गणधर देवाने

लाधाका प्रातमाक बदणे आर पूजणेका लान अथवा धर्म अथवा जिन आज्ञाका उसका आराधिक नही कहा आगर इस प्रश्न उपर जुवाव इसीतरेकाहे सोई नितर बुद्धीसे समझना चाहिये ॥ इति पूर्व प्रश्नोत्तर ॥ २ ॥ अगर कितनेक सकस सूत्र प्रश्नव्याकरणके प्रथम संवरद्वारमें साठ नाम दयाके कहेहे सो जिनोकें मांहि ५७ सतावनमां नाम (पूया) ऐसा शब्द कहाहै सो पूजा सूत्रमे लिखीहै सो तुम कैसे नही मानतेहो ऐसा कहतेहे जो प्रश्न तिनको जवाव देनेको इहां सूत्र प्रमाणसे लिखतेहे सो तुम लोग द्रव पूजाका नाम इहां कहतेहो सो तुम अणजाण पणेसे बोलतेहो जो प्रश्न व्याकरणमे ६० नाम दयाका कहाहे लेकिन पूजाके इह साठ नाम नही कहेहे इहातो दयाके अधिकारके नामहैं जैसे ५७ मा नाम पूया और इन ६० नामोंमे जग्यनी नाम लिख्याहे जो इहां तुम लोग पूयाका अर्थ जो तुम नें मत पक्षसें द्रव पूजाका कीयाहैं और हम पृबते हैं की जग्गका अर्थ क्या करोगे जग्यतो अनमती लोगोने करीहे जिसमे अश्वमेधी अजामेधी जग्य करीहे जिसमे पचेंद्री जीवांका होम कराहै सो तुम इहां दयाके नाममेनी जग्य और पूजाके ठिकाणें हिस्याका उपदेसदेतेहो सो बडी चूलहैं की जैसे जग्यका अर्थ इहां दयाका शब्दहै की जैसे कोई पुरष नूखेको

तृपतकर आणंद करे फिर वह कितनेक आदमी ऐ
 सा कहतेहैं कीतने बना जग्य करा की जो चूके
 की आत्मा तृपतकरी सोई इण द्रष्टांते जग्गका पर
 मर्थ इहां दयाकाहें इसकारण करिके ज्ञानी देवाने
 जग्य दयाका नाम कहाहें कुठ वैसी अनमती लो
 गीकी जीव हिंस्याकी जग्यका इहां कथन नहींहें
 इसीतरें इहां पूया नामची दयाकाही केवलीयोनें क
 ह्याहें सोई दयाके नाम ६० है परंत पूजाके ६०
 नाम नहीं कहेंहें सो सूधा अर्थ समजना चाहिये ॥ इ
 ती पूर्व प्रश्नोत्तर ॥ ३ ॥ अगर कितनेक लोग ऐ
 सा कहतेहैं की नंदी साधू उतरेहे और नंदीमे प
 मती साधवीको काढतेहैं साधू और बिपम ठिकानें
 पडतां साधू वृद्धकी डाल पकडी निकले इत्यादिक
 कारज साधू करे जिसमे दरव हिंस्याहोतीहैं सो
 सूत्रामे कहीहै ऐसैं हमची पूजा आदिककाम करने
 सैं धरम मानतेहैं ऐसे वचन जो कहतेहैं सो अ
 ग्यानताके अथवा मत पद्धके सबबसे कहतेहैं क्यों
 की अब देखोतो सही की जो साधू नंदी उतरे १
 और नदीमेसे साधवीको निकाले २ तथा क्रोधा
 दिकके बससैं नासती साधवीको पकडना ३ और
 बिपमस्थानथी बिरखको पकरके उतरना ४ इत्यादिक
 कारजतो साधू कारण याने कोई वक्तपें करणा कहाहें
 केकिन विनामतलवतो यह कारज करे नहीं और

अनुमोदे याने जलानी नहीं जाने और इन कामो
 की अजिलाखानी नहीं करे कब उह दिन जला हो
 य जो में नदी उतरूं ऐसी जावनाबी नहीं करणी
 अथवा यह कारज इतने लाचार होकर साधूसें होते
 हैं की मेह वरसतेमे वाऊ नूमिका जाना १ और
 जिहां जाय तिहां नदी लगती होय तो नदीका उ
 तरना २ और उह कारणसे चोमासमें बिहार करणा
 ३ और चउमास बीतेपै वरखा होय अथवा रस्ता
 में कीचड बेइंद्री वगैरे जीवांकी पैदा होय तो चौमास
 पीठे ठहरणा ४ इत्यादिक कारज करणेको साधूजी न
 ला नहीं समजते क्योंकि यहतो बहोत लाचारी
 के कामहे सो ऐसे द्विष्टांत देकर कितने लोग इहां
 दरब पूजा करणा सही कहतेहें परंतु मदिर प्रतिमा
 और जात्रा आदिक करणा जो तुम लोग करतेहो
 सो तो बहोत आनंद सेती हिंस्र्या करिके धर्म मा
 नते हो सो तुम नदी आदिकोका हेतू देतेहो सो
 तुमारा हेतू यह सही नहीं होता क्योंकि साधूतो
 दोष लागनेसैं पठताताहैं और अपनी आत्माको निं
 दताहे की मुजे दोष लग्या सो यह कारज बुरा हु
 या और उहतो नदी आदिक लगनेके दोषांका दंड
 प्रायचित लेनेका अजिलाखी होताहे और गुरू म
 हाराजके साम्हने अलोवणाजी करताहे अगर इस बात
 में कितनेक लोग ऐसी तकीर करतेहैं की नदी उतरने

का दंड कहां कह्याहे सोई ऐसी तकरीरोंसे परमार्थकी सिद्धी नहीं परंतु हम लोगतो नदीके उतरनेका नी दोष सूत्रसे सही करतेहैं सो कोईकहे कौणसे ठिकाणे नदीके दोषका प्रायश्चित्तहे सोई परथमतो इत्ता कारणकी पाटीमें देखो कितने दोषोके प्रायश्चित्तोका मित्रा मि दुकडं ॥ कह्याहै की (उसा उतिंग पणग दग्ग माटी मकडा) इति वचनात जो पाणीकी बूंदके लगनेका दोस कह्याहे तो नदीके उतरनेका दोष क्यों नहीं होय इस वास्ते नदीका दंड प्रायश्चित्त इत्ता कारणकी पटीसे सही पढताहै और हम लोग दोषकों दोष समजतेहैं सोई तुम लोगतो दरब पूजाका दोष नहीं समजतेहो और साधुकीतरें तुम क्यों नहीं पढतातेहो अगर तुमतो आरंज हिंस्र्यामें धरम करतेहो सोई तुमतो कारण विसेखमेतो पूजा आदिकको नहीं समजते और इहां लाचारी कामका दिष्टांत देतेहो सो परमाण नहीं होता यानें सही नहीं होता विचार देखो कारणपडे कारजकी सिद्धी हमेसेके कारजमें सिद्ध नहीं होतीहै इति पूर्व प्रश्नोत्तर ॥ ४ ॥ अगर कितनेक सकस ऐसा कहतेहैं की तुम लोग जिनराजके बिंबकी आसातनाके करनेमें यानें वे अदवीके करनेमें दोष समजतेहो तो पूजा और नमस्कारके करनेमें धर्म क्यों नहीं समजतेहो ऐसा जो प्रश्न कोई करेतो तिसको जवाब लिख

तेह की जैसे कोई औरत सीलवती जिसके भरता
 रका नाम मदनसेन होय ऐसा इसीतरेका नाम
 किसी और पुरपका होय तो वह औरत उस पुरस
 का नाम नहीं लेय परंतु उसके साथ जोग संबंधी
 क्रीडा उस दूसरे पुरपसे नहीं करे अगर वह जो
 नाम अपने पतिके मुताविककाजो नहीं लेतीहै तो
 वह अदव और कायदा उस दूसरे पुरपका नहीं
 समजतीहै अगर वह जो नामका अदव रखतीहै
 सो अपणेही पतिके नाम आश्रयको समजतीहै कु
 ठ उसपुरसका अदव इहां उस सीलवतीको नहीं
 फरमाया ऐसैही हम लोग अपणे दिलमें समजते
 हैं की जिनराजके थापनाकी जो प्रतिमाहै सो ति
 सकी बे अदवी नहीं करणी क्यौ की आपणा देव
 श्री अरिहंताकी प्रतिमाहै परंत ते प्रतिमाकी बंद
 ना पूजा और अस्तुती इत्यादिक कारज आरंभा
 दिककी क्रिया कर द्रव्य पूजादिकरें नहीं जैसे अस्त्री
 भरतारके नामके पुरपाका नाम नहीं लेयतीहै
 परत तेह सती उस अन्य यानें दुसरे मनुपसे जोग
 करम नहीं करे इसीतरे हम लोगनी प्रतिमाकी
 आसातना याने बे अदवी नहीं करे परंत तारण
 तिर्ण प्रतिमाको नहीं समजतेहैं यह परमार्थ सही
 है ग्यानीदेवोके वचन सत्यहै सोई सूधा सरधानस
 मोद्ध पदकी सिद्धी होतीहै इति पूर्व प्रश्नोत्तर ॥ ६ ॥

अगर कितनेक वादी जिहा सिद्धायतनना नाव का अर्थ ऐसा करतेहैं की सिद्ध जे प्रतिमा तिसका आयतन ते घर जेहने सिद्धायतन कहिये ऐसा जो अर्थ करतेहे ते सिद्धांतके मुताविकसें मिलता नहीं है अगर कोई कहे किसतरे इहां तुम अरथ सिद्धायतनका करतेहो ते कहो सो सिद्धायतनका अर्थ तो इसतरे सिद्धांतमे कहाहै की ते सिद्धायतन अनादिकालकेहैं की जैसे सिद्धपद अनंत कालताई रहै ऐसैही सिद्धायतन जो सासता कालकेहैं तिसवास्ते आयतन ते घर तेह इणकारणे सिद्धायतण कहिए अगर जो प्रतिमा सिद्धना वासा वास्ते सिद्धायतन कहिए अगर जो प्रतिमा सिद्धना वासा वास्ते सिद्धायतन कहें तो द्रोपदीके अधिकारमें (जिणघर) याने जिन मंदिर कहाहै परंत प्रतिमाके घर वास्ते सिद्धायतन क्यों नहीं कहा जरा अंतर विचार कर देखो की सूत्र रायप्रसेनीमे सुरीयान देवने पूजा करी जिहां सिद्धायतन कहा अगर इहां प्रतिमाके घर वास्ते सिद्धायतन नहीं कहा अगर असासता मंदिर याने कदीमी नहींहै इस वास्ते मंदिर अथवा देहरा अथवा जिनघर इत्यादि नाम कहाहै और सिद्धायतन तो अनंत कालकेहे स्वयं सिद्ध वास्ते सिद्धायतन अणकीधा आयतन नाम ते घर स्वासता सिद्धायतनको सिद्धायतन कहिये इति पूर्व

प्रश्नोत्तर ॥ ६ ॥ श्री तीर्थंकर महाराजने सूत्रमे ५ देव
 कहे श्री अरिहंत महाराज सो तो देवाधिदेव १ सा
 धु मुनिराज सो धर्म देव २ चक्रवर्त वासुदेवादिक
 सो नरदेव ३ तथा जवदेव सो वरतमान काल दे
 ताके जवमे प्राप्तहै ४ तथा जविकदेव सो कोई म
 नुष्य तिर्यंचका आयुष्य देव जवका बंध परु चुका ५
 ऐसे पांच देव कहेहे लेकिन ठठा देव कह्याहे नहीं ॥
 ओर धर्मके तीर्थ ४ कहेहें साध १ साधवी २ श्रा
 वक ३ श्राविका ४ परंतु पाचमा तीर्थ कह्या नहीं
 ओर ३ जिन कहेहे केवली मनपर्यव ज्ञानी अधिकार
 ज्ञानी परंतु चोथा जिन कह्यानहीं ओरसणें ४ कहेहे
 अरिहंत १ सिद्ध २ धर्म ३ साधु ४ लेकिन जगवानना
 पाचवा सरणा नहीं कह्या इस वास्ते जो कोई कह
 तेहे की चमर इंद्र प्रतिमाका सरण लेई उर्द लोक
 में जाय ऐसा कहना मिथ्याहै अर्थात् ऊठाहै क्यों
 की (अरिहत चेईयाणी) शब्दका अर्थ इहा उद
 मस्त तीर्थंकरकहें ओर महावीर स्वामी जव उद
 मस्थर्थे तव उनका सरणा लेकर चमर इंद्र प्रथम
 स्वर्गमे गया ओर आयाजी उन्हीके सरणे लेकिन
 प्रतिमाका सणा लीया नहीं इति पूर्व प्रश्नोत्तर ॥ ७ ॥
 और कितनेक वादी ऐसा कहतेहें की संखेस
 र पार्श्वनाथजीकी प्रतिमा श्रीचंदाप्रभु आठवां जिन
 के बारेकीहै ते इहएकांत सूत्रसें अण मिलती बात

सही क्यों नहीं करते इसका जवाब भागजदर लिखना चाहिये इति पूर्व प्रश्नोत्तर ॥ ९ ॥ अगर कितनेक मत पक्षी रूढके बस होकर ऐसा कहतेहे की पुस्तक वाचता थूक उडतीहे तिसवास्तेँ मुहपती मुख आगेँ देतेहेँ परंतु कुठ बाऊ कायाके जीवाकी रिक्षा याने दया नहीं पलती ते येह प्रश्न सूत्रसे बरखिलापहे याने कहतेहेँ की देखो सूत्र जगवती सतग १६ मे उदसे २ कहाहे ते पाठ कहतेहेँ (गोयमा जाणहण सक्के देविंदे देवराया सुहम कायं अणीजुहिताणं चासंजासई ताहिण सक्के देविंदे देवराया सावज्जं चासं जासई जाहेणं सक्के देविंदे देवराया सुहमकायं निजुहिताणं चासंजासई ताहिण सक्के देविंदे देवराय अणवज्जं चासं जासई) ॥ टीकार्या ॥ यदासकेंद्रसुक्ष्मकायं वस्त्रं अणिव्यूहित तिअ प्रोह्यादत्त वाहस्ताद्या व्रत मुखस्य चापमाणस्य जीव संरक्षणतो निरवद्या चारुयान्नवति ॥ अर्थः-- जब सकेंद्र हातवस्त्र ति सकर मुख ढांकी बोलतो सुक्ष्म कायाके जीव रक्षा करे तो निरवद्य चापा याने निरदोस चापा बोलतो कहिके अगर उघाडे मुख बोलतो सुक्ष्म कायाके जीवां विराधतो याने हिंस्या करतो बोलै तिवारे सावद्य चापा बोलतो कहिये याने दोषकारी चापा बोलतो कहिये सुक्ष्म कायाके जीवांकी रक्षा वास्तेँ मुहपती लगातां हिंस्या नहीं लगैँ ऐसा सूत्रांका परमार्थ स

मऊना चाहिये इति पूर्व प्रश्नोत्तर ॥ १० ॥ और कितने
 क लोग ऐसे कहते हैं की सैत्रंजा गिरनार आवू अ
 प्यपद परवतकी जात्रा करनेसे धर्म लाभ समझते
 हे सो किमतरा हम लोग सही समझे की सुत्र ज
 वती सतग १८ उदसे १० में सोमिल ब्राह्मणको
 श्री महावीर देखने तो एह जात्रा कही है ते सुत्र ज
 गवतीका पाठ (सोमिलाजमे तव नियम संजम स
 ज्ञाय जाणावत्तगमादीणनु जयाणासेतं जता तप १२
 नियम अनेक अजिग्रह संजम १७ सजाय ५ ऊण
 धरमसुकल ध्या) इतपी करणी करवा कही तेह अला
 रें जात्रा कही अ नगवती सतग २० में उदसे ८ मे
 कथाए ते पाठ (तित्थं चने तित्थं तित्थं करेई तित्थं गो
 यमा अरिहंता वा नियमं तित्थं करे तित्थं पुण चाउ वपा
 इणे समण गंधे पत्ता संजहा जणा सवणीउ सा
 वय सावयाए) ति क अझाराजने तो ४ तीर्थ कही
 ते सात्र १ धरयो २ आत्म ३ आवि ४ लेकिन
 न परवत पर उर फिनेकी जात्रा नही वही तो
 तुम लोग चला कितकी परिमाणसे जात्रा करणी कहते
 हो इति पूर्व प्रश्नोत्तर ॥ ११ ॥ और कितने लो
 ग सैत्रंजा परवतकी सासता कहतेह सो सासताके
 मुताविक कुंठा वजन उन लोगों ज सालुम होताह ते
 किसतीरसे की देखी जगवती सतग ७ मे उदसे ६ मे
 जब गठा आस लगेगा तब चरतक्षेत्रम गंगा सि

जमाली खत्तीय, कुमारे जेणे व मंजण घरे तेणे व
 उवागन्नई २ ता एहाया कयवलिकम्मा जहाउववाईए
 परिसावन्नउ तथाजाणियव जावचंदणो रिवत्तगाय
 सरीरे सव्वालकार विञ्जूसीए मऊण घराउ पडी नि
 खमई २ ता) विण न्हायो वलिकरम करी व
 सत्राहिरी मंजण घरथी निकल्यो कह्योते सनान घ
 र माहिं किसकी प्रतिमार्थी ते कहो ३ और वली
 जगवती सतग ७ मे उदसे ९ मे वरणनागनतुये
 मंजण घर माहिं न्हाया बलि करम कीधो पठे
 मंजण घरथी निकल्यो कह्योएणें स्नान घरमे किस
 प्रतिमाकी पूजा करी ते कहो ४ और कौणक रा
 जा वीर बंदवाने गया तिहा न्हावानो विस्तार घणो
 है तो तिहां बलिकम्मा सव्द मूलथकी जेनही हम
 जाणीये जे बलिकम्मा सव्द न्हावाकोईज विसेपहै
 कुरला करवा जलंजली देवी इत्यादिकजाणीये बल
 पराक्रमका व्रद्धि करणा ऐसा प्रमाण इस पाठकाहै
 आंगे केवली वचन परिमाणहे ५ और रायप्रसेणी
 मे कठियारावनमे कष्ट जारा लेवागया तिहां न्हा
 तां कोणसी प्रतिमा पूजी ६ हसी तरे घणे ठिकणे
 सूत्रांकी साखहै बलिकम्मा शब्द प्रतिमा पूजाका
 जो कहतेहो किस सूत्रका परिमाणसे कहतेहो ति
 सका जुवाव सिखना पुनः ॥ एहाया कयव
 लिकम्मा ॥ शब्दनो अर्थ जिन प्रतिमा पूजनो अ

धू दो नदी रहिसी और वेताड पर्वत रहिसी बाकी
 सर्व पर्वत विवेद जासी ते सूत्र जगवतीका पाठ क
 हतेहैं ॥ (पठ्यगिरी कोंगर थल जठ माईय वेयंह
 गिरी बजे विरावोहेति) इम कहाहै इण लेखे सेत्रंजा प
 रवत सासतो कहते हो ते एकांत ऊठा कहतेहो न
 हीतो सूत्रकी साक्षसे जवाव देना चाहिये इति पू
 र्व प्रश्नोत्तर ॥ १२ ॥ और कितनेक लोग आरंभमें
 धरम बतातेहैं और जिहां कयवलिकम्मा सब्द आ
 वे तिहां प्रतिमानी पूजा कहतेहैं ते सूत्रसे विरुद्ध या
 ने अशुद्ध कहतेहैं और एहायाकयवलिकम्माका अ
 र्थका परिमाण लिखतेहैं की देखो पाहिलेंतो गिनाता
 सूत्रका अध्येन १६ मे कहाहै ते पाठ (तएणं सा
 दौवईरायवर कन्ना जेणैव मंजण घरे अणुपविस्सई
 २ ता एहायाकयवलिकम्मा कय कोऊय भंगलं पाय
 वित्ता शुद्ध पवणं निखम्मई २ ता जेणैव जिणघरे
 मंजण घराउं पडं निखम्मई २ ता जेणैव जिणघरे
 तेणैवउवागळई २ ए पाठ मांहि पहिलांएतहा पठे
 कयवलिकम्मां पठे शुद्ध मगलीक बस्त्र पाहिरया ति
 हां एंहाणेंके धर मांहि कहो किसकी प्रतिमापूजी ते
 कहो १ और जगवती सतग ९ में उदेसे ३३ में
 देवानंदा ब्राह्मणीने बलिकरमकीधो तेहने न्हावाने
 घर मांहि केहनी प्रतिमा पूजी ते कहो २ और व
 जी एहिज उदेसे जमालीद्धत्रीकुमारे (तएणंसे

जमाली खत्तीय कुमारे जेणे व मंजण घरे तेणे व
 उवागन्नई २ ता एहाया कयवलिकम्मा जहाउववाईए
 परिसा वन्नउ तहाजाणियत्र जावचंदणो रिवनगाय
 सरीरे सव्वालकार विन्नूसीए मंजण घराउ पडी नि
 खमई २ ता) पिण न्हायो बलिकरम करी व
 सत्राहिरी मंजण घरथी निकल्यो कह्योते सनान घ
 र माहि किसकी प्रतिमाथी ते कहो ३ और बली
 जगवती सतग ७ मे उदेसे ९ मे वरणनागनतुये
 मंजण घर माहि न्हाया बलि करम कीथो पठे
 मंजण घरथी निकल्यो कह्योएणें स्नान घरमे किस
 प्रतिमाकी पूजा करी ते कहो ४ और कौणक रा
 जा बीर बंदवाने गया तिहा न्हावानो विस्तार घणो
 है तो तिहां बलिकम्मा सब्द मूलथकी जेनही हम
 जाणीये जे बलिकम्मा सब्द न्हावाकोईज विसेपहै
 कुरला करवा जलंजली देवी इत्यादिकजाणीये बल
 पराक्रमका ब्रद्धि करणा ऐसा प्रमाण इस पाठकाहै
 आंगे केवली वचन परिमाणहे ५ और रायप्रसेणी
 मे कठियारावनमे कष्ट चारा लेवागया तिहां न्हा
 तां कोणसी प्रतिमा पूजा हे हसी तरे घणे ठिकणे
 सूत्रांकी साखहै बलिकम्मा शब्द प्रतिमा पूजाका
 जा कहतेहो किस सूत्रका परिमाणसे कहतेहो ति
 सका जुवाव सिखना पुनः ॥ एहाया कयव
 लिकम्मा ॥ शब्दनो अर्थ जिन् प्रतिमा पूजनो अ

लिकम्मा ॥ शब्दो अर्थ जिन प्रतिमा पूजानो अर्थ करतेहैं तेहनो उत्तर-टीका कल्पसूत्रमें स्नाता कृतं बलिकर्म कृतानी कौतुक गंगल्यान्पेव निर्मलानी वस्त्राणि परिदर्पाति ॥ कौतुका मिय तिलकादीनि मंगलानि कुर्वती सर्पपशुवह्नितादीनि मरुतके धारयति दुःस्वप्नान निवारणार्थिन् रवःशेष मंगलातिकुर्वी ॥ तित्यर्थ अब देखें कि इहा निजमरुतकमे तिलकादि करणा और तब कहत मरुतको रखना कह्या परंत कोई प्रतिमाके पूजणका अधिकार नहीं कहा और श्री ब्रह्मसूत्र कल कल्प सूत्रने सिद्धार्थ राजा (अष्टलसाला) अर्थात् व्यायाक जाला मल्लादि केलो घरमे जाकर पुन राजन घर अर्थात् राने घर मे जाया तिहा नहाणेना बहुत बिलगारहै तिहां कय बलि कर्मा शब्द नहीं तो राजा कया जेन अर्मी न था जिन प्रतिमा पूजी गेही जो प्रतिमा होती तो पूजा परंत वहांतो जिन प्रतिमा कही नही फिर तुम जिन प्रतिमाका पूजा कयवलिकम्मा शब्दमे कयो कहतेहैं कलकेव तया गोत्र देवको विना थापना अजली रुपजल अर्पण करे तो ए अर्थ संभवहै परंतु जिन प्रतिमा पूजना ॥ कयवलिकम्मा ॥ शब्दमे अर्थ सिद्ध न होगा प्रतिमा खलासा पाठ कही नही है और मल्लीजके नहाणेमे कयवलिकम्मा शब्द फकत वल पराक्रमको दृष्टि करणा तथा गोत्र देवको ज

ल अर्पण करणा सो तो तीर्थकर करे नही अथवा
 सिद्धोंको नमस्कार कीया होयतो यह अर्थमे प्रमा
 ण सही होताहै और कोणक राजा भरत चक्रवर्त
 के अधिकारमें कवचलिकम्भा शब्द है नही तो इस
 प्रमाणसे मालुम होताहै जिहां न्हाणेका खुलासा वि
 स्तार तिहां कवचलिकम्भा शब्द नहीहै और जिहां
 संकोच पाठकाहै तहा कवचलिकम्भा शब्दहै सोई
 न्हाणेका विशेषणहै जल अंजली देणी वा तिलका
 दि मस्तकमे करणा और राघप्रसेनीमे कठियारोने
 न्हाणेके पाठमे जिन प्रतिमा पूती कैसे कहोगे वे
 तो मिथ्यातीहें द्रोपदीके स्नान घरमें प्रतिमा कहा
 थी और धन्ना सार्ध बाहीने द्यात्रडीने स्नान किया
 तो तिहां जिन प्रतिमा किहाथी और राघप्रसेनीके
 दुसरे प्रश्नमे ॥ न्हाया कवचलिकम्भा ॥ शब्द कही फिर
 किसी देवने पूजने जाय ते क्या परंतु इहा इमजा
 णीये की प्रतिमाकी थापना मंजन घरमे नही जिन
 प्रतिमा मंजन घरमे होय नही यद्कोके मंदिर पर
 सिद्ध सूत्रोंमे खुलासा पाठमे ज्वलेहै सो आश्रव अ
 धर्म द्वारमे कहेहें परंतु १२ व्रतधारी करणीके धणी
 श्रावकोके जिन मंदिर असली सूत्र करताने नही
 कहे और अविरती अमनुष्योके करे जकारण
 वृत्तीयोपे नही मिलते पूर्व शीत प्रश्नोत्तर ॥ १३ ॥
 और कितनेक जिन धर्मी ऐसा कहतेहैं की देहरेका

नाम घणों ठिकाणे सिद्धायतन कहाहे ते सिद्धनो घ
 र जाणवा ते यह बात सूत्रसे नही मिलती क्यों
 की शब्दका नाम शब्दार्थ कही मिलताहै और क
 ही नही मिलता की जैसे किसी पुरपका
 नाम अमर परंत कुठ अमरके नामसे अमर न
 ही हो सक्ता १ और जैसे माताने अपने पुत्रका ना
 म धनदत्त दीया परंत वहतो कोमीकाची दातार न
 ही २ और जैसे किसी स्त्रीका नाम लक्ष्मीहै परंतु
 उसको तो मागी हुई बाउनी नही मिलती ३ जैसे
 सांसूने वहुका नाम कपूरदे नाम दीया परंतु वहतो
 खाटी बाउनी नदेय ४ और जैसे किसी पुरपका नाम
 अंगलहै लेकिन महाअमंगल कारकहै ५ और जैसे
 नाम धर्मचंद्र परंतु महा अधरमीहे ६ और जैसे नाम
 तो सीतलदास परंतु महाअगनजाल सरीखा क्रोधी
 हैं ७ और जैसे किसी पुरपका नाम धनपाल लेकिन
 उससे आपणा पेटनी नही पले ८ और नामतो कि
 सी पुरपका असकरण परंत वहतो महा अपजस
 का करणहै ८ और जैसे नाम क्रोडीमल परंत घर
 में क्रोमी की किमत नही १० जैसे सब्द नय याने स
 ब्दका अर्थ सही नही होता सब्दके गुणकर संजुक्त हो
 यतो सब्दार्थ सोजताहै और जो सब्दगुण निष्पन्न मान
 ते होतो जगवतीके ९ मे सतकमे ऋषभदत्त नामे
 ब्राह्मण कहाहे ते क्या ऋषभदेवजीके बचनसे हु

याहें तो इम शब्द अर्थ संजवता नही जैसे उत्राध्यै-
 नजीके अठारमे अध्येनमे हिरणांकी सिकार खेलवा-
 राजा गया असंजत करम करणे वास्ते तिसका नाम
 संजती राजा कह्या तिसका-तिस ग्रहस्थापदमे क्या
 संजतीपणाथा ते कही अथवा जैसे जीवाजीगममे
 सातमी नरकका पंच महा पुरुष कह्या ते सातमी ना-
 रकीका जाणहार पुरपोको मोटा पूरपकह्या ते महा पुरु-
 ष पाप करम कर कह्याहै तथा विजय १ विजयंत
 २ जयंत ३ अप्राजित ४ यह ४ अणुतर विमाण-
 कह्या परंत इनही नाम सहित असंख्याते द्वीपसमु-
 द्राके दरवाजोके यही नाम सूत्रामे कह्याहै वली (अ-
 मुदोसमुदोनो पलं आसाए तिपला संपन्नो) गुण नाम
 कह्या तिम सिद्धायतन १ संजती राजा २ ऋषभदत्त
 ३ और महा पुरप ४ इत्यादिक विवहार वचनहैं
 शब्द अर्थके ऊपर किसी जगे उपमावाची शब्द
 सुधा होताहे और कही उपमावाचीक शब्द अर्थ सु-
 द्ध नहीं होताहैं यानें उस नामपर उपमाका शब्द
 नहीं मिलता की जैसे किसी पुरपका नाम
 रणजीतहै परत वहतो रणयानें संग्रामका नाम सुण
 करही घरसे बाहिर नहीं निकलता तो रणजीत नाम
 यह कैसे कहावेगा तो इहा उस रणजीत नामको
 संग्राममें जीतकरणे की उपमा नहीं मिलती तो उ-
 कसे नामका लेना व्योहार वचनहै परंत परमार्थ सु-

न्यहै इसीतरें लोकोंमें अहंकदवाइका नाम मीठातेली
 या परंतु निजगुण स्वभाव उसका जहरकाहें सो
 इण द्विष्टांतोसैं सिद्धायतन शब्दका अर्थ सिद्ध घ
 रनहीहै सदा कालको सिद्धायतन सासता याने क
 दीमीहै इस वारतें सिद्धायतन जाणवा अथवा अ
 नेक दीपे परवते देवलोके चार चार जिन पडिमांक
 हीहैं ते चारका नाम ऋष्यजानना १ वरधमानना २
 चंद्रानना ३ बारिखेणा ४ येह क्या तीर्थकरांका नाम
 वारते तीर्थकरनी नहीं क्यों की तीर्थकर महाराजके
 नामकी तो आदंजीहैं और अंतजीहै सोई एह प्रत
 मातौ अनार्दिकालकीहै सोई तीर्थकरके नामसे नामकी
 नहीं होसकती अनुमान प्रमान तो ऐसाहैं निश्च
 तो जो केवली वदे सो परिमाणहैं अगरे येही प्रति
 मा समद्विष्टी और दिष्टिया हष्टी सदा देवताओके पू
 जनेकीहै और ऋष्यजदेव वरधमान तीर्थकर तो इ
 सही पोयोसिगे हुयेहैं अगरे प्रतिमा ऋष्यजानना आ
 दी अनंता का अकीहै एह जुगत तुम लोगोकी नही
 मिलती विचारकर कहना जोग्यहै इति पूर्व प्रज्ञांच
 र ॥ १४ ॥ और कितनेक लोग ऐसा कहतेहैं की
 जगवंत श्री महावीरजीने गौतम स्वामीको कत्याहै
 जो तुम अष्टापद परवतपर जायकर श्री चरतजी
 का करया हुया विव यानें प्रतिभाको वंदना करो जि
 म केवल ग्यान उपजे येह वात सूत्रके परिमाणसैं

सत्य नहीं हैं क्योंकि बखाने याने बाणीमे तो किसी देवी देवको ऐसा उपदेश नहीं दिया और किसी साधु साधवी श्रावक श्राविका इन ४ तीर्थको ऐसा उपदेश किसी सूत्रमे नहीं कहा तो गौतमजी महाराजको ऐसा उपदेश किसतौरसे देवों की अब देखना चाहिये की उन प्रतिमाओंसे तो ज्यादा गुणवान श्री महाराज महावीर देव खुद आपही विराजमान थे और मिथ्यात अधरको दुर करते थे ऐसे नगवानको साक्षात् केवली रूपकर विराजमानोको ठोकर क्यों प्रतिओके दरसणमे अधिक याने ज्यादा धर्मका लान होता है की प्रत्यक्ष तीर्थकरोके दरसणोमे ज्यादा धर्म लान होता है इस बातका जवाब लिखना जो गहरे सो अंतर विचारकर देखो की इसतरे प्रतिमाओके दरसणसे केवल ज्ञान नहीं हो सकता है की अब देखो केवल ज्ञान सूत्रमे किसतरेसे उपजनेका कारण कहा है सो लिखते हैं की जैसे उत्राध्यैन दसमे गाथा २८ मे (बुद्धिसिणेह मप्पणो कुमयंसारं च पाणीयं सेसवसिणेह वज्जे समय गोयेममा पमायए) इति वचनात अब देखो श्री महावीरजीने ऐसा कहा की हे गौतम जो तुम्हारा मुऊऊपर धरणा सनेहहे तिसको जब तुम ढोडोगे तब केवल ग्यान पावोगे केवल ग्यान उपजवाका कारण सूत्रमे तो इस तरे कहा है और नगवती सूत्रके सतग १४ उदेसे ७

मे. मे. (रायगीहे जाव परिसा पडिगया गोयमादि समे
 जगव महावीरे जगवगोयम एवबयासी चिरसंसिवे
 सिमे गोयमा विरसंथुओसिमे गोयमा चिरपरिचित
 सिमे गोयमा चिरजूसितोसिमे गोयमा विराणुवात
 सिमे गोयमा अणंतरं देवलोगा अणंतर माणसे
 जवे की पर मरणकायस्स जेदायतो चृता दो वितु
 छा एगठा अवसे समणाणग्यापजविरुसामो) इ
 सतरे कह्याहे हे गौतम तुह्वारा हमसे घणे जवका
 सनेहहे अगर इहांथी आऊखा पूराकर हम तुम
 दोनो मुक्त पदमे सामिलहोवेंगे तिहां हम तुम दो
 नो एकसरीखेहोवेंगे लेकिन ऐसा कही सूत्रमे नही
 कह्या की अष्टापद ऊपर जावो सो सूत्रमे कही
 कह्या नही तुम इह बात सूत्रसे अण मिलती कह
 तेहो इति पूर्व प्रश्नोत्तर ॥ १५ ॥ और कितनेक रु
 ढमती याने मतपद्धी ऐसा कहतेहें की गौतम स्वा
 मी सूर्जकी किरण पकरुके परवत ऊपर चढये लब्ध
 परसाद करीने यहवा अशुद्ध वचन बोलतेहो ते सि
 द्धातसे अण मिलती बातहै तो सूत्रमेतो लब्ध
 २८ कहीहै तेहना नाम कहतेहै आमासही १ वप्पा
 सही २ खलोसही ३ जलोसही ४ सवोसही ५ स
 निन्नसोतिया ६ अवधज्ञान ७ रिजुमती ८ विपूल
 मती ९ चारण १० आमीविप ११ केवली १२ ग

१७ वासुदेव १८ रवीरासवामहपासवासर्पायासवाअ
 मीयासवा १९ कोठवृद्धी २० बीज वृद्धा २१ पदानु
 सारणी २२ तेजलेस्या २३ सोतललेस्या २४ आ
 हारीक २५ बेक्रिय २६ अखीणमहाणसी २७ पु
 लाक २८ यह अठार्डसलब्द तिसमांहि (सकखाई
 असबुड) अणगार फोरवे याने परगट करे तिस
 का प्रायचित्त अणलीये याने बिनालीये कालकरे तो
 जगवानकी आज्ञाका विराधक सूत्रामे कह्याहै जग
 वतीजीके सतग २० में उदेसे ९ में चारण उदेसे ओ
 र दूसरे घणेही ठिकाणे लवध फोरवे तेहनो याने तिस
 का प्रायचित्त कह्याहै अगर जिसवातमें जीव आ
 ज्ञाका विराधक होय ते उपदेस जगवत किसतरे दे
 वे जरा अजितर विचार कर देखो क्या सिद्धांतकी री
 तह और अठार्डस लब्द मांहि सूर्जकी किरण पकड
 तेकी कोणसी लब्दहै तिसका जुवाव लिखना चाहिये
 और गौतम स्वामितो नला तुम लोगोंने लवधही
 का बलकर चढया कहतेहो अगर और साधू गो
 तम स्वामिके साथ किसतरे चढे उनकु क्या लवधथी
 तथा दस हजार साथे ऋषभदेव भरतेश्वर अष्टा
 पदपे चढया और संथाराकीया ते साधू कीसतरे चढया
 अथवा प्रासादका करण हार कारीगर कीम चढया त
 था सागर चक्रीके बेटा ६० हजार किसतरे चढया
 यह उणतीसमी लब्धका कहा वणन कह्याहै जिस

का जुवाव लिखना चाहिये इति पूर्व प्रश्नोत्तर संपूर्ण
 ॥ १६ ॥ और कितनेक सकस ऐसा कहतेहैं की १५००
 तापस केवली हूये अगर यह बात सूत्रके साथ नहीं
 मिलती परंतु यह बात शास्त्रोक्तहै क्यों की भगवती
 सतग ५ में उदेसे ४ में कहाहै की सातवा देव
 लोकका दाय देवताओंने श्री महावीरजीको पूजा की
 भगवान तुम्हारे साधू कितने मुक्त जायेंगे जिसव
 क्त श्री भगवंतजीने कहा [सत्तस्स अंतेवासी सं
 घाईयं सिक्कस्सई] याने सातसे सिष्य समीपे रहने
 वाले मुक्त पदमें विराजमान होंगे लोकिन अधिका
 याने ज्यादा केवली उसवक्त कहे नहीं और कल्पसू
 त्रमेंजी ७०० केवली कहाहै अगर कदाचित को
 ई ऐसा कहे की यह तो १५०० केवली गौतम स्वा
 मीके सिष्यहै तो क्या आश्चर्यहै परंत कल्पसूत्रमें
 तो गौतमजी और सुधर्माजी इन दोनोंके पान
 पानसेका परिवार कहाहै सोई उदमस्तोक वचनापेइ
 म ज्यादा रुढ नहीं करते इति पूर्व प्रश्नोत्तर ॥ १७ ॥
 और कितने लोक ऐसा कहतेहैं की जब नमोर्थाण
 का पाठ पढ़कर पीठसे एक गाथा और नवी बणाई
 हुई कहतेहैं ते पाठ सूत्रमें नहीं मिलता उसमें दर
 व निखेपाका सरधान सहा करतेहैं ते सूत्रसे बर
 कहतेहैं जैसे नमोजिणाणं जियजयाणं जे
 सिद्धा जेनविसताणगएकलि संप्पइणं वह

माणां संधतिविहेण वंदामि ॥ १ ॥ इतना पाठ ज्यादे सूत्रसे अण मिलताहै की अवदेखो सूत्रसे सिद्धांतमें जगे जगे नमोथुणं कह्या ते सामायांग जगवतीके माहिं गणधर देवाने कह्या अथवा उवाई रायप्रसेणी माहिं देवताये कोणक प्रदेशीराजाये अथवा अंब मजीके ७०० सिष्याने नमोथुणं कह्या तिहां ठाणं संपत्ताणं तथा ठाणं संपावियोकामस्स इतना पाठहै तो तुम लोगोने इतना अधिक पाठ नवा बणाया मालुम होताहै सो सूत्रसे बिरुद्धहै और कितनेक ऐसा कहते हे नमोथुणं तो सक्रइंद्रका बणाया हुयाहै ऐसा जो बचन कहें ते सूत्रसे नही मिलताहे अगर सूत्रतो गणधर देवा का कीये हुयेहै ते साख सिद्धांतकी गाथा ॥ सुत्तर्यंगः णहररइयं तहेव पत्तेय बुद्धरइयंच सुयकेवलीणारइयं अजिन्नदसपुविणारइयं ॥ १ ॥ इस वास्ते इंद्रका जो डा किसतरे मानीये तो इहां नमोथुणं ऐसेही सदा काल गणधर देव कहते आयहे ऐसेही कदोमी नमोथुणं होताहै ते जाणवा निश्चकेवली बचन प्रमाणहै इति पूर्व प्रश्नोत्तर ॥ १८ ॥ अगर कितनेक वादी चरचा करते हुये ऐसा कहतेहैं की हम सूत्रके परिमाणसे थापनाकुं बंदना करतेहैं और सूत्रामें ४ निखेपेकहेहै ते नामनिखेपां १ थापनानिखेपा २ दरव निखेपा ३ जावनिखेपा ४ तिस वास्ते थापनानिखेपा बंदनीकहे यह बात सूत्रके परिमाणमें नही मि

लती गते किसतरे श्री अणुजोगद्वार सूत्रमे ४ निखे
 पे कहेहैं तेहतो सहीहैं, लेकिन बंदना करने जोग तो
 एक जाव निखेपाहै, और बाकी तीन निखेपे बंदणे जोग
 नहींहै, अगर अथवा चार निखेपोंका अरथ करतेहैं तो
 किसतरे अथ जिन सबदमाहैं ४ निखेपे कहतेहैं तो
 पहिला निखेपा नाम तीर्थकरोके नाम सरीखा नाम
 तो रूपन, पारस, संचूसीमंदर, जुगमंदर, इत्यादि
 घणे पुरपोंका नाम धरतेहैं परंत निण माहैं तिरथ
 करे महाराजोके गुणआतिसे नही तो अतिसे गुणांकी
 माहिमातो महाविदेह क्षेत्रा माहैं श्रीसीमंधर जगवा
 नमे बिराजमानहै लेकिन नामनिखेपा फकत कहणेहै का
 है परंत जिन गुण नाम निखेपेमें एकजी नही जैसे मात
 पिताओने अपणे पुत्रका नाम रामचंद्र दीया परत
 रामचंद्रसरीखी तिसको उपमा नही लगे तिसमे ना
 म निखेपा रामचंद्रके नामसे हुआ तो तिसका पर
 मार्थ सुन्यहै तो नाम निखेपा बंदनीक नही ऐसा
 विचार सुत्रासे जाणतेहैं इति नामनिखेपा कहा ॥ १ ॥
 अगर थापना निखेपा किसकूं कहिये तो थापना का
 पृ पापाण अथवा धातुनी मूर्ती अथवा चित्रामका
 हाथी घोडा नदी इत्यादिककी थापना करी पूजे अथ
 वा नमस्कारकरे तो परमार्थ सुन्यहै जैसे हाथी घोडा
 अस्वारीके काममे नही आवे और नदीकी थापनासे
 पीणी नहीं मिलै इसी तरे गुन रहित अगर जिस

मतलबके वास्ते थापना करी तें जिसमे मूल एक गु
 णनी नहीं तें आपही जरूरीनावहै तो और पुर
 पोका क्या कारण मिद्धकरे जैसे किसीने चक्रवर्तकी
 मूर्ती बनाकर थापना करी परंत तिस मूर्तीके सा
 मने बत्तीस हजार राजा सेवा करता नहीं और २५
 हजार वानमित्रनी जिसकी सेवा नहीं करतेहैं तिस
 वास्ते थापना जिन मोह दिसाके उदमे हे और वै
 रागतो सुरतग्यान मतज्ञानसे आताहैं और था
 पनाका परमार्थ सुन्यहे इति दुसरा निखेपाकह्या ॥ २ ॥
 अगर दरव निखेपा दरव जिन ते जिन थावणहार
 जिन तणो नाम गोत्र बाध्यो परंत अवतक जिनथ
 या नहीं ते दरव जिन अथवा मृत्यु जिननो सरीर
 तेह दरव निखेपा कहिये ॥ ३ ॥ नावनिखेपे जिन ते सा
 द्दात जिन केवलज्ञानसहित वरतमान विरामानहे ते
 वंदनीकहे अगर अव कितनेक लोग च्यारो निखेपे
 मानणे जोग कहतेहैं सोई थापना निखेपातो मानते
 हे लेकिन नाम निखेपा घणेही पुरपोके नाममे नाम
 निखेपा होताहै जैसे पारस पारसप्रचूके नामका नाम
 है तिसको तुम क्यों नहीं वंदतेहो अगर थापनामे
 क्या अधिकता देखकर वंदतेहो और पूजतेहो और
 दरव निखेपा ते जिन होणहार अगर तेह जिन थया
 नहीं अगर तेह मांहिं जिनगुण परगट हुवा नहीं
 तेह किसतरे वंदनीक होवे जैसे तीर्थकर घर मांहिं

होवे और द्वायक सम्यक्त तीन ग्यान कितनीक अ
 तिसें सहितहें तो परंत अविरतीहे तिस वास्ते सा
 धू श्रावक बंदे नही तो अव देखो दरव निखेपा व
 दनीक किसतरे होय अगर इस जवाव ऊपर कोई
 ऐसा प्रश्न करे की चरत चक्रवरतजीने अपणे पत्र
 मरीचजीकुं किसतरे बंदना करी उनमे दरव निखे
 पा जाण्यांतो चरतजीने बंदणा करीहे जो ऐसा प्र
 श्न करे तो तिसका जवाव यहहे की अवलतो यह
 वात कथाकारकीहे और दुसरे चरत चक्रवरतजीने
 १२ व्रत श्रावगके अंगीकार नही करे इस वास्ते
 बंदणा करीहे तो कुच अश्रय नही और अविरती
 जीव बहोतसे मिथ्यातमे सीस नमातेहे तो इहां वृ
 ती जनाका प्रश्नहे और व्रतीजनाके प्रश्नमें अवृती
 जिनोके कारजका क्या जवाव देतेहो और कथा
 कारके मांहिं अधिकी ओठी वारताका संदेह होता
 हे सो जवाव तो सत्रू सिद्धांतसें हम लोग पूढतेहे
 की सूत्रकी वात प्रमाणीक करतेहे जैसे अंतगढ
 सूत्रके पांचमे वर्गमे नेमनाथ स्वामीने श्रीकृष्ण प्रते
 ऐसा कह्या तेह सूत्र अंतगढका पाठ लिख्यतेहे
 (एवखलु तुम्हं देवाणुप्पिया तच्चाउं पूढवाउं उज
 लियाउं नरगांउं अपंत्तर उवदित्ता यह जंबूद्वीवे
 द्वीवे चारहे वासे पुडेसु जण वएसू सतदुवारे नयरे अम
 म्मे नामं अरहा चविस्सई तस्यणं तुम्हं बहुयं वा

साइं केवली परियागं पाउणिता सिऊरुसई तएणं
 से कएहे वासुदेवे अरहुत अरिठनेमीस्स अं
 तिए एयमठं सोच्चा निस्सम हठतुठे अफोडई २ ता
 तिवई थेवई २ ता सिंहनाहंकरेई २ ता) इति सू
 त्रपाठ हे कृष्ण तुम बारवांजिन याने तीर्थकर पद
 में विराजमान होकर मोक्ष पद धारण करोगे ऐसा
 श्रीनेमनाथ महाराजके वचन सुणकर परम हरप
 याने खुसी होकर नाचे याने कूदे और सिंहनाद
 कीधा परंत उसवक्त कोई गणधर साधू अथवा
 श्रावक इत्यादिकोने वंदना और अस्तुती नहीं करी
 अगर इस जगे जो श्रीकृष्णजीको वंदना कोई क
 रतातो दरव निखेपा वंदनीक सही कर मानते
 अगर नहींतो सूत्र प्रमाणसे दरव निखेपा वंदनी
 क नहींहै और ठाणाग सूत्रजीके ९ में ठाणें सर्व
 सन्नामें जगवंत श्रीमहावीरे कहाहे की जो श्रेणक
 राजा आवली चौबीसीमें पहिला जिन महा पदम
 नामें मुऊसरीखो होसी तो यह वचन सुणकर की
 सी साधू श्रावगनें जहां दरव जिन जाणकर वंदना
 नहीं करी तो तुम लोग दरव तीर्थकराकों कैसे वं
 दनीक कहतेहो सो जुवाव देना जुक्तहे अथवा
 और सामायांग सूत्रमें वरतमान चौबीसीके नाम क
 ह्याहे तिहां देखोते लोगरुस मांही कहाहे तिसमां
 ही वंदे वंदे शब्द आतेहें तेह पाठ लिख्यतेहें (लो

गस्स उज्जयगरे धम्मतिथ्यरे जिणे अरिहंते कि
 ती एस चउवीसंपे केवली ॥ १ ॥ उसजमजीयं च वंदे
 संजव मजीनंदनं च सुमियं च पउमप्पहं सुपासं जिणे च
 चंद पहं वंदे ॥ २ ॥ सुविहं च पुप्फदंतं सीयल जीयंस
 वासपुजं च विमलमणं तं च जिणे धम्मं संतिं च वं
 दामी ॥ ३ ॥ कुंथुं अरिहं च मल्लिं वंदे मुनिसुवयं नमी जि
 णं च वंदामि रिठनेमिं पासंतहवद्धमाणं च ॥ ४ ॥ एवंए
 अत्तिथुया विहु रयमिला पहीण जर मरणां चउ वि
 संपे जिनवरा तित्थयरामे एसियंतु ॥ ५ ॥ कित्तिथ वं
 दिये महिया जेए लौगस्स उत्तमा सिद्धा आरुग्ग
 वोहिलाजं समाहिव रमुत्तमं दित्तु ॥ ६ ॥ चंदेसु निम्मला
 यरा आईचेसु अहियं पयासगरा सागरवरगंजी
 रा सिद्धा सिद्धं मम दिसंतु ॥ ७ ॥) अगर अब इस पाठ
 में जाव निखेपेकुं वंदे शब्द कहा है अगर आव
 ती चउवीसीके नामजी सामायांग सूत्रमे कहे है ले
 किन वंदे वंदे शब्द सूत्रमें नही कहा क्यों कि अ
 वतक उन तीर्थकरोंके जीव अविरती है इस वास्ते
 दरव निखेपा वंदनीक किसतरें होय अगर और
 जगवती सूत्रके सतग ९ उदेसे ३२ में गागेय ना
 में अणगार जगवंत श्रीमहावीरजीकुं दरव निखेपे
 देख्या और गागेय अणगार पहले वक्तके साधूथे तो ति
 ने दरव निखेपा जाण वंदणा नही करी अगर
 जगवती सूत्रमें (अदूरसामंतेचिवा) कह्यो इ

ति बचनात अगर जब श्रीमहावीरजीको केवलग्या
नी जाण प्रश्न पुजके महावीरकुं बंदना करी जब जा
व निखेपा पूरण जाणया तब गांगेय अणगारजनि
नमस्कार कीयाहै तो अब देखो द्रव्य निखेपा कि
सतरे बंदनीक होय जो द्रव्य निखेपेमें सम्यक्त
ग्यान ३ का गुणहै अगर तेहवीं बंदनीक नहीं तो
पापाण प्रमुखकी थापनामें तो एकजी गुण नहीं
ते किसतरे बंदनीक कहते हो जिसका जुवाव देना
चाहिये और जैसे पापाणका हाथी घोडा चढवा
के काम नहीं आवे जिम पत्थरके लाडूसे चूख-न
हीं मिटे और पत्थरकी गरु दुध नहीं देय और जैसे पत्थ
रका सेर मारे नहीं तिम पापानका देव त्यारे नहीं यह पर
मार्थ बहोत सूक्ष्महै इति पूर्व प्रश्नोत्तर ॥ १९ ॥ अगर
इस जुवावके ऊपर कितनेक वादी ऐसा कहतेहैं की प्र
तिमा तेह श्री जिनराजका नमूनाहै तिसको देखकर
भगवान याद आतेहैं और ध्यानका कारण होय ति
स वस्ते बंदना पूजना करतेहैं अगर यह तो हम
लोगजी जाणतेहैं की प्रतिमा भाहि जिन गुण नहींहैं
सो कुछ हम भगवान जाणके नहीं पुजतेहैं ऐसा
जो चरचा करनेमें तुम लोग कहतेहो तो अब ति
सका जुवाव लिखतेहैं की अब देखो सूत्र उत्राध्य
नके अठारमें अध्येनमे कहाहै ते गाथा (करकं
डु कलिगोसु पंचाले सुयदुमुही नमीराया विदेहसु

गंधारे सुयनिग्गई) इति वचनात् अगर् करकंडू
 राजा कलिंग देसका वृद्ध वैलकुं देख प्रतिबुज्या
 यानें बैराग आयो १ और दुमुही राजा पंचाल दे
 सका इंद्रथंजकों देखकर बैराग आया २ और न
 मी राजा विदेह देसके चूडीयाका कणकणाट सुणक
 र बैराग आया ३ और निग्गई राजा गंधार देश
 का आंवाके ठूठ वृद्धको देखकर बैराग आया ४
 अगर् इन च्यारों प्रत्येक बुद्धियोंकु जातीसमरण
 पाम्या और संजमलेकर मुक्तपदमे विराजमान हु
 ये लेकिन वृपन्न १ थंजबा चूकी ३ आंवा ४ इन
 च्यारोंके सबवसे च्यारों राजाको जातीसमरण उप
 जनेके तथा संजमलेनेके हितकारण जाणकर कि
 सीनें उन ४ वस्तु व्रपन्नादिककी पूजा अथवा वं
 द्या नही तो अब और मनुप किसतरे उन ४ च्यारों वस्तु
 वृपन्नादिकको किसतरे बंदे अथवा पूजे अथवा गौ
 तम स्वामी महावीर जगवंतजी ऊपर अधिक या
 नें बहुत ज्यादा परम जक्ति राग सहितथे सो तिनों
 नें राजग्रहीमें उदकपेढालसे चरचा करी तथा
 सावत्थी मांहिंकेसी कुमारजिकेसाथ चरचा करी तब
 तिहां श्री महावीरजीसें जुदा बिहार किया लेकिन
 परम यानें ज्यादा जक्तके बस होकर श्री महावीर
 जीका नमुना कागज मांहिं चितराम चितरकिर
 उनोंने अपने पास नही रख्या तो तुम लोग चि

त्राम कराकर अथवा बणे बणाये मूर्ती किसकी
 रीतसे रखते हो सो जवाब पूछतेहैं कि महावीरजी
 के साधोने चित्रामका नमुना क्यों नहीं रख्या क्या
 वे अण जानतो नहीथे तुम लोगोसे अधिक गुन
 वानथे सो उनोने तो चित्राम रख्या नही तुम की
 सकी सहायतासे रखते हो सो कहो अगर श्री म
 हावीरजीके श्रावण आणंद कामदेव संख पोखली
 इत्यादिक जगवानके पीठे कागजके ऊपर नमुना
 कर दरसन कही करे नही जो कही करे होयतो
 सूत्रका पाठ दिखलावो जुं हम तुमारी बात सही
 कर माने अगर परदेसी राजाए कृष्ण महाराज औ
 र चरतजी और कौणक राजा इत्यादिक घणे रा
 जे जगवानके परम जगत हुये परंत उनोने नक्ती
 के बस होकर किसीने नमुना जगवानका चित्राम
 करके दरसन और पूजा और नमस्कार इतने कार
 ज करेनही की परतक्त देखो की कौणक राजा ज
 गवान महावीरजीकी हमसे देस मुलकोमे जिहां
 जिहां विचरतेथे तिहां तिहांकी बधाई हमसे नौ
 करोके हाथ मंगाइकर सुनकर जोजनकरताथा ले
 किन हम तुमकुं पूछतेहैं की कौणकजी इतना परी
 श्रम उद्दम कर बधाई दिन २ प्रते रोज सुनैथा
 परंत उनोने नमुना चित्रामका क्यों नहीं बनवालि
 था जो नमूनेमे अधिक लान्न होता तो वै लोग क्या

नहीं कर सकते थे इसका क्या कारण है सोई जुवाव
 लिखना अगर जगवंतजीका नमूना जगवंत आप
 ही है अगर जुवाई सूत्रमें साधूनों नमूनों जवताई
 साधू विराजमान है तवताई साधूको नमूना कह्यो है
 की जैसे सूत्रका पाठ अजिनाजिन संकासा जणा
 इव अवितह वागरे माणा विहरई कह्यो परंत प
 थर पीतलाना नमूना करणा नहीं कहा अगर जैसे
 सोनाको नमूना याने बानगी पीलकी नहीं है अ
 गर सोनाका नमूना सोनाही है और जैसे आंबका
 नमूना आबही है लेकिन आकका नमूना उसकी
 जगे नहीं सोचता है इसीतरे हाथीका नमूना हाथी
 परंत गर्धन नहीं इसतरे घोडाका नमूना घोडा इम
 इसत्रीका नमूना अस्त्री रतनका नमूना रतन प
 रंत कंचका तुकडा नहीं इम साधूनों नमूना साधू
 अगर घणी बसतू मांहिथी थोडी बस्तु दिखावे ते
 ह नमूना याने बानगी जाणीये परंत अर्धवस्तुके
 ठिकाणे गुण रहित बसतु दिखावे तेह तिसका नमू
 ना नहीं कहिये और कोई ऐसा बोलते है प्रतिमाकुं
 देखके प्रतिमाकुं देखकर हमकुं जगवान याद आवे
 जगवानका ऐसा रुपथा ऐसी योग मुंदरा ध्यान
 पद्म आसन ध्यान सरूपमें जगवान निर्वाण पहावे
 देखो प्रलित्क इस माफिक कहते है फिर इस योग
 मुंदराकुं अस्तान मजन कराते है एतो प्रथम खुला

सा दोपदीसैहै अव उनकु पूबना प्रतिमाको देखकर
 जगवानका सरूप कैसे मालुम हुवा जगवान तो ३४
 अतिसे ३५ वाणी कर विराजमानहै जिसके नाम
 ओर मंस लोही कैसाहे वरण गंध रस कैसाहै तथा
 उनके मात पिताका नाम आजुखा ओर माताके ग
 रजमें कोणसे ठिकाणसे आये उसवक्त कितने ज्ञा
 नथे ओर तीर्थकर गोत कोनसी करणी करिके उप
 रज्या फिर इहा कैसा तपकरा गृहस्तावासमे कित
 ने बरस रहे बढमस्तपणा ओर केवल परवज्या कि
 तने बरस पाली ओर प्रथम पारणेका दातार इत्यादि
 के जगवानका सरूप कहांसें मिला ओर २४ तीर्थ
 करके नाम तथा नवकार मत्र नमोथुण तथा पंच महाव्र
 त १२ व्रत तथा पंच अणुवृत तीन गुणव्रत ४ सिखा
 व्रत पम्कमणा ओर अतीचार त्रस थावर जीव
 अजीवादिक नवतत्वके जेदानुजेद पटद्रव आठ आ
 त्मा पटकाया १८ पापके नाम ४९ जांगे एह सर्व
 प्राप्ति गुरु महाराजसे ओर सूत्र सिद्धांतसे हुईहै
 लेकिन मंदिर प्रतिमासे इस माहिली किंचित मात्र
 नी प्राप्ति नही हुईहै मंदिर प्रतिमा ए सर्व उदे जा
 वमेहै ओर वैरागतो द्वय उपसम जावमें है परंत
 मंदिर प्रतिमाकुं तो देखके जरूर पग धोवणेकी
 फूल चढानेकी धुप दीप आरंज करनेकी ढोलक
 मृदंग जाऊ मंजीरा नगारा इत्यादि पट कायाकी ल

ट करनेकी मनमे आवेगी ए प्रत्यक्ष देखो हजार
 लाखो आदमी पट कायकी लूट कर रहेहैं चव
 मालुम होवेहै आरे कोई उहा जतन सहित नवका
 नमोथुणं पढे तो बहुत अच्छी बातहै हिंस्या गेड
 आश्रव अधर्म गेडके तप संजमतो खुशी आवे
 हां करो नगवानकी आज्ञामेहैं लेकिन व्रत पचख
 न तो जवहोगा जव सरधान सच्ची होवेगी जिसक
 देखो प्रतिक्ष तीन मनोर्थ श्रावगके कब में गेडुंग
 आरंज और परिग्रह वो दिन मेरा जला होवेग
 और सूत्र सूयगडांग दूजा श्रुतखंदका पाठ मूल
 सूत्र गाथा (अविरतिपडुच वाले: त्रिति पडुच पंडि
 ए त्रितात्रिती पडुच वाल पंडिए आहिज्जई) दे
 खो वीतराग देवने श्रावगकुं विरती आसरी पंदि
 कहाहै जितना हिंस्या जुठ चोरी आश्रव अधर्मसे
 निवर्त्या सो तो पंडित घणा कहाहै और अधर्म
 आश्रव हिंस्यासे नही नित्रित्या उतनाही बालपण
 अर्थात् अज्ञानपणा कहाहै इस वास्ते संसारका
 काम श्रावगसे सर्वथा प्रकारें नही बूट सकाहै कुल दे
 वी देवता लक्ष्मी पूजन वही सरस्वती पूजनादिक प्र
 त्यक्ष आश्रवद्वारहै प्रत्यक्ष पाप लगेहैं लेकिन संसार
 का खाता जाणेहैं संसार खातेका मंगलीकहै परं
 त नगवानकी आज्ञा बाहिरहैं इसतरह सब मंदिर
 प्रतिमा पूजन पखालन स्नान मंजन पाणी विन

स्थितियादिक सर्व संसारका खाता मानो और आश्रव हिंस्या करिके बनाहै वंदना नमस्कार करणके फल कोई असली सूत्रमें चले नही मूलहीज जगवानने आश्रव द्वारमें कहाहै फिर आश्रव अधर्म को सेवेगातो धर्म कहासे होवेगा इस वास्ते हाथका जोरना मस्तक नमाणा दरसण करणा ए सर्व संसार मारगकाहै इसमें किंचित मात्र संख्या कख्या मतकरो कोई देवताची डीगावे तोची मतडिगो मुक्तीकातो मारग एकांत असली देव असली गुरु असली धर्म दयामइ जाणो निसंदेहपणें इस सरधामें अमोल होवेगे जबही साधूपणा और श्रावणपणा फरसेगा व्रत पचखान फरसेगे सूत्र जगवती का पाठहै समकित विना व्रत पचखाण नहीहै उत्रा ध्येन सूत्रका पाठहै (सरधा परम दुहहा) सरधा साची आणणी बहोत मुशकिलहै बीतराग देवने तो मुगती मारगमे साधूके और श्रावणके दोनो के वास्ते ज्ञान दर्शन चारित्र तप कहाहै और कुठ कहा नही इसके सिवाय और सर्व अधर्म आश्रवजाणो फकत साधू मुनिराज पापकर्मके त्यागी पुरष उनकु आहार पानीका देना वस्त्रादिकदेना येथी बीतरागने सुपात्र दान कहाहै इस वास्ते जो गृहस्थ घरसे निकला तो तो असंजम मांहिले निकला और संजममें गया इस वास्ते मुक्तीका मारगहै ए

प्रत्यक्ष देखो पोसहमे कुठ खाणा पीणा नही महा
 कठिन जोर लगाना पडेहै इतना जोर लगाकियो
 ११ मा व्रत हुवा लेकिन साधुकु दानदीया सो वा
 रमा व्रत हुवा वा दान संजममे गया इस वास्ते प्र
 त्यक्ष श्री बीतराग देवने मुक्तीका मारग कह्या और
 ग्यारमा व्रत पोसहसेत्री ऊपर बढगया ये प्रत्यक्ष
 बीतरागके बचनहै जरा इसकु विचारोतोसही साधु
 को दियासो संजममेगया इस वास्ते सर्व श्रावगके
 व्रतके ऊपर होगया इसके सिवाय जो कुठ मंदिर प्र
 तिमा इत्यादिकके आगे चढाना देना लना ये सर्व
 असंजममेसे निकला और असंजममे गया इहा ना
 ना प्रकारका पुण्य पाप अनेक नेय सुजासुन संसा
 रका खातामानो मुक्तीमारग तपजप संजमका जाणी
 सर्व बोल उपर लिखे प्रमाणे अडोल पणे धारो॥कवित्त
 ॥सबज कपडा तना, नकल सूवटाबना, तास मंजार नही
 चोटघालो॥लिखत चित्रामका देखचीतासही, स्वानवी
 लठ ना जागचाले॥ कतर कागजके फूल बहु रंग रंगे
 नवर, टुक सांसकरनाह बैठे॥ असल और नकलकी
 पशु पहिचानहै, तास अज्ञान नरनाहजाने॥कहतहै सं
 तजन सुनोहो नविक जन, पशुसे निपेद नरदेह मा
 ने ॥१॥ देखो प्रत्यक्ष क्याबात है जो कागज उपर
 अथवा चीत चितरामका किसीने धोके हाथी रथ
 गंगानदी इत्यादिक मंडवा लिया अर्थात् बनवा

लिया, लेकिन किसीने प्यास लगी तो इस गंगा से पानी
 नहीं मिलेगा, घोड़ा सवारी नहीं देगा, रण सग्राममें
 नहीं चमेगा, गज दूध नहीं देवेगी, ए सर्व कहणे मा
 त्र नामस्थापन है लेकिन मूल्य न होगा और को
 ई कहे, हिंस्याका इहां, जातिके वास्ते, कुछ दोष नहीं
 उनको अनार्य जापाके बोलनेवाले अनार्य कहे हैं आ
 चारागका चौथा समकित नामा अध्ययन दूजा उदसेमें
 इति पूर्व प्रश्नोत्तर ॥२०॥ और कितनेक लोग ऐसा कहते
 हैंकी जगवती सूत्रमें आदिमें (नमो वजीए लिखए) ऐसा
 पाठ है तिस वास्ते थापना अक्षर वंदनीक है ऐसा जो
 कहते हैं तिनको जबाब देने वास्ते ते शब्द का अर्थ लि
 खते हैं कि (नमो वजीए लिखए) इसका अर्थ तो
 इस तरेका है अठारे लिपी ब्राह्मी ऋषभदेवकी
 पुत्री तिसको जगवतीने सिखाई है ते ऋषभदेव
 ब्राह्मी लिपीके करता है तिनको नमस्कार करी
 है और तिश्चेकेवली चदे सो प्रमाण है सूत्रकरताका
 मनसाका तो अर्थ सूत्र करता ही जाणें परंत मूल अ
 र्थ तो ऐसा है अगर थापना अक्षरोको वादत हो
 तो तिनको हम ऐसा पूछते है कि १८ लिपी थापना
 वादतो नाम अक्षर इतना अक्षरको आकार सर्व
 ही वंदनीक होसी क्योंकि सबही अक्षर जगवानके
 बताये हुए है इण लेखतो कुरान किताब पुराण वेद
 काम शास्त्र जोतिप वैद्यक विकथा वारता मंत्र जंत्र

तत्र कोक सामुद्रिक २९ पाप सूत्र इन सबके अ
 हार तम्हारे कहे मजब वंदनीक हासी पिण इहातो
 ब्राम्ही लिपीना क्रिया तथा द्वादशांगी वाणी श्री ऋ
 पञ्च देवजीने बतवी तिसवास्ते क्रियाके गुणसे बांद
 वा योस्यहे थापना अहार वंदनीक हासी तो २९
 पापसूत्रके अहार वंदन जोग हासी तो अब तुम
 किसतरे बंदते नही तेहने पाप सूत्र किसतरे कहते
 हो वंदनीक तो एक नमो बंजीए लिवए नमस्कार
 ब्राम्ही लिपीके करणहारको याने ब्राम्ही लिपीके पै
 दा करण वालिकां ओर जाव श्रुत परणत द्वादसांगी
 वाणीको नमस्कारहे इति पूर्व प्रश्नउत्तर ॥ २१ ॥
 अंगर कितनेक मतमन्ही ऐसाजो कहतेहेकि सूत्र
 जगवती सतग २० में उदेशे नामे जघाचारण वि
 द्याचारण साधये प्रतिमा बांदीहे ऐसा जो कहतेहे
 ते इकते जठ बचन कहतेहे ते किसतरे विद्याचारण
 जघाचारण साधु लड फोरवीने मानुखात्र पर्वते न
 दोस्वर द्वीपे रुचक द्वीपमें गयाहे यह बार्तातो साची
 हे परंत श्री ठाणांग सूत्रके चउथे ठाणे मानुखात्र
 पर्वतपे तो ४ च्यार दिसे च्यार कूट कहाहे तेह दे
 वताके आवासनाहे परंत प्रतिमाके वास्ते सिद्धायत
 न कूट कहा नही तो प्रतिमा किहाथी बांदीहे ते पा
 लिख्यतेहे (माणसुत्तरस्सण पवयस्स चउदिसा
 कूमा पन्नता तं रयणे १ रयणुच्चय २ सवरय

एणं शरयणसंचये ॥१॥ यह सूत्र पाठमें च्यार कूट
 कथा बली कीडक ग्रंथ द्वीप सागर पत्रतीमाहे एके
 कविदिसे तीन तीन कूट कथा एवम् २ कूटावारादिव
 तीना आवास कथाहे परंत तिहांबी सिद्धायतन कूट
 नहीं कथा तो तिहां प्रतिमा किहाथी वादी अंगर
 और सूत्रका पाठ लिख्यतेहे ॥ पूषेणं तिन्निकुडा दा
 हिणउ तिण तिण आवरेणं उत्तरउ तिणिनव चउ
 दिंसिमाणस्स नगस्स ॥१॥ और रुचकं प्रेरवते पिण दि
 सा किमारीका ४० कूट कथाहे परंत सिद्धायतन कूट
 तिहांनी नहीं कथा तो प्रतिमा उहां किहांसे वादी अ
 गर जैसे शास्त्रामें कथाहेकि ॥ नास्तिचार्या कुतः सा
 ला धननास्ती कुतः सुखं नास्ती ज्ञानकुतो धर्मः ना
 स्तिग्रामः कुतः स्थितः ॥१॥ इति वचनात् एक नदी
 स्वर द्वीपमे सासते सिद्धायतनहे तिहां प्रतिमाहे तो
 तिहां (चेईयायं वंदए) ऐसा पाठतो मानु पोत्र और
 र नदीस्वरे और रुचक द्वीपए तीन ठिकाणें एकसे
 रीखा पाठहे अंगर जिहां प्रतिमाहे तिहां और जिहां
 प्रतिमा नहीं तिहांनी इतनाही पाठ सूत्रकाहे अंगर जि
 सजगे प्रतिमाहे तिस जगे नमोयुणंका पाठ नहीं कथा
 और जिहां प्रतिमा होवेते तिहां (वंदई नमंसई) का पा
 ठ हीना चाहिये अंगर वंदना ते गुण कीर्तनकरण और
 र नमस्कार ते नमणा ऐसा पाठ तो नहीं कथा अंगर
 एक (चेईयायं वंदए) यह सबद भाणोत कीर्तन कराहे

ते किस वास्तेकी। एह सर्व साधानी रीतीहै अगरे जे
 जिहां साधूजी आईः समोसरेहें याने जिहां विश्रा
 म लेवेहै तिहां गमणा गमणे पडकमतेहें तिहां चो
 बीस स्तवन कहतेहें ते मांहीं लोगस्स कहते लो
 गस्स मांहीं बहु बचनेहै ते तिहां जने जंघाचारी सा
 धुओने समुच्चय बचने (चेईयायं वंदए) ते तीनोने
 जगवंत अरिहंत ज्ञानवंत प्रते बंदना करीहै इण
 श्रीश्री द्विणे (चेईयायं वंदए) ऐसा कहाहै और
 जो प्रतिमा वास्ते (चेईयायं वंदए) कहाहै होवेतो
 नदीस्वर दीपमें तो प्रतिमाहें तिहां तो यह पाठ मि
 लताहै परंतु मानुदेव और रुचक द्वीप इत जगे
 तो प्रतिमा नही तिहां (चेईयायं वंदए) यह पाठ
 किसतरह मिलसी इस बातका जुवाव विचार कर दे
 ना चाहिये अगरे जो इहां प्रतिमाकुं बंदना करणी
 कहतेहोते सूत्रसे विरुद्ध बातहै और विद्याचारण
 जंघाचारण प्रतिमा बंदना वास्ते नही गया अगरे टी
 का मांहीं गाथा कहीहै ॥ [अईसय चरण समव्या
 जंघाविज्ञाई चारणासुणव जंघाईजायं पढमं तिसंका
 उरधिकरेवि १०] अगरे जो जात्रा करणे वास्ते मया
 होवे तो (जंघाचारण) रुचक द्वीपसे पावा आवतां मानुं
 पौत्र परवतपै जो तुम [सिद्धायतन] कहतेहो तिस
 क्रीडाजात्रा क्यो तिही करी तो येह साधु सास
 तो जाव देखिणे वास्ते गया वृती सक्तके धणी बंद

मंस्तपणे चारित मोहनी करमके उदेथी लब्धि फोरि
 के गया और पुन एहीज उदेशके प्रति यह पाठ है
 [जे तस्संठाणस्स अणाल्लोइय अपडाकत्ते काले क
 रेइ नत्थी तस्स आराहणी] यह लब्ध फोरी अण
 अलियो प्रायचित्त लीया विना कालकरे तो धरम
 को विराधकहे अगर जो जात्रा करणे वास्ते गया
 होयतो मोटा धर्मको लाने क्यों नेही सूत्रमे कहापि
 रंतु इहां तो धरमके विराधक कहे जो जात्रामे तफा
 होता तो ज्ञानीदेव आज्ञाके विराधक उन साधुवा
 को क्यों कहते अगर कोई ऐसा कहे कि इहां प्रति
 भाको तो (चैत्य) कहाहै परंत तीर्थकरोजीको कि
 स जगे (चैत्य) कहा अगर ऐसा जो कोई कहे
 तिनकु इसतरें जुवावहै सो सूत्र अनुसार लिखतेहै अ
 थम जगवती जुवाइ रायप्रेसेणी इत्यादिक धणे सू
 त्रामे बहोते ठिकाणे बंदनाके अधिकारमे तीर्थकर
 और साधुवोको ग्यानवंत महा उत्तम पुरपो प्रते
 [चेइयं] कहाहै ते पाठ (अतिखुतो आयाहीणं प
 याहीणं वेदामि नमस्सामि सकारेमि समाणमि कल्लाणं
 मंगलं देवयं चेइयं पऊवा स्वामी) यह पाठ बहोते
 ठिकाणे कहाहै ज्ञानवंत वास्ते चैत्य कहिये और
 पुन समवायांग सूत्रमे जिहा १२४ जिनाने केवल ज्ञा
 न उपज्या जिस वृत्तनीचें तिस वृत्तको ज्ञाननेथा
 ये चैत्य वृत्त कहा तेह पाठ ॥ एएसिणं चित्तं

साए तिथियराणं चउबीसं चेइय रुक्मा पन्नता तज
 हा निग्गोहसाति विनेय साले पीयंगुवतोहे सरीसहे नाम
 रुक्खे साले खीलरः करुक्खेय ॥ १ ॥ तेंदुयं पाडलं जं
 आसत्थे खिलु तहेव दहिवन्ने नंदीरुक्खे तिलिएय
 अंबगरुक्खे असोगेय ॥ २ ॥ चंपगवउलेयं तथा वडस
 रुक्खे तहेवधवरुक्खे सालेय वद्धमाणस्स चेइयरुक्खा
 जिणवराणं ॥ ३ ॥) तिस वास्ते तीर्थकर और साधुका
 [चैत्य] कडिये इस वास्ते जंघाचारण साधोने श्री
 जिनराजको जहां कही जो बंदना करतेहें तिहांका
 जीव श्री जिनराज देखतेहें इति पुर्व प्रश्नोत्तर ॥ २२ ॥
 अंगर कितनेक लोग उपास दसाग सूत्रमे आणंद आ
 वंकीकुं प्रतिमा पुजीहै अथवा नमस्कार करी कह
 तेहें तो एकांत सूत्रमे अण मिलती बात कहतेहें ति
 सका जवाव देनेके लिये सूत्रके प्रमाणसे सूत्रा अर्थ
 लिखतेहें तें किसतरे अर्थ देखना चाहिये उपासग
 दसासूत्र अध्येन पहिले श्रीमहावीर आगे आणंद
 श्रावंगकेने कह्याते (पाठ) (नोखुलमे जंते कप्पई
 अजप्पइजे अणउत्थिणवा अणउत्थियि देवयाणंवा
 अणउत्थिय परिगहियाणिवा चेइयाइ वादत्तएवा न
 मंसित्तएवा पुत्ति अणालंबंते आलवित्तएवा संलवित्तए
 वातंसि असणंवा पिणंवा खाइमंवा साइमंवा अजुवा
 अणपदाउवा) इति पाठ उपासगदसा सूत्रका अर्थ
 देखिये अणंदजति क्रया कह्या की अंगर आजपठे

मूके न कल्पे ॥ अन्य तीर्थीने १ अन्य तीर्थीना दे
 वने २ आर अन्य तीर्थीने ग्रहा अरिहतना [च
 ल्य] ते साधु अनमती जोगी सन्यासी आदिका
 ने अपने मतमें जिन अरिहतका (चैत्य) ते साधु
 को मिलाय लिया होय अथवा समकृत संरक्षाम
 मिलाय लिया होय तेहनेजा बदनही तेहना बोलिया
 पहिले बोलनही आर तिनको गुरु समजके आहारा
 दिक देवणे वास्तु वीतती करु नही मिथ्यात कारण
 जाणिके यह मूल पाठ अथ सूत्रह आर इस पत्र
 पाठका अर्थ कितनक लोग ऐसा करतेह जो अत
 तीर्थी याने अनमतीने ग्रहा प्रतिमा याने लयकर
 अपना कर मावीह याने अपने देवताआका प्रति
 माआम जिन प्रतिमा स्थापन करी ऐसी जो जि
 न प्रतिमा प्रत बंदु नही इम कहतेह परंतु मतप
 की ऐसा नही समजते कि जो अरिहतकी प्रतिमा
 जोग मुद्रा संजोग रहित बैठे आसनसे होतीह अग
 र अनतीर्थीके देवताकी प्रतिमाती संजोगी आयु
 ध सहित आर असत्री सहित बाहण याने असवारी
 सहित होवे तो सिव आर जिन तीर्थकरजीकी प्रति
 माकतो आजदिन मुख वद्धिका धणी पुरस पिण
 णताह ता तिणे ते जिन प्रतिमाको क्या जाणिके आ
 दरी याने ग्रहण करी अगर ब्रह्मा विष्णु महेश हन
 मान कारतिके रुद्राणी अथवा खेत्रपाल इनमसे एक

सका प्रतिमा जाणकर अर्थाकारकरो त कही अगर
 जा तुम प्रतिमाका इहा अरथ करोगे तो प्रतिमा
 क्या बोलतहि और प्रतिमाका अर्थम आहारपाना
 का क्या कामहे अगर प्रतिमातो कब आहार पाणी
 नहालय तो च्यार प्रकारके आहारका क्या कामथा
 सूत्रमे कहणका तो जाणिये इहा आहार पाणी सुधि
 के कारणे कहीहे तो इण ठिकाणे प्रतिमाका अर्थ क
 रतेह सूत्रसे विरुद्धहे परत मतपहोयाना मतमाहि
 इमजा ज्य त्य करिके अन्य तोरथीका ग्रहो याने लि
 या॥ चेत्य ॥ निषेधाके सथ तोरथीनालिया॥ चेत्य प्रति
 मा॥ पूजना ठहरातेहे तो एह सूत्र न्यायसे ठहरता
 नही और उनोका हम पूबतेहे कि तुम्हारा बाप च
 मालके घर बैठा कोई कारिज करिके तिस बखत तु
 म अपणे बापको वाप करी समजतेहोकि चमाल के
 रि मानतेहो त कही अगर जा तुम अपणे बाप
 को बापकर मानते होतो अगर अन्य तोरथीके देव
 ल माहि रहिकर तुम्हारी प्रतिमा अबदनीके किम
 हुई एसा प्रतदा असुद्ध बचन बोलतेहो आणदुजा
 के परिमाणसे प्रतिमाका अर्थ करतेहो तो एकते
 मिथ्या याने ऊठा बचन कहतेहो अगर आणदु श्री
 वकजाको क्या कारण जोगहे तिहे पाठ लिखिये
 सूत्र (कल्पईसे समणे निगंथ फासू ए सणिकेण
 असणे पाणं खाइमं साइमं बत्थ पडिग्गहे कबल पा

यु पत्रणं पीठ फलम मिजा संधारणं उसही जैसे
जण पाडिला जमाण विहरित्तए) ए कलप मांहे ता
अरिहत आर अरिहतका साध वादवा आर दान द
वा एह कलपह यान यह बति करणा जगह अगह
जो स्वसताका यान अपन मतीकी प्रतिमा वादवा
एह पाठता सूत्रम नही कहा जिसतर आपह आ
वका समकतकी बिधी कहाहे इसतर संख पाखली
वोर सब श्रावकाका यहा बिध कहाहे आर अनंत
चावोसीके श्रावकाका यहा बिध समकितकी रीतहे
इम समककर सूधा अरथ सूत्रका करणा चाहिये ॥
इति पत्र प्रश्नात्तर ॥ २३ ॥ आर कितनेक सकस
एसा कहतहे कि अबड श्रावक सन्यासनि उववाइ स
त्रम प्रतिमा पूजा कहतहे ते सूत्रका पाठ लिखतहे
(अबडसम ना कपडि अण उलियावा अण उलियय दे
वयाणवा अण उलियय परिगहायाइ चइयाइ बांदित्तएवा
तमसित्तएवा जाव पऊवासित्तएवा एणत्थ अरिहत
वा अरिहत चइयाणवा) जेन कलप तीन बोल ते
हते आपदवा परज कहा आर कलप ते मांहे अ
रिहत आर अरिहतकी (बेत्य) ते साध री अ
रिहत तेहते देव अन अरिहत (बेत्य) ते साध तेह
गुरुइन एह देव अर एह गुरु दीनाका अबड जान बांदवा
कलपह अगह कदाचित मिथ्यातान लोधी अरिहत
[बेत्य] नाम प्रतिमा ठहरावतहा जो तम लागता ॥ ॥ ॥

सपर हम पढ़ते हैं कि जो अरिहंत तेहतो देव अने अरिहंत [चैत्य] ते पुन देव तिवारें गुरु बाँदवातो पाठ सूत्रकावतावा अगर तिसरा पाठतो सिद्धाति माहि है नही तिसवास्ते अंबुजीके साक्षसे प्रतिमा पजनी कही नही तेह विचारकर समजना चाहिये ॥
 ॥ इति पर्व प्रश्नोत्तर ॥ २४ ॥ अगर बहुतसे लोग ऐसा कहतहो कि शास्त्रमें ७ क्षेत्रमें धन खरचना कही ते सूत्रके परिमाणमें नही मिलताहै अगर पाहिले श्रावण आणंद कामदेव वगैरे सूत्रामें कहीहै तिनके अनेक कांड संख्या धन हुता तहना १२ व्रत, ११ पजिमा और संधारा ऐसा करणी सूत्रके पाठमें वर्णन करीहै परंत तिनके संध काढवा देहरा प्रतिमा कही वना पजवातो सूत्रमें कही नही तिनकी श्रामिहावार देवनिकतेना क्षेत्र वताया अथवा गीतमादिक गणधरनि आगधन काढवा खरचवा सात क्षेत्रामें कही हावतो सूत्रका पाठ बताओ अगर प्रतिमा १ देहरा २ सुस्तक ३ साध ४ साधवी ५ श्रावण ६ श्राविका ७ एह सात क्षेत्र कहतहो तेह अजाण लोकाके अरमावण वास्ते कहतहो सूत्र माहि तो कोई साध साधवीके वास्ते माल आणकर आहार देवता उस साधका अकल्पनीक कहीहै यान लेणे जोग नही कही आचारांगादि केई सूत्रामें मन कयाहै तो साध साधवीके वास्ते क्या काममें धन आताहै ते कही

अगर पुस्तकतो श्रीवीर निर्वाण पठे नोंसे अस्सी वर्ष ९८० बाद लिखाणाहै पहिले तो मुखपाठ सूत्र यादये तो अगर हम जाणतेहे कि यह ७ क्षेत्र नवे बणाये हुयेहे और जो श्रावंग पुनवत होवे ते खरातनो धन खाय नहीं तिस वास्ते यह ७ क्षेत्र को परिमाण सूत्रसे नहीं मिलताहै यह बातें नवे परिकरणोंकीहै कुठ सूत्रमें यह ७ क्षेत्र नहीं कहे इति पूर्व प्रश्नोत्तर ॥ २५ ॥ अगर कितनेक आचार्य ऐ सा कहतेहे की द्रोपदीने जिन प्रतिमा पुजाहै तिस का जवाब और सरधान सूत्र परमाणसे लिखतेहे अगर सर्व सूत्र मांहि देखता तो साध १ साधवी और श्रावक ३ श्राविका ४ किसने प्रतिमा पुजा नहीं कही ॥ दोहा ॥ साध श्रावंगकेण सूत्रमें प्रतिमा पुजा नाहीं ॥ नामलेवे ईक द्रोपदा सो तो ब्रती नाहीं ॥ १ ॥ और राजग्रहा चंपा सावस्थी आलान्नर्या तिर्गायी द्वारका बनाता इत्यादिक नगरी बणवी तिहाका की ट खोई दरवाजा वाग वानी घर हाट राजा राणी रु वि श्रावककी बरणवी लेकिन किसी नगरीमें देहरा प्रतिमाका बरनण कीया नहीं एक द्रोपदीने विवाह के आसरेमें इह लोक संबंधी खेम कुशल मंगलीक तथा बर वास्ते पुजाहै तेह संसारका विबहार कारज में पुजाहै जैसे देव कुलमर्जादमें ॥ (विद्याधर) अ ने कई देवता; इनका कुल विबहारजा ॥ पूजता इति एम

धर्म वतावे, दीसे मूढ गिमारजी ॥ समकितपरखो
 जिन बचतोसे ॥ १ ॥ लेकिन मोक्षके कारन अथवा
 करम निरजरा कारणे नही पूजा तेह द्रोपदी प्रथ
 म पूर्वले नवमे धर्मरुची अणुगारकु कडवा तवा
 दीया तो प्रथमतो यह काम अजुक्त कीया १ आ
 र सकमालकाके नवमे निख्यारीका दूसरा जरतार
 कीधा यह अजुक्त दुताये वारता २ आर पठे संज
 म लेकर अवनित गुरणीका आज्ञा मटी यह तताये
 अजुक्त वारता ३ आर पठे नगर बाहिर तपस्या
 करी ए चोथी अजुक्त वारता ४ अगर पठे पंच जर
 तारनी नियाणो कीयाए अजुक्त पंचमी वारता ५ आ
 र पठे संजम विराधके बस्या देवांगणा दूसरे दवली
 कमे हुई यह षष्ठमी अजुक्त वारता ६ अगर पठे दो
 पदीके नव इहां आकर पाच जरतार व्याह्या एह सा
 तमी धाता अजुक्त हुई ७ अगर एसा अजुक्तक क
 रणहारी मिथ्या दुष्टी साहित तिसकी पूजाको सादर
 अथवा सरियाज अविरतारी दीधी परत आणदजा
 मुख सोखली इत्यादिक श्राविकाका उपमा क्या न
 हो दीधी तो किस वास्त अगर आणद परमुख तो
 प्रतिमा पूजता नही तो गणधर देव खोटी उपमा
 किसतरे देवे अगर द्रोपदी जिसवक्त प्रतिमा पूजा
 तिसबल श्राविका नही १ जे श्राविका होयतो पंच
 जरतार किसतरे वरे २ अगर जो द्रोपदी विरत लिधा

तिवार इमं जाणतो न हंतो जाहं पंच प्रसरि वरस्यु
 अंगर संसारकी रीतसे एक धर्णी राख्यो होवे तहंतो
 परिमाण नही रह्या अरि जा वरवाकी वक्त पांच व्या
 ह्या तो श्राविक व्रत लेता दिस वीस संकितना वर मोक
 ला राख्याया तो तह सत्र पाठ दिखवि अंगर इ सं परि
 माणसे श्राविका तो नही कहिये अंगर द्रोपदी समदृष्टी
 नही तो कसतर दसा श्रुतस्कंध सत्र दसमे अध्ययने क
 ह्या ही कि जो मनुष्यके जोगांका नियामो करिते धरमकी
 ने सांचलवोची नही पामे अंगर जो उताकिष्टारसनो व
 धहोवे तो ते द्रोपदीको मनुष्यके जोगांका नियामो उ
 ताकिष्टारसनो नही तिसवास्ते पंच संजम उद
 आव्याह ते जणी यह परणी नही याने विवाही नही
 तेव ताई नियामो हुतो अंगर तिहां लगे समदिष्टी
 नही अंगर जो वस्तु बंगी ते आवीमिले तिस वक्त
 नियामो पूरा होये अंगर इहां नियामाका दो भेदह
 एकतो द्रव्य प्रत्यय १ अरि दूसरा जव प्रत्यय र
 अंगर जे जव प्रत्यय तहंतो वासुदेव चक्रवर्तकी हो
 वे जेहने जव पर्यंत विरत उदय न आवे ते जव प्र
 त्यय १ अंगर दूसरा सर्वको द्रव्य प्रत्यय होवे तह
 ने वाठवो द्रव्य मिल्यो तिवारि नियामो पूरा थयो प
 ठ संजमने समकित सरध आवे ते जणी द्रोपदीने
 द्रव्य प्रत्यय नियामो हुतो ते परसया पाठे विस्त उ
 दय आव्यो परंतु परणीती ब्रह्मा लगे तो नियामाका

लदे हुं तो (पुवः कृडः नियाणः पडिचोइजमाणी)-ऐसा
 पाठ है तिहालगे समद्रिष्ट पण नहीं २ और द्रोपदी
 का मातः पिताः पिण मिथ्याती संजवेहें जेणे आहार
 वह परका कराया (ते त्रिउलं असणं पाणं खाइमं
 साइमं सूरचं मजचं मुहुचं मंसचं सिधुचं पसणचं सु
 द्वहं पुप्फं बत्थं गंधं मलालं करिचं वासुदेवः पामुखाणं
 रांसहस्साणं आवसेसु साहरहतेवि साहरति) ला
 खो क्रोडोगमे तिस जीव हणी जीवनी हिस्या करा
 मंस आहार निपजाव्या ते मंस आहार निपजाव्या
 वास्ते समद्रिष्टी नहीं मंस आहार समद्रिष्टीके धरे
 नीपजे नहीं ते ससे श्रीकृष्ण पिण समद्रिष्टी नहीं मंस
 आहार कीवावास्ते अगर श्री नेमीश्वरस्वामी संज
 मु नहीं लीधो तिसवास्ते जब नेमीश्वर जगवते सं
 जम लीधो तब सासन परवरत्यो तब जादव वशी
 घुणा जिन मारगी थया अगर जीव हिस्या नेमीश्व
 र जगवतने परणवाके समय घणी होती हुंती ते
 टालीने संजम लीधो एह समद्रिष्टीका लक्षण जाण
 वा इण लक्षण द्रोपद राजा समद्रिष्टी नहीं ३ बली
 कितनेक वादी ऐसा कहतेहैं कि जे प्रतिमातो ति
 थं करकीहै की सूत्र गिनाताजीके पाठसे कह्यहैं की
 (जेणेव जिण धरे तेणे वउवा गढई ता २) की द्रोपदी
 जिनना धरमा आवी कह्योहै तिस वास्ते तिरथकी
 प्रतिमाहै येह तो सत्यहै लेकिन नयके प्रमाणसे अ

रथ इहां जिण सबका औरजीहै कि जैसे ठाणांग सू
 त्रके तीसरे ठाणेमें कहाहै कि (तउ जिणा पन्नता तं
 जहा उही नाण जिणे १ मणपऊवनाण जिणे २ के
 वलनाण जिणे ॥ ३ ॥ और [तउ केवली पन्नता तं
 जहा उहीनाण केवली १ मणपऊवनाण केवली २
 केवलनाण केवली २] और (तउ अरिहा पन्नता
 तंजहा उहीनाण अरिहा १ मणपऊवनाण अरिहा २
 केवलनाण अरिहा ३) अगर अधिक नाणीनें अरि
 हा और जिण कहाहै केवली मनपरजव ज्ञानी ते
 तो साधुहोवे तेतो अणगार घर रहित कहाहै (अ
 णगारे जाए) जगे जगे सूत्रमें कहाहै अगर जिन
 नें घरहोवे तेहवा जिन जाणवा अगर घरतो अवध
 ज्ञानी देवता कामदेव परमुखनें होवे तिस वास्ते जि
 न सब्दे अवधि ज्ञानी जिनतो घर जाणवा अगर घ
 र वागवाडी माहिं तीर्थकर साधु आवता तथा तव
 अनेक लोक बंदवा जाता तिहा इसतो किहाइ कहा
 नही जे चालो तीर्थकर साधुने घर जाईये तेहने घ
 र नही इस वास्ते इस नही कहा परंतु जिहां साधु
 वैसे तिस जगेको सूत्रमाहिं [उवस्सयं] कहाहै
 उवस्सयं ते उपाश्रय अल्प कालके रहिवाका आ
 श्रय वास्ते उपाश्रय कहिये पिण घर न कहिये ति
 स वास्ते अवध ज्ञानी जिनतो कामदेवादिकनो घर
 कहिये जिमज्ञाता मध्ये नागघर कहा तिम बलीका

ई कहें तीर्थकर विना जिन सद्द किसको कहिये ते
 उत्तर तीर्थकरने जिन कहिये १ सामान्य केवली
 जिन कहिये २ अवध ज्ञानीने जिन कहिये ३ म
 परजब ज्ञानीको जिन कहिये ४ वारंमागुणठाण
 के धणीको जिन कहिये ५ चउदे पूर्वधरने जिन
 हिये जावत १० पूर्वधरतकको जिन कहिये ७ ग्य
 रवां गुणठाणाके धणीको जिन कहिये ८ आवती च
 वीसीके जिन कहिये ९ जिन नामध्येयने जिन कहिये
 १० जिन समुद्रको कहिये ११ कंदर्पने जिन कहिये
 १२ नारायण कृष्णने जिन कहिये १३ बहु धन
 वंतने जिन कहिये १४ ते कौण ग्रंथकी साखहै ते
 हेमाचारज किरत तेइनी हेमी नाममाला अनेकार
 थी मांहि कहाहै ते ॥ श्लोक ॥ (बतिरागो जिनश्चैव
 जिनः सामान्यकेवली ॥ कंदर्पे जिन वारात् जिनो
 नारायणस्तथा १) अगर अरिहंत सकल करम क
 पाय २२ परीसे सहें अगर जीततेहैं तिसवास्ते जि
 न कहिये १ अगर सामान्य केवली पणें रागद्वेष मो
 हघाती करम जीत्या तिसवास्ते जिन कहिये २ औ
 र कंदरूपने सकल संसार जीत्या सरवमें व्याप्या ति
 स वास्ते जिन कहिये ३ वासुदेव पोताना जुजबले
 तीन खंड पृथवी जीत्या तिसवास्ते जिन कहिये ४
 पठे जेहवा अवसरें तेहवो जिन सदनो अर्थ जाणवो
 और द्रोपदीने तो परणवाना अवसर मांहि पूजाहै

नियाणाना-तिष्ठ उदमें जला जरतारनी बांठा विधि
 यारथी-थकीइं पूजाहै तिसवक्त चारित मोहर्नानों उ
 द्यहै-तेणें बीतरागी-निरागी ऊपर भक्तिराग नही
 अगर समकितने-अजावें तो नमोथुणं किमकहे अब
 विज्ञानी-माहितो नमोथुणंनां गुणनही ऐसा जो को
 ई कहे तो-तेहना उतर अगर जे नमोथुणंका गुणतो
 अरिहंत-सिद्धमांहि है एहतो सत्यहै परंतु अरिहंत
 ने-अजाणलोगें-अरिहंत जाणिनें बांधा पुज्या और
 नमोथुणं कहा ते सूत्र मांहि विज्ञान देखिये अगर
 जगवती सतक-८ में उदसे पाचवें गौसालाजीका
 श्रावण श्रीवीर बखाएया तिहा कहा है (इच्चेते दुवा
 लस्स आजीविय उवासग्ग अरिहंत देवतागा अ
 स्मा-पिउससगा) अरिहंतना भक्ति कहा आण
 दवत्-तेहनेमते गोशालाजी अरिहंतहें एह श्रा
 वक गोशालाजीको नमोथुणं कहतेहें तेहने आचार्य
 अरिहंत-जाणिके नमोथुणं कहेथे १ वली जगवती
 सतक-१५ में सावथी नगरीमें (हालाहला) कुं
 नारोनो-हाथे गोसालाजी विचरतेहें तेसावथी नगरी
 में- (अजिणा जिण पलाठी अकेवली केवली पलाठी
 असवन्नं सवन्न पलाठी अजिणे जिण सहप्पगा समा
 णे-विहरई) कयो अगर अजिनथको जिन अरिहं
 त-केवली सर्वज्ञ कहिरावते-विचरतेथे २ अगर तेह
 ना श्रावण-जिन अरिहंत-केवली सर्वज्ञ जाणिनें न

मोथुणं कहते १ वली एहिजे १५ में सतके गोशाला
 जीना अयपुल श्रावण रात्रे चित्तवतेथे [एवंखलुमम
 धम्ममायरीय धम्मोवयस्स ए गोशालाजी मंखलीपुते
 उपन्न नाण दंसणधरे जाव सबदरसी इहे सावत्थीए
 नयरीए हालाहाला ए कुनकारिये कुनकारावणसा
 आजीविय संध संपरिवुडे आजीविय समएण अप्पा
 ए जावेमाणे बिहरई) तेहने हुं काल्ह सुरज ऊग
 ता जाईने बांदसु यह इम अरिहंत जाणकर नमोथ
 ण कहतेथे कि नही ३ ओर उपासगदशा सूत्र ७मे
 अध्ययन सिकमाल कुनारने रात्रे समदृष्टि देवता क
 हिगयो जो काल्ह आवस्ये ते कोण (एही तएण दे
 वाणप्पिया कल्ल इह महा माहणे उप्पन्न नाण दंस
 ण धरे तीय पडु पन्न मणागय जाणए अरिहा जिण
 केवली सबनुं सबदरसी तिलोग विहिय महिय पुईयंस
 देव मणया सुरस्स लोगस्स अच्चाणिजे पयणिज्ज वंदणि
 ज्ज सक्कारिणज्ज समाणणिज्जे कल्लाणं मंगलं देवयं वेईयं
 पज्ज्वासणिज्जे तवकम्म संपयाउ तत्तेणं तुम्मं वंदिज्जा
 हि जाव पज्ज्वासेजाहि पाडिहारेणं पीढ फलग सि
 ज्जा संधारएणं उवनिमंते जाहि] तिवारे सिकडाले
 इम जाणयो जे माहिरा धरमाआचार्य गोसा
 लाजी मंखली पुत्र (उपन्ननाणदंसणधरे जाव तव
 कम्म संपपया संपपउते से कल्लं इहां हवमागविस्स
 इ तएणंत अहं वंदामी जाव उवनिमंतिजहि) इण

लेखे सिंकेडालंपुत्र गोशालाजीने अरिहंत जाणकर
 नमोर्थण कहतेथे किंजही ए ४ साखा अजिनने जि
 न जाणने नमोर्थण सत्रमें कहीहै अंगर अजिन ओ
 र अजिनने नमोर्थण कहीवाता एक सरखीहै और न
 मोर्थण तो देवता और इंद्रादिकके जवमें अनंती वार
 कह आयेहै परंतु कुब मोक्ष खाता नहीहै एह सं
 सरका मंगलीक ब्योहारहै और इसमें समकती ओ
 र मिथ्यातीका कारण जेद कुब जुदा नहीहै अजव्य
 और जव्य और सम्यक्ती और मिथ्याती सवही प
 ढतेहै यह परिमाण सास्त्रोक्तसे मालुम होताहै परंतु
 सम्यक्तीजीव जिनने नमोर्थण कहतेहै तिनको सुध
 श्रद्धाका लान्न होताहै तिम द्रोपदीयें पिण मिथ्यात
 मोहनीके जेदमें अजिन अवधिज्ञानी देवतानी प्रति
 माको नमोर्थण कहाहै अथवा जो जिनकीही प्रति
 मा होय और नमोर्थण कहाहै तो क्या अचरजहै
 अंगर जीव इहलोक रीतसे अथवा मंगलीके कारण
 पूज्याहै परंतु आज्ञा माहिला कारण नहीहै वली ए
 हीज द्रोपदी परण्या पठे समकितने संजमे पांमी ति
 वारें प्रतिमा पूजा किहांइ कही नही अंगरी धातकी
 खंडमें देवता साहरीने द्रोपदीको लेगयो पदमोत्तर
 राजनि घरे रही तिहां तप कीधा कहा पण प्रतिमा
 पूजा कही नही और फिर श्रीकृष्ण पांभवजी धात्री
 खंडसे द्रोपदा आणकर पांवीपांभवांका अदिसोटा दी

धा फिर पांडू मथुरा नगरी बसायकर उहां राज की
 यतिहाजी प्रतिमाकी पूजा नहीं करी अगर जो वि
 बाहके औसरमें प्रतिमा पूजती दफै द्रोपदी समद्वि
 षीहोवे अगर प्रतिमा तीर्थकरकी होवे तो द्रोपदी
 स्त्री जांतथकी जिन प्रतिमानें संघटोकिम करे अगर
 सूत्र मांहीं ठाम २ तथा उत्राध्यैनमें ब्रह्मचारी तेहनें
 एतला बोल बरजाहें जे स्त्री सहित थानक १ अस्त्री
 नी कथा २ स्त्री थकी एक आसणे बेसवो ३ अस्त्री
 नो अंगनिरखवो ४ स्त्रीना जोगना विलास सद्द सं
 नलवो ५ अस्त्रीनाजोगनो संनारवो ६ अस्त्रीनो फर
 सवो ७ ए सातबोल बरज्याहै बली परसन व्याकरण
 चौथे संवरद्वारे बली आचाराग ५ महाव्रतनी जाव
 नी मांहीं बली सुयगमांगें स्त्रीपरिज्ञा परिज्ञा अध्येने
 जिसें निसित्ताणं निसीयइ अजिखणं पोस बथ
 परि हरइकायं अधे विदंसेई बाहुसुद्ध तुकर करमण
 वेंके) इम ठाम २ अस्त्रीनो संघटो साधूनें बरज्याहै
 तो वीतरागने इस्त्री संघटा किमहोवे बली अंतगंड
 सूत्रमें देवकी राणीनें वह पुत्र देख्या हरख पांमी स
 रीरमें अधिक आनंद हुया परंतु बेटाकी बुद्धे पण
 अमीनही यानें अती नजदीक नहीं बैठी अगर ब
 ली सुगातती चेलणा रुखमणी सिवानंदा कौणकनी
 शीणी इत्यादिक सबही दूरही और बंदना करी पर
 ति संघटो नहीं कीया और तिलक मस्तकमें नहीं की

या और आणंद संख पोखली श्री कृष्ण श्रेणक को
 एक जंदाई राजा कृष्णदेव इत्यादिक पुरसपण
 की वेगलें होयकर बंदना करी और प्रदेशी राजा
 चितरवारथी इत्यादिक घणानर अनै नरेस्वर जग
 वंतजीकु बंदन आया तिसवक्त ५ अभिगमन धोरन
 किया तेह पाठ [सचित्ताणं दवाणं विजसरणं यांर
 विजसरेइ) कह्यो जगवंतने साधु तेहने सचितनो
 घटा नही कलपे तिसवास्ने सचित वस्तु दूर मूंकी
 पठे [नच्चासन्ने नातिदूरे विणएणं पंजलीउडे पळे
 वासंती] कह्याहै लेकिन जो नक्तिके बसहोकर साधु
 महाराजके चरणारविंदका फरस करतो दोस नहीहै
 परंत इस्त्रीका संघटा किसी विध ब्रह्मचारीको नही
 फरमाया अगर श्री जिनकी प्रतिमा जिन सारखी अ
 तिमाका संघटा किसतरे किया यह बने अचरजकी
 बातहै कि आजदिनची कोई इसत्री जिन प्रतिमाको
 फरसके नही पूजती और इस्त्रीको जिन प्रतिमाका
 पूजना और सनान आदितिलक कारन करणा इ
 त्यादि सर्व मने कीयाहै तेह इस परमाणसे अगर
 स्वयंवर मंडप और विवाहके पहिले पूजाहै तेह ओ
 क्त कारणका रस्ता नहीहै जरा अनितर यनिबुद्धि
 लके बीच देखोतो सही की परमार्थ की सिद्धीको
 मारग औरहीहै और हम अपने लिखेको निश्चीति
 ही कहते क्यो की हमतो अपणी बुद्धीकी सहीबि

तैसे और सूत्रांके पाठकी साखसे ऐसा परमार्थ
 का जेद कहा और निश्चे तो केवर्लयाके वचन स
 त्यहै और अबके आचार्य और मनुषोंकी बुद्धी
 अलपहे सोई मत पदको ठोडकर तत्वारथ समझना
 चाहिये और द्रोपदी विवाह हुये पीठे नारदको अ
 संजती कहाहे सोई पीठेही समकित अवणका
 लक्षणहै अगर नियाणके परजावसे पंच चरतार
 व्याह्या और विप्रय सुख जोगव्या तिवारे पीठे सम
 कित उदें आईहै और निरयुक्ती विरतमे गंध हस्ती
 आचार्यकी करी हुई तिसमे ऐसा कहाहै की द्रोप
 दीजीके एक पुत्र थयो तिस पीठे समकित पामीहै
 अगर ऐसा प्रकृण ग्रथामेजी कहाहे इति पूर्व प्र
 श्नोतरा ॥ २६ ॥ अब कितनेक लोगोसे हमतो प्रश्न
 साधुश्रावक आश्री करतेहैं कि किसजगे साधु
 श्रावगने सूत्रमे जिन सिद्धिरे याने जिन प्रति
 माकी पूजा करीहै तिसका जुवाव सूत्रांके पाठसे पु
 ठतेहैं परंत वादी लोग श्रावग साधुके नामसे तो
 जवाव नहीं दे सकते अगर देवताओंके नामसे जु
 वाव देतेहैं की शयप्रसेणी जीवाजीगम इन दोनो
 सूत्रोमे देवताओने सिद्धयित्तन प्रतिमा पूजीहैं ते
 किसतरे सुरियाज देवतो शयप्रसेतीमें और विजय
 पोलिया देवने जीवाजीगम मांहिं इनोने प्रतिमा पू
 जीहैं तिसका उत्तर कहतेहैं अगर सुरियाज और

विजय पोलीयेका अधिकार, एकसरीखाहै तिसवा
 स्तो इहां सुरिया न देवका घणा- बिस्तार सूत्र राय
 प्रसेणीसं कहेतेहै कि इस वास्ते संदेह दूर होनेके इस
 प्रश्नका तात्पर्य सिद्ध करतेहैं अब पहिले सुरिया
 न देवतां देव लोक मांहीं रहे हुयां श्री महावीर
 को नमोयुणं कहरा तो तिहां (ठाणं संपत्ताणं) लगे
 कहिकर बाकी आगे पद नहीं कहरा और बाद इस
 के ऐसा कहरा तेह पाठ (तं महाफलं खलु तद्वा
 रूवाण अरिहंताणं जगवंत्ताणं नामगोचस्स विसव
 णयाए किमंगपुण अज्जिगमणं वंदण नमंसण पडिपु
 वण पजुवासणयाए एगमवि आयरियस्स धमियस्स
 सुवणस्स सवणाया एकिमगपुणविउस्स अवस्स
 गहणयाए) इहा वादवानो उपदेस साज्जलवानो सो
 दा लोच कह्यो पिण नाटक करणेका सोठा लोच
 नहीं कह्यो वादवां और उपदेस साज्जलवो स्वयोप
 समजावहै अगरी नाटक करवो ते उदय जावहै यह
 पाठ उवाई जमवती तुंगीया अधिकार आ
 दिदेई घणीजेहै अगरी सुरिया न जे जगवंतनी को विं
 दना करीनें इस कह्याहै तेह पाठ (प्रयाणं पेचाहिया पि
 सुहाय स्वमाय निसेस्साए अणुगमियत्ताए नविसुहा
 अर्थः पेचा कहिता परलोके पेचा स्वदे परलोके ध
 णे सूत्रांसे कह्याहै और वत्रायेतके तिमि अद्येनम
 कहरा कि [पेचाहोईसिउत्तमाना] तथा अइत व्याक

रण पांचमो संवर द्वारमे (पंचजावियं अंगिमे सिनी
 हं) ऐसा पाठ है तिम जगवंत पासै जावो वंदणाक्रि
 रो और जो जन परिमाणे नूमिकार्ये पूजो पाणीये
 करी बिडको पुण्याकी बरपा करो [दिव्य मरवरो जि
 गमण जोग करेह] जे देवताने आविवा योग्य सुचि
 सुगंध सातल नूमिको करो परंत इम नहीं कहाँ
 जो जगवंतने रहिवा बैसवा जोग नूमिका करो त
 किस वास्ते जे जगवंत तो फूल पाणी सचित पाणी व
 स्तुना नोगीनही तिस वास्ते देवता ओने जगवंतके
 वास्ते नहीं कहाँ पुन सूत्रमे इम कहाँ है (जलय थ
 लय) त ऊपन्या फूलते कमलोदिक थलजते जाई
 चंपादिक फूल बरसावो अगर इस पाठके ऊपर कि
 तनेके वादी ऐसा कहते है कि सचित पाणी और स
 चित फूलाकी बरपा मानते है और सामायांग सूत्रके
 धिपे ३४ अतिसय माँहि ऐसा पाठ है [जलय थल
 यनी सुर पञ्चण] तिहां पिण सचित पाणी फूल
 मानते है ऐसी सरधा धारणे वालोको इहां जवाब लि
 खते है देखो जिसवक्त सुरियाचके सेवग देवने पाणी
 की बरषा करी तिहां ऐसा पाठ है कि (अजबदल
 विठदई २ ता) और जिहां फूलाकी बरपा करी तहां
 (पुष्प बदलं विठदई विठदईता) ऐसा कहाँ है अ
 गर जिम जनम महोव्व करतां जगे जगेसे द्वीपास
 मुद्रकी माटी पाणी और फूल आएधा कहाँ है इम

धाने इसतरें इहां कहीसे पाणी अगर फूल आया
 धाने ल्याये इसतरें कही नहीं कहाँ और ३४ अ
 तिसयहै तेतो मुनपांना कीधां नहीं होताहै यहतो
 श्री जगवंतना पुण्य प्रजावसें प्रगट होतेहै अगर
 कितनी देवताओकी करी अतिसे होतीहै तेह ३४
 अतिसय ॥ यत ॥ तेपांच देहोद्भुतरूपगंधोः निरा
 मयः खिदमलो कितश्च ॥ स्वासोऽब्जगंधोरुधिरामीखं
 तुः गोक्षीरंधाराधवलं ह्यविस्त्रं ॥ १ ॥ आहार निहार वि
 धिस्त्वदृश्यः श्रुत्वारएते तसयाः सहोत्थाः ॥ क्षेत्रेस्थि
 तिर्योक्तं मात्रक्रेपि नृदेव तिर्यग्जन कोटिकीटे ॥ २ ॥
 बाणी नृतिर्यग् सुरलोकजापाः संवादिनि योजनमा
 मनीत्रः ॥ नामंडलं चारूचमोलिष्टे ॥ विडं विनाः ॥ ३ ॥
 इंपीति मडलं श्री ॥ ३ ॥ साधेच गठ्युतिशतद्विएरुजाः ॥ वैरे
 तंतं प्रोसाक्तं ॥ तिवृष्यऽष्टपयः ॥ ४ ॥ दुर्निहमन्वस्वत्तक्रतो
 ज्ञयः स्थानैत एकादश कर्मघातजाः ॥ ५ ॥ स्वधर्मचक्र
 चमराः संपादपीठं मृगेंद्राः सनमुज्ज्वलचः ॥ उन्नत्रयं रे
 प्त्नमयं ध्वजोः द्विः ॥ ज्यासेत्त चामि करुपंकजानि ॥ ६ ॥
 अवप्रत्रयं चारु चतुमुखांगताः ॥ त्र्यैत्यदुमोऽधोवदनाश्च क
 ष्टका ॥ द्रमाने तिरुदुदनिनाद उच्चकेः ॥ वीतोनुकूलः शकुना
 प्रीटिदिणाः ॥ ७ ॥ गध्रावुवर्षे बहुवर्णपुष्पे ॥ त्रिष्टि कचुम
 मश्रुनखा ध्वजोः ॥ चतुर्विधामर्त्यानिकायकोटि कृष्ण्य ज्ञा
 त्वादिपार्श्वदेशे ॥ ८ ॥ ऋतुनांभिर्द्विधाध्यानाः ॥ मनकुलत्व
 मित्यमीनां प्रकोत्त ॥ विशतिद्वया ॥ अतुलितशत्रुमीलिता

गाटाइन अतिसयामेसे १० जनमसे होतीहैं ११ अतिसय
 केवलज्ञान होतेहीहोयहै १२ अतिसय दिवकृतहो
 तीहै सोई १३ प्रकारके पुत्रमेंकह्याहै कि अन्न पुत्र
 १ पाणपुत्र २ लयणपुत्र ३ सयणपुत्र ४ वत्थपुत्र ५ मन
 पुत्र ६ वचनपुत्र ७ कायपुत्र ८ नमस्कारपुत्र ९ इह
 नवों प्रकारकेपुत्र ठाणांग सूत्रके नवमें ठाणेमेकिया
 है कि अन्न १० प्रकारे आहार सबही जीवोंको देता
 हुया जीव पुत्र परकिरती पैदाक करताहै अगरे सा
 ध अथवा संजती असंजतीका अनेद वीतराग देव
 नैनिही कीया और कोई जीव दानका लणेवाला
 भिलाया वुराजो होयतो दान देणे वालेकुं उसका
 दोष नही वहतो अनुकंपा और सांताके देणेका
 निलाखाहै इस वास्ते ४ प्रकारके दानसे पुत्र बंधेहै
 १ पाण पुत्रे कहिता पाणीका दान सर्वही जीवांकुं
 देता जीव पुत्र बंधेहै २ लयण कहतां स्थानकाज
 गे देता पुत्र ३ सयण सिज्या तखत पाटोयादि ४
 वत्थ याने वसत्र दान ५ मन० दानशीलादिकम
 रखनेसे पुन होय ६ वचन० सुद्ध साताकरीसे पुन ७
 कायासे दयापाले और देव गुर भक्ति विनयसे पुन
 ८ नमस्कार करता पुन होयहै ९ एहनव विधिसे
 पुन बंधे १० विधिसे जोगवे जिस्मे तीर्थकर नाम
 करम निरवद्य पुन्यसे बंधेहै तिस वास्ते ३४ अति
 सय ३५ वाणी १००८ लक्षण बजरिपत्र नारायिच

संधैण समचौरसंस्थाणं इत्यादि गुणं लक्षणं तीर्थक
 रमाहिं होतेहै सोई दिवकृत फूल अचित पुनः प्रकृ
 तिसै देव वारिस करेहै और सचित याने हरे फू
 ल समोर्णमे होयतो सेठ साहूकार राजा आदि पा
 च अजिगम सांचवता याने करता कह्याहै गतिसमें
 सचित बस्तु बाहिर गोमणी कहीहै अचित लेई जाय
 रा कह्योति किम मिले और जो सचित फूल होय तो
 सांध सांधवीयांकुं सघडा होय तिसते जीव हिंस्या
 होय तिस वास्ते अचित फूल जाणीये और कौणक
 नि नगर सिंगारमे पाणी फुलाका आरंज कीया ति
 समे जगवंतकी आज्ञा नही हुई और कोंकणने नगर
 में ठिडकाव कराया लेकिन समोसर्णमें नही कराया
 और पाणीकी वारसर्जा अचित बेक्रीय जाणवी
 साख उत्राध्येन १२ मे हरकेसीमुनीके दीदान
 देनेमे पंचदिव्य वारिस देवने करी तिहां कहीसे पा
 णी लयाया नही ततकाल बेक्रीय कीया और जगवा
 नके पंच कल्याणक चवन १ जनम २ दिक्षा ३ केवल
 ४ निरवाण ५ चवन जनम दिक्षा इन ३ माहि ज
 गवान अविरतीथे तेह कल्याणका माहि फूल पाणी
 का समारंज कीया कह्याहै जब केवल महोत्सव कि
 या तव तिसवक्त जगवंत महाव्रती संजमीहें तिस
 वास्ते सचितका सपर्स संघटा नही कराया तिसज
 मे सचित फूल पाणीनो संघटा देवोने जी नही करा

या और कोंकण परमुख ब्रंदने वास्ते गये तिस व
 क्त नगर सिणगारा फूल पाणी बिखेरया परंत नग
 वंत वास्ते फूल माला लेई नही गया नगवंतकी म
 र्याद नूमिका मांहि गया तिहाथकी पाच अनिग
 म आधारण कीये इम साधुवाने बांदवा गये तिस व
 क्त सचित वस्तु - दुर गोडी ऐसा सूत्रका लेखहै ति
 सि वास्ते पाणी फूल सचित नही बली इतना आरंभ
 कीधो कोंकण परमुख आपणी सोच्या वास्ते परंत
 तिस मांहिथी नगवंतके काममें क्या आया तेह बि
 चारकर कहो और [जल थलय] जो सईहें ते उपमा
 वाचिक जाणिये कि पुसप बेकैके कैसेहें कि जैसे जल थ
 लजके ताजे फूल सोचनीय होवें इसीतरेके वे बेक्रियफु
 ली समजना जिम उत्राध्ययन २३ में [पासंडाको
 उगमिया] ते मृगइव मगातथा दसमी कालिकासू
 त्र नवमें अध्ययन ३२ में (वाणंते विगलेंदिया) म
 रख अवनीतिको मृग और बोकके कि उपमा द्रवति
 अ इहा पिण फूल (जलइव थलइव) ऐसा उपमा
 वाचिक जाणिये परंत सुचित नही ३ बली सुरिया न
 दिव आपणी नाटिक करणे आया तिहां नगवानकी
 विदणा करी तिसवक्त नगवंतने ऐसा कहा तेह पाठ
 श्री रायप्रसेणी सूत्रे (पौराणमेयं देवा १ जियमेयं दे
 वा २ क्रियमेयं देवा ३ करणिज्जमेयं देवा ४ आचिन्न
 मेयं देवा ५ अजणनायसेयं देवा ६) यह वह बोल

जगवंतने कहाँ ते वंदना करिवाँ आश्रीहै परंताना
 टिक करवाँनी आज्ञा नही कही ते किसवास्ते कि सु
 रियाजदेव जिन आगे कहाँ कि हे महाराज गोर्मा
 दि श्रमणाने दिखावा जणी ३२ विध नाटिक कल
 तव जगवंते (एयमंठ नोअढाई नोपरिजाणई तुसिणी
 ये संचिदई) कह्यो तिहा अण बोले रहे परंत आ
 ज्ञा न दीधी नाटक करणी सावयहै तिसवास्ते तुम
 कहतेहो जे प्रतिभा आगलें नाटिक करता रावणोती
 थंकर गोत्र बांध्यो इम होवेतो २० स्थानक तीर्थकर
 गोत्र बांधवाना ग्याता सूत्र आठमे अध्ययनमे कहाँ
 तिस मांहि नाटिकका बोल किम न कह्यो तथा कृष्ण
 कौणक आणंद संख पोखली इत्यादि श्रावके साक्षा
 त जगवंत आगे किसीने नाटिक कीया ऐसा कही
 किसी सूत्रमें नही कहाँ तो इह उह बोल वंदना
 आश्री कहाँहै ओर सुरियाज देव महावीरसे पूछा
 की (अहणं जंते सुरियाजे देवे किं जवसिद्विये सि
 मदिठिए मिठदिठिये परिएसारीए अणंत संसारीए
 सुलज बोहिए दूलज बोहिए आराहए विराहए चरि
 म्मे अचरिम्मे] तिवारे जगवंतने ते उह बोल सारा
 विसिद्धि आदि कहाँ इण लेखतो सुरियाज विमानमे
 ये वारे जातेके सुरियाज देव ऊपला जाणिये बली
 जगवती सतग १२ में उदेसे १९ में वालीके बाफेका हा
 एत कहाँ सो बकरीयांको वाडो तिसमांहि (अथास

हस्सं परवेवेऊ) एक हजार बकरी चरी वह मासलगे वा
 डामे राखी ते बकरीयाना उचार पास वणखेल जलमो
 सींग मुख हाथ पग तेणे ते बानो अणफररयो नही रह्या
 पण कोई आकास परदेस मात्र चूमिका अणफरसी रही
 होय पिण (एयंसी महालयंसी लोगंसी लोगस्स सा
 सयंजावं संसारस्स अणादिजावंजी वस्सयं पिच्चजा
 वं कम्म बहुलं जस्मण मरण बहुलंच पडुचनथी केई
 परमाणुप्यगालमे ते वियएसे जथणं अयंजीवेणजा
 ए वाणमएवांए) जीवें सर्व लोक फररयो उपज्यो
 मूयो परदेस मात्र चूमिका विनफररयां नरह्यो ८४
 लाख नरका वासा सातक्रोड ७२ लाख चवनपंतीका
 चवन पाचथावर तीन विकलेंद्री तिरंजं च मनुपना अ
 संप्याता आवास ८४ लाख १७ हजार २३ विमा
 णीकना विमाण ते भांहि पांच अनुत्र विमाण वरजी
 ने सर्व ठामे अनंती २ वार उपज आया इस लेखे
 सुरियाज विमाने सुरियाज पणें पिण अनंती वार ऊ
 पज्याहै तब सुरियाजनै पूढयो जे हूं चव्य हूं के अज
 व्य हूं इत्यादि १२ बोल पूढा ओर विजय पोलीया
 सरीखा असंख्याता दीप समुद्रना असंख्याता विज
 य पोलीया पणें उपज आया (असई अदुवा अण
 त खेतो) कह्यो तिवारें अनंतचवें अनंतवार प्रतिमा
 पूज आया पिण एह जीव समद्रिष्टी नही हुवा पुन
 रपी कितनेक बादी ऐसा कहतेहैं जे सुरियाजदेव ने

वो उपज्यो जत्र सामानिक देवताइं कह्यो तुम सिद्धा
 यतन मांहिं १०८ जिन प्रतिमा और सुधरमी स
 चामाहि जिन दाढा यह दोनों पूज्यो एह पहिला
 करवा जोग्य कारज तुम्हारे वास्तेहै अगर पूजणे
 जोग्यहें और तुम्हकुं पढे [हियाए सुहाए खमाए
 निसेसाए अणुगामियताए नविस्सई) इम कह्या
 तो तुमे प्रतिमा पूजो येहवी बात बतावी ऐसा जो
 कहतेहें तिसका उत्तर और सुरियाजादि ३२ लाख
 विमानहें ते सर्व विमानाकी एक रीतहै विमान वि
 मान प्रते पाच पाच सजा और एक एक सिद्धाय
 तन एवं ६ वह वह वस्तु विमाणोमे सर्व ठिकाणे
 कहीहें जिसवक्त देवता पैदा होताहै तिसवक्त एक
 एक बार राज्य अजिपेक करता पूजतेहें ते समद्रिष्टी
 मिथ्याद्रिष्टी नव्य अजव्य सर्व पूजतेहें उपजती बेलों
 सर्व देवता सर्वना सामानिक देवता इमही कहतेहें जो
 प्रतिमाने और दाढा ए दोनोकी पूजा करो ॥ इहां
 इम नही कि जे सम द्रिष्टी होवे तेहिज पूजे औ
 र मिथ्याती न पूजे एतो जीत विवहार कुल रीतसे
 सबही पूजतेहें जिम मनुप लोकमांहिं समद्रिष्टीहै ते
 तो तीर्थकर साधुने पूजे याने बंदना करे और मि
 थ्याती होवेतो घोर मसीत मीरा तथा ब्रह्मा विष्णु
 महेस माता वीर हनुमान कामदेवने पूजे जो अ
 नथीरती होवेते जिन मतने माने नही ए मनुप

लोकीकरीते जैन और सिवना देवल पण जुदा जुदा
 है अगर तिम देव लोक माहि नाना प्रकारना
 मत मतना देवल जुदा जुदा नही कह्या जो
 ते सम द्विष्टी मिथ्याद्विष्टीने पूजवानो सिद्धायतेन
 एक एकही कह्याहै तेह जो धरम निर्जरा खाते
 जाणीने समद्विष्टी पूजे तो मिथ्याती देवता
 किसको पूजे तिनका देहरा जुदा बतावो सूत्र मांहि स
 मद्विष्टी मिथ्याद्विष्टीना विवहार तो जुदाहै ओ
 र लोकीकरीते एकहै जिम मनुष्य मांहिहै तिमकुल
 धरमनी रीते नव्य अनव्य सब पूजतेहै इहां कोई
 धरम निरजरा नही धरम पक्क खाते होवें तो मि
 थ्याती देव न पूजे अगर मिथ्यातका देवल पूजे तो
 मिथ्यातना देहरा जुदा नही तिसवास्ते यह पूजा क
 रणी लोकीकरीतहै अगर नवग्रीवेग ताई २ द्विष्टहै
 समकितिसें मिथ्याती देवता असंख्यात गुणा अधिका
 है गोशालामती देवताने कुंडकोलीया देवसे चर्चाकरी
 गंगदत्तदेवताने मिथ्याती देवसे चर्चा करी कामदेव
 अर्णक श्रावकको मिथ्याती देवाने उपसरगदीधा
 ऐसैं देव तिरथकरजीकी प्रतिमा होवेतो किसतरे
 पूजे अने अनमतीका देहरा तो सूत्र मांहि और प
 रिकरणामे किहाई कह्या नही तो मिथ्याती देव को
 णसे देवकुं पूजतेहै ते कहो इण लेखें सर्व देवता ये
 ही प्रतिमा पूजतेहै तिरा वास्ते समकित खाते एह

प्रतिमा नहीं परंतु समकित्ती देवकुं समकितका ला
 नहै जो पहिले मनुष्य जन्मसे समकितपाईहै तिसकुं
 जिनजकी लाज सहीहै ६ बली यह प्रतिमा तीर्थ
 करकी निश्चै किसतरे जाणिये ते सूत्र साखसे प्रति
 माका निरणय लिखितेहै प्रथम सूरियानदेव विवसा
 य सजामे आया तिहां ' धम्मिएसत्थेवाएति ' ऐ
 सा पाठहै धरम शास्त्र रतनमईहै तिनका बहोत वे
 र्णन कीयाहै तेह धरम शास्त्र वांचा ते धरम सास्त्र
 पिण कुलधरमकाहै परंतु आचारांगादि द्वादशांगी
 बाणी नहीं जो धर्म सास्त्र आचारांगादि होवेतो मि
 थ्याती अज्ञव्य होय ते किसतरे वांचे ओर मिथ्या
 तीना २९ पाप सूत्र जुदा नहीं कह्या सरव येही सा
 स्त्र वांचे अब आजदिन कितनेक आचार्य ऐसा
 कहतेहैं कि श्रावक आचारांगादि सूत्र पढेंतो दोष ल
 गताहै इसतरे कहनेहे तो इहां द्वादशांगी किहाथी
 अज्ञव्य ओर मिथ्याती किम वांचे ओर किम नाने
 ओर किम पूजे तिम वास्ते यह सास्त्र कुलधरमी
 रीतिका जाणीये ओर प्रतिमा सास्त्र यह दोनों ए
 करीतकेहैं ७ पढे यह पुस्तक वांचकर (धम्मिनयं वि
 वसाईयं गिणिहजा) ऐसा पाठ कह्याहै ते धरम वि
 वसाय ग्रहीनें लठयाईशान कुंणे मिद्धायतनहे १०८
 जिन प्रतिमाहै तिहा आव्यो ते प्रतिमानो सररीरसू
 त्र बखाएयाहै तेमांहिं जीवा जीगम माहि (रिद्धामई

मंसू) कहा है जे रिष्ट रतनमई दाढी मूंढ है यह जग
 वंतके सरीरथी अवयव जुदो पडयो यह फेर आज
 दिन कितने लोग प्रतिमा पूजतेहें तेहनें पिण दाढी
 नही करता ते दाढी कोणसे जिनके हुंती तेहनी प्र
 तिमा एह दाढी विशेष ॥१॥ पबें (कणयमयाचुञ्चया) क
 ह्या तेह सोना मयस्तनचुची युगलहें ओर उबाई माहि
 जगवंतनो सरीर वरणव्यो तिहां अस्तन नही कहा
 तीर्थकर चक्रवर्त बलदेव वासुदेव तथा उत्तम पुरष
 सामंत तथा अश्व हाथी देवरूपी कहेहें इतनोके अ
 स्तन नही तो तीर्थकरजीकी प्रतिमाके स्तन किम
 होय यह स्तन सहित प्रतिमा कोणसे जिनकीहै ए
 स्तन विशेष ॥२॥ बलि ए प्रतिमाके पासे दोदो चां
 वर धरती प्रतिमा एकेक उत्र धरती प्रतिमा ओर
 मुख आगे दोदो नूत पतिमा ओर दोदो नाग पडि
 मा हाथजोडी बिनयकरती खमीहे यह नागनूत जद्ध
 किसके परिवारमेहे तेकहो ओर तीर्थकर पासे तो
 गणधर साधु होवे तेहतो जगे जगे सूत्रमे कहाहें ॥ ईसी
 परिसाए जई परीसाए ॥ तेतो गणधर साधुनी प्रतिमा
 पासे होय तेतो किसिको संक्या उपजे तो गणधर
 साधुनी प्रतिमा ते पासे नही बली आजदिन जो लोग
 जिन प्रतमाकी थापना करतेहें तिण पासे कावस
 गीया साधुकी प्रतिमा करतेहें परंत एहिज नाग
 नूत जद्धनी प्रतिमा नही करता तो प्रतिमा माहि

साची कोणसी ए प्रतिमा नाग चूतना ठाकुरकीहै
 अथवा जिनकीहै एह परिवार विशेष ॥ ३ ॥ बली यह
 प्रतिमाने [लोमहत्थेणं पमऊई]-सूरियाचने मोर
 पीठकी पूंजनीसे पूजी जिम गिनाता सूत्र २ अध्ये
 न धनस्वार्थवादीकी स्त्रीये नाग प्रतिमाने मोर
 पीठनीसे पूंजी तिणरीते इणे पिण पूंजी ओर ठाणांग
 सूत्रे पाचमे ठाणे कह्यो (जे कप्पई निगंथाणवा निगं
 थीणवा पंचरयहरणाइं धारित्तयेवा परिगहिनएवा तं
 जहा उन्नाए १ ऊंटिए २ साणए ३ पच्चा पिच्चए ४
 मुजापिच्चए ५) मुज नीडीलगे रजोहरण अपवादे
 राखवा कह्या परंत सुकमाल वास्ते मोर पीठ राखवो
 न कह्यो अगर अन्य तीरथीथकी मिलैतो नेख थाय
 तिस वास्ते तो जैनका साधु मोर पीठी नहीं राखे
 तो जिन प्रतिमा तीर्थकरकी होवेतो मोर पीठीसे कि
 सतरे पूजी एहमोर पीठी विशेष ॥ ४ ॥ बली सूरियाचे
 पूंजी तिसवक्त प्रथमतो प्रतिमा न्हवरावी पठे [अ
 हियाइं देव दुस सजूयलाइ नियंसेइ २ ता] इमकह्यो
 जो जिन प्रतिमा प्रतिचीगट उंचरानी चार्चे अणहणा
 णो देव दुसजे वसंतरनो जोमो जुगल एतले धोती
 जोडो नियंसेई कहितां पहिराव्या इमकह्या अगर
 तीर्थकरतो अचेल्हे वस्त्र पहिरे नहीं तो एह प्र
 तिमा कोणसे जिनकी चाहिये गहिणा ओर वस्त्रतो
 एकरतेहैं अगर आजदिन कितने लोग वस्त्र ग

हिणा पहिरावते नही जगवंतको अचेल जाणने वख
 किम पहिरावे ओर कोई कहे ए वखतो पहिराव्या नही
 मुखआगे चढाया है ऐसा वचन असुद्धहे जो मुखआ
 गे चढाया ते तो (अन्नारहणं चुन्नारहणं बत्थारहणं आ
 नरणारहणं) तेह मांहिं आव्या अगर् नियंसेई तेह
 तो पहिरायेका नामहे ए वसत्रका विशेषा॥५॥वली श्री
 प्रश्न व्याकरण पाचमे आश्रव द्वारमें देवताना परि
 ग्रह मांहिं चैत्य देव कुल कहाहै तेह पाठ लिखिते
 है (एवचेव ते चउविहासपरिसा विदेवा ममायंति
 जवण बाहण जाण विमाण सयणा सणिय नाना
 विहवत्थजूसणाणिय पवर पहरणाणिय णाणामणि
 पंचवण दिवंच जायणविहं णाणाविहा काम खूव वेऊ
 बिय अत्थर गण सघाए दीवस मुहो दिसाउं चेईय
 पाणीय वणसंडाणिय वणसंरु एवं एगाम नगराणीय
 अरामुवाणं काणणाणिय कुवसर तालाग वावी दिहा
 य देव कुलसजा पवा वसही माईयाइं बहुयाइं कित
 णाणियः परिगिरहतापरिग्रहं विउतं दिवसार देवा
 विसयं दगानतिता नतु ठिउंनलंजति) एह पाठमां
 हि देवतानें जेजे वरतु परिग्रह खातेमेहें जेहनें परिग्रह
 जाणेंहै ते वस्तु सर्व कही तिस माहि देहरा प्रतिमा
 पण परिग्रह खातेमें गिणातो परिग्रह पूजे धरम नि
 र्जरा किमहोवे जो धरमखाते तिरथंकर १ केवली २
 गणधर ३ साधूहें तो तेह परिग्रह मांहिं गिरयानही

अगर यह जिन प्रतिमा परिग्रह भाँहि कही एह 'प'
 रिग्रह बिसेप ॥६॥ और धूप उखेव्यो अने साक्षात्पा
 से न उखेव्यो एह धूप बिसेप ॥७॥ जिन प्रतिमा जिन
 सारखी स्त्री द्रोपदीने संघटाकरा ८ दाढी १ रतन २
 मोर पिछी ३ नागचूतजङ्घ परिवार ४ वस्त्र ५ परि
 ग्रह ६ धूप ७ एह सात बोलथया यह ७ बोल सुरि
 याज्ञना तीर्थकरणीकी प्रतिमा साथे विप्रीत याने इन
 जुक्त नहीं कीया तिस वारतें एह प्रतिमा कामदेवा
 दी भोगीदेवनी संजवेहै लक्षण देखतातो समद्विष्टी
 मिथ्यातीनें सर्वको पूजनीक वास्तें लौकीक कुलदेव
 की प्रतिमाहै और निश्चे केवली बचन परमाणहै अ
 व इन सातो प्रश्नोंके ऊपर कितनेक वादी ऐसा क
 हतेहैं कि जो प्रतिमा तीर्थकरकी नहींहै तो कामदे
 वनी प्रतिमा लौकीक देवकीहै तो सुरियाज्ञदेवनें न
 मोथुणं किसतरे कही ऐसाजो प्रस्न करतेहैं तिनको
 जबाब देनेका सरधान लिखतेहैं अगर सुरियाज्ञका
 नमोथुणं धरम निर्जरामें नहीं ते किसतरें नमोथुणं
 तीन प्रकारकाहै ते लौकीकरते १ कुपरावाचनीक री
 तें २ और लोकोतररीते ३ अगर लौकीक ते नमोथु
 णंका कहणहार वालअज्ञानीनें जिस आगे कहे तिस
 मेंनमोथुणंका गुणनही लौकीक स्वारथ वास्तें कहें जिम
 द्रोपदीका नमोथुणं तथा जिम पोकरीणा भोजक ओ
 सवाला आगे चउबीस तीर्थकराका नाम कहतेहैं

रंत अपणे आपमें सरदहै नही तिम यह लौकीक
 और कोपरा बचनकीक ते गोशालाजीका श्रावक
 गोशालाजीको तीर्थकर जाणनिं नमोथुणं कह्यो एक
 परा बचनकीगीत २ लोकोत्तर तेह साधू श्रावक श्री
 वीतराग देवको गुण सहितनें कहे ते लोकोत्तर यह ध
 रमलाज खातेमेंहै ३ जिम सुरियाजने नमोथुणं कह्यो
 तिम विजय पोलीये पिण कह्यो अगर जव्य अज
 व्य सर्वकहे तो धर्मखाते किमहोवे एतो देवताने
 जीत बिबहार याने कुल बिबहार मांहिहें धरमखाते
 होवेतो श्रावक तथा राजाई कोईये क्या पूजा कीधी
 नही तथा देवताई पिण प्रतिमा आगे नमोथुणं क
 ह्यो तो साक्षात जगवंतपासे आव्यो तो जगवंतकुं
 नमोथुणं किम न कह्यो देवलोकमांहिं सुरियाजने म
 हावीरजीको नमोथुणं कह्या परंत समोसर्ण मांहि
 नही कह्या इम इंद्रसक्रइंद्र ईसानेंद्र सुरियाजे ददरदे
 व ते जगवंतने नमोथुणं किसीने किम न कह्या अ
 गर क्या प्रतिमासें श्रीजगवंत उतरते तो नहीथे
 जो जगवंतको ठोडकर प्रतिमाको नमोथुणं कह्या तो
 जीत आचार याने कुलरीत जाणिये अथवा जगवंत
 नें गरजमें देखकर सक्रइंद्र नमोथुणं कह्यो तथा मृतक
 सरीर तीर्थकरको तिस आगे नमोथुणं कह्यो जंबुदीव
 पन्नतीमें रिखज देवको निरवाणसमयमें परंत जगवं
 त विद्यमानकुं देवताओंनें समोसर्णमें आवी नमो

थापि नहीं कहा तो इम जाणिये जे धरम निर्जरात्तो
 कारण लानदेवनें नहीं जीत विवहारको काम जाणिये
 ये १ तली प्रतिमाने नमोथुणं कह्यो ते सुरियाचने
 इहलोक खातेमेंहे प्रिण परलोकखाते तंही तिसकी
 साख नगवती सतगार उदमे १ खंधकने अधिकार
 ममें खंधक सत्यासी श्री महावीरनें कहाहै ए द्विष्टा
 त्त मोदीहै तेह पाठ सुत्रसे देखलेन जिम कोई गा
 थापती पोतानों धर चलती देखीने सार नडद्रव्य का
 दे ते इम जाणजो ए समे (निवृत्ति ए समाणं पुर्वि प
 र्वा द्विया ए सुहा ए खमा ए निसेसा ए अणुगामियता ए
 जविस्सई) ए धन काढयोथको मुंऊने पहिलाने प्रवे
 दितकाले जिवित अणुग्रामिथास्यो एणे द्विष्टाते खंध
 क कहै लोक माहिं आलीत पलीत जरा मरणेणं
 जरा मरणे करी लोक बलेहै ते माहिथी सार नडनी परे
 हुं महारी आत्माने काढवे ए आत्मा काढयोथी मुंऊने
 (पेवा द्विया ए सुहा ए खमा ए निसेसा ए अणुगामिय
 ता ए जविस्सई) पेवा कहता परलोकें हितनो कारण
 थकी थास्ये सहवा सदनो फेरहो तिम सुरियाचने नगवं
 त्तने नमोथुणं कह्यो तिहां (पेवा द्विया ए सुहा ए जा
 व त्त जविस्सई) खंधक सजम लीधोनी परे इम कहा
 अने प्रतिमादि पूजवा चाल्यो तिहां (पुर्वि प्रवा हि
 या ए सुहा ए जावत जविस्सई) कह्यो धन काढवाना
 अलावानी परे ए अधिकार देखता प्रतिमानी पूजा

निमोथुण अने दाढानी पूजा इस लोकखाते थियो इ
 म पाठमे (पेचा) सद्ध नही [पुर्विपणा] शब्द कह्याह
 ते विचारकर समाजना १०० और कितनेक बादी
 ऐसा कहतेहैं कि जे सुरियाजने और विजयपोली
 ये जिननी दाढा पूजाहै और दाढाके ठिकाणे सुधरमास
 जिना माहि जोग जोगवता नही इम सूत्रमे कह्याहै त
 ह उत्तर यह दाढाका पूजना समकित खाते नही
 धम्मियसत्ये १ जिन षडिमा २ जिणदाढा ३ यह
 त्तीनो एक खातेमेहै दाढाने ३ पण प्रतिमानी ३ परि
 ज्ञव्य अज्ञव्य समद्रिष्टी मिथ्या द्रिष्टी मर्व पूजेहै स
 र्वना विमाणांमाहि दाढाहै अने तीर्थकर मुक्तिगया
 तेहने दाढा तो सरबने च्यार २ हुंती तेहना जिण
 हार पिण च्यारहे सुधरम इंद्र १ ईसाण इंद्र २ च
 मर इंद्र ३ बल इंद्र ४ ए च्यार लेतेहै तेहने (दा
 ममा) याने डाबा माहि घालकर पूजतेहै जो ए
 दाढा धरम खाते जाणीने लेयतो अचुत १२ मै दे
 ध लोकका इंद्रादि दाढा क्युं नही लेता परंत जेह
 ने जीत कुल विवाहारहै तेलेतेहैं और यह च्यार
 दाढा उदारिक सरीरनो परिमाणहै ते तो संख्या
 ता काल रही विनस जाय अगर यह दाढा तो
 संख्याता विमाने होवे नही और असंख्याता का
 लताई किम रहें और सुरियाज विजयपोलीया
 आदि देवताओके ठिकाणे जिण दाढा ते तो सास

ता पुद्गल परिमाणकी होती है अगर जो सूरि-
 याजादिक देवाने पूजा है ते तिथिकरनी दाढा-
 नही संभवती अगर सासता पुद्गलानो परिणामे
 तेहनी दाढा है जिम जमाली मेघकुमरती माताइं पु-
 त्राने दिदा अवसरता कसलीघा तिणे कयो एसमें
 [अपविमे दरमणे नविस्मई] मोहनी करमने उ-
 दलीघा कया तिम दाढा पिण जाणवी एहनी पु-
 जा करम तिर्जरा पणे नही जो धर्म निरजरा खाते
 होवेतो अजव्य मिथ्याती किम पूजे तमोथुण किम
 कहे अने काई मनुप लोकनी रीते समद्विष्टी मिथ्याती
 देव तो जुदा है पिण जिन मारगीने मिथ्यात मार-
 गीता देवता माहि पुस्तक जुदा नही जे जिन मा-
 रगीने तो आचारांगादिकहे और अनमतीने करा-
 ण पुराण है ते तो देव लोकमे नही ॥ १ ॥ प्रतिमा पिण
 जिन मतती जिन मतीने अने अनमतीने ब्रह्मा विष्णु
 महेसनी है तिम पिण नही ॥ २ ॥ दाढा पण जिन मतने
 जिनती अनमतीने अनमतना देवती दाढा जुदा है
 ते पिण नही ॥ ३ ॥ जे ते सरव जव्य अजव्य
 समद्विष्टी मिथ्याती देवतीने एहिजे धर्मायसत्य
 ते कुलधरमता पुस्तक १ एहिजे जिन पाडिमा २
 एहजो एहजु जिन दाढा ३ एतीन वस्तु जात त्रिवहार
 पूजवांको एकहे अने जा मिथ्याती समकतीना ए-
 ३ त्रोल जुदा होवे तो सूत्र साहि दिखावो ए तीन

वस्तु अन्तते जीवे अनन्ती वार पूजा पिणगरजसरी
 नही बली गिनाता सूत्र मांहे ५६ में अध्येने श्री कृ
 ष्णने पिण सुधरमी सजा कही है तो क्या ते सुधर
 मी सजा मांहे जिन दाढा तो नही तिहांस्युं श्री
 कृष्ण जोग जोगवे है जिहां सजा हुवे तिहां ता जोग
 कोई न जोगवे ते इमही सजा सुधरमी जाणव्यो
 बली कितनेक वादी एसा कहते हैं कदाचित जे यह जिन
 महिमाने जिन दाढाने मिथ्याती तथा अज्ञव्यनही पूजे
 एसा जो कहे तो तिसकी साखे तुमारे ग्रंथामें एक अध्या
 नियुक्तिमें लिखी है (हवमिं जिणहरा इति वारव्या
 उधानियुक्तेषु द्रव्यलिङ्गी परिग्रहीतानि चेत्यानि सम्य
 ग् दृष्टानि सजावितानि इतिकस्मात् जस्यार्त्त द्रव्य
 लिङ्गी मिथ्याद्रिष्टी घाताप्रव्यवतंहि दिग्बद्ध संबधी
 ति चेत्यानि यद्ये तस्यैत्ये तहिस्यर्गबहु मानात् प्रपू
 ज्याते पवापरं विरुद्धं न स्यात् न तु सद्यो जाया देवा
 स्वर्गलक्षेप सास्वतानि चेत्यानि प्रति पूजयते तत्क
 लपे श्वातिवसानुरोधात् अतएव विरुद्धं न संभवति
 यद्येवता हि द्रोयं यथा सम्यग धारणा याति चेत्यानि
 नमस्त कृत्यानि किं द्रव्य लिङ्गी परिग्रहीतानि न ज
 वांति त्याह द्रोपदान सम्यगर्त्क धारणी स्यात् कथं उ
 धानियुक्ता इत्या इत्युक्तं [इत्थी जण संघट्टति ति वि
 हेण बज्ज एसाहु] इति वचनात् स्त्री जिन संसर्ग सि
 नी विधि ति विधेन साधुना वरजनीय साधोश्चेत्क

लपनीय करणं चरत सम्यक्तज्ञावत द्रोपदी आर्गभे
 श्रूयते (लोमहृत्थं परी मुसई) लोमहृस्ते न परामि
 श्रुते परमार्जयतित्वर्थं तत प्रमार्जनेन जिना सप्तसौ
 जातं जिनरयस्त्री जिनस्यपसते आसातनास्यात् आ
 सातना सम्यक्तज्ञाव अत एव द्रोपदीनि सम्यक्तधा
 रणी सजाव्यते पिन उधानियुक्तिवृत्तं ज टीकाया गंधह
 स्तथाचार्येणोक्तं द्रोपदा नृप पुत्रिका निदान कृतिनि
 जतार पंचस्य साविता जात निदानिनो जितस्थया जि
 तेक पुत्रः पिनः पश्चात् साधु सिकासादवता सम्यक्त
 मार्गा धरते निमथ्यात्वं महानि वशति प्रतिमदिपुज्यं
 क पुष्पादिभि जिने प्रतिमां अनधानि तस्य ध्रुगृही नि
 वे म्भिकस्यां जनतं त्य जान कुसस्ति पुस्तकवरे दृश्य
 त् इति पाठांतरं मिथ्यात्वा धर्ज नहितं जनविधिध
 तु जाकथ प्राप्पते मग्धात्विति जिनद्रा पदा मिदक
 या जिनासातः ना एवृति) माहि कथो एहप्रथम ए
 सा कथो हे कि अजैव्य संगम देवताभि यह प्रतिमा
 पजेहे १२ इम सारियाज देवताके वारा प्रश्ना सहित
 एक प्रश्न हुया इती पुवप्रश्नात्तरा २७० अंगर इहां कित
 नेक बादा परमारथके भेद समजे विना कहतेहे कि तु
 म्हार साधुवाको श्रावक साह्यनलेण जातेहे और वि
 हार करते साधुवाने पहुंचावण जातेहे तो उसमे हि
 स्यालगतीहे तो उसका दास क्यों नही समजतेहो जो
 ऐसा प्रश्न करतेहे तिनको जवाब लिखतेहे अंगर सा

धृती, तत्व विद्या के समझने वाले हैं, सो ग्रहस्तके
 अत्रिणे जाणेकी आज्ञा नही देवे परंतु ग्रहस्ती अथ
 वा आवगका खुला बदाह अपणे कल्याण वास्ते व्या
 ख्यान उपदेशके लान वास्ते अथवा सुदेह दूरहाणे
 वास्ते नक्ति वित्तयके कारणे लावणा और पहो चाव
 णा साधुको करतेहें सो समकित्ती जीव धरमको धर्म
 समजताहै जिसकारजमें जगवानकी आज्ञा होए तिस
 धर्ममें विराधक नही होय तेह कारज साधक जावमें
 कोई असाधक कामहोय तिसमें अधिक याने जादे
 दोस नही कह्या और मिश्रधर्मकी जहा वातहै तिहा
 जी निषेध याने मने नही कसे एकांत पद्धत न कह
 उहा मौनरखीहै जैसे कोई दानसाला ससारी जी
 वके वास्ते देणेकी आज्ञामागे साधस ता साधमना न
 करे अर्थात् मौन करे सो ईस वास्ते धरम कारजको सा
 धनाके जाव चढते हुये होय और उहा उस जग कुब स
 द्दम याने थोडा दोपनी लगताहै ता वह जो माया
 धर्मकी साधना करी तिसके सहायतासु वह पाइल
 जो हिंस्याकी क्रिया थोडीसी लगीथी तेह धर्म जी
 व वैराग्य नेम व्रतादिकसे निर्जर होतीहै यान दूर
 होतीहै कि जैसे आवक समायक करण साधुवाके
 पास आया तो वह उसको चलनेकी क्रिया यान
 दोस लया परंतु फिर उचने गुणको जाकि कर
 बंदना और समायक वा सवर किया तो उसका प

हलां क्रिया जो चलनेका अर्थी मन्त्र द्वाय कर्मा
 याने दूर करे क्योकि तीर्थकरजोको तारीफ गीणो
 (का ध्यान कीया तिसके परसदिकर पपती दूर को
 या और आगे सुन करणो यानि धर्म लानेको ख
 रची पले विधी जैसे किंसा पुरपने द्रव्य कर्माय
 पत्र करेजतो उतार दिया आगेके खरचका क्राम चला
 यो इसीतर धर्मका कारणकी जाचना कर पूर्व करम
 खय करे और आगेका करमा हिटाया अंगर
 विना उपियोग समायक पुन्य हेतहे अंगर उपियोग
 समकित पुन्य सहित करमे निर्जरा हेतहे और जैसे
 श्री गौतम स्वामीने पूजा करी महावीर स्वामीसे कि
 हे महाराज जो श्रावण साधु साधवीको असूजता
 अर्थवा अप्रासक याने अन्न पाणीमें सचितको दोष
 लगाय कर देनेवाले श्रावकको क्यो गुण होवे या
 क्यो फल मिले तिसका फल किरपाकर बताइये
 तव श्री महावीर स्वामी कहे हे गौतम अलपया
 ने थोडासा पाप लग्या और बहोतसा धर्म हवाया
 ने बहोतसे पाप करमे उस अप्रासक याने असूज
 ते देनेवाले श्रावकको खय हुये और थोडा करमे
 लग्या और बहोतसे करमको निर्जरा करी याने बि
 होतसे पाप करमे दूरकीये ऐसा कथन जगवतीसू
 त्र सतग आठमा बर्ठा उदेसामे कथाहै यतः स
 मणोवासगस्सणं जंते तहारुव ससणवा महाणवा अ

फासुएणं अपोसाणिकेण असणं- पाणं खाइमं साइमं
 पफिलानेमाणं किंककण्डई गोयसा वहतरियासे नि
 ज्जरा ककई अप्पत्तसएसे पावत्त कसमं कज्जति)
 ॥ अर्थः- साधुको- अफासु- अपोपणीक- आहार
 बेहरावता- अलप- पाप- और- वहांत- निजरा होय
 परंत- यह- पाठ- श्रावक- हेतुहै- कि- जो- श्रावक- काल-
 का- समे- जाणकर- दान- साला- दिवावे- सो- यह- पुन- हेत-
 कारण- श्रावकोके- जोगहै- और- साधुको- दान- नि-
 रजरा- करमाकी- और- मोह- दायकहै- सो- यह- सूत्रां
 की- रचना- समकणे- जोगहै- इती- पूर्व- प्रश्नांतर-
 ती- २६- ॥ और- कितनेक- वादी- ऐसा- कहतेहै- कि- स-
 त्र- दसमी- कालक- अध्येन- ८- में- (चित्तजित्तननिजा
 एउ) इति- रचना- तो- जो- चित्रामकी- स्त्री- आदि- मूर्ती
 देखनेसे- कामदेवकी- भावना- आतीहै- तो- इसी- तरेसे-
 जिन- मूर्तीके- देखणेसे- वैराग- आताहै- ऐसा- जो- प्रश्न-
 करतेहै- तिनको- इहा- जुवाव- देनेकी- रीती- लिखते- अब-
 इहा- जो- वचन- तुम- कहतेहो- सो- लोक- रीती- कर- कह-
 तेहो- सोई- सूत्रांकी- रहेसतो- यहहै- कि- मोहनी- कर्मके-
 उदयसे- राग- पैदा- होताहै- ते- रागका- तो- कर्महै- और-
 वैराग- तो- मोहनी- कर्मके- खय- उपसभसे- होताहै- और- प्र-
 श्न- व्याकरणके- पांचमे- संवर- द्वारमे- कहाहै- कि- च्यैत्य- दे-
 व- कुल- प्रतिमा- मंदिर- देखणा- मने- कियाहै- क्यों- कि-
 आरंजकारी- वस्तु- देखकर- साधु- सराहना- न- करे-

इस वास्ते देखकर अनुमोदे नही ते पाट लिख्यते
 (वितीचंचरे कुयं दियेणं पासिय रुवाणि मणणास दंत
 कम्ममेय पंचहि वणेहि अणिग संठाण संठीया ए गम
 णु जहग्गाइ सचित्ता चित्तमी सगाइ कठेपोवे चित
 कम्ममे लेखं कम्मने सेलेयं दंतकम्ममेय पंचहि वणेहि अ
 णेग संठाणी संठीया ए गविम वेदिम पूरिय संघाइ म
 णि मल्लियं बहु विहाणीय अहिय नयण मणसुहकरांइ
 वणसंडे पवण गामांगर एगराणिये पुणिडिय पुरुवर
 णिवाविदीहिय गुंजालिय सर सरपत्तीय सागर वि
 लयंतिय खाईय नदी सर तलाग वाप्रिणी फलुपूल
 ऊप्रिय परिमंडिया जिणरामे अणेग संठाण गण सेहुण
 विरइ एमंभवत्तवेहां नवणी तोरण चैश्य देतकुलस
 नी पवा वसहं मुकम २ सयण संणसी परह संगड
 जीण जुगसंदण नर नारी गणिय सोम पमिळुव दि
 रसणिजे लंकिय विनुसीय पुवकड तवपपजाव सोमह
 ग संपजते तमाड नदंग जल मुलं मुठिय वेलेवंग
 कहकपव कलासग आइखंगलंख अंखर तुण इहं इहं
 व बीणीवत्तालायो रयंगरणाणीय धहु सुकरणा अथेसु
 थ एवमाइय सुयरुवे सुमणणन ए सूनतेसु समणेन
 सजीय वन्नं नरजियवं नगिकिय वण विधिणी चायसाव
 जीयव नलनियवं नतुसियवं नहासियवं नसइत्तमइत्त
 (तथा कुंजा) इह पाठुमाहिं इस कह्या ते इतने पदार
 थ देखणे नही पहिले देखेहोयतो प्राद करे नही इति

से मांहे च्येत्य दिवकुल एकठा कथावस्तो प्रतिमाका
 दरसण और बिडनाका अधिकार कहे ही कि सी मित्रमे
 कहा होय तो बतलाईये इति पूर्व प्रश्नोत्तर ॥ २५ ॥
 और केईक ऐसा कहते हैं कि मंदिरा प्रतिमाके करार
 से देव लोक पांमे और तीर्थ कर भोत्र बांधे यह बात
 तुमारे मतके थिपने वालोका कहिण है कि देखो प्र
 श्न व्याकरणके पहिले आश्रव द्वारमे देवकुल सज
 चैत्य पृथ्वी आदि खोदने और देहरा आदि करार
 से संख आश्रव द्वारमे कहा है उहां नवरका गिणाटीन
 ही कि मिथ्यात देवल आश्रवमे है और जैन सिद्ध
 नहीं ऐसा नहीं लिखा तो आश्रव ठोडणा जो गौडे
 वि पूजा कुल मर्यादमे है मोक्ष मार्गतो ज्ञान दर्शन चरि
 त्र तपमे है उत्राध्ययनको २८ मे अध्ययनमे कहा है
 ॥ दोहा ॥ सीलतरिथी संजम जात्रा सुजले स्या प्रल
 न्हाय दया जग्य पूजा कही जिनवर सूत्रा मांहे ॥ १ ॥
 इति पूर्व प्रश्नोत्तर ॥ इव ॥ केई एक बादी ऐसा क
 हते हैं कि प्रश्न व्याकरणमे (चेईयठे निजरठे) तो
 प्रतिमाकी बियाबच करणी कही है तिसका उत्तरी अक्ष
 देखीये ठाणींग और जगवती उववाई बित्तहार इन
 मित्रामे तो दस प्रकारकी बियाबच कही है तेहनम
 (आयिरिय १ उवकाय २ थोरवे ३ तवस्सी ४ गिठा
 ५ सेइवे ६ साहमी ७ कुला ८ गुण ९ संघ १०)
 इहां प्रतिमाकी बियाबच नहीं कही और प्रश्न व्या

करणकेतीसरे संवर हरिमे १४ बोल करी कहा है ते
 नीमः १ अचंतवाल २ दुबल ३ गिलाण ४ बडु ५
 खंभे ६ पितते ७ प्रायस्य ८ उवजाय ९ सेह १०
 साहम्मिण ११ तवसी १२ कुल १३ गण १४ सुध
 १५ चिइयठे १६ निजरठी १७] अब सूत्रमते ऐसा
 कहा है कि बाल दुबलदिक चउदह बोल कहा ति
 नके वास्ते आहार पानी साधु आणकर देवे तो यह
 दस प्रकार अथवा १४ प्रकारकी वेयावच्च क्या वा
 स्ते करे कि चिइयठे ते ग्यानके अर्थ १ तथा निजरा
 के अर्थ निजरठी २ और जो तुम प्रतिमाके अर्थ क
 होंगे तो प्रतिमाके क्या मतलबसे आहार पानी आ
 वेजरा अंतर विचार कर अर्थ करो बंधिवतह कर
 क्यों चालते हो आसु पूर्व १४ बोल प्रथम विजकीके
 हेतिम (चिइयठे) ऐसा पाठ जो कहा होता तो क
 दीजित संक्या करते तो संभवती थी लेकिन इहा
 तो (चिइयठे) चउथी विजकीका अर्थ बोलताह ते
 [चिइयठे] ते ग्यानके वास्ते और दूसरा पाठ (नि
 जरीठे) तो निजरठे हेत वेयावच्च करण ऐसा सुधा
 अर्थकी मतः पदके वास्ते क्यों बदलके फर करते
 हीमोई सूधा अर्थ धारण करो ज्यु जीवकी गरज
 सरो दोहा चिइयठे शब्द अनेक है निहा लगाने खारा ना
 ल निजरठी यत्ने कहे औरसे और १॥ इति पूर्व प्र
 भोतर ॥ ३१ ॥ और केई एक बादी हिस्साकारी

उपदेश और आज्ञा देनेमें कोई दोस नहीं समझते
 तिनको विवहार सूत्रकी चालिकामें अद्रबाहु स्वामी
 १४ पर्वधारी चउथे सुपनेमें चंद्रगुप्त राजासे उनहि
 स्याक उपदेश देने वालोको कुगुरु कहहे तह सूत्र
 (चउथे सुमिणे अद्वहासं कोउहलेंहि जयाणञ्जति)
 तस्सफलं तणं कुमथजणा परंपरागमेणं वहियाइसवं
 दं चारिया समये वसंजमिया आगासपडिया इव मि
 द्वंदसंजासिणो वंजुपुत्ताइव दवलिंगधरिणो जत्य तथे
 वंसुत अत्यमवगाहिता तवतेणिया वयतेणिया सुतते
 णिया अत्यतेणिया जयाइवणञ्चिस्सति कुगुरु कुदेव
 मनास्सति ४) अर्थ चउथे सुपने अतिरुद्र हांसिको
 तुहल करता जूत नावता देख्या तिसका फल ज
 द्रवाहुस्वामी चंद्रगुप्तराजासे कहा तहकुमति जणां प
 रंपरागम सूत्रमाहे जे साधुका आचार कहाहे तिण
 आचारसे बाहिर वेतालां अध्येन माहे पिण कहाहे
 सुद्ध आचार चाले ते जगवंतना केमायत जाणवो बी
 जा नही ते जणी पोतानां वादानां चालणहार आप
 णं उदं संजमी नाम धरावे पिण विरुद्ध अचारिनि
 जिनकी आज्ञा नही फेरकहवें जिम आकासथी
 जाणो गोलो पडे तिम द्रयां रहित सूत्र विरुद्ध बाणी
 जाखसी कहसी पहिली हिस्वा करसो तो धरम होसी
 वाजडीने पुत्र होवेतो हिस्वामें धर्म होवे ते कहसी
 वयं लिगी जेखना धरणहार यती जिहां तिहां सुम

अर्थ ज्ञानीने तपना चोरहीसी मांहीं खासी ज्ञाने वा-
 हिर तप कहसी बचनना चोर होसी ब्रह्मचर कहाने
 फिरजासी सूत्रना चोर होसी विरुद्धा पाठ कहसी अ-
 र्थना चोर होसी साविद्य परूपणाना अर्थ करसी अनू-
 तना परे नाचसी निर्गुणा देव आगों कुगुर साधुना
 र्गुण तिनमें नहीं देवते र्गुण अहिंतना ति
 सकु मानस्ये नहीं कुगुर कुदेवते मानस्ये इती पूर्व
 प्रश्नोत्तर ॥ ३२ ॥ केई एक बादी इस प्राचमें आरेमें
 ऐसा कहतेहै कि चोथे आरेमें जितने जिन मंदिरये
 वितने इस पांचमें आरेमें नहीं और तीये आरेमें स-
 व श्रावक जिन मंदिरमें प्रतिमा पूजतेये और सीधुजी
 दरसन किरतेये उत्तर तो अब देखीयो सूत्र आचारों
 गीदमें साधुवाकी चृतीका वर्णनहै परंतु प्रतिमाका
 दर्सन करण नहीं कहां प्रश्न व्याकरणमें आरंजादि
 वस्तुको देखकर संराहना करणी मनहै सो पहिले प्र-
 श्नामें लिख आयहै और श्रावक आश्री जिन मंदि-
 रमें प्रतिमाकी पूजा धर्म निर्जरा खाते होतीतो श्रीन
 द्रबाहुस्वामी क्यो अविधि पंथ अर्थात् खोटापंथ
 चलैगा इस पांचमें आरेमें ऐसा कहा तो जो पहि-
 ले चोथे आरेमें यह सनातन धर्म प्रतिमा पूजनेका
 हीततो नद्रबाहुस्वामी ऐसा न कहते और कितनेक
 कहतेहै कि तुम सूत्र ३२ मानतेहो और क्यो नहीं
 मानते सोई सूत्र ३२ तो मानतेहीहै परंतु औरजी

शास्त्रयिथं मानतेहैः जो वेनसे ३२ रासूत्रांसे मिलता
 कथन वा उपदेसरूप कथनहै सो सब मानियेहै परं
 तं नदी सूत्रमे जो सूत्रो ७२ नामहें सो ज्ञानसेसे विवे
 दं बहोत सूत्र हो गये जद्व्राहु स्वामीको कथनहै कि
 कालिक परमुख सूत्र विवेदं जायेंगे तिस वास्ते तत्रे
 नवै अथादिशास्त्रोकी रीतपर चलेंगे त्रिवहार सूत्रकी
 चलि को जिसमें जद्व्राहु स्वामीके ज्ञानहै तेहें सूत्र
 यहै (सूत्रम् पंचमे सुविणे दुवाल फणो संजुतो कणह
 श्रीहिदिठो तस्सफलं तेषां दुवालसां वासि परिमाणो ह
 कालो जविस्सई तत्थ कालिण सुय प्रसुहासूत्रो बोधि
 जिस्संति वि श्येठपुपावेइ दिव्र आहारिणो सुणिजविस्स
 ई लोनेणमाला रीवण देउल उवहाण उद्धमण जिण
 विवा पइठावण विहीउं माइएहि बहने तव पुजावा प
 थविस्संति अविहि पत्थे पाडिससुति तत्थ जेकेई साह
 साहुणी सावच साविप्राउ विहि मग्ग सुइस्संति तेसि
 ब्रह्मण हीउणाणं निदणाणं खिसणाणं गरिहणाणं ल
 जिस्संति ।) अर्थः-पंचमं सुपने १२ फणो सहितकालो
 संपर्पदीठो जद्व्राहु स्वामी तिसका फल कहें वे वारे
 वीरस परिमाणेहें चंद्रगुप्त दुकाल हासी तिहा काल
 क सूत्र परमुखी सूत्र विवेदं जासी तेहने तिहां अस
 सधुने मिलणी दुलन तेजणी जूबां सूत्र जितारणा
 देरलभ होसी दरभं लिगी अर्थात् जविमुपा विना य
 पी प्रतिमानी धीपिता करानस्यै द्रव्य धतता लिपहा

र घंहेगे सचणहार यहवा जतीहेस्ये लौची लंपटी
 थका माला पहिरवारूप तप्रथम कहस्ये देहरानी त
 प पंचमी परमुखना उजूवणा करावस्ये प्रजावना के
 रावस्ये भजन विवनी पगतिष्ठा विव आदिदेइते घणा
 उपना प्रजाव पुत्र धनादि लानरूप कहिस्ये दयादि
 एक सुद्ध धर्म विध पंथ वांडोने प्राणातिपाति हिंस्या
 पामाने हिंस्या धर्मरूप उलटे पथ पडमी तिहा जेके
 ई साध साधवी पांचमहा विरत धारी श्रावक विरत
 धारी तथा श्राविका विध मारग प्रतिमा पूजादि ति
 पधरूप दयाधर्म कहसी तेहनी घणी हीलणा करस्ये
 जाव्यादिकता दोष काठवार्थी दुगंवा करसी मने क
 री निदसी ॥ आपस मांहे तिदा करसी लोक समहे
 बार बार निदणा पामसी ॥ इति पूर्व प्रश्नोत्तरा ३३ ॥
 केई एक साध द्रव्य पूजा आप कहकर प्रतिमाकी
 करातेहे तेह सावय कारजहे महा अजोगहे महा न
 सीतना पांचमा नवणीयासार अध्येयत माहे कल्याहे
 ति कहेवे जगवंते गौतमने इहा शकी अनते काले पू
 वे धरमसिरी नामे चोवीसमा तीर्थकर मोख महोता
 पवे हुंडानामे अवसर्पणी काल अनते काले आई
 तिहां सात अठेरा हेवा तिवारे असंजती पूजाने वि
 पे घणा लोक तत्पर हुवा मिथ्यात मोहे करी
 घणा लोक मूर्ख्या अने घणा लिंगना लिंगडी पा
 पमती माठा लक्षणनाधणी प्रतिमा देवलती थापना

कराई परूपीने जे कोई साध साधवी द्रव्य पूजता क
 रणहार तथा परूपणहार तेहने स्युंकहिये जिन कह
 वे हे गौतम तेहने अजितेंद्री कहिये १ असंजती २
 देव जोजग ३ देवना पूजारा ४ उनमारग पड्या ५
 आचारथी पक्या ६ कुसीलीया ७ प्रोताना वादाना
 चालणहार ८ इम आठ नाम कही बोलाप्रिये हिवे
 तिणसमें नाम मात्र आचार्य उपाध्यायबसे तिहां
 कमल प्रजा आचार्य दया धर्म परूपता आया तिहां
 रंद्रव्य लिंगीये कह्यो प्रतिमा परूपो अने चोमासा
 इहां करी तिवारें आचार्य कहे अहो जितना जिन
 ना देहरा ते सावद्य आरिचना ठाम तिहुं बचन मा
 त्र पिण परूपु नहीं इम कह्यो इतरे धणा पापमसी
 इकमती तालदेई गौप्रवे तेहा आचार्यनो नाम साव
 द्य आचार्यनो नामदेई प्रसिद्ध कीधो तोहि पिण दे
 प नाएयो अने सावद्य परूपणा मकीधी इम करता
 तीर्थकर दलमेल्या एकवतारी पणो खादयो तिमहिय
 णारा साधाने सिखावण पिण जीणवी पाखंकी मिली
 या पिण प्रतिमादि सावद्य धरमनी परूपणा टाली दे
 या धरमनी परूपणा करसी इम ते फल खाटसी याने
 पापमसी अने बीजे फेरे सावद्य मिश्रवांणी बोल्या अ
 पजससुं करतो थका इतरे सुज दल उमाई अनंत
 ससारी हवो तिम अवाका पिण पाखंकी मिलियां स
 कतो पिण सावद्य वाणी बोलस्ये ते अनंत ससारी

थासी इम जाणी द्रढ रहणो बली प्रश्न व्याकरण
 पहिले आश्रव द्वारमे कहावे प्रतिमा देहरा कारण
 पृथ्वीकाय हणें तिणनें मंद बुद्धिया कहा आर बी
 जा आश्रव मांहिं हिंस्यामें धरम परूपे तिणनें जूठ
 बोलणहार कहा अने पांचमा परिग्रह खाते देवता
 नें देहरा प्रतिमा कही बली पांचमें संवर द्वारमें क
 ह्योहै प्रतिमा देहरा साधुनें नजरे आयो तो रीऊणो
 नही बली संत्रुजादि पर्वत शास्त्रमें कहा पिण तीर्थ
 किहांई नही कह्यो तीर्थ हरकेसीजी ब्राह्मणानें सील
 रूप बताया सुखदेव सन्यासीनें सोमल ब्राह्मणनें सं
 जमरूपणी जात्रा कही आर न कही आर फेर कहे
 ठें चेईय शब्दना अर्थ ठे ते अनेकाथी बचन ठे ति
 हां विरुद्ध अर्थ करी कहे ठे पिण हलुकरमी जीव हो
 वे तो ते तत्व साचा गुणारा धणी देवगुरु धर्म सेवे
 पिण पाप-करमीनो किगायो डिगे नही ते जीव सुखी
 थासी ॥ इती पूर्व प्रश्नोत्तर ॥ ३४ ॥ कितनेक वादी
 स्याद्वाद बाणीको समजते नही ते स्याद्वाद बाणी के
 सीहै उत्तर जैन शास्त्र तो स्याद्वाद रूप लक्षणसेही
 जानाजाताहै जिसमें स्याद्वादरूप कथन नही सोई
 मिथ्या सूत्रहै जिसका परिमाण अनुयोगद्वार नंदी उ
 त्तराध्ययन जगवती सगडांगादि सूत्रोंमें जगे जगे
 स्याद्वादरूप वर्णनहै जैसे जगवती सूत्रे (लोयेसास
 यावि असासयावि दव्वठया सासया पज्जवठया अ

सासया) तथा अणुयोगद्वारे (सेकितं एए सत्तमूल
 नया पन्नताणोगमे संगहे ब्रह्महारे उदयु सुए सटे सम
 निरूढे एवंचूए) अर्थ-नैगम नय १ नदीनी धारा
 प्रवाह सरिखौ गमते नैगम एक असमात्र जे वस्तु
 नो गुण प्रगट होइ तेहते संपूर्ण पणे वस्तुने कहे ते
 नैगम नय कहिजे ते नैगमनयका ३ जेद चूत नैग
 म १ जविष्यत नैगम २ वर्तमान नैगम ३ जो अ
 तितकालके विषे जो पदार्थ हूवा अरु वांही वर्तमा
 न किसी न्याइं कहणो सो चूत नैगम कहिये जैसे सि
 द्धान्ताणी नमोथुणं पढता आदिगिराणं आदि करता
 एसो कहणो तथा जैसे कोई दिवालीके दिन कहे आ
 ज श्रीबीर वृद्धमान स्वामी मोक्ष गया एसो कहणा
 १ जो जविष्यत नैगम आगमी कालके जो पदार्थ
 होणहारहे ते वर्तमान कहणो जैसे उत्राध्ययन १९
 मे गृहवासि बसता (जुवरायादमीसरे) एसो कह्यो
 ते जविष्यत नैगम नय कहिये २ वर्तमान नैगम क
 हिजे जे वस्तुकरणी मांडी किंचित् नीपजी तिसकुं सं
 पूर्ण पणे कहणी जैसे लीपतो देखी पूढयो स्युं करेवे
 तद् कह्यो रसोई करुंबूं एसो कहणो ३ इति नैगम
 नय १ संग्रह नयका दोय जेदहे सामान्य संग्रह १ वि
 शेष संग्रह २ सामान्य संग्रह किसकुं कहिए अजीव द्रव्य
 मांहोमांहिं अविरोधी अचेतन गुण अपेक्षाइं सामान्य
 गुण सर्व द्रव्यमेहे अजीव द्रव्यमे एसो कहणो ते संग्रह

सामान्य पणें कहिये १ विशेष संग्रह जो परिजातिका
 व्यक्तुं ढोड करि स्वजाति स्वद्रव्यको संग्रह करिये
 १० विशेष संग्रह कहिये जैसे सर्व जीव परस्पर वि
 षय रहितो सत्ताग्रहे ते संग्रहे ते संग्रह जकारणे ए
 ष्टनाम लोत्रां सर्व गुण पर्याय परिवार सहित आवि
 न संग्रह नय कहिये जे वस्तुनो सामान्यपणें नाम
 उतां जीव अजीवनों जेद न पाडयो जिम ए वन व
 णस्पतीनो ठे ऐसा कइणो विशेष संग्रह जे विशेष
 पणें दीठी तेहनो नाम लेइ कहियो जिम ए आंबानो
 वनठे ते माहिं अनेरा पिण वृद्धठे ते संग्रहनय २
 हिवे व्यवहारनय कहेठे सामान्य व्यवहार १ विशेष
 व्यवहार २ सामान्य व्यवहार बाह्य गुण देखीने व
 स्तुनो परकास करियो (ते जीवमजीवद्व) जीवअ
 जीवद्रव्यहै द्रव्यपणो सामान्य गुणहै सो सर्व द्रव्यमें
 है सो सामान्य व्यवहार १ अने विशेष व्यवहार ते
 जीव द्रव्यहै सोचेतन गुणहैं जिसमें सिद्ध संसारी सं
 र्व द्रव्य एकहै ते विशेष व्यवहार २ इति व्यवहार
 नय कइया ३ हिवे ऋजुसूत्रनय कहेठे ऋजुकहिये स
 रल सूत्र कहिये शब्दनों अर्थ ते ऋजुसूत्रनय कहिए
 हिवे ऋजुसूत्रनयरो विचार कहेठे आतीत काल अ
 नागत कालरी अपेक्षा न करे वर्तमान काले जे व
 स्तु जेहवे गुण परिणामे वरते ते वस्तु तेहवे गुणप
 रिणामे माने ए नय परिणाम आही हिवे जे जीवग्रह

स्ती ठे पिण अंतरंग परिणाम साधुसमानठे तो ते
 जीव साधू कहिजे अनें जे जीव साधूने जेपेंठे पिण
 मन परिणाम असुन ठे तो ते जीव अबिरत रूपीज
 ठे तेऋजूसूत्रना २ जेदठे एक सूक्ष्मऋजूसूत्र १ वी
 जो थूल ऋजूसूत्र २ तिहां सुक्ष्म ऋजूसूत्र जे केहवो
 जे सदा सर्वदावस्तुमें एक वर्तमान समय वर्तेंठे एत
 ले जीव गए कालें अज्ञानी हुंतो अनें आगले कालें
 कोईक अज्ञानी पिण थासी अनें वरतमान काले ग्या
 नीठे तेहने कहणो ए सूक्ष्म ऋजूसूत्रठे १ अनें बाद
 र मोटका बाह्य परिणाम गृहे जिम वर्तमानकालें ध
 र्म आराधे तेहने धरमी कहिणो पठे धर्म कारज क
 रया पठे अधर्म करस्यै ते आगमियेकालें ते जणी न
 माने एतले ऋजूसूत्र कह्यो ४ हिवे शब्दनय कहियेठे
 जे वस्तुगुणवंत अथवा निर्गुण तेहनो नाम कहि बो
 लाव्यो ते जाण्यो वर्णणार्थी शब्द कह्यो ते शब्द व्याक
 रणसें प्रकृति प्रत्यय द्वारे करी शब्द सिद्ध होय सो
 शब्द नय कहिये तिहा शब्दो जे अर्थ ते मांहि होइते
 वस्तुनें माने ते शब्दनय कहिये जैसे अरिहंत कहि
 बोलाव्यो ते शब्दो अर्थ कह्यो अरि कहिए करम
 रूप शत्रु हंतः हणया ते अरिहंत कहिए अनें ना
 मादि अरिहंत होइ ते मांहि शब्दार्थ न होए तेहनें
 अरिहंत न माने ते शब्दनय इम तीर्थ ४ करे सो ती
 र्थकर इम शब्द सिद्ध होय ते शब्द ए ४ निष्केपा ती

तीर्थकरमे संज्ञवेवे तीर्थकरनो शब्दतो तीर्थकरे ते पिण
 नाम थापना द्रव्य निक्षेपामें अर्थ सिद्धथाइ जिम
 तीर्थकरनो नामलेई व्याख्यान करवो ते नाम निक्षे
 पो १ अनें तेहिज तीर्थकरनो थापनारूप वखाण
 करिवो संठाण परमखनो जिन लोकनो स्वरूप व
 खाण करता लोक नामी अलेखीनें लोकनो स्वरूप
 दिखायवो तिम अरिहंतना आकार अपने सररीका
 रूप जगवानके ध्यानकी तरहे थापना करीनें तीर्थक
 रनो वखाण करवो २ तेहिज तीर्थकरना शरीर अव
 गाहणा आउखा अतिसय करीने वखाण करवो द्र
 व्य निक्षेपो ३ जाव निक्षेपाते ग्यान दर्मणादिकरी
 तीर्थकरनो वखाण करवो ४ परं एह नामादि सर्व
 तीर्थकरनामें संज्ञवेवे इमहीज अरिहंत करमरूप स
 त्रु हण्याते अरिहत तेहनो वखाण नामादि ४ निक्षे
 पा दिकथी करवो पिण अरिहत शब्दार्थ होय जिणमें
 संज्ञवेवे शब्दार्थ सुद्धथाइ ते शब्द नय पाचमो कहिये
 ५ हिवे समञ्जिरूढ नय कहेवे समञ्जिरूढ नयनें मतें
 ज शब्द एकमें घणी वस्तु होइ ते न माने जे कहिण वा
 लानो जे शब्दनो अर्थ अने अज्ञिप्राय होइ ते वस्तु
 शेष अवस्तु जिम केणेकह्यो अहो साधू अश्व दोडेवे
 एहने ग्रहो इडा शब्दनो अर्थतो अश्व घोडा अने
 मन वेहुं अर्थ होय पिण बोलणहारनो अज्ञिप्राय ए
 हवो मनकुं अश्व कह्यो ते जणी मन अश्व ते वस्तु

घोडो अश्वते अवस्तु १ तथा धर्म शब्द कह्यो ते
 माहि धर्मास्ति १ श्रुतधर्म २ चारित्र धर्म विवे
 क्तो अने समञ्जिरूढ नयने मते बोलणहारना शब्द अ
 ने अनिप्राय जे धर्मनो होइ तेहने धर्म कहे बीजा
 नें न मानें जिम सूत्रे कह्यो (जाजा वच्च ई रयणी)
 पिण कहणहारनो अनिप्राय दिनना पिण ते माटे दि
 नराति दोनुंही गृहवा इत्यादि कहणहारना मनजे व
 स्तुनें सन्मुखठे ते वस्तुनें वस्तु कहे अने शब्दनो अ
 र्थ पिण निन्न थाय शब्दनो आधार पणे ठहरे मननो
 अनिप्राय आधेयपणें ठहरे आधार बिना आधेय व
 स्तुनो नामलेता वचन विपरिणाम न होय इहा शब्द
 नय वालो कहेठे थाराकहण म्द्वारा कहण मांहीं अंत
 रठे रूपठे समञ्जिरूढ नय वालो कहेठे शब्दनो अर्थ
 तो दूजी वस्तुमें मिलै तुरंग उतावलो चाले ते घोडो
 अने मन पिण ते माटे आधार वस्तुनो अनिप्राय
 सन्मुखपणें होई ते समञ्जिरूढ नय ६ हिवे एवं जूत
 नयनी युक्ति कहेठे अणुयोगद्वारे ॥ वजणअच्च तदु
 ज्यं एवंजून ॥ विसेसइ शब्द निर्युक्ति सहित अर्थ
 शब्द अनुसारे परिणामजे वर्तमान काले एवंजूनत
 यमानें वस्तुना मूल निजस्वभाव आत्मभावे तद्रूप व
 रते ते एवं जूतनय मानें जिम दृष्टांत धर्मास्तिकाय
 प्रमुखना द्रव्यगुण परिधाय ते ग्यानना गोचरमे आ
 वे अने ग्यानठे ते जीवना गुणठे तेमाटे सर्व वस्तुनो

जाण पणो तेहने जाण पणानि वस्तु माने १ ते एव
 नूतनय कहीजे ७ हिचे नयसात पूर्वोक्त प्रकारे कही
 ठे ते दोय जेदे कहीये द्रव्यार्थिक १ पर्यायार्थिक २
 ते नैगमनय १ संगृह २ व्यवहार ३ एतीन द्रव्यार्थि
 कनय अने ४ ऋजूमूत्र १ शब्द २ समजिरुठ ३ एव
 नूत ४ एह ४ पर्यायार्थिक नय द्रव्यार्थिकनयते व्य
 बहारनय ॥ परियायार्थिक नय ते निश्चे नय ते ३ व्य
 वहारनय ४ निश्चेनय ते माहि व्यवहार नय नाम १
 थापना २ द्रव्य ३ निक्षेपामे जावना कारण नूत मा
 ने निश्चे नय ४ जावनेहीज वस्तु माने कारणने व
 स्तुमाने इहा २ मतमें सात नयठे निश्चे १ व्यवहार
 दोइनी खपराखवी एकमूं कार्य सिद्ध नथाय इहा वि
 लोवणाका दृष्टांत जिम विलोवणाना नेतमो डोर दो
 इठे सम दोनो हाथसे दोइ डोर गृहे ते मांहि १ डोर
 खेंचे १ ढीलीमुके तो कार्य सिद्ध थाय अने २ दोनों
 ढीली मुके तथा दोनो खेंचे तथा दोनो हाथथी ठामे
 तो कार्य सिद्ध थाय नहीं तथा डोरने खेंचे अ
 ने दुर्जा हाथथी ठाडे तो कार्य सिद्ध थाइ नहीं इण
 दृष्टाते करी दोय नय मांहि केणे ठामे निश्चे नयनी
 मुख्यता कीजे अने व्यवहारनी गोणता कीजे केणे
 ठामे व्यवहार नयनी मुख्यता कीजे अने निश्चे नयनी
 गोणताकीजे तो सम्यक्त प्रकास थाइ अने एक न
 य माने बीजी न माने तथा २ खेंचे एकेण साथे त

था दोनो ढीलीगोडे तो सम्यक्त रूप मौक्त कारण मि
 द्ध न थाइ ते माटे शुद्ध सम्यक्तवंतने सर्व नय-परि
 माणकीजे और श्रीपूज्य मनोहरजीके गडमे श्रीरतन
 चंदजी निज कृत्य ग्रंथ तत्वानुबोधमे कहते है

॥ दोहा ॥ बेहुं सम्यकितदलहे, समजे नव तत्वज्ञा
 ना॥नय निखेप परमाणसुं, स्यादवाद परिमाण॥१॥और
 ॥दोहा॥जिन बाणी जिन स्वादनी, मतकरजो कोई हा
 स्या॥रयाद्वादनय सुद्ध करो, यह मेरी अरदास ॥ २॥
 इती पूर्व प्रश्नोत्तर ॥ ३५॥ दया और हिंस्याके कित
 ने कितने जेद उत्तर दयाकेतीन जेद और हिंस्या
 के ३ जेद प्रथम हेतु दया सो जैन ग्रंथानुसार सब
 धर्म क्रिया यत्नसे करणी १ दूसरी स्वरूप दया जो
 प्रत्यक्ष जीवको देखकर न मारणा २ तीसरी अनु
 बंधदया सो देखनमे चाहे हिंस्या हो परंतु फल द
 याका जिस करणीसे हो येही अनुबंध दयाहे ३ हेतु
 हिंस्याजो अयत्नसे काम करणा बिन उपियोग १
 स्वरूप हिंस्या सुचासुन हरेक कारण करता हिंस्या
 थाय वा प्रत्यक्ष जीवको मारदेणा ते स्वरूप हिंस्या
 २ अनुबंध हिंस्या निन्हव परमुखकी क्रियादेखनेमें
 दयारूपहै परंतु परजवमे फल संसार रुलने रूपहै
 तिसको अनुबंध हिंस्याकहतेहै ॥ इति पूर्व प्रश्नोत्तर
 ॥ ३६ ॥ उत्सर्ग अपवाद मार्ग आज्ञाका मूलहै इन
 का जेद बहोत साधुसाधवी नही समजते उत्तर जैन

शास्त्रोंमें उत्सर्गापवाद दोनोही साधारण विधिवाद कथन करेहैं सो साधारण विधिवाद उसको कहतेहैं जिस संजमकी रक्षा निमित्त उत्सर्ग मारगको अंगीकार कियाथा उसी संजमकी रक्षा निमित्त अपवाद मारग-अंगीकार किया इसको साधारण विधिवाद कहतेहैं जैसे तप करनाजी संजमके लीयेहैं और आहार करनाजी संजमके लीयेहैं और जैसे वस्त्रादिकका त्यागनाजी संजमके लीयेहैं और वस्त्रादिकका रखनाजी संजमके लीयेहैं और केइ दमत इंद्रीमुनी एक क्षेत्र में सो वरस बैठा रहेतो दोस नहीं यहनी संजमके लीयेहैं और देशानुदेश विहार करनाजी संजमके लीयेहैं ॥ क्रोधका त्यागनाजी संजमके लीयेहैं और कि सीचिलेको सिद्धा देनेको क्रोध करना पडे यहनी संजमके लीयेहैं और प्रथम जो महाव्रतमें किसी जीव को नहणगा मनबचनकाया करके यह व्रतनी संजमके लीयेहैं और जो देशानुदेश विहार करना पडि लेहणा करणी नदी उत्तरनी बहती साधीवीको पकडनी वर्षामे दिशामात्रा जाना बेल वृद्धके सहारेसे गिरा हुया साधु खाडमेसे बाहिर निकलना इत्यादि बातों में प्रत्यक्ष वक्रायकी हिस्सा होतीहै यह अपवाद है सोनी संजमके लीयेहैं जूठका न बोलनाजी संजमके लीयेहैं और मृग पृच्छादि कारने जूठ बोलनाजी संजमके लीयेहैं और चोरीका त्यागनी संजमके ली

येहें और संजम पालता अनंत जीवमारे जातेहैं वो
 जीव अदित्तहें सोर्जा संजमके लीयेहैं और परिग्रह
 तन्द मात्र लोम मात्रजी नही रखूंगा यह पांचमें म
 हा व्रतमे परतिज्ञा करीथी सोर्जी संजमके लीयेहैं ओ
 र बस्त्र पात्र पोथी आदिजो परगट रखताहैं यहर्जी
 संजमके लीयेहैं ऐसे बहुत वार्ताहैं सो निर्मल बुद्धी
 शास्त्रानु सार होनेसे समजी जातीहैं और इसी तर
 हके कथनको जैन मतमे स्याद्वाद उत्सर्गापवाद रू
 प विधिवाद कथन कराहैं ॥ इति पूर्व प्रश्नोत्तरा ॥ ३७ ॥
 और कल्प सूत्रके मूल पाठमें खुलासा पाठ राजा सि
 द्वार्थके न्हाणका और त्रिसलाराणीके महिलादिकका
 और जनम महोत्सवका बहुत विशेष वर्णनहै परंत
 जिन प्रतिमाके पूजाका बरणन नही कहा ते किस
 तरें ॥ इति प्रश्नोत्तर ॥ ३८ ॥ और इस पाचवें ओ
 रके साधु जैसी करणी परूपेहैं तैसी करणी साधन
 नही होती कपायादि प्रकृति बलवानहै सर्वज्ञ बिना
 मनका भ्रम दूर होता नही तिस वास्तें आज्ञाके आ
 राधिक जीव थोडेहैं वहोतसे जैनमती अपनी रुचि
 वे परिमाण धर्म तथा शास्त्रार्थ वा नवे नवे ग्रथ बना
 तेहैं और श्रीजिन आज्ञामें चलना वहोत कठिनहै ओ
 र जो माया करिके जिन आज्ञाके परिमाण चलना
 कहतेहैं वे लोग बहोल संसारी होंगे और राग द्वेष
 के बस होकर दुगाबानीसे जो साध साधवी श्रावक

श्राविका जिन बचन अन्यथाकर स्वकल्पनाके म
 तको चलावेंगे वे जमालीवत् ससार भ्रमण करेंगे
 और जो लोग अपने मत करिके मुक्तिके होणेका ला
 च बतातेहैं परंत इतना नहीं जानते जबतक परस्व
 रूप तथा ममत कपायादिहैं तबतक मुक्ति नहीं चे
 तन निज स्वभावमें रमण करेंगा सोही मुक्तिहै कुवि
 षण ममत क्रोधादिक त्यागना पाचइंद्री जीतना मन
 बस करना आत्मवत् सर्व जीवकों जानना हिंस्याका
 त्यागना सम प्रणामिहोना इत्यादि अनेक कार्यहैं ति
 नके करणसें मुक्ति प्राप्ति होतीहै परंत हिंस्यादि अ
 ठारा पापसें मुक्ति नहीं सम्यक्त सुध श्रद्धाव्रतादिय
 है धर्म लक्षण करम निर्जरा और मुक्ति होनेकेहैं औ
 र जबयह चेतन राग द्वेषादि दोषोंको दूरकर ज्ञान द
 र्शण चारित्र तप एह ४ कार्ण मोक्ष मारगके धारण
 करे ज्ञानसे ५ ज्ञानादी धर्म जाणे दर्शणसें सुदेव सु
 गुर सुधर्म जले प्रकारसें श्रद्धा सुद्धकरे चारित्रसें आ
 व्रते कर्म रोके व्रत तथा महा व्रतां करी तप १२ प्र
 कारका साधनकरी पूर्व करम निज्जरे ॥ तब केवल
 ज्ञान केवल दर्शन सहित मुक्ति पदमें प्राप्तिहोय अ
 र्थात् मोक्ष पदहोय ॥ इतिज्ञेयम् ॥ इति शिक्षा प्र
 श्नोत्तर ॥ ३९ ॥ अब कितनेक साधू ग्यारे अगादि
 सूत्रांको चतुर्थ आरेके कहतेहैं ते प्रमाण निश्चे नहीं
 क्योंकि नंदी सूत्रकी गाथा (जेसिइमो अनुजगो प

यरइय जोवि अद्वंजरहंमि वहुनय रनिगायजसे ते बं
 देस्कं दिलायरिय ३६) अर्थः—उसस्कंदिलाचार्यको
 वदुंहूं जे श्रीजिनराजके अनुयोग सूत्रार्थ आधे चर्तके
 त्रमें प्रवर्त हो रहाहै और आगे प्रवर्तगा ऐसाकह्याहै
 सो स्कंधला आचार्य कृत मालुम होतेहैं परंत पहिले
 ११ अंगोके मूजवतो अबके ११ अंग वहोत कमहै
 जिसका परिमाण समवायांग तथा नंदीसूत्रके मूल
 पाठमें द्वादशांगका परिमाण कीयाहै प्रथम अंग
 १८००० पद प्रमाण कह्या और दूसरे अंगके
 ३६००० पद कहे इसीतरे आगे दुगुणे पदहै और
 एकपद संख्याते अक्षरोकाहै जिसमें प्रथम ५४ अं
 क लिखेजावें बादउस्के १४० विंदीयादी जावे उस
 को उत्कृष्ट संख्यात गणित प्रहेलिका नामसे अनुयो
 गद्वार सूत्रमें लिखाहै अब आचारांग सूत्रके १८०००
 पदथे जिस्में २५०० श्लोक प्रमाणहै ॥ और सुयग
 डांगके २१०० श्लोक परमाणहे ठाशांगके ३७७० श्लो
 क प्रमाणहै समवयागका ग्रथ प्रमाण १६६७ जग
 वतीका ग्रंथ १५७७२ प्रमाण ग्याता ग्रंथ प्रमाण
 ५५०० उपाशकदशा ग्रंथ प्रमाण ८१२ अंतगढ
 ग्रंथ प्रमाण ९०० अनुत्रोव वाई ग्रंथ १९२ प्रश्न
 व्याकरण ग्रंथ १२५० विपाक सूत्र ग्रंथ १२१६
 सर्व जोम श्लोक ३५६७९ संख्याहै इस वास्ते मा
 लुमहोताहैं कि पहले प्रमाणे सूत्र नहीहै अब उन

का थोडासा अंस मात्र उनके अनुसरे आचार्य कृत हे परंत और हरेक शास्त्रोंसे पूराण सूत्रहें और अब ल दरजेमेंहे ॥ इती पूर्व प्रश्नोत्तर ॥ ४० ॥ कित्तिय वंदिय महिया शब्द विषे सचित फूल द्रव्य पूजाकी अनुमोदना साधुकरे ऐसा कहे तेहनो उत्तर कित्तिये कहता किर्ततवे वदिये कहता वांदवायोगते महियाक हतां इंद्रादि देवोके पूजनीकते जनम समयादिमें तथा दीक्षा केवल ज्ञानमेंतो सचितके संघट्टेके त्यागीहें त्रि विधि २ तीनकर्ण तीनयोगसें तथा फूल वारिस समो सर्णमें होयहे सोई अचित फूलांकी वारिस पहिले प्रश्नोमें लिख आवेहें तो इहा ध्यानमें उनकी नाव पूजा तथा उत्कृष्टा पुन प्रकृतिकी अनुमोदना यानें स राहना करनी कहीहै इतिज्ञेयम् ॥ इती पूर्व प्रश्नोत्तर ॥ ४१ ॥ कितनेक साधसाधवी ऐसा कहतेहें कि साध साधवी रात्रीको बाहिर न निकले परंतु वृहत्कल्प सूत्र आज्ञा सिजायवा थंडिल अर्थात् दिशा फिरने को देताहै ते पाठ (नोकप्पई निग्गंधरस ए गाणी यस्स रात्तवा वियालेवा वहिया विहार जूमिवा निख मित्तए पविसित्तएवा ४९) अर्थ एकला साधुनें न कल्पे सिजायवा वाऊजूमि जाना ॥ पुनः पाठ (कप्प ईसे अप्पवियस्स अप्पततियस्सवा रात्तवा वियाले वा वहिया विहार जूमिवा निख मित्तएवा पविसित्तए वा ५०) अर्थः—दो तीन साधु रात्रीको उपाश्रयथी वा

हिर सिजायवा दिशाफिरनेको जाना आना कल्पे इत्यर्थ ॥ आगे सूत्र ५१ वा ५२ केमें साधुका साधुकी तरह पाठहै सोई समझने जोगहें इतीज्ञेयम् ॥ इति पूर्व प्रश्नोत्तर ॥ ४२ ॥ ३२ सूत्रामें कालीक सूत्र कि तने और कालीक किमतरेहै उत्र कालीक सूत्र १९ पहिले और पिठले पहिर वाचे पढे जिसमें ११ अंग सूत्र ३ उपांग जंबद्वीवपन्नति १२ चंद्रपन्नती १३ सूर्य पन्नती १४ मूलसूत्र उत्राध्ययन १५ च्यार वेद सूत्र सर्व १९ उतकालीक सूत्र १२ जे मध्यान १ म हूर्त आधीरात १ महूर्त प्रजात १ महूर्त अर्द्धघडी दिन चढांताई संजाका १ मुहूर्त अर्द्धघडी दिनसे ए ४ वक्त टालीने उतकालिक सूत्र पने उपांग ९ मूलसूत्र ३ अकालीक सूत्र १ आवस्तग संज्यासमे करे वा प्रजात समे करे तीन वर्षके साधुको आचारंग पढणा ४ वर्ष वाले साधुको सूयगडांग ५ वर्ष वाले साधुको दशा श्रुतस्कंध व्यवहार ८ वर्षकेको ठाणांग समवायाग १० वर्षकेको जगवती ३९ वर्षकेको दृष्टीवाद २० वर्षके दिक्षात साधुको सर्व सूत्र पढणे ॥ इतिज्ञेय इति पूर्व प्रश्नोत्तर ॥ ४३ ॥

॥ अथ सस्यक्त सुद्ध कारण प्रमाण मानीये ते प्रमाणके २ जेद एक प्रत्यक्ष १ बीजो परोक्ष २ तिहां प्रत्यक्ष प्रमाण कहेवे जे जीवने आपणे उपियो गसे जे द्रवने जाणे ते प्रत्यक्ष प्रमाण कहीजे जिम

एह सूर्य उग्या ए प्रत्यक्ष प्रमाण १ तिहा केवली
 वही द्रव प्रत्यक्ष जाणे हास्तोपर आमलवत् ते वार
 ण केवल प्रतक्ष ज्ञान ठे सर्व बहद्रवना दरव खेत्र का
 लजाव प्रगट जानें देखे ते परतख प्रमाण १ हिवे
 परोक्ष प्रमाण कहेवे परोक्ष प्रमाणना ३ जेद अनु
 मान १ आगम २ उपमा ३ हिवे ३ ना अर्थ कहेवे
 अनुमान प्रमाणी वस्तु उलखे जिम बादलमा सूर्य
 उग्या अनुमानसें जाणे तथा अंकूरा देखीजाणे इण
 ठामे मेह वसूर्याहै तथा धूवादेखी आगजाणे इत्यादि
 अनुमान प्रमाण १ आगम प्रमाण कहता शास्त्रना
 बचनथी जे जाणें जिम स्वर्गनरकादिक थया निगोदा
 दिना जीव अनंता सूक्ष्म स्थावरना जेद जाणे ते आ
 गम प्रमाण २ उपमा प्रमाण कहता दृष्टांत देखावी
 ने वस्तु उलखावे ते उपमा प्रमाण जिन पल्योपम
 सागरोपम इत्यादि उपम प्रमाण ३ तथा परतक्ष
 प्रमाणना २ जेद एकतो इंद्रि प्रतक्ष प्रमाण १ नो
 इंद्रि प्रमाण २ इंद्रि परमाणके ५ जेद श्रुत इंद्रि १
 चखुइंद्रि २ घ्राण इंद्रि ३ रस इंद्रि ४ फरस इंद्रि ५
 नो इंद्रि परमाणका २ जेद एकदेसथकी बीजो सर
 वथकी देसपरमाणना २ जेद एकतो देसथकी अवधि
 ज्ञान २ देसथकी मन परजव ज्ञानासर्वथकी परमाण
 ना २ जेद एकतो केवल ज्ञान १ दूजोकेवल दरसन
 २ ॥ १ ॥ दूजो उनमान प्रमाणका ५ जेद माताको

पुत्र स्त्री को जरतार बालपणो परदेसे गयो घणा का
 लमें जनी २ पागो आयो जिसकुं पांच बोलकरी उल
 खीये तिल १ ससे २ बातें ३ बरण ४ संठाण ५ इ
 णां करी उलखीये ॥ २ ॥ तीजो आगम प्रमाण तेह
 ना ३ जेद पूरव चाषा १ सहश्र चापा २ दिठी सा
 धरमी चाषा ३ पूरव चापाका ५ जेद कार्ण १ कार्थ
 २ गुणा ३ अवीव ४ आसरतन ५ कारणका २ जे
 द खिजुरको कारण बीजणो बीजणांका कारण खिजूर
 नहीं १ ताणाको कारण कपडो अने कपडाको कार
 ण ताणो नहीं २ माटीको कारण घडो अने घडोका
 कार्ण माटी नहीं ॥ १ ॥ कार्जका ४ जेद हाथीने तो
 गुलगुलाट करिजाणिये १ घोमानेंतो हें कारसुं जाणिये
 २ रथने तो घणघणाटसुं जाणिये ३ मोरने तो कूका
 ट शहसुं जाणिये ४ ॥ २ ॥ गुणका ५ जेद सोनामें
 तो कसौटीनो गुण १ फुलमें तो सुगंधको गुण २ मधु
 में स्वादको गुण ३ लूणमें रसको गुण ४ कपरामें फ
 रसको गुण ५ ॥ ३ ॥ अवीवका कीया १७ जेद म
 हीपनेतो सींग करके जाणिये १ घोमानें खुर करके
 जाणिये २ हाथीने तो दांत करिकें जाणीये ३ मोरनेतो
 पांख करिके जाणीये ४ कुरकटने तो सिखा करिकें
 जाणीये ५ गजाईने तो बहुपगां करिके जाणीये ६
 सूवरने तो दाढा करिके जाणीये ७ मनुपने तो दोय
 पगां करिके जाणीये ८ तिर्यंचने तो चउपगां करिके

णीये ९ वाघने तो नख करिके जाणीये १० सुज
 तो शस्त्र करिके जाणीये ११ महिलाने तो वीदी
 करिके जाणीये १२ पमितने तो काव्य करिके जा
 ये १३ वृषजने तो स्कंध करिके जाणीये १४ के
 री सिंहने तो केस करिके जाणीये १५ चमरी गा
 ने तो चवर करिके जाणीये १६ सीजीया धानने
 सीत करिके जाणीये १७ ॥ ४ ॥ आसरतनका
 द धूवांको आश्रतन अगती १ बुगलाको आश्र
 न पांणी २ आकासको आसरतनमेह ३ कुलको
 आसरतन पुत्र ४ आचारको आश्रतन सीलवंती वा
 जायां इति पूरव जापा संपूर्ण ॥ अथ सहश्र जाषा
 हेले—एक मारवाणीके धोरीकुं देखोके सर्वधोरीकुं दे
 ओ एक समदृष्टीकुं देखो सर्व समदृष्टीकुं देखो स्या
 की जाणीये पोतानी मतवुद्धि कल्पना करिके जा
 णीये जिसका किया जेद २ एक तो लौकीक आग
 प्रमाण बीजो लोकोत्तर आगम प्रमाण ॥ लौकीक
 प्रागम किणने कहिजे गीता जागवत कुरान पुरान
 योतिष शास्त्र वेदिक मिमांसा उपेय अने १८ पुरा
 मको जाणपणो जिनने लौकीक आगम प्रमाण कहि
 ने १ लोकोत्तर आगम प्रमाण किणने कहिजे श्रीअ
 रेहंते सिद्ध जगवंत विमल निरमला केवल ज्ञान के
 मलदरसन करी लोक अलोकका जाव जाणे देखे ११
 अंग १२ उपंग १४ पूर्वनों जाणकार होवे निरवद्य

वचन प्रकासे इतरांको जाणकार होवे जिसकुं लोक
 तर आगम प्रमाण कहिये ॥ इति सहश्र चापा सा
 णं ॥ दीठी साधरमी चापाका २ नेद एक गुनजाणे
 बीजो असुनजाणें गुनजाणेतो तीन कालकी बात
 जाणें गयेकालकी किमजाणें जिम कोई पुरुष परदेस
 में जावतो थको कादा सहित धरती देखी वागवामी
 हरीया देख्या कूवा निवाण भरया देख्या जदजाण्यो
 गयेकालें इहां वर्षा घणीहुइ दीसेठे वर्तमान काल
 की बात जाणे तो कोई जाणे जिम कोई साधमहा प
 रप परदेसथी विहार करता २ आया खुध्या बेदना
 लागी गोचरी वास्तें ऊठया पिए नाम ठोटा श्रावका
 का घरथोडा परंत जिहां देखे तिहां जलटजाव देख्या
 अर्थात् चढते जावदेख्या बसादात्तारना जावदेख्या
 जदि जाण्या वर्तमान काले इणगामको सुन होता
 दीसेठे आवते कालकी जाणे तो काइ जाणे पर्वत प
 हुडा सुहामणालागे घणा अगरे वगड वायरा वाजे
 नही घणातारातुः नही घणामोर कुकाट करे नही घ
 णी बीजली चमके नही घणी भरती धूजे नही गाम
 बाहिर जाके देखेतो मननें गमतो २ लागे जदि जा
 णियोंके आवते काले काले काइ सुनचैन होता दीसेठे
 असुन जाणे तो काइ २ जाणे तीन कालकी बातजा
 णें इण दृष्टते जिम तीन कालकी बात सुनजाणी
 जिम तीन कालकी वाता जलटी ऐसे समझणी ४ ओ

प्रथम प्रमाण कहेवे अवती रकमने वती उपमा १ व
 ती रकमने वती उपमा २ वती रकमने अवती उप
 मा ४ ॥ १ ॥ अवती रकमने वती उपमा किणने क
 हीजे द्वारका कैसी जाणे देवलोक सरीखी १ गऊखी
 र कैसो जाणे ममुद्र २ आगीयो कैसो जाणे सूर्ज जि
 सो ३ कर्मोद कैसी जाणे चंद्रमा सरीखी ४ ॥ १ ॥ हिवे
 वती रकमने वती उपमा कहेवे एक सिद्ध जगवानमें
 पावे जिसोद्गुण जिसोई अरथ जिसोई परमार्थ एक
 सिद्ध जगवानमें पावे २ हिवे वती रकमने वती उपमा
 किणने कहिजे ॥ दुहा ॥ पातऊरंता इम कहे, सुण तरवर व
 नहाया ॥ अबके विठके कवमिले, दूर पडेंगे जाय ॥ १ ॥ तर
 वर इम उत्तर दीयो, सुणो पत्र इक वाता ॥ इणघर आ
 ही रीतहे, इक आवत इक जाता ॥ २ ॥ पत्र ऊरंता देखके,
 हसजि कुंपलिया ॥ हमवीती तुमवीरसे, धीरे रहे वापडी
 या ॥ ३ ॥ कव तरवर उठवोलीया, कवकूपल दीयो जवाव ॥
 बरि बखाणी उपमा, समऊ लोग सितावा ॥ ४ ॥ अवती रक
 मने अवती उपमा किमलागी घोडाके सींग कैसाके
 गवाजैसा गधाके सींग नैसा जैसा दोनो कु सींग न
 हीया अवती रकमने अवती उपमा कही ४ इती जेय
 म् ॥ अब प्रश्नोत्तर संग्रह ग्रंथ करता लिखेहे कि जो
 पूर्व प्रश्ना अनुसारसे जो मने ज्ञानावरणी करमके उ
 दय सूत्रसे विरुद्ध वारता लिखदी होय सूत्र मूल त
 था अर्थ तथा जिनाज्ञा बाहिर अयुक्त सूत्र कहा हो

य ते च्यार तीर्थोकी साखसें मुज्जुं वारंवार तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

॥ दोहा ॥ अधिका ओठाजो लिख्या, तुब्बुदी अनुसार ॥ ते सब माफ करो तुमें, लीजो चतुर सुधार ॥ १ ॥ जाषा देहली देसकी, सज्जन जिन हितका ज ॥ च्यारो तीरथ साखसें, एम कहे ऋखराज ॥ २ ॥ ॥ इती पूर्व प्रश्नोत्तर ॥ ४४ ॥ इहांजो पहलें प्रश्न पीछे उत्तर कह्या तिस वास्तें इति पूर्व प्रश्नोत्तर पूरण होनेमे लिख्येहै ॥ ३ ॥

॥ श्रीगौतमायनमः ॥ अथ नीष्ममती तथा तिनकुं तेरापंथीजी कहतेहैं ते संवत् १८१८ में रघुनाथजी २२ टोले मांहिके साधुजी महाराजहुये तिनका चेला नीष्मनामकर तिसनें तेरापंथ अर्थात् १३ साधुवांको लेकर जुदा हुवा और एकांत दांन दयाका उथापक हुवा तिनके प्रश्नोकां जुबाव अर्थात् उत्तर पूर्व सूत्रांके प्रमाणसें साधुवोंने उत्तर लिखेहै तथा दीयेहै तिनके अनुसार तेरा पंथीयोसें चर्चा वास्तें श्रद्धा सुद्ध होनेके ते इहां प्रश्न उत्तर लिख्यते ॥

॥ श्रीगौतमः सिद्धं ॥ केइ एक क्रिया बादीकहेठे जे सम्यक्त विना पिण निरवद्य क्रियाकरे ते धर्म ठे तेहनो उत्तर आचारांग प्रथम श्रुतखंधे अध्येन ४ उहेसे ४ (गढिएबाले अवोबिन्न वंधणे अणन्निकंत संजोए नमंसि अविजाणउ आणाए लंजो नत्थी)

ए पाठमे कह्योठे जे बोलमिथ्याती आत्महित मोक्ष
 नो उपाय अजाण तेहने तीर्थकरनी आज्ञानो लान
 नहीं वली उतराध्येन अधने २८गाथा २८मी (एत्थी
 चरित्तं समत्त बिहुणं दंसणे उचइएवं समत्तचरित्ताइं
 जुगवंपुवंच सम्मत्त १ नादं सणिस्सनाणं नाणे एवि
 णा न होति चरणगुणा अगुणस्स नत्थी मोखो न
 त्थी अमोखस्स निवाणं २) इहां गाथामा कह्यो जे
 समकित विनाज्ञान नथी ग्यानविना चारित्रना गुण
 नहीं चारित्रना गुण विनामोक्ष नहीं मोक्षविना सि
 द्धना सुख नहीं वली उतराध्येन अधने २८गाथा २
 (नाणंच दंसणं चैव चरित्तंच तवोतहा ए समग्गोती
 पन्नतो जिणेहिंवरदं सिहिं १) इहां ज्ञान दरसन चा
 रित्र तप ए ४ अनुक्रमे कह्योठे पिण आधापाठा हो
 यनही जिहां मिथ्यात तिहां श्रुत धर्म चारित्रादिक
 लवलेस मात्र नहीं प्रथम तो बीरजिनेंद्रनी आज्ञा
 मांहि एकांति मुक्ति हेतुठे एकांत विरतठे मुक्तिनो
 कारणठे तेमा बीजो पक्ष कांई नथी अनें प्रचूनी आ
 ज्ञा बाहिर सुनकरणी कांई एकठे तिसमें पुण्य फल
 उपारजै ऐसा सूत्रमां घणे ठामें कह्योहै ४५ तिसमां
 ए अज्ञानी कितनेक कहेठे आज्ञा बाहिर पापठे तेह
 उत्तर हिवे जीवो सूत्रमां गोसालाजी जमाली अन्य
 तीरथी उववाई सूत्रमां अनेक जेदना कहा माता पि
 ताना बचनना पालक मात पिताका सुबनीत इत्यादि

क बली हस्ती तापस दिसाचर्य गोचर्ज वाला मृग
 लुक्क ए सर्व अज्ञानी अज्ञान काटना करण वाला व
 लि चगवतीमें सिवराजरिखी ताबली पूर्ण अकाम खु
 ध्या तृपा सी ठाडना खमणवाला इत्यादिक देवला
 के जायबे ते जीव जिन आज्ञामें नही जिन आज्ञान
 लान आराधिक पणुं नही परलोगरस अणाराहगा क
 ह्या जववाईमें तथा सूयगडांग १ अध्याय ८ में गाथा
 (जेयाबुद्धा महाजागा बीरासमत्त दसीणो अमुद्ध ते
 सिपरिकतं सफलं हवई सवसो १) इहा कह्यो जे मि
 थ्यात्वी क्रियाकरे ते सर्व करम करने सफल होवे जो
 धर्म होयतो अशुद्धप्राकृतकां कहे बली मिथ्यात्वीनी
 क्रियाने समदृष्टी बलाणें नही उत्राध्यैन २८ में (पर
 मत्य संथवोवा सुदिठ परमत्यसेवणावावि वावन्नकुदं
 सणवज्जाणए एसमत्त सहहणा १) तो देखो अने इ
 हां धर्मनी सेवादरजिक अधरमनी सेवा बरजी तथा
 मिथ्यातीइं नव कोटि सहिन पवखाणलीधो ते क्रिया
 वादीतें पूगीयें स्यू ज्ञान गुणनीपनो दरसन गुणनीप
 नो ते तो नथी अने ज्ञानविना दरसन विना चारित्र
 नों गुण नथी तो धर्म किसो थयो वलि चगवती श
 तक ७ जीव अजीवना जाणपणा विना पचखाण दु
 पचखाण कह्या पिण सुपचखाणतो कह्या नही वलि
 सुयगडांग अध्यायन दूसरे गाथा (जहंविणगिणे
 किसेचरे जयं वियंतं जियमास वंतसो ॥ जइं हिमा

बाहिर्भावे आगंताग जगत्संगंभो) समकित रूप
 लाज न कह्यो बालमरणता करणवाला पंचाश्रमना
 साधितवाला जल स्नानना करणवाला एह सर्व मि
 ध्याते दृष्टी कह्या अने देवलोक जाता कह्या परलो
 गसस अणाराहगा कह्या अज्ञा रूपलान न कह्यो ४६
 तव निन्हवमती अर्थात् तेरा पंथी कहे ठे जेए अन्य
 तीरथी पुण्य फल पामेंठे ते करणीतो अज्ञा माहि
 लीठे तेहन उत्तर हृथी तापस हाथीना मासनी आ
 हार करेठे भृगतपस भृगनु आहार करेठे बालमरण
 वाला बालमरण करेठे मात पितानी सेवना करण
 वाला सेवा करेठे ए करणी जिन अज्ञा माहि नही
 वली अविवेकी कहेठे करणीनु करणवाला अज्ञा
 बाहिरेठे अने करणी अज्ञामाहिलीठे तेहने इम के
 हिये अहो तत्त्वना अत्रेताउ गुणने गुणी युदा नही
 अनुयोगद्वारमें कह्या दंडेण दडी वृत्तेण वृत्ती पंडेण
 पंथी गुणने गुणी युदा नही चंद्रमाने किरण सूर्जने
 आताप दानीनेदान ज्ञानीने ज्ञान समकितने समकि
 ती चारित्रने चारित्रियो ध्यानीने ध्यानी चोरने चोरी
 पापीने पापी पुण्यने पुण्यवतं तिम मिथ्यात्वने मि
 थ्यात्वी ज्ञानही करता अने करममा जेद गवेष्यो
 पिण तुम सिद्धाते मूल नयना प्रवाहने विषे समकता
 नही जे बस्तु आश्रया माटे जे नाम कह्यो ते नाम
 थकी ते पुरुष जुदो न कहिये जिन मिथ्यात्वने मि

ध्यात्विनी करणी जुदी नहीं तुम अविवेक पणें जुदी
 क्यों कहोगे समकितनी करणी समकित खातेंगे मि
 ध्यातनी करणी मिथ्यात खातमेंहै ए करणी मिथ्या
 त संबंधीते तिसमें जितना मन बचन काकानों जो
 ग शुभ परवरते तेतलो पुण्यनो कारणते जेतलो
 जोग दया दान सत्य सील कुलाचार संतोष प्रमुख
 मा बरते ते करणी थकी पुण्य उपजे उववाई सूत्रम
 थ्ये जेतला अन्य दरसनी तापसनिन्दव प्रमुख कहरा
 ते सर्व देवलोक गामी कहरा ते जोगनी करणी थकी
 परंत इम न कहरा जे यह पुरसतो अज्ञा बाहिरते भ
 ने एहनी करणी अज्ञा माहिलीते १ वली मिथ्यात्वि
 प्रते इम कहिवो जे जो एहनी मिथ्यातनी करणी अ
 ज्ञा माहिलो अंस मानोहो तो एहनो ग्यान ७२ क
 ला जावत ४ वेद पर्यंत अनेरा पिण घणा लौकीक
 सास्त्र ए ग्यान सूत्रना अंस गण्या जोईये वली एह
 नी मिथ्यात दृष्टीते ते पिण समदृष्टीनो अंस गियो
 जोई ए एहनु बालवीर्यते ते पिण अनंतो आत्मीक
 पंडित बीर्यनु अंसगियो जोईये ए लेखेतो मिथ्यात
 मारग ते पिण मुक्त मारग पोहचवानो देसथकी मा
 रग गियो जोईये अहो दिठ कदा ग्रहियो एह बात
 किम मिले जे मिथ्यातमां शुद्धपणोते ते अज्ञा माहि
 लोते ४३ वली कहे जे मिथ्यातसे जीव समकितमे
 आवे तिवारे मिथ्यातीनो मिथ्यात मिटेते पण कांइ

साची घात होवे तथा तपसंजमतो तेहिजे ते उत्तर
 हे निरविवेकीयो अजे जीव मिथ्यात मूकी समकित
 मा आव्यो तिवारे समकितनो आरोप थयो समकि
 तना गुण तथा ग्यान (सादिय सपऊवसिय) कह्यो
 ने (सादिय अपऊवसिव) कह्यो तिणे मुलगा आ
 त्मना गुणहता ते गिएया पन्नवणा पद १८ मे तथा
 वले नगवती आदिघणे सूत्रे मिथ्यात्वीने (एगंत
 वाले एगंत पंडिए परिहय पावकम्मे) कह्या ते कि
 म जे शुद्धतानो अस होवेतो (एगंत अपडिए) न
 कहें चौथे ठाणें जघन थकी ज्ञान दरसन गुण परग
 ट्या ॥ ते माटे वीतरागें आज्ञाना आराधिक कह्या उ
 तराध्येंन २८ में [रागदोसो मोहो अणाणं जस्स
 अवगयं होइ आणाएरोयंतो सखलु आणारुई नाम
 १] इहांतो इम कह्यो जेहनें आज्ञानी रुचि होइ ते
 हनें अज्ञान दूरो हुवो एणें लेखे समकतीनें आज्ञानी
 रुचि होइ मिथ्यातीनें न होइ वली आचारांगें १ प
 हिले आध्ययन ५ उदेसें ६ [आणाणाएगे सो वठाणा
 आणाए एगे निरुवठाणा एव ते माहोउ] इहा क
 ह्यो जे आज्ञा ते समकित ते बिना उद्यम ते क्रिया
 अनें आज्ञामें आलसमत तथा ज्यो इसे कहिवे मि
 थ्यात्वीना शुन जोगनी क्रियानी अनुमोदना पिण
 करवी नही तो बखाणवी किहांथकी ४८ केई एक वि
 कल चेतनावत तलावनी दृष्टांत देवेते जिम एक त

लावनों पाणी बाणीयाने घरे आण्यो तेतो शुद्ध अने
 चंडालने घरे आण्यो ते अशुद्धे पिण पाणी तो उ
 त्तम ठे पीधा तृपा जायके नही जिम अज्ञानीनी कर
 णी जिने मतरूप तलाव माहलीवे पुण्य सुख सीत
 ल जाव्या येने दुःख रूप तृपा चांगे तेहनो उत्तर है
 अज्ञानी इहांतो तीन ठाम बतायावे नीचठाम तला
 व १ मध्यम तलाव २ उत्तम तलाव ३ जिम पहिला
 तलावमें जीष्टारूप अशुद्ध पाणी पीवा जोग्य नही
 पीवेतो निंद्या पामे तथा मर्ण पांमे तिम अनार्ज पुरु
 षानी करणी धर्म अर्थे जीवघातकरें ते करणासुं नर
 क पहुंचे १ मध्यम तलाव समान ३६३ पाखंड्यांरा
 धरम तथा पूर्वे कहा ते तापस वली अकाम निरज
 राना करणवाला देवगामी ते सर्व दूजा तलाव स
 मान २ उत्तम तलाव समान सभ दृष्टीनी करणी नि
 रवद्य ए करणी आज्ञा माहिलीवे ३ ॥४९॥ तथा वली
 तुम कहोंगे जे मिथ्या दृष्टीने अकाम निरजरा सका
 मनिर्जरा दोनो होयवे अने २ निरजरा आज्ञा माहि
 वे वली अकाम निर्जरासुं संसार परत करे तेहनो उ
 त्तर मिथ्या दृष्टीने सकाम निर्जरा तो होय नही अ
 काम निर्जरा होयवे अने समदिष्टीने सकाम अकाम
 वेज होयवे ते किम जगोती सतग १ उदसे, (अका
 मत एहा अकाम खुहा) अकाम कहतां निर्जरानो
 अण अजिलाखीवतो करे तो मिथ्यात्वीनो निर्जरा

उतवे नही अकामहीजवे अने, समदृष्टी मन सहि
 त निर्जरा करे तो सकाम विनामन करे तो अकाम
 तो अकाम तो अकाम निर्जरातो आज्ञा वाहिरवे अ
 ने संसारतो प्रत करे निरवद्य करणी करे तेहना प्र
 भावथी पिण अज्ञानो लान तो नथी बले जगवती
 शतंग ८ उदसे ८ चार पुरप कह्या पहिलो पुरप
 सीलवंत पिण ग्यानवंत नही तेइने देसथकी आरा
 धिक कह्यो ते करणीको आराधिक कह्योवे पिण इम
 तो न कह्यो (मम्मं आणाए देसाराहए) ते जणी
 उववाई सूत्रमा (परलोगस्स आराहगा) कह्यावे ते
 जणी आराधिक तो घणी जातिना कह्यावे कुलाचा
 रना आराधिक इहलोक ते स्वजनादिकना आराधि
 क आराधते आराधिक जाणवा पिण आज्ञाना आ
 राधिकतो समदृष्टीहीज कह्यावे ॥ तथा मिथ्यात्वी जु
 दा अने मिथ्यात्वीनी करणी जुदीवे तो स्यु करता अ
 ने करणीमा चेदवे जे द्रव्यवे ते आप आपणा गुणने
 पर्यवमा अन्निव्यापकवे पोताना गुणमा अंतरं चव
 वे ते मां मिथ्यातीने मिथ्यातीनी करणी ए दोनो
 आज्ञा वाहिरवे ए आज्ञा वाहिरली करणीमें एकंत पा
 प कहेवे पुण्यनो लेस नही माने तेहने काइ धर्म बो
 ध दीसतो नही ५० तथा तेरापथी निन्हव कहेवे जे
 उत्तराध्वेन ७ में गाथा २० मी (पवेमाया हिंसिखा
 हिं जेनरा गिहिसुव्याः उचितिमाणं संजोपिकम्मस

चाहु प्राणीणो १) इहां सुव्रत शब्दे कह्यांथी आज्ञा
 में जाणवो ते उत्तर इहांतो मिथ्यात्वीठे पिण सुव्रत
 ने अनुकंपानो धरणहारठे तेजणी मरीने मनुषमा
 ऊपजे जो सुशब्द कह्यांथी आज्ञामें थापर्यो तो सूरू
 वा नलो रूपठे बले जयंतीने अधिकारे [सुततंसा
 हू] इत्यादि बले अधर्मीनीनिंद सर्व अज्ञामे कहणो
 पडसे १ तथा इम केई एक मूढमती कहेवे ५१ सा
 धू अने श्रावग ए दो रतनारी मालाठे साधु तो मो
 टी माला अने श्रावग बोटीमाला तेहनु उत्तर जग
 वती सतग २० (जन्न समणं जगवं माहावीरे ए
 गंमहं दामदुग्गं सवरयणामय जावपडिवुद्धा तेण
 स समणे ३ दुबिहं धम्मं पणवेइतं आगार धम्मे १
 अणगार धम्मे) इहां तो बोटी मोटी कही नही
 अने जगवंत तो एक माला दीठी पिण दुलमी दी
 ठी पिण दोयमाला देखी होय तो दामा यहवो बहु
 वचन शब्द जोईये परंत दाम ए एक वचनठे तिस
 वास्ते अने बोटी मोटी कहे तेहने रतनस्यु समकि
 त कि व्रत सूत्रमे किमठे ते देखामो श्रीजाता सूत्र १
 मेघ कुमारने श्रीवीर कह्यो [अपडीलद्ध सम्मत्त
 रयण लक्षणेण] इहांतो समकित रत्न कह्यो परंव्रत
 तो रत्न कह्यो नही हिवे वरतमान कालमे ४ तीर्थ
 इम कहता दीसेवे जे एहवा समकित रूप रतनके
 विषे जे अतीचार लाग्यो होवे ते आलोडं परंत ब्र

त रतन तो कहता नहीं बले (सम्मत्त चावे पढमे नो
 अपढमे) अने क्रियातो अपढ माहीजबे ते जीव अ
 नंतीवार कीधी ते माटे रतन नहीं अने समकित र
 तन बे ते बेहूने एक सरीखीजबे ते माटे साधु सरा
 वग रतनारी माला कही परंत नान्ही मोटी कही न
 ही तथा क्रियातो आंधलीबे अने ग्यांन पागुलोबे
 ते गाथा अनुयोग द्वारमें कहीबे (सजोगसिद्धि ए
 फलं बयंती नहुएगचक्रेण रहो पयाइं अंधोय पंगू
 य बयणं समच्चा तंसं पञ्चतं नगरं पविठा १) तथा
 दसमी कालक अर्धेन ४ गाथा (पढमं नाणंत उ
 दया एवंचिठई सब संजए अन्नाणीकिं काही किंवा
 नाहिसे पावगं १ सोच्चा जाणई कल्लाणं सोच्चाजाणई
 पावगं उन्नयपिजाणई सोच्चा जंसे यंतं समायरे २
 जो जीवे बिनयाणई अजीवे बिनयाणई जीवा जीव
 अयाणं तो किंबानांदिसे पावगं ३ जो जीवे बिनया
 णई अजीवे विवियाणई जीवाजीव अयाणतो सो हु
 ना हिय संजमं ४) तो देखो इहां समकित सहित
 क्रियावंत तेहने संजम कह्यो पिण मिथ्याती अन्नव्य
 समकित रहित क्रियावंतने पिण तथा रूप असंजती
 कह्यो ते जाणज्यो साधु श्रावग रतन सरीखाजबे ना
 न्ही मोटीमाला सूत्रमें कही होयतो काठी देखावो
 ५२ कितने निहव तेरापंथी जिन मतना अजाण
 पणाथी कहेबे पुण्य पाप दोनो नूडबे बोडवा जोग्य

वे मोक्षना घातिकठे धन्ना अणगारनें पुण्य वंध्या
 तिवारिं अणुत्तर विमाणमें गया पिण मुक्ति नगया ते
 हना उत्तर ग्याता सूत्र मध्ये अध्येन ८ में अर्णक
 श्रावकनें समद्रमें जातानें मिथ्याती देवताने कह्यो जे
 तुं केहवाठे [धम्मकामीया पुण्यकामीया सग्गका
 मीया मोखकामीया ए ४ कंखीया ए ४ पिवासीया]
 ए १२ बोल कह्याठे तत्र वादी कहेठे एतो मिथ्याती
 देवताना वचनठे तिणनें कहिये एहवा हता तारे क
 ह्योके ऊठा कह्या बले (पुन्नकंखीया पुन्नपिवासीया पु
 ण्य कामीया) ए बोल मिथ्यातीये कह्या तिम (धम्म
 कामीया धम्म पिवासीया धम्मकंखीया) ए पिण
 मिथ्यातीहज कह्याठे जो ए साचा कह्यातो सर्व सा
 चा कह्याठे इम कामदेवने पिण देवता १२ बोल क
 ह्याठे महासतग रेवती पिण १२ बोल कह्याठे गर्जा
 धिकारे जगवतीमें गर्जता जीवने प्रज्जुपोते १२ बोल
 वखाणाठे उत्तराध्येन १२ मे चित मुनीने संजुतने
 कह्या [यहजीवीचेराय असा सयंमी धणियंतु पुन्नाइं
 अकुवमाणो से सोयमच्च मोहो वणीठ धम्मं अकाठ
 ण परंमिलो ए १] इहां धर्मनें पुण्य एक जेहवा स
 रणागत वखाणयो पुन धर्मनो कारण बले उत्तराध्ये
 न १८ में (एयं पुणंपयं सोञ्जा अत्थ धम्मोवसोहि
 थं जेरहो विजारहं वासं चिञ्जाका माइं पवइय १)
 इहां चारित्रने पुण्य एक कही बोलाव्या बले अंतग

दमां कृष्ण कर्णो धन्न पुन्न कृतार्थ जाली कुमर प्रमु
 ख जेणं चारित्रलीधो अने हु [अधन्न अपुन्न] जे
 चारित्र मुजने नही आव्यो एतले अहो अज्ञानीयो
 चारित्र पिण पुण्यवंत पुरुपने आवतो कह्यो बली
 प्रश्न व्याकरणमें प्रथम सवर द्वारमे कह्यो (सवग
 ती पखंदेकाहिति अणंत ए अक ए पुत्ता जे एणमु
 णंति धम्मं सोऊणयापमायंति) इहा तो इम कह्यो ४
 गतिमा कुणफिरे (अकृत पुनीया) जीव होय पु
 ण्य रहित होवे ते रुले अजागीया ते पापीया जीव
 अने सजागीयाजीव महा जाग्यवंतने पुण्यवंत जी
 व बले सुयगडाग २ अध्येन २ समण माहणं हिस्स्या
 इ धर्मं कहे ते ४ गतिमां (कलकली जागीणो) ते
 अजागीया थास्ये अने श्रमण माहण धर्म सुद्ध क
 हे ते [कलकली जागीणो त्म नविस्सई] अजागी
 या नही थाय बली उत्राध्येन ३६ मे (तत्थ सिद्धा
 महाजागा) एतले सव करम सिद्ध खपाव्याठे तो
 पिण महा जागवंत कह्या बली उत्राध्येय २३ मे के
 शीस्वामी गौतमने कहेठे (पुत्तामिते महाजागा) हूं
 पूवूवूं हे महाजाग्यवंत तथा केशी कहे गौतम प्रते
 तु संसार समुद्र किम तिरेठे जिवारे गौतम कहे (स
 रीरमा हूनावीति जीवो वुच्चई नाविउं ससारो अन्न
 वोवुतो जेतंतिमहेसिणो ३) सरীরरूप नावाथी
 संसाररूप समुद्र तिरुवूं ए सरীর रूप नावा सुक्त

साधक जीवने आदरवा जोग्यके बांधवा जोग ए सरीर
 पचेद्री जाति त्रस १० को मनुपनीगति मनुपनी आण
 पूर्वी मनुपनी आउखो साता बेदनी ऊंचगोत्र इत्यादिक
 प्रकृति बिना मुक्ति न मिले अटकाई रही ते मिली
 एतलें मुक्त गामीने एह प्रकृति साधकके कि बाधक
 ठे तथा उतराध्वेन २१ में (दुविहं खवे ऊण पुत्र
 पावं निरंगणे सवत विष्पमुक्के तरितु समुद्वं च महान्न
 वोहं समुद्व. पाली अपुणागइं गये तिवेमि १) इण
 गाथा ऊपरें पुण्य पाप ठोडवा कहेठे ते उत्तर हे अ
 ज्ञानीउं बांधवा जोग्य नही कहा. बांडवा जोग्य क
 ह्या होवे तो तिवारें हेलनीक नींदनीक होवे तेतो
 नही इहां तो सिद्ध दशापांमी तिवारें पुण्य पाप बां
 मी मुक्त गया तिम तप चारित्र पिण बूटा तो कांइ
 साधिक आवस्थामें तप संजम ठोडवा जोग्य नही
 तिम पुण्य पिण बांडवा जोग्य नही साधु दिख्यालेवे
 तिवारें कारण थकी अने बंध थकी पाप मुंकेठे पिण
 पुत्र ठोडतो नही पाप प्रकृतितों कारण सेवीने प्राय
 चित लेवेठे तिम पुण्य प्रकृतिनो कारण सेवीने प्राय
 चित नही पुदगल तो वेजंठे पिण साधिक बाधिकमें
 फेरठे तथा सूत्रमें ठाम ठाम अशुच पुदगल उच्चार
 पासवण प्रमुखनी असिजाई कहीठे पिण बाणा पा
 णी फूल फलनी असिजाई कहीनही एतला फेर पुद
 गल दसा मांइं पिणठे वले ग्यानदरसन चारित्रना

गुणतो सरीखावे मुक्तगामी पिण वेहूं ठे तो पिण पु
 ण्यार्इनें घटित बधितपणे गौतमस्वामीनें गणधर प
 द आव्यो पिण हरकेसीनें न आवे इहां ह्योपसम
 चावतो सरीखावे पिण उदय चावमां पुण्यतो फेरवे
 तिसव स्ते न आवे बले आचार्यनी ८ संपदामें [रू
 प संपदा] पुण्य थकी मिले तो आर्यपणो पुण्ये पां
 मीये एतले ए पुण्य प्रकृति मुक्ति नजीक करे कि
 वेगली करे बली गणधरनी तीर्थकर चक्रवर्त बलदेव
 वासुदेव जंघाचारण पुलाकलद्धि एह अस्त्रिमें न पामें
 यह संवर सजममें फेरके पुण्यमें फेर एतलें पुण्यते
 जीवनें साधकवे कि बाधकवे बले पृथ्वी अप्प बन
 सपती ए ३ उत्तम जाति थापरवे तो, एह नीकल्या
 मुक्ति जाता कहा यहमां पुण्यवंत देवता पिण उप
 जता कहा अनें तेऊ वाऊमें देवता न ऊपजे अपु
 ण्नीया माटे इम तेऊ वाऊ ३ विकलेंद्रीना आव्या मु
 क्ति न जाय बले कामदेव कुडकोलीयानें वीरस्वामी
 (धन्नेसिण) कही बोलाव्यो एतले जेतलो पुण्य उठा
 तेतला मुक्त मारगसू बेगलोइ जाणवो इम कह्यो जे
 उदय चावमें ह्योपसम चावमे मुक्त मारगने साधिक
 बाधिक दोनोवे ते किम उदय चावमां विषय कपा
 यादिक बाधिकवे अनें प्रचूना दरसन तथा प्रचूना
 आहार विहार ए करणी साधिक पणेवे ह्योपसम
 चावमां ३ अज्ञान २९ पाप सूत्र तथा अदरसनी गो

सालाजी जमाली प्रमुख कृत्य शास्त्र एहनो जणवो
 ए मुक्ति मार्गनें बाधिकते अनें द्वादशांगीनो ज
 णवो चारित्रनों पालवो ए साधिक दशाबे ते माटेजे
 णें कारणें मुक्ति नजीक थावे ते ते आदरवा जोग्यते
 तथा उत्राध्येन ७ मे लोकोत्तर पद्धे उपमा ३ दीधी
 बणीयानी तिहां कह्यो (माणसंत जवे मूल लानोदे
 व गइजवे मूलबएण जीवाण नरगति रिखतणु धुवं
 १) इहां देवगति उदय जावमे गिण्यो पिण वांत
 रागे लाजना पद्धमा गिण्यो ए उदय जाव पिण खे
 त्र शुद्ध कहियो उर्द्धगति आश्रीने तथा हरकेशी मु
 नीने ब्राह्मणें कह्यो (अच्चे मुत्ते महाजागा नते किंचि
 अविमो जुंजाहि सालिमं कूरं नाणं बंजण संजूर्यं १)
 हे मुनी ताहिरो सरीर सर्व अर्चनीकते पिण लंगार
 अणअर्चनीकते नही इहां उदय जाव आश्रीत सरी
 र बंदनीक कह्यो ए साधिकके बाधिक नंदी अणुजो
 गद्वारमध्ये जावथकी लोकोत्तर श्रुत अधिकारे कह्यो
 प्रन्नू केहवाबे (तिलोण बहिय निरबिखीय) एतले
 प्रन्नू साहमो सर जुर जावेबे तेहने आनंदरस प्रवा
 ह हिवडासुं चालेबे ए सरीर निरखणा उदय जाव
 वर्तनाबे वले जगवंत २ साधूने बरजा कोई बोलजो
 मती पिण गोशालाजी आया जद २ साधु धर्मा चा
 र्यना जक्त जावना प्रेरयावता बोल्या हिवे इण साधु
 ये अज्ञा विराधी तेहनो दोष लाग्योके जक्त रागे बो

ल्या तेहथी गुण थयो ए वोल्या ते करणी उदय जा
 वनी बयण साधकके बाधिक वले दयानो नाम पूठा
 कह्यो ते पुण्योपचयनो हेतु कही इत्यादिक सूत्रानु
 सारे धिवेक लोचन जोज्यो ते पुण्यते ते सुच पुदग
 लनो संचयते विवहारमे ए साधक ते ५३ वले अ
 ज्ञानी कहेते जे उत्राधयेन १० मे (एवंभव संसारे सं
 सरई सुहामुनेहिंकम्मेहिं) शुचा शुच करमथी जीव
 रूल्यो ते माटे पुण्य पापथी बेउंथी रूलता कह्या पु
 नः मुक्तनो साधक नथी तेहनो उत्तर हे मृपा वादी
 मृपा क्यो कहोबो इहा तो प्रचू खरो कह्यो जे जीव
 संसारमें रुलेते ते शुच कर्म अशुच करमथो रुलेते
 शुच अशुच जोडेते ते माटे असुचने संजोगे सुचथी
 पिण रुलेते ते माटे सुचासुचनेला कह्या पिण सुच
 थकी धर्म नजीकते अने अशुचथकी बेगलोते वले
 अशुच करमनी उनकृष्टी थित बाघे तो जीव धर्मम
 लथी न पामे अने उतकृष्टी थित सुचनी बाघे तो
 धर्म सुखे पामे ५४ वलीकेतला अज्ञानी अज्ञान
 ने वले सूत्रना खोटा अर्थ परूपेते ते कहे सम्यक्त मो
 मोहनी १ मिश्रमोहिनी २ सीथ्यात मोहनी ३ एहना
 अर्थ इम करेते जे समकित ऊपर हेत प्यार एक ला
 स राखें ते समकित मोहनी संबंधीया होवे तो ऊप
 रले गुणठाणें किम होवे तथा अज्ञव्य जीवने ए ३
 मोहनी प्रकृतिनी सत्तावे अने समकित ऊपरे बांठ

ल्य ज्ञान राखवाने समकित्ती ऊपरे हेतराग चक्की म
 लगा होवे नही येहनो सुध अर्थ तो इम कह्यो ते जे
 मिथ्या मोहनीने उदय खयोपसम समकित रोकणी
 ३ मिश्र मोहनीने उदय उपसम समकित अटकी ते
 किम उपसम समकितमां मिश्र पणुंते जे उदय आ
 वी प्रकृति जोगवीने उपसांत जावे रही ते अणुउद
 यमां रहि ते माटे मिश्रकहिये २ समकित मोहनीने
 उदये संपूर्ण सम्यक्ति खायक स्वरूप रोकणुं ३ मूल
 एहनो अर्थ ए ते पिण ए दुष्ट परणामी जीव दयाहीन
 करवा खोटा अर्थ कहेते ५५ हिये केई एक वादी ते
 रापंथी इम कहेते जगवंतने गोशालाजी बचायो ते
 पाप हुयो जगवंत चूकी गया कृष्ण लेस्याना परिणा
 म आया सरागदसा मोहनीने उदय गोशालाजी ब
 चायो इम कहेते तेहनो उत्तर हे अज्ञानीयो प्रभूने दो
 ष किम लाग्यो तिवारें दुष्टमती कहे यह काम बदम
 स्त पणामा कीधो पिण कवल उपजा पठे न कीधो
 बदमस्त पणामें जगवंतने ६ लेस्या अने ८ कर्म ह
 ता जब गोशालाजी उगारयो तिवारें कहीये हे दूष्टो
 प्रभू ठेमासी आदि बे तप कीधा अनार्ज देसें बिहा
 र कीधा तिवारें पिण ६ लेस्या ८ कर्म हुंता हे मूढो
 इहां लेस्या करमनो स्युं कारणते जे करणी कीधी ते
 हंनो पदाल्यो ५६ तिवारे कहे दोय साधूने बलता
 क्यां न उगारया जो उगारयानो लाज हुंतातो तेह

नौ उत्तर ते साधू ऊपर पिण प्रचूनी अनंत अनुकं
 पावे पिण तेहना निमित्तकारण आवी मिल्योवे जो
 तुमें कहोवो लेस्या लवध फोडव्यां दोष लागे ते माटे
 न उगारया ते सम्यक्त मोहनी १ इम मिथ्याती ऊपर
 मोहनी हेतप्यार विनय प्रमुख करे ते मिथ्यात मोहनी
 २ मिश्र दृष्टी ऊपर मोह आवे ते मिश्र मोहनी ३
 एहवा ऊठा अर्थ करीने दया अनुकंपा रहित हत्या
 करे ५७ जे आपण मरता जीव मिथ्यात्वीने मुकावि
 ये तो मिथ्यात मोहनी लागे तेहना उत्तर हे मिथ्या
 त वादीयो ए दरसन-मोहनी तो समकितनो आवर
 णवे चारित्रनों आवरण नही अने एहनो वेदवो नि
 रजरवो जीवना प्रदेस वरतीवे पिण काइ सादस्य जा
 वनही वरतती वली दूजो अर्थ कोईक ऊठो करेवे स
 मकित मोहनी तो समकित आवनघे १ मिथ्या मोह
 नी मिथ्यात आवानघे २ मिश्र मोहनी मिश्रदृष्ट आ
 वानघे ३ एहवी अर्थ ठीक नही ए लेखेतो मिथ्यात
 मोहनी आ आबीसो मिथ्यात आवानहीघे ते माटे
 ठीक नही वले कहे समकित उपरहेत आवे तिवारे
 समकित मोहनीनो उदय येहवो कहे तेहनें पूगीये जे
 ए ७ प्रकृतिनोद्वय द्वयोपसम चौथे गुणठाणे होवेवे
 ते चारित्रिया उपर हेत प्यार बळ जावणतो सा
 धूने बठे सातवे गुणठाणे पिण होवेवे ते कहेवे महा
 वीर उपर गौतमनो चक्रिराग ते मोहनी करमनों उद

यके उपसम १ महाबीर प्रचू ऊपरें सींहा मुनीनो ती
 ब्रसनेह ते मोहनीनो उदयके उपसम २ सुनद्धत्र स
 र्वानु चूती धर्मा चार्यना चक्ति जावना प्रेरया थका
 बोल्याते मोहनीनो उदयके उपसम ३ सिष्यने गुरु उ
 पर चक्तिराग तपस्या करता बरजे ते मोहनीनो उद
 यके उपसम ४ साधुने तथा प्रचूनें विरहकरी जेवि
 क जननें चिंत्या उपजे ते मोहनीनो उदयके उपसम
 ५ साधू जननें ठते जोगें असनादिक नापीसक्यो
 तथा धर्म कथा सांजली नसक्यो तो पश्चाताप करे
 ते मोहनी उदयके उपसम ६ प्रचूना निरवाणसमें घ
 णाजीवानें चिंत्या उपनी अने प्रचू पधारयां घणा
 जविक जन अतिसें उडाह जाव ऊपन्यो ए मोहनी
 नो उदयके उपसम ७ घणे ठामे प्रचूजीना तथा सा
 धूजीना नाम सांजलीने तथा दरसन देखीने तथा
 असनादिक आपीने आणंद पांस्या अने विरह वि
 जोगे दुखे चिंत्यातुर थया ते केहा मोहनीनो उदय
 एतो लक्षण समदृष्टीनावे जिवारे समकित उतरुष्टा
 रसना आवे तिवारे यहया उल्हास जाव ऊरजे जेए
 लक्षण समद्विष्टीनां घातिक होवे तो समकितना अ
 तीचारमां कयान घाल्या चौथे गुणठाणे कोई उत्तम
 जीवने द्वायक समकित आव्यो तेहने एह पूर्वे कहा
 ते गुण होवेके नही अनुकंपा जाव उडाहजाव शोक
 ४ ए तो ऊपरले गुणठाणे पिण होयवे शोकहास्य

परमुख ए प्रकृते तो आठवा गुणस्थान लगते अने समकित मोहनी तो हेठले गुणठाणें खपावीठे जो ए गुण (परियावीए बहु सुइक्य) ए पाठवे ४ गो शालानें उगारयो ५ ए ५ बोल साधूनें बरज्याठे अने पोतें कीधाठे केवल उपन्यापठे १० कालीकुमार प्रमुखना मरण वताव्यो ६ नेमनाथस्वामीर्ये द्वारका नो दाह १२ वरसमा वतायो ७ गोशालानो ७ दिनातरे मरण वतायो ८ महासतक रेवतीनो मरण वतायो तिवारे गोतमने मूकी प्रायवित्त देवाडयो अने पोते सुखें वतायो ८ गोशालाने हेलवा निंदवा नी आज्ञादीधी जे एहवे गोशालाने बोलवानी सक्ति नथी तुम हेलो निंदो निष्टुष्ट वागणी करेह ए आज्ञा दीधी ९ तथा पूर्वधर साधू धर्मघोष नागश्रीने हेली नींदी १० बले तीर्थकरने उच्चारदिक लेप लाग तो नही अने सूंचपिण लेतांनही अने सामान्य साधु सूंचविना रहे तो अमुचिलामे ते जणी बरज्यो ११ ए ग्यारे बोल जगवंते आगम विहारी पोतें सेव्या ठे सामन्य साधूने सेवानी ना कही तो अहो अज्ञानी यों तुम सर्व बोलमा तो चूला नही कहता १ अने एक गोशाला उगारयो ते माटेज दोष लागतो गि एयो तेहनो स्युं कारण पिण इम जाणो जे तुम प्रत्यक्ष गोशालाने केडायत दीसोठो सो प्रचूनी लघूता करोगे बले अज्ञानी कहे जगवंतने गोशाला उगा

यके उपसम १ महावीर प्रज्ञ ऊपरें सींहा मुनीनो ती
 ब्रसनेह ते मोहनीनो उदयके उपसम २ सुनक्षत्र स
 र्वानु ज्ञूती धर्मा चार्यना चक्ति जावना प्रेरया थका
 बोल्याते मोहनीनो उदयके उपसम ३ सिष्यने गुरु उ
 पर चक्तिराग तपस्या करता बरजे ते मोहनीनो उद
 यके उपसम ४ साधुने तथा प्रज्ञूनें विरहकरी चवि
 क जननें चित्या उपजे ते मोहनीनो उदयके उपसम
 ५ साधू जननें बते जोगें, असनादिक नापीसक्यो
 तथा धर्म कथा सांजली नसक्यो तो पश्चाताप करे
 ते मोहनी उदयके उपसम ६ प्रज्ञूना निरवाणसमें घ
 णाजीवानें चित्या उपनी अने प्रज्ञू पंधारयां घणा
 चविक जन अतिसें उच्चाह जाव ऊपन्यो ७ मोहनी
 नो उदयके उपसम ७ घणे ठामे प्रज्ञूजीना तथा सा
 धूजीना नाम सांजलीने तथा दरसन देखीने तथा
 असनादिक आपीने आणंद पांम्या अने विरह वि
 जोगे दुखे चित्यातुर थया ते केहा मोहनीनो उदय
 एतो लक्षण समदृष्टीनाठे जिवारे समकित उतरुष्टा
 रसना आवे तिवारे यहवा उल्हास जाव ऊरजे जेए
 लक्षण समदृष्टीनां घातिक होवे तो समकितना अ
 तीचारमां कयान घाल्या चौथे गुणठाणे कोई उत्तम
 जीवने द्वायक समकित आव्यो तेहने एह पूर्वे कहरा
 ते गुण होवेके नही अनुकंपा जाव उच्चाहजाव शोक
 ए तो ऊपरले गुणठाणे पिण होयवे शोकहास्य

परमुख ए प्रकृति तो आठवा गुणस्थान लगते अने
समकित मोहनी तो हेठले गुणठोणें खपावीठे जो ए
गुण (परियावीए बहु सुइकय) ए पाठवे ४ गो
शालानें उगारयो ५ ए ५ बोल साधुनें वरज्याठे अ
ने पोतें कीधाठे केवल उपन्यापठे १० कालीकुमार
प्रमुखना मरण बताव्यो ६ नेमनाथस्वामीयें द्वारका
नो दाह १२ वरसमां बतायो ७ गोशालानो ७ दि
नातरे मरण बतायो ८ महासतक रेवतीनो मरण
बतायो तिवारे गोतमने सूकी प्रायठिन देवाडयो अ
नें पोते मुखें बतायो ८ गोशालाने हेलवा निंदवा
नी आज्ञादीधी जे एहवे गोशालाने बोलवानी सक्ति
नथी तुम हेलो निदो निष्टष्ट वागणीं करेह ए आज्ञा
दीधी ९ तथा पूर्वधर साधू धर्मघोष नागश्रीने हे
ली नींदी १० बले तीर्थकरने उच्चारदिक लेप लाग
तो नही अनें सुंचपिण लेतांनही अने सामान्य सा
धु सुंचविना रहे तो अमुचिलागे ते जणी वरज्यो ११
ए ग्यारे बोल जगवंते आगम विहारी पोतें सेव्या
ठे सामन्य साधुने सेवानी ना कही तो अहो अज्ञानी
यों तुम सर्व बोलमा तो जूला नही कहता १ अने
एक गोशाला उगारयो ते माटेज दोष लागतो गि
एयो तेहनो स्युं कारण पिण डम जाणो जे तुम प्रत्य
क्ष गोशालानें केडायत दीसोठो सो प्रज्जूनी लघूता
करोठो बले अज्ञानी कहे जगवंतने गोशाला उगा

र्थानो लाज जाणोगे तो तुम ए काम क्यो नही क
 करो तेहनो उत्तर साधूतो एक गोशालो उगारयो ते
 एहीज काम न करे कही १२ बोल न करे तिलनो
 बोम १ तिलनी सींगली २ सुंवानी खबर ३ द्वारका
 नो दाह ४ इत्यादिक पिण साधू नही करता तो ते
 कीधा तो प्रचूने चूला कहस्यो ५८ तथा केतला ए
 क मूढ कहेवे जे जगवंत लब्ध फोडी अने सीतल ले
 स्याना पुद्गल बाहिरथी लीधा ते विना आज्ञालीधा
 वे ते जगवंतने चोरी लागी तेहनो उत्तर अहो शु
 द्धोपयोगी इम चोरी गणस्यो तो तुमारे लेखे सा
 ध पणोहीज न पले ते किम जे पन्नवणा पद ११ में
 जे जाण्या बोले ते अनंता पुद्गल लेईने जाण्या
 बोले (पुठानगाढा) इत्यादि १७ बोलवे बले सास
 उसास ३ जोगीनी प्रवर्तन ए सर्व बाहिरला पुद्ग
 लीया सुं होयवे ते किएरी आज्ञा स्युं पुद्गल लेवेवे
 बले बादी कहे अमेतो जाणीने पुद्गल नथी लेता
 ते उत्तर तुमें चापादि जाणीने बोलोगे के अजाणी
 के बोलोगे इत्यादि ५८ तथा केताला एक दुष्ट कहे
 सीतल लेस्या अने ते जूलेस्याना जीव मूवा एह पा
 प थयो ते उत्तर हे अज्ञानीयो एह कुमति तुम कि
 हांथी लायागे सूत्रमांतो लेस्या लवधना अचित पु
 दगल कहावे जगवती सतग ७ उदेसे १० में (अ
 अचित विपोग्गलाउ चासांति उज्जीवंति

तिथति जनासंति हंताअत्थि) पिण एहने जीवत्व
 होवे तो दिहार क्या न करायो काई विहार करवानां
 तो दोष न लागतोढो तोपिण एहनें आऊखामे अ
 वसर बलिष्ठ तिवारे जगवंत स्युं करे तो पिण जगवं
 ततो विहार राखवा मांटे वरज्या तो हतो पिण इहा
 आऊखो पुरो धावानें समयथो ते कुणसाधे अनें पो
 ते ३४ अतिसय सहितठे २५ जोजन परमाणें ७
 अतिसय ईत मयचक्र परचक्र अतिवृष्ट अनावृष्ट
 दुर्नद्ध मारि न होवे तो अतिसय किहां गया इहा
 तो चावी पदार्थ बलिष्ठ ठहरयो ६० बले केताइक
 अज्ञानी इम कहे गौतमस्वामी आणदने घरे चासा
 में चूक्या तिम जगवंत पिण वदमस्त पणामां चूक्या
 तेहनो उत्तर हे अज्ञानीओ गौतमस्वामीनें तो प्रचूइं
 कह्यो जे तुमे जूलाढो आणदसाचोढे तुम जईनें ख
 मावो पिण जगवंततो केवल उपना पठे कह्यो गौत
 म स्वामीनें मे अनूकंपानिमते गोशालाजी बंचायो
 पिण इमतो न कह्यो जे हूं चूक्यो जे चूक्या हंतातो
 जगवंत स्युं आपणो दोष ढाक्यो पिण तुमे बीगप्रजू
 जूला स्याने बलेजाण्या तिवारे अज्ञानी कहस्ये वद
 मस्त पणानो कामठे तेहनो उत्तर जगवंतनी करणी,
 वदमस्त पणानो अने केवल पणानी एक सरीखीठे
 एक सरीखा काम करेठे ते जोवो गोशालाजीने तिल
 नो बोड वताडयो अने बीजा साध वतावेतो तेह

नें प्रायश्चित्त देवे जे निमत प्रकासवो नही आरंभ
 कारणी चासा न बोलवी ते चणी १ चलती बेला
 तिलनी सिंगलीमां ७ तिल बताव्या ते २ तेजू ले
 र्या उपजवानी गोशालानें बले करणी बतावी ३ कु
 पात्रनें विद्या न देवी अने गोशालाने (सेहावीएकधरे
 एंजंते अचित्ताविषोगलाउ चासंती ४ कालोदाई कु
 धरुस अणगाररुस तेउलेसानिसठा समाणी दूरग
 ता दुरंणिपत्ते) इत्यादिक आगलपाठ घणावे ६१ व
 लेमूर्ख कहेठे जगवंते गोशालो वंचायो तिहां अशु
 ज जोगनो व्योपार प्रब्रत्यो ते माटे दोष लाब्यो तेह
 नो उत्तर पूर्वला १० बोल कह्या तेमा शुज जोगकि
 अशुज जागठे जोयकम्मा शुज जोगठे तो दसोबोलमा
 शुज जोग जाणवा ६२ बलि कहसी जगवंत गोशा
 लानो लाज जाणतातो बीजाने एरीतें जीव जगार
 वानो उपदेस क्यां न दीधो ते उत्तर हे मूढो प्रचू पोतें
 तो अनार्ज देसमां विहार किधो उदमस्त पणामांथी अ
 नें केवल उपन्या पठे अनार्ज देसमें विहार न कीधो
 अने बीजा साधुने अनार्ज देसमां जावणो वरज्यो
 ब्रहतकल्प उदेसे १ ने अंतैतो रयु प्रचू पूर्वे खोटो
 करयो ६३ बले केतला एक कहे लवध फोडव्या प्रा
 यश्चित्त लीधा बीनां कालकरे तो विराधिक थावे ते मा
 टे जगवंते लवध फोडी तेमां दोष जाणयो ते उत्तर
 सर्व लवधना फोडनहारने प्रायश्चित्त नही कह्यो सि

तल्लेस्या जीवदया माटे फोडव्यानो प्रायश्चित्त सू
 त्रमां काढी देखाडो तो अमे पिण जोइये जो सर्व ल
 वधनी प्रायश्चित्त होवे तो २८ लवधमा तीर्थकरनी
 केवलीनी गणधरनी पुलाकनी लव्व तथा उववाईमां
 (तेणंकालेणं २ समणस्स जगवत्तं महावीरस्स अंते
 वासी बहवथेरा जगवंतो जाइ संपन्ना जाव विजा
 पहाणा मंतपहाणा बली आगे वखाण्या कूतिया व
 ण्णूयो प्रवादीप्पमद्वणा दुवालस्स अगिणो समत्त
 गणि पग्गिस्स सब्बखर सन्निवाइणो सब्ब चासाणु
 गामिणो अजिणा जिण संकासाए पाठमा प्रवादीप्प
 मद्वणा) ते वादी लवधिना धणी विद्यामंत्र जणयामा
 ए थेरा जगवंत प्रधान कह्या ए आचार्य कोई
 अज्ञानी कहि स्ये. जे घरमा एहवा हता विद्या मंत्र
 लवधिनाजाण ते वातजूठी इहा तो थिवराना गुण
 विद्यमान अवस्थामाठे ते वखाण्याठे संसारमा तो
 जोगनाशास्त्र कोक शास्त्र सामुद्रिक प्रमुख धनुर वे
 दादि अनेक जणया होरये पिण इहा वखाण्या नही
 इहां तो जे करणी वखाणवा जोगहती ते वखाणी
 (जातिः कुल बलरूव त्रिणय नाण दंसण चरित लज्या
 लाघव उयंसी तेवसी वच्चंसी जसंसी जाव वयप्पहाणा
 गुणः चरणः करणः पिण्हः जिजयः अजवः मद्दवः
 लाघवेः खंतीः मुत्तीः विद्याः मंतेः वेयः वन्नः नयः पियमः
 सब्ब सोय चारुवण लज्या) इत्यादि घणुणा गुणठे ए

परवरतमानमांठे एहमां संसारनो गुण एको नही
 ते माटे सर्व लब्धनो प्रायश्चित्त नही इंद्री विषय सुख
 परमाद् कपाय द्वेष इत्यादिक कारणे करे तो दोष
 लागे अने निविकार जावे दोष किंहीं सूत्रमा बह्यो
 होवे तो देखाडो ६४ तथा केतलाइक कहे जो गोशा
 लाने उगारयो तो दोष तो साधूने वाल्या वीरस्वामी
 उपरे तेजुलेस्या मेली मिथ्यातवधारयो ते स्यु
 गुण थयो ते उत्तर अरे मूर्खो ते वातनो प्रचूने स्या
 नो दोषण बले अन्नव्य जीव साधपणो लेइ कोईने
 मारी जायतो तेहनुं पाप गुरादिकनें नही जो महा
 वीर स्वामीनें दोष लागो जाणतो इण लेखे तो ऋ
 षभदेव स्वाभीने तो घणो पाप लाग्यो होसी जे मा
 टे ४ हजार जणा साथे दिक्हा लीधी पठेसगलाई जा
 गा अने मिथ्यात बधारयो ते माटे पिण प्रचूने पा
 प नथी तथा गोशालाजीने तो षडमसत पणामा दि
 क्हालीधी पिण केवल ऊपना पठे जमालीनें क्युं मुं
 ड्यो बले नंदनमणियारने श्रावक कयां कीधो पा
 र्श्वनाथस्वामीये सोमिल ब्राह्मणने श्रावक कयां की
 धो सुकुमालका आरज्याने कयां दिक्हा दीधी २०६
 जणीनें कयां दिख्या दीधी मेघकुमारने कया दिक्हादी
 धी इमंतो घणो अटकास्ये ६५ तथा बली कहे गो
 शालो असंजमी अब्रती मिथ्यातियने नगवंत उ
 गार्यो ए अनुमाने कसी आलोचणनुं ठाम जाणये

वे जिम रहनेमी राजमतीने विषयज्ञोगनी आमं
 त्रणा करी पिण प्रायचित्त कह्यो नथी पिण जोवो
 ए प्रायचित्त ठामवे जिम जगवंते जाणवो ते ड
 त्तरे एतो रहनेमीनो एकांत असंजमनो ठाम दी
 सेवे प्रायचित्तना १० जेठवे तेमां इंदियावसेकाउ
 अप्पाणं उवमंहरे ए पाठ कह्यो अने जगवंतने तो
 पाप नथी लागो ते साख आचारांग १ अध्येनमे
 (एच्चाणसे महावीरे णोविय पावगं सयंभ कासि
 अच्चेहिंवाण करिज्या करतंपिनाणु जाणी त्या ८ अ
 कसाते विगयगेहीया सहखुवे सुअमुठियजासि उठम
 त्थेविपरकममाणे नोप्पमायसयंपिकुदित्या ९ व
 ले आहाकरुं न सेवे सवसो कम्मुणा अदख्खु जंकि
 चि पावगंजगवंतंअकुविय विथडं जुंजेथा १८) इ
 ए गात्थामे जगवंतं उदमसत पणामां रह्याथकंत्तं कि
 चित्त पाप करम जाणनि न सेव्यो कह्यो तो तुमं रया
 नें कहोवो वले गोशालानो जीव दढपईनो थारो के
 वल पामस्ये जदु सर्व साधुने कहस्ये में गया काल
 मां समण घाती थयो प्रज्जने अविणय कीघो तो घ
 णा दुःख पाम्या तिम तुमं करस्यो मां इम कहसी पि
 ण जगवंतं केवली हुयावे ए कार्य निखेवो नही तथा
 नसीत सूत्रमां व्यवहार सूत्रमां ब्रह्मकल्प प्रमुखमां
 घणा कामना प्रायचित्त कह्यावे पिण अनुकंपानो प्रा
 यचित्त कह्यो नही वले जगवंतने १० सुपना आया

सोतो निद्रामां अजाणें आठ्या पिण लवधतो उदी
 रीने गोशालाने वचायोठे तुमे १० सुपना अने लव
 ध जोडे लगावो ते खोटुंठे बले तुमे जगवंतमां ६ ले
 स्या कहोठो ते स्यांनणी ६६ तिवारे वादीकहे जग
 वंतमां कषाय कुसील नियंठोठे अने कषाय कुसीलमां
 ६ लेस्याकहीठे ते जणी कहांठा ते उत्तर अरेमूठो ६
 लेस्यातो समुचय कषाय कुसीलमे कहीठे पिण एक
 जीव आश्रीतो नियमा नथी अने जो कहसो तो
 कषाय कुसीलमां तो वेद ३ कल्प ५ चारित्र ४ लिंग
 ३ शरीर ५ बंध ७ नो तथा ८ नो समुदघात ६ प्र
 मुख कहांठे तो जगवंतमे सघला बोल कहणा पड
 स्थे ते तो नथी जगवंतमें उदमस्त पणामे १ सुख
 लेस्या संनवीयेठे तुमे ६ लेस्या कहोठो ते खोटुंठे
 बलेचतुम कहोठो जगवतने गोशालो वचावता पाप
 लाग्थी तो कहो पाप मूलगुणमें लागोके उत्र गुणमे
 लाग्थी अने कहसोतो किम मिलस्ये कसाय कुसील
 नियंठो तो अप्रति सेवीठे ते मूल गुण उत्रगुणमें दो
 ष लगावतो नथी तो तुमे ऊठो बोलीने पाप जगवंत
 नें कहोठो ६७ बले वादीकहेठे जो जगवंत गोशा
 लो वचावता नही तो एक अठेरो घटतो इम कहेठे
 तेहनं उत्तर हे अबिबेकीयो द्रोपदीने पदमोत्तर मंगा
 वी ते अठेरोके कृष्ण अमरकंका गया ते अठे
 रो मल्लीनाथ पूर्वे माया केलवी ते अठेरो के मली

नाथ स्त्री हुवा ते अछेरो इम ' जगवंत गोशालो वं
 चायो ते अछेरोके जगवंतना मुख आगे २ साधुने
 बाल्या अने जगवंत ऊपरे तेजूलस्या मैली ते अछे
 रो इम जगवंत तो अनुकंपा निमत्ते दया परिणामे
 वतिने गोशालो वचायोठे बले बले तुम तो इम क
 होगे (श्रीनेम जिणोसर जाणता, होसो गजमुकमाल
 री घातरे ॥ तोही अणुकंपा आणी नही, उर साधन
 मेल्यासाथरे ॥ जीवामोह अनुकंपा न आणीये १) इ
 ए गाथा देखतां तो तुमारी सरधा अनार्य दीसेठे ते
 जणी तुमारी सरधारे लेखे तो साध साधवीरो माहो
 मांहि यतन करवो नही पिण जोवो ठाणाग ५ में ठां
 णे ५ कारणे करी साधू साधवीनें ग्रहतो थको जग
 वंतनी आज्ञा उलंघे नही पशुपखी साधवीने हणतो
 होवे तो ते पासथी पकमिनें ठोडावे १ विषम ठाम
 परुती होयतो पकमी राखे २ कादवमा खुचतां तथा
 लपसता थका राखे ३ नावामें चढतां उतरता संवा
 हीराखें ४ सनीपात तथा जोलो तथा देव धिष्टत सरी
 र तणे उन्मादपामी मूरुगपामी तथा आहारादि
 पचख्या संथारो करयो पठे सरीरकी लामणापामे प
 डती होयतो ग्रही राखे ५ तो देखो इहा साधवीनें
 पकडीने बुडावतो साधुनें बुडावानो स्युं दोष बले ५
 में ठाणें साधू साधवीए कारण पड्या एक थानकमे
 रहेतो आज्ञा उलंघे नही दीर्घ अटवीमां चाल्या ति

हां कार्य विसेसे जेला रहे १ साधु साधवी बसनीमां
 आव्या तिणमां एक थानक पांम्यां अने एके न.पा
 म्यो ते जेला रहे २ नाग कुमारादिकने स्थानकेरही
 साधवी तेहनी रक्षा निमित्ते जेला रहे ३ चोर वसत्रा
 दिक चोरवा बांठे आरजाना तेहना प्रजतन काजे
 जेला रहे ४ जुवान पुरुष साधवीनी वाढा करतो जा
 णी साधवीना सिलादिक व्रत राखवा निमित्ते जेला
 रहे ५ तो जोवो साधु साधवी आपसमें इसा इसा
 जावता करता कहावे तो जगवंत गजसुकमाल ऊ
 परें जावतो किसो नही करे पिण गजसुकमालने तो
 मोहानो उपाय बतायोवे ६ तथा केई एक इम कहे
 वे जे साधु साधवीने काढे ते संजोग एकठे तिणसु
 काढेवे ते उत्तर नेमनाथजीरे गजसुकमाल संजोगीवे
 के असंजोगीवे ते कहो बले तुम कहोवो (श्री वीरजिण
 द बाईसमा, जिन कलपी मोटा अणगाररे ॥ ज्याने दे
 वता मनुष तिर्जच, ए उपसर्ग उपन्या अपाररे ॥ १ ॥ मो०
 अनार्ज लोक पिण वीरनें, दुःख दीघा अनेक परका
 ररे ॥ अनार्य चोमीके मनुष्यनें, श्वानादिक दीघालाररे
 मो० ॥ २ ॥ देवता मनमें जाणीयो, यारे उदे आयादीसे
 करमरे ॥ अणुं पा आणीवीचे पड्या, श्री जिन जाण्या
 नही धर्मरे मो० ॥ ३ ॥) चोसठ इंद्र मिलि आवीया,
 दिरुयारे दिन जेला होयरे ॥ जद कष्ट पडयो जगवंतने,
 जद आमो न आयो कोयरे ॥ ४ ॥ मो०) ए ४ गाथा तु

मारी देखतां तुमे दयाहीणदीसोगे अने ऐसी २खोटी
 खोटी जोराकरकर लोकांना हिया दयारहित करोगे
 पिण इण लेखेतो तुम विहार करता मोटी अटवीमें
 पढ्या मारग चूला बता घणा दुःख संकट पावोगे
 तिहां कोईक पुरुष तुमनें मारगमें घाले तो तुमारे ले
 खे जणनें पाप लागे १ बले तुम विहार करतां कोई
 क ग्रहस्थे कह्यो अमुकडे गैले सिंहनो डरठे तथा चो
 रांनो डरठे तथा मारग विपमठे तथा कांटा घणाठे
 सो तुमे उण मारग जावोमती इम वरज्योतो तुमारे
 लेखे जण तुमारे ऊपरे मोह अनुकषा कीधी तिणसूं
 पाप लाग्यो तो थें नगवंतनें बुडावेतो पाप लागे इ
 म सरधोगे ते नणी तुमें अनार्यठे नगवंत तो पो
 तें काया बोसरावीठे अने करम बंध्याठे ते निरजरे
 ठे (नथी अवे देइंता मोखो) इति वचनात् तुमे गो
 शालानें वचायानों नगवंतने पाप कहोगे ते घणुं
 अजुक्त वोलोगे ६९ तथा केईक अज्ञानी इम कहेठे
 जिन बचनोकी अपेक्षाके अजाणहै ते कहेठे जो ए
 कही बोटा दोष लगावेतो साधु न कहीजे असाधु
 कहिजे नेपधारी कहिजे ऐसा कहिनें घणा जणानी
 साधुसुं आसता उतारेठे तेहना उत्तर नगवती सत
 ग २५ उदेसे ६।७ में बडं नियंठाने अधिकारे पु
 लाक १ पदिसेवणा कुसील २ ए २ मूल गुणको प्रति
 सेवीहोय अने उत्तर गुणको प्रतिसेवी होय मूल

गुणते ५ महा वृत्तमें दोष लागे ते, उत्तर गुण
 जे १० विध पचखाणमां दोष लागे (अण
 गयं मंडकंतं) इत्यादि बुकस मूलगुणको प्रतिसेवी
 नथी उत्तर गुणको प्रतिसेवी होय अने ऊपरला ३
 नियंठातो अप्रतिसेवी होय प्रथम ३ नियंठानें आ
 राधिक बिराधिक दोनोही कहा बले पुलाकने तो सं
 ना वजता कह्यो अने प्रतिसेवी कह्यो ते तुम जाण
 ता नथी तथा तुमें कहोगे जे पासत्या जेलु आहार
 करे तो ४ मासी प्रायचित्त आवे एहना परमारथ न
 य अग्निप्राय जाणता नथी अने निरावलका ५ म
 ध्ये सुजद्रा आर्या अनेक बालक रमांड्या अन्नादि
 खवाया पिण गुरणीनें उदीरीनें काढी नथी पोते स
 यमेव नीकलीबे बले ज्ञाता १६ सुकुमालिका अनेक
 वार२ सरीर धोयो पिण गुरणी काढी नही प्रायचित्त
 बेइ कह्योबे पोतेहीज न्यारी हुईबे बली दसमीकाल
 क अध्येन ६ (दस अठय ठाणाइं जायं बालो वरज्ज
 तत्थ अनयरे ठाणे निग्गंथाताउत्तस्सई १) इहां इ
 स कह्यो जे थानक सेव्यो तेथी अष्ट हुवो पिण इम
 न कह्यो जे साधपणाथी अष्ट हुओ जिम एक मनुष्य
 नो एक देस ठेदाणो ते देसथी अष्ट कहिये पिण सर्व
 थी अष्ट न कहिये इहां देसथी अष्ट होय तेहने पहि
 ला ७ प्रायचित्त कह्यो अनें सर्वथी अष्ट होय तेहने
 ३ प्रायचित्त ऊपरला कहाबे (ताउ) सबदनो निर

ण्यु करजो दसवी कालक अध्येन दूसरे गाथा ४
 (इञ्चैवितान विणय जरागं) बले घणा ठामें (ताउं)
 देवलोगाउ [आउखयण] इत्यादि [ताउ] शब्द
 तेहथकी भृष्ट जाणवो तथा श्री जिन मारगमा व्यव
 हार प्रधान कह्यो ते सूत्र साखें कहेवे चरथें दिह्वा
 लीधां पवे जेप पालटयो तो कांइ केवल ज्ञान उपजा
 पवे मोह्क तो न अटकती पिण विवहार राखवा मां
 टे ग्रहस्तनो जेप उतारयो १ युगलीया चाई बहन
 भोगकरे ते मरीने देवलोक जायवें ते काम आज
 कोई करेतो महा अनार्थ कहवाय व्यवहार मारग
 लोप्या माटे जीवहिंस्यातो सरीखीठे पिण लोक वि
 रुद्ध माटे ए कामतो महा दुपण कह्यो २ प्रचूजाण
 ताहजे २ साधूनें मारस्यो तो पिण व्यवहार राखवा
 मांटे भरज्योवे ३ श्रावग आरंभ परिग्रहमा वेठोठे पि
 ण चोशई वस्तु न लेवी कही विरुद्ध माटे लोक लज
 नीक माटे ४ वीर जाणता तो हुता माहिरा रोगनी
 स्थिति पाकीठे पिण विवहार राखवा तथा उपधना
 उपगार सारु जे २ उपध कीधो ५ साधू वरसातमें
 थानक गवेखे पिण एकली स्त्रीना घरमां ऊनो न र
 हे ६ मारगमें चालता हरीकाय ऊपर पगलागे पिण
 लोक व्यवहारें स्त्रीना संघटो न करे ७ राजा परमुख
 मरणनी असिजाई कही ते पिण लोक विरुद्ध माटे
 केवली तो रात्रेदिन सरीखो देखेवे पिण लोक व्यव

हार माटे रात्रे न चाले ९ मास अने चोमास उप्रंत
 साधू एक ग्रामें रहे नही स्नेह बंधनना जयथी पिण
 रहनेमी राजमतीने देखी क्षणमात्रमें डिग्घ्या पिण सा
 धू जघनतो ७० दिनको चोमासो करेहीज १० सत्तु
 कारमा सो जणानो आहार नीपनो ते माथी १ सेर
 आहार न ल्येवें अने घरमां १० जणा निमित्तें आ
 हार थयो तेमांथी सेर आहार लेवें सत्तुकारनो आ
 हार लेनां लोकहेलें अने जिन मारगनी लघुतालागे
 ते माटे न लेवे ११ केवलीने आहार सूऊतानी बुद्धे
 असूऊतो आणीदितो नहीकरे अणें उदमसत सूऊता
 नी बुद्धे असूऊतो खावे पीवे १२ हिवे पहिलो आरो
 जस्ये बीजो आरो बेसस्ये तद् सरब हुंडक मिली री
 त बंधसे सूत्र पाठे जे आज पठे मंसनु आहार करे
 तेहनी बायो पिण बरजवी एहवी आर्यरीत व्यवहार
 बंधास्ये पठे प्रनूनों जन्मथास्ये १३ बले व्यवहारे
 अशुभते तिहां सुधी उत्तम पुरुषनो जन्म पिण न
 थाय १४ बरसातमें गुरुने बाधा ऊपनी एक सिष्य हूं
 तो न प्रठू हिंस्यालागे अने बीजो सिष्य परठवे एए
 मां व्यवहार सुधकुण अने अराधिक कुण १५ मल्लीना
 थ स्वामी अबेदी हुंता पिण रात्रे आरज्यामें रहिता
 १६ साधु चारित्रथी जोग जागो ठे काहले विहाणो
 गृहस्त थास्ये एहवोठे पिण ते जेलो आहार करेठे
 अने ग्रहस्तठे पिण जाव चारित्र आयोठे तो पिण

जे लो आहार करे नही जेपन पहिरंगो ते माटे १७
 सुकमालका साधवी सरीर पाउंसियाथई पिण गुर
 णी उदीरीने न्यारी न करी व्यवहारमां हती ते माटे
 पोताने मेलें जुदी थईते १८ इत्यादिक व्यवहारमां
 बोल घणांते ते सूत्रथी जाणवा प्रश्न ७० हिवे कोई
 एक मूढमती इम कहेते जे परने हणवा नही हणावे
 नही हणता अणुमोदे नही ते दयाते पिण मारता
 पासेथी बुडावे तो पापलागे उणरो जीतव बांठयोउ
 णरी सरागता आई अनें ठुं कायरो शस्त्र तीखो
 करयो अनें जगवंततो रागद्वेष करमारा बीज कहा
 ते ते जणी मारताने बंचावे अने बंचावीनें धरम जा
 णें तां तेहने १८ पापलागे एहवी परूपणा करीने लो
 कानाहीया दया रहित करेते तेहनी साख प्रथमतो
 साधू ऊपरे नसीतनी देवेते ॥ उदेसे १२ मे (जेजि
 कखु कोलुण वनियाए अनयरे तरस प्पाणजाय) इ
 त्यादि (जाव बंधइ बंधंतवा साइजइ ॥ जे जिक्खु
 मुयइमुवंतवा साइऊइ) जोवो (कोलुण) कहतां
 अनुकपा निमिते त्रस जीवने बांधे तथा खोलता प्रा
 यचित आवे इम कहेते ॥ ते उत्तर ॥ इहां कोलुण स
 ब्दते आजीविका निमिते जाणवो पिण इहां अणुके
 पानो अर्थ नही जाणवा ते साख दुःख विप्राक सूत्र
 मध्ये पहिला अध्याने गोतम स्वामी गोचरी गया अ
 ने निरुयारीने दीठो ते निरुयारी (कुलण विडिप्राए)

जिह्वा मागेठे ते, आजीविकाने अर्थे मागेठे पिपि
 अणुकंपा निमते स्युं जिह्वा मागसी ७१ बले तुम क
 होठो जे जिणरिखीये अणुकंपा करी रेणा देवीकेसा
 हमो जोयो तो अनुंकंपाया खोटीठे तेहनो उत्तर पा
 ठमेतो अनुंकंपानो नामनथी ज्ञाता अध्येन ९ जि
 णरिखीयाने रेणा देवी (कलुण) बचन कयाठे ते
 विसयना दयामणा बचन सुणीने रेणा देवीना अनु
 कुल उपसर्ग थकी जिणरखीयानो (समुप्पन्न कलु
 णजावे) इहां [कलुण] शब्दे विषय विकार मोह
 जाव उपतो ॥ बली तेहनं रहस्य इणपाठ आगे से
 लग जद्ध पूठथी नाख्या पळे तिवारे रेणादेवी आय
 ने निसंसाकहता निरुपस ते दया रहित इण पदमें
 तो दयारूप अनुंकंपा जाणवी अनेन (कलुणा) ते
 करुणा मोहरहित जाणवी एवे पद जुदा कया पिण
 इहां (कलुण) शब्दे तो घणी ठामेठे उत्राध्येन ३२
 गाथा १०३ में [कारुणदीने हीरमे चइस] इहां
 [कारुण] शब्द ते विपई जीव दयामणा दासे
 हा [कारुण] नों अर्थ दयामणानोउते तथा सुय
 डांग १ अध्येन उदेसे २ गाथा १७ मी [जइकाए
 णियाकासिया जइरोयं तिय पुत-कारणा दवियं जि
 क्खुसमुठियं नोल जंतिणसंतवित्तय १] इहां पिण
 (कलुण) शब्द मोहनो कयाठे बले एहज सूत्रे अ
 ध्येन ४ उदेसे १ गाथा ७ मी पद-२ (कलुणा वि

णिय मुवग सिताणं) इहां पिण स्त्री मुः साधु समी
 पे आंवीने कः करुणा विलाप विनय वचने करी ती
 जा पदमें कह्यो ते स्नेह वचन बोले इहा पिण (क
 लुण) गठदे मोहज जाणवो तथा एहिज सूत्रे अ
 ध्येन ५ में उदेसे १ गाथा ७ मी [तेडळमाणाकलु
 णंथणंती] इहां (कलुण) शब्द रुदन आक्रंदनोठे
 तथा इणीज उदेसे गाथा १२ मी (सयायकम्मं पु
 ण घम्मठाणं) इहा (कलुण) शब्द दयामणा ताप
 स्थानकनोठे बले इहां हीज गाथा २५ मी पद २
 [अट्टस्सरेते कलुणं रसंते) इहा (कलुण] शब्द क
 रुणा प्रलाप करवानोठे तथा इणे अध्येने उदेसे २
 गाथा ४ पद ३ (तेडळमाणा कलुणंथणति) इहां क
 लुण शब्द करुणा स्वररुदननोठे तथा इणेज उदेसे
 गाथा ८ पद २ (जंसोयतताकलुणं थणंति) इहां
 कलुण शब्द दीन स्वरनोठे बले गाथा १० पद ३
 (ते सुलविद्धा कलुणंथणंति) इहां पिण कलुण श
 ब्द रोजनोठे बले गाथा १२ मी पद २ [बुइतिते
 कलुणं रसंतं] इहां कलुण शब्द पुकारनोठे इत्यादि
 (कलुण) शब्द मोहरुदननो दीसेठे बले प्रश्न व्या
 करणमें प्रथम संवर द्वारमध्ये पहिला महा व्रतनी ४
 थी जावना मध्ये साधु गोचरी करतो थको [अदि
 णे अकलुणो] अः कहता दीन पणा रहित अः द
 यामणारहित गवेखणाकरे इत्यादि (कलुण) दया

दयामणानो दीसेवे ते माटें नसीत सूत्रमा कोलण
 शब्द कह्यो वे ते आजीविकानिमिते तथा मोहनें नि
 मत्तेज जाणवो अने त्रस शब्दमा ग्वादिक चोपदादि
 क जाणवा तेहनें मोहनिमतें ग्रहस्तादिक ऊपर मोह
 ते राखे ए खुलाथका घासादि जाडकरस्ये त
 था चोपदादिक ऊपरे मोह ए वांध्या चूरुयामरेवे
 गोडां घासादिकचरस्ये इम जाणी बुटा वाधे वांध्यो
 गोरु तो साधुने प्रायचित्त आवे पिण इहांतो निर्यु
 क्तीमा बले टडामालिरुयोजवे जे अगनादि पलेवडो
 लागा मूकेतो दोष नथी पिण पाठमेंतो अगननो ना
 मज नथी तो तुमे लायमासुं काढता दोष कहोवो ते
 सूत्र देखामो बले जिणरखीयानी अनुकंपा कहोवो
 ते घणुं खोटोवे बले अणु जोगद्वारमां कलुणरस क
 ह्योवे ते जिणरखीयाने उपनोवे ७२ बले दया उ
 थापक कहेवे उपासकदसामां चूलणीपियाचद्रा मा
 तानें बंचाई अनें सकमालते अगिमित्ता जारजाने व
 चाई तेहने पापलाग्यो तेहनुरुत जागो यासाख दे
 खाईने लोगांनें जर्म पावेवे तेहनुरुत्तर उपासग द
 सा सूत्रे अध्येन ३ चूलणी पियानें आधी रात्रसमे
 देवता कह्यो कतो तुं धरम बोडदे नहीतर थारी मा
 तानें थारां मूढा आगे ल्याई मारस्युं जद चूलणी
 पिया जाणयो ए कोई अनार्थ दीसेवे तो हूं पकडलुं
 जद ऊठीने चूलणी पिया देवताने पकरवा लाग्यो

जद देवता तो परोगयो अनें थांचो आपरे हाथे आ
 यो जद थांचानें पकडीनें मोटे २ शब्दे करीने को
 लांहल शब्दकी जद चद्रामाताने आवीनें कह्यो अ
 नें सिकमालने आगीमिता आय कह्यो (जगवए ज
 गंपोसह जगनियमे) कह्यो ते स्या चणी, कह्यो इ
 हांतो पोसहसालामां पढमा आदरीनें पोसामे वैठावे
 सावर्जना पचखाण कीधावे अनें रात्रे मोटे शब्दकरी
 बोलवो नही अने बोल्यावे बले पोसामे (मम्ममाया
 इ मम्मं जारियो) इम जाणवो नही ते साख जगव
 ती सतक ८ मे उदेसे ५ में आवक सामाइक कीधा
 तिहा (तरुसणं एव चवईनोमेवमाया नामेपिया नो
 मेजाया णोमे जगनी णोमेजळा णोमेपुत्ता णोमैधुया
 णोमे सुणहां पेळ्ळ वंधणे पुणसे अवोठिणे चवई) इ
 म कह्या माटे सामाइकमे इमें न जाणवो तो पोसा
 मा पढमाभां क्रिम जाणवो अने यांतो जाणयो (मम्मं
 माया) सिकडाल जाणयो [ममंजारिया] ते माटे प्राय
 ङित आव्यो लीधो पिण दयाना परिणाम आणीबुडा
 वेतो पोसह न चांगे ७३ वले बादीकहे अर्णक श्रावकने
 समुद्रमा जातां देवता डिगावा आव्यो तिण कह्यो हे
 अर्णककैतो तुं धरम मूकदे नहीतर थारी जिहांज
 समुद्रमें डबोयसूं जद अर्णक श्रावक धरम मूकपो
 नही जो जीव बचाया धरम होयतो अर्णक धर्म क्यूं
 गेडयो नही ते उत्तर अरे मूढ तुमारी घटमां ऐसी २

दयामणानो दीसेवे ते माटे नसीत सूत्रमा कोलूण
 शब्द कह्यो वे ते आजीविकानिमिते तथा मोहने नि
 मत्तेज जाणवो अने त्रस शब्दमा ग्वादिक चोपदादि
 क जाणवा तेहने मोहनिमते ग्रहस्तादिक ऊपर मोह
 तेराखे ए खुलाथका घासादि जाडकरस्ये त
 था चोपदादिक ऊपरे मोह ए बांध्या नूख्यामरेवे
 गोडां घासादिकचरस्ये इम जाणी बुटा बाधे बांध्यो
 बोरे तो साधूने प्रायचित आवे पिण इहातो नियु
 क्तीमा बले टळामालिख्योजवे जे अगतादि पलेवडो
 लागा मूकेतो दोष नथी पिण पाठमेंतो अगननो ना
 मज नथी तो तुमे लायमामुं काढता दोष कहोवो ते
 सूत्र देखामो बले जिणरखीयानी अनुकंपा कहोवो
 ते घणुं खोटोवे बले अणु जोगद्वारमां कलुणरस क
 ह्योवे ते जिणरखीयाने उपनोवे ७२ बल दया उ
 थापक कहेवे उपासकदसामां चूलणीपियाज्जद्रा मा
 तानें वंचाई अने सकमालते अगिमित्ता ज्ञारजाने व
 चाई तेहने पापलाग्यो तेहनुंवृत जागो यासाख दे
 खाईने लोगानें जर्म पावेवे तेहनुं उत्तर उपासग द
 सा सूत्रे अध्येन ३ चूलणी पियानें आधी रात्रसमे
 देवता कह्यो कतो तुं धरम गोडदे नहीतर थारी मा
 तानें थारां मूढा आगे ल्याई मारस्युं जद चूलणी
 पिया जाणयो ए कोई अनार्थ दीसेवे तो हूं पकडलुं
 जद ऊठीते चूलणी पिया देवताने पकडवा लाग्यो

जद देवता तो परोगयो अनें थांजो आपरे हाथे आ
 यो जद थांजानें पकडीनें मोटे २ शब्दे करीने को
 लाहल शब्दकी जद नद्रामाताने आवीनें कह्यो अ
 नें सिकमालने आगीमिता आय कह्यो (जगवए ज
 गपोसह जगनियमे) कह्यो ते स्या जणी कह्यो इ
 हांतो पोसहसालामां पढमा आंदरीनें पोसामे वैठावे
 सावर्जना पचखाण कीधावे अनें रात्रे मोटे शब्दकरी
 बोलवो नही अने बोल्यावे बले पोसामे (मम्मंमाया
 इ मम्मं चारियो) इम जाणवो नही ते साख जगव
 ती सतक ८ मे उदेसे ५ में श्रावक सामाइक कीधा
 तिहा (तरसणं एव जवईनोमेवमाया नोमेपिया नो
 मेजाया णोमे जगनी णोमेजळा णोमेपुत्ता णोमैंधुया
 णोमे सुणहा पेळ बंधणे पुणसे अवोठिणे जवई) इ
 म कह्या माटे सामाइकमे इमे न जाणवो तो पोसा
 मा पढमाभां क्रिम जाणवो अने यांतो जाणयो (मम्मं
 माया) सिकडाल जाणयो [ममंचारिया] ते माटे प्राय
 त्तित आव्यो लीधो पिण दयाना परिणाम आणीठुडा
 वेतो पोसह न जांगे ७ शब्दे बादीकहे अर्णक श्रावकने
 समुद्रमा जातां देवता डिगावा आव्यो तिण कह्यो हे
 अर्णककैतो तुं धरम मूकदे नहीतर थारी जिहाज
 समुद्रमें डबोयसूं जद अर्णक श्रावक धरम मूकयो
 नही जो जीव बचाया धरम होयतो अर्णक धर्म क्युं
 ठोडयो नही ते उत्तर अरे मूढ तुमारी घटमां ऐसी २

कुबुद्धी किहांथी उपजेवे ॥ आपणो धरम गोडीने प
 रकाने किम वचावसी अने इण लेखेतो, थां उजाडमें
 कोई अनार्य पुरुस मिल्या तिणा तुमनें कह्योके तो
 तुम थारो जेप्र मूंकियो नहीतर थाने सगलानें मार
 स्युं तो कहो थें धरम मूंकिसो के नही १ तथा कोई
 क गृहरत घृतनो नेमलीधो पिण नीलोचरीनो नेम
 नही लीधो जद साधुजन उपदेस दीधो तिवारे गृह
 स्थ बोल्यो माहिरे तो घी बूटोवे पिण हरीसुं काम
 चलेवे अने अबे घृतनो नेम जांजसुं अने हरीनोने
 म लेस्युं तो कहो ए काम होयके नही २ तथा अवि
 ग्रहो मूकीने बियावच पिण करे नही ३ तथा बे सा
 धू हता तिणां काउसग कीधा प्रमाण सहित एतलें
 गुरु आया जद ध्यान मूकी अधूरोने सेवा सांचवे
 नही ४ तथा कोई स्त्री साधुनें कहिसी हे साधू तुं मु
 ऊनें जोगवो नही तो हूं मरिस्युं तो कहो आपणो ध
 र्म किम मूकसे ५ तथा कोई मांसा आहारी धरमी
 पुरसने कहिसे जो तुं मांस खावे तो मूंकुं नहीतर मा
 रस्युं तो कहो आपणो धरम किम मूकस्ये ६ तथा
 कोई बाणीयाने राजा कहिस्ये जे तुं अजह्द खावे तो
 राजदेउं तो कहो अजह्द किम खावस्ये ७ तथा सा
 धुने कोई गृहस्थ आधी रात्रने कहिस्ये थें बखाण
 मौठे २ शब्द करीने सुणाओतो थारो आविक होस्युं
 ॥ तो कहो साधुनें आधीरात्रिये बखाण किम सुणाव

स्ये ८ तथा साधुनें कोई गृहस्त कहिस्ये थें सुजने
 आहार देओतो हू थारे समीपे साधुपणो लेस्युं तो क
 हो साधु गृहस्थनें आहार किम देस्ये ९ इत्यादिक
 मुक्तिघणीवे तिम अर्णक श्रावक आपरो धरम मेलीने
 पैलाने किम बचावसी १० तथा देवता पिण इम न
 कह्यो जे तुं धरम नहीं ढोडसी तो पिण जहाजरा स
 र्व मनुष्याने कबोयसुं ज्यारो पाप तोनें लागसी अने
 देवतातो इम कह्योवे तुं मरिस्ये तो धर्म ढोडदे इति
 रइस्य तुंमे अर्णक श्रावकनी युक्त कहो ते घणी अ
 युक्ति कहोवो प्रश्न ७४ तथा केतलायेक दुष्टी कहेवे
 जो अनुकंपा करयां धर्म होयतो नमीराज रिखीनें
 इंद्र कह्यो थारी नगरी धन इस्री पुत्र घोडा हाथी
 लोक बलेवे ते साहमो जोयो तिवारे नमीराजा साहमा
 जोयो नहीं जो अनुकंपामा लान जाणता तो साह
 सुं क्यों नहीं जोयो ते उत्तर इहां इद्रेतो परिद्धा की
 धीवे मोहनी करम उपसम्या नहीं उपसम्या माटे इ
 हा अनुकंपानो नामज नहींवे हे रवामी तुमारो अंते
 वर बलेवे साहमोजोवो इम मोहनी उपजावीवे तिवार
 रे स्वामी बोल्या मेंतो मुंकावे पिण इंद्र इम नहीं
 कह्यो जो थारी आख्यामे इमृतवे साहमो जोवो तो व
 लतोरहे अने जो इम कह्या हुंतातो नमीराज कहता
 अहो ब्राह्मण मुजने या अनुकंपा करवी कलपे नहीं
 तथा कलपे युंही नहीं कह्यो जो थें ए प्रश्न अनुकंपा

मां ठरावसो तो आगले प्रश्नमे महलनो कोटनो चो
 रनो बैरीनो जंडारनो एमां केही अनुकंपा घालस्यो
 ए तो सर्व प्रश्न परिख्यानाठे नहीतर इंद्रतो
 समदृष्टीठे इम किम कहिस्ये तुं साधपणो मूकीने प
 ठे लीजे गढकोट महिल कराविने चोराने बस करी
 ने बैर्याने बस करीने यज्ञ करीने कोठार जंडार व
 धारिने तुं जाजे हे क्षत्री राज बले थें यो जेप मूकी
 ने तापस पणो आदरो इसा बचन साधूने सम
 द्रिष्टी किम कहिस्ये जो जाणज्यो एतो परिक्हाहीज
 कीधीजे जोईये नमीरायरिखीने समकित मोहनी चा
 रित्र मोहनीने विषय कपाय उपसम्याठे के नयी उ
 पसम्या तुमे नमीरायनो नाम लेईने पोतानी आत्मा
 रुत्रोवोठो अने बीजाने पिण रुत्रोवोठो तो तुमे दया
 उथापक दीसोठो प्रश्न ७५ केई एक दया उथापक
 इम कहेठे जे साधूने इम न कहिवो जीवांने मती मा
 रो तेहनी साख देवेठे सुयगडांग अध्येन २१ में (अ
 सेसंअखयंचात्रि सवे दुक्के तिवापुणो बजेपाणा न ब
 ऊति इति वायं न निसरे १) तेहनुं उत्तर अरे दिवस
 ना जूजाठ इहातो एकांत पद्धें ना कहीठे एकांत लो
 क शाश्वतोठे एकांत अशाश्वतोठे इम न कहिवो ए
 लोक सर्व सुखीठे ए लोक सर्व दुःखीठे इम न कहि
 वो ए चोरठे परदारकठे ए नाहरठे एहनें मारो तथा
 मतिमारो इम पिण न कहिवो जो मारो कहेतो तेहना

प्राण जायवे अने मतमारो इम पिण कहेतो प्रत्यक्ष
 लोक विरुद्धवे ए चोर मुक्युं थयो बले चोर परमुख
 अकारजकरे तिवारे लोक इम कहे जेहवे ए चोर चो
 री करेवे ते साधुनों उपगारवे इम चोरजारनुं पद्दी
 ठहिरयावे ते माटे साधुजी मारो मतिमारो काई न क
 हिवो पिण स्वचावे सहि जे कोई आवीने पूढे स्वा
 मी चोर मारवानो स्युं फलवे तिवारे साधु हिंस्यां
 ना फल कहिदेखाडे चोर ठोरवानो फल पूढेतो तेहवा
 फल कहि देखाडे बले तुमारे मते चोर मारे अने उ
 गारे एवे काम बरोबर बतो साधुने कोई आवीने क
 हे स्वामी मुकने चोर मारवानो पचखाण करावो तो
 साधु सुखे करावे हिवे कोई आवीने कहे सांमी मुक
 ने चोर मारतां उगारवानो पचखाण करावो तो सा
 धु न करावे जो वेहुंवाते बरोबर सैण अवगुणेंबतो
 वेहुंना पचखाण क्या नही करावे अने तुमें एक पद
 खाचसो अने निरत नही करस्यो तो सुंयगंगा
 २१ में अध्येन [आहाकडानि नुज्जति अण मणस्स
 कम्मणा उवलितेति जाणेज्जा अणवलिते तिवापुणो १
 एतेहि दोहि ठाणेहिं बबहारो न बज्जति ततेहिं दोहिं
 ठाणेहिं अणायारंतु जाण ए २) तो जोवो इण मा
 थामे कह्यो जे साधु आधा करमी आहार खावेते क
 रमासुं लिपावे अथवा आधा करमी आहार खायासुं
 करमाथी न लिपावे इम वे चाषा बोलवी वरजीवे के

नहीं प्रिय-यां गाथामें तो २ जापा दोनोइ नहीं बोह
 घी कही ते रहेस्यवे साधू सुजतानी बुद्धे असूजतो
 खायो, सुजतानी बुद्धे करी असूजतो खायो तो कर्मा
 सु नही लिपावे तथा कारणविसेषे आधा करमी आ
 हार खायां निज आत्मा निंदतां करमांसुं न लिपावे
 इम अरथ करयो तिम (बळेपाणा न बजंति) एह
 नो अर्थ पिय इम करवो जे चोरादिकने पकडयां ले
 जायवे तेहने बीचमे पडी इम न कहवो जे तूं चोर
 ने गोरु इम कहतो साधूनी संक्या ऊपजे ते जणीन
 कहिवो तथा ठाकुर चाकरने मारेवे चाप पुत्रने मारे
 वे चरतार स्त्रीने मारेवे राजा प्रमुख नाहरकी सिकार
 खेलता जायवे इत्यादिकने बीचमे पडी इम न कह
 वो जे एहने मतिमारो इति रहस्य [बधे पाणा]
 ते प्राणीनो बध करो इमतो कोइने न कहिवो अने
 (न बधति) अने [माहणो] ए २ स्थुं फेरनथी
 सुयगमांग अध्येन १७ साधूने १३ नाम कहा ते
 मां [महाण तिवा] इसो नाम कहावे ते स्या ज
 णी (महाणो) मतहणो किणही जीवने (न बधति)
 बधमा हणवामा स्यु फेरवे बले ए गाथानो अर्थ एम
 चासेवे ए लोक सर्व शाश्वतोवे ए लोक सर्व अशाश्व
 तोवे ए लोक सर्व सुखीवे ए लोक सर्व दुःखीवे ए
 लोक सर्व प्राणीनो बध करेवे ए लोक सर्व प्राणीनो
 बध नहीं करेवे इसावचन साधूने बोलवा नहीं ए

कांत वचन कहेतो प्रत्यपत्नी टलजाय जो सर्व लो-
 क प्राणीनो बध करेवे इम कहेतो संयतीको विवेद
 होय अने सर्व लोक प्राणीको बध नही करेवे इम
 कहेतो असंजतीको विवेद हो जाय ते नणी एकांत
 वचन बोलवा नही प्रश्न ७६ तथा केई एक दयाही
 ण कहेवे समुद्रपालजी महिलामें बेठाथकां चोरने
 मारवा लेजाता देखी वैराग जाव ऊपन्यो तिणे कह्यो
 (अहो असुहाणं, कम्माणं) इत्यादि कही मातापै
 अज्ञा मांगवागया पिण चोरनेतो नही बुढायो जो ध-
 रम होवेतो किम नही बुढायो तेहनो उत्तर उत्तराध्ये,
 न १९ में मृगा पुत्र महिला बैठाथको साधूने देखी
 जाती समरण ज्ञान पास्यो जद वैराग जाव ऊपन्यो,
 मातापै गयो पिण साधूने बंदना करवा नही गयो
 तो थारे लेखें साधूने बंदणा करता पाप लागतो दी-
 गेवे पिण इम जाणजो मृगा पुत्र अने समुद्रपाल, ए-
 वेऊं वैराग पास्यो संजमरी आज्ञालेता विलंब नही
 करे ते नणी समुद्रपाल चोरने नही मुकाव्यो पिण
 चोरने नही मारेतो वनो लाज जाणेवे तथा बाल १
 आवक बोल्यो हो साधुजी आप कहोतो पोसो करुं
 आप कहो तो दिख्यालैऊं जद साधुजी दिख्या देवे
 पिण जेज निमित्तें पोसो नही करावे तो जोउ पो-
 सामें पापतो नहीवे, संजमरी जेज नही करावे, तिम
 दृष्टांत समुद्रपाल ऊपरें जाणज्यो ७७ तथा केतला

इक इम कहेवे तुमें अणुंरुपाकीधा धर्म होयतो नेमनाथ स्वामीनी अतिसयथी सो सो कोसमें देवतारो उपद्रव्य न होतो जद देवता द्वारामतीने प्रजाली जद नेमनाथजी द्वारका बचावाने आया क्युं नही तो जाणजो अनुरुंपा कीधां धरम नही इम कहेवे तेहनो उत्तर अहो भाठी मतिना धरणहार एहवीर अयुक्ति करीने लोकाने दयाहीण किम करोगे जगवंततो के वल ज्ञानमे जठने गुण देख्यो होसी तिण देसमे विहार कर्यो होसी तिहांनी क्षेत्र फरसणावे ते टाली किम टले वली निश्चै नयमे होणहार किम टले केवल ग्यानी ज्ञानमे दीठावे ते जाव होयवे जगवति सतक १ उदेसे १ (जंजहा जगवया दिठं तंततहा परिणमिस्सति) इति वचनात् जो थे अणहोति युक्त मेलोगे तो ए लेखे रहनेमी राजमतीनो संयोग गुफामे मिलवो अने रहनेमिनो डिगवो नेमनाथ के वली जाणता वां राजमती आया पहिली साधामें सामामेली जिताया नही तो तुमारे लेखें वानें भिगता राखवामें धर्म नथी पिण तुमनें मोहीनीनें उदे सम ऊ काई नथी तो जाणजो द्वारका नगरिनो दाहदेता वरजेतो घणो धर्मवे पिण जगवंत तो जिण देसमा जाता गुणदीठो तिण देसमें विहार कीधोवे प्रश्न ७८ तथा केतालाइक दुष्ट कहंवे जीवनें उगारयानो ला ज होय तो चेनाकोणकनी लडाई थई तिणमें १ को

६० लाख मनुष्य सूबाठे बले अनेक जीवसूबाठे
 जो जगवंत चेडावोणकने वरजता हुंता तो इतरा
 जीव वचता पिण वरजां धरम नथी ते उत्तर अरे
 अनुकंपाना द्वेषीयो जगवती सतग ९ उदेसे ३२ ज
 माली आवीने जगवतने कह्यो जे हुं केवली थयो तु
 म पासैथी विहार कीभोहतो अने केवली थको इहां
 हुं आव्योबु इहां जगवंतने जमालीनें पिष्ट क्यां न
 कीधो अने गोशालो आव्यो तिवारे चला चला उ
 त्तर प्रश्न कहीने पिष्ट कीधो तो स्युं इहां लान न
 होयतो तथा दसाश्रुत खंधमां पोताना साधू साध
 वीए नियाणा करया हता तेहनें प्रायचित देई शुद्ध
 करया बले महासतकनें प्रायचित गोतमने मेली दि
 वराव्यो इम शुद्ध करया अने अतगढमां नेमनाथ
 स्वामीये ऐमंता अणगारने निमत परूपता शुद्ध
 क्या न करयो तथा निरावलिका ५ मा सोमल ब्रा
 म्हणने आवगने निष्ट हुतो देख आप आया क्यों
 नही बले गयाता १३ से नंदण मणीयार आवक प
 णार्थी भ्रष्ट हुता जगवंत समजावणे आया क्युं नही
 बले कुंडरीकने शुद्ध करवामां सामान्य केवली आया
 क्यु नही चला एमा तो तुमारे लेखे कोईने असंजम
 जीतव्य नही वधतो हतो कोईने अवगुण पिण न
 ही हुंतो साहमो गुण हतो आराधिकहो तो ए कामे
 क्यां न कीधो पिण मूढ मती इम नही बिचारे जावी

पदार्थनें कोण भेट सके तथा जगवंततो चंपा नगरी
 आवता गुणदीठो १ राणी काली सुकाली आदिदे
 दिक्का लीधी ते नणी जगवंत चंपा नगरी पधारस्यो
 ठे तथा उववाई सूत्रमां कोणक आदि देईनें सर्व पर्व
 दामां जगवंत उपदेस दीधोतो बहीज बत्र कायने हिं
 स्या करतां घणादुख पावेठे इत्यादिक घणो उपदेस
 देई राख्योठे पिण कोणक क्रोधनें वसे संग्राम कीधो
 ठे तो जगवंत स्युं करे पिण उण संग्रामनें ठोकोतो न
 गवंत लाज घणो जाणेठे प्रश्न ७९ तथा केई एक
 अज्ञानी इम कहेठे जे श्रेणक राजा राजगृही
 मा अमार पडहो बजायो जीवाहिंस्या टलाई तेमां ए
 कंत पापठे एतो राजानी नीतिठे पिण धर्म नथी ते
 उत्तर अरे बाल अज्ञानी राजनीत होयतो राजनीत
 ना पालणहारा जेतला राजाठे तेतला सर्वनें राजनी
 त एहवी जोईये राजनीत तो सूयगमांग १८ में अ
 ध्येन अधर्म पद्ध बखाणो तिहा वर्णव्याठे तथा उववा
 ई सूत्रे कोणकराजानी राजनीत बखाणी जंबुद्वीपप
 त्तोये चरतेश्वरनी राजनीति बखाणी (तथाणं च
 पाए नयरीए कुणिय नामं राया परिवसई महया हि
 मवंत महंत मलय मंदर महिंदसारे अचवंत विसुद्ध
 दीहराय कुलबसे सुप्प सुते निरंतर राय लक्षण वि
 राययंगमंगे बहुजण बहुमाण पुजिय सबगुण समी
 च्च स्वत्तते प्पमुईए मुद्धाहि सिते माउ पियुसुजाय द

। पत्ते सीमंकरे सीमंधरे खेमंकरे खेमंधरे मणसिंदे
 णव्रयप्रिया जणव्रयपाले जणव्रय पुरोहिहसैउक
 केउकेरेणपवरे पुरिसवरे पुरिससिंहे पुरिस बग्घो
 रिसासीविस पुरिसवरपुंडरीए पुरिसवरगंधहृत्थीए
 म्हे दित्ते वित्ते त्रिठिन्ने विपुल जवण सयणासण
 णण वाहणाइएणं बहुधन बहुज्जाय रूवरय आउं
 । पउंग संप्यउत्ते त्रिठिडिंय पउरज्जते पाणे वां
 ५ दासीदास गोमहिसगवेलगप्प जुय पडिपुण जंत
 कौठागारा वागारे वल्लव दुवल पत्तामिते उहय कंटयं
 न्हय कंटयं मलियकंटयं उधिय कंटयं अकंटयं उय
 सतु मिलियसतु उठियसतु निजियसतु प्पगईय
 सतु ववगए दुज्जिक्ख मारीय जय विप्पमुक्कं खेमं
 सुज्जिक्ख पसंतडि वर रजप साहेमाणे विहरति) ए
 राजनीतना लक्षण क्ख्या तथा सूयगडांग १८ में
 घणो विस्तारठे पिण अमार पडहो वजाव्यो ए कही
 राजनीति कही नथी राजनीत राज जमावे वैरिमारे
 संग्रामजयपावे एठे तथा ठाणणे ३ ठाणे (त्रिविहा
 अता जोणी पंनता तंजहा सामदाम दंम जेद) बलें
 रायप्रसेनीमां चित्त सारथीना गुण बखाएया राज
 ना कामचलावे तेहवा हुता तैमांपिण अमार पडहव
 जाव्या नही क्ख्यो बलें ज्ञातामा अजय कुमारना गु
 ण वरणव्या तिहां पिण अमार पडहो केरयो क्ख्यो
 नथी ८० बले वादी क्खसी जो जिन मार्गमा पडहो

फेरवानों जीव उगारवानो आचार होवेतो बीजा ग
 जा क्युं नही फेरयो ते उतर दसाश्रुतखंधमां ९ नि
 हाणाना जाव कहा १० में उदेसामां तिहां कह्यो रा
 जाश्रेणक गावमा नगरमां ढढेरो फेरयो जे जे स्थान
 क घरहाट बखार पर्वस्थानक धातुना ठाम सोनी
 नी लुहारनी साला इत्यादिक सूत्रमां ठामना नाम
 घणावे ते थानकनी आज्ञा देरावी जे चाई जेहनेजा
 यगा होवेते वीर प्रज्जुने साधूने रहिवा आपजो हिवे
 अन्य तीर्थी गृहरतनो गवेष्यो स्थानक साधुनल्यै तो
 इहां श्रेणक राजाई थानक आश्री ढढेरो फेरयो एका
 म कोई बीजे राजाइ कीधो नथी पिण ए काम जिन
 मार्गीनाके साधूना द्वेषी मिथ्यातीना बले अंबड श्रा
 वक अनेक दोष टालेवे बीजा श्रावक नथी टालतो
 तो स्थुं अंबड श्रावक ए काम रूडो करयो बले कृ
 षण दिख्यानी दलालीकरी विजाराजा कोई नथी की
 धी ते माटे कृषण दलाली करी ते रूडीके चुंडी इ
 त्यादि जोवो तमे स्थाने कहोवो जे धर्म हायतो बी
 जाराजा अमार पडहोवजायो क्युं नही हिवे श्रेणकने
 स्थुं फलथयो ते कहो ढढेरोफेरयो अने साधूने थान
 कनी आज्ञा देवरावी एहना फल जलाके चुडा एके
 रणीगुजके अगुज ए करणी बोधमती हुंता ते दिव
 सनीके जिन मारग पांस्या ते पजली ते कहो ॥उपास
 कदसामां ८ में अध्येने (तत्तेणं रायगीहे नयरे अशे

या कयाइं अमार घुंठेया विहोत्था) इति वचनात्
इहां राजा समदृष्टी माटे अमारि परुहो वजायोठे अ
मारिसब्द (महाणो २) सब्दमें जिलेठे अने पड
हो वजायोठे ते राजानो ठादोठे जिम सुरियाज देव
ता जगवंतनो दरसण करवा जणी चित्ताव्यो जद
घंटा वजाडी तिणसुं सर्व देवताने ठीकपमे तिम श्रेण
कपरुहवजायो जद राजग्रहीमा ठीकपडी अमारि श
ब्द ते दयानोठे ६० नाम मध्ये प्रश्न व्याकरणे प्रथ
म संवर द्वारमध्ये ॥ अने तुम इम कहोठो जे राजा
श्रेणकने कोई कारण परुयोठे उठव महोठव आदेदे
ई तिणसुं पडहो वजायोठे ते उत्तर अरे अज्ञानीयो
मुखहीसुं उठव कारण कहोठो पिण सूत्रमे होयतो दे
खाडो तथा तुमे जोमीठे॥गाथा॥श्रेणक परुहो वजावी
यो, इतरीठेहो सूत्रमें वात,॥ कोई श्रेणकने धरम कहे
तिणने लागे हो चोडे जूठ मिथ्यात ॥१॥इणमां तुम
कहो श्रेणकने धर्म कहे तिणने जूठलागे अने मि
थ्यात पिण लागे तो जोवो ज्युंतो तुमारी वात तुम
नेहीज आवेठे माहरी मा अने वाज तिम तुमें पिण
अमारि इसा नामने पाप कहोठो तिण लेखे जूठ मि
थ्यात दोनोहीज लागेठे प्रश्न व्याकरणमा प्रथम आ
श्रव द्वारना ३० नाम क्हाठे तेमां (अमारि) ना
मतो नहीठे अने दयाना ६० नाम मध्ये (अमाघा)
तो इसो नाम दयानोठे तो श्रेणक योहीज शब्द

करायोवे तथा तुमे श्रेणकनें तो कारण बतायो तो इ
 ए लेखे आगे राजा श्रावक हुंता ज्यारां राजमें कसा
 ई बाडा निसंक हुंतो थारे लेखे बले मारवाफना अधिप
 ति विजयसिंघजी राजा तिणे मारवाडमां घणी हि
 स्याटलाई तो विजय सिंघजीरे स्युं कारणबो ते वि
 चारी जोवो तथाबले उत्तराध्येन १३ में चित्तमुनी ब्र
 ह्मदत्त चक्राने कह्यो (जई तंसिजोगे चईउअसतो
 अजाय कम्मायं करे हिएयं धम्मेहिं ठिसवप्पयाणु
 कंपी तोहोहिसिदे बोइयो वियोवी ३२] हे राजा तुं
 जोग गेडवा असमर्थबे तो आर्य करम करो हे रा
 जन्-ग्रहस्तना धरमनें विषे रह्यो थको सर्व जी
 यनी अनुकंपा कर दया पाल इम कह्यो तो जोवोनें
 चक्रवर्तने श्रावक पणोतो आवे नही तो याने आर्य
 कर्म करवो कह्यो ते मासादि परहरवो कह्यो तथा इ
 सा वचन मुनीना सुणने कसाई खानो उठावतो ला
 न थावेके नही ते कहो पिण तुमेतो केहवागे [ध
 म्मपन्नघणाजासातं तुसंकंतिमुढगा] दया धरमनी
 परूपणा करता सकोबो अने दया उयापकतानही
 संकोवो पिण जे कोई सम्यग दृष्टीहिंसा करता वरजे
 तेहनें घणो लानबे ते साख सूयगडांग १ अध्येन ९
 (जंठिन्नं नयतघं एसा अणानियंठिया) इति वचना
 त् ८२ केतलाएक दुष्ट कहेवे जे श्रावक जिवहणवाथी
 निवत्योबे, पिण श्रावकनें जीव उमारवो किहां कह्यो

ठे ते उत्तर चित्तसारथी केसी कुमार प्रते कह्यो [ए
 वं नते खलु अस्मिन् प्रयसैराया अधस्मिन् जावसय
 म् वियणं जणं वयस्स नो सस्मंकरं चरं पवत्तेई तं
 जइणं देवाणुपिया पदेसिस्सरत्तो धम्म माई खे
 ज्जा बहु गुणत्तरं खलुहोक्का पदेसिस्सरत्तो तेसिणं
 बहूणा दुप्पय चत्तप्पय मिग्ग पसुपंखी सिरिसिवाणं
 घायताए बहत्ताए तजईणं देवाणुपिया पदेसिस्स
 रनो धम्मं माईवेद्या बहु गुणत्तरं खलुहोद्या तेसिंघ
 हुणं समण माहणणं निक्खुवाणं तंजईणं देवाणुपि
 या पदेसिस्सरनो धम्म माईखेक्का बहुगुणत्तरं हो
 ज्जा सयस्स विजणवयस्स) पढे केसी स्वामी धरम
 पामवाना न पामवाना ४।४ ठाम कह्या इहां चित्तस्वा
 रथीए कह्यो हे स्वामी प्रदेसीने धर्ममा समजोवोतो
 घणो गुणनीपजे दोपद चोपद जीवाने मारतो रहस्ये
 इहां समणने माहणने दुःख देतो रहस्ये पोतानादि
 सने दंडकर जादा नहीं लेइ एहवो करो ए परजीव
 ने उगारवानो उपाय करयो ते किम करयो ते दोप
 द चोपद जीवाने धली हिंस्याकरे इमतो न जाणो पि
 ण इम जाणजो ए दुष्ट सद्द हणा चित्तसारथीनी
 नथी तिवारे ८३ बली कोई अग्यानी कहे जे एतो
 परजीवना गुण माटे नथी कह्यो चित्तसारथी इतो
 परदेसीना गुण खातिर कह्योते ते उत्तर हे अज्ञानी
 यो जो प्रदेसीना गुणनी खातर कह्यो होवेतो (१३

धम्मिए अधम्माणुए अधम्मथित्ते अधम्मखाति अ
 धम्मजीवे अधम्मपलोइणे अधम्मपलज्जणे अधम्म
 सीले समुदायारे अधमेणे चेव वित्तिकप्पमाणे विहर
 ती हणत्तिंदि जिदग् तिग लोहिय पाणी चंडे रुहे खु
 द्वे साहासिए उकंचण वंचण माया नियडे कूडूकव
 ने साई संप्पयोग वहूलो दूसीले दुबए दुपडि आ
 णंदे आसाहुं सवातो पाणाति वायते अप्पडी विरए
 जाव सवातो परिग्गहातो अप्पमि विरए सावातो को
 हतो जात्रमिच्चा दंसण सल्लातो अप्पडि विरय सवतो
 न्हाणु मदण वण गंध विलेवण सदफारिसरस रूव
 गंध-मल्लालंकारातो अप्पडि विरय सवतो सगम रह
 जाणयुग गिलिथिलीसिया सदमाणिया सयणासयण
 नाणबाहण जोग ज्ञोयण पवित्थिर विहातो अप्पमि वि
 रय) इत्यादि अनार्य कर्म करेवे ते स्वामी तुमे सम
 जावो जिम ये १८ पाप न सेवे एहवी आत्मानो क
 ल्याण थाय एहवो करो इम कह्यो जोईये पिण इहां
 तो ३ पाठ कह्या ते ३ उपगारना कह्यावे ते माटे सा
 धूये पिण परजीव उगारे तेहवो उपदेस देवेवे ते सा
 खं सुंयगडांग अध्येन १७ में (सेवेमिजा अतिता
 जेय पडुप्पना जेयआगमिस्सा-अरिहंता जगवंता
 सवेते एवं माइखाति एवं जासांति एवं पन्नवेति एवं
 परुवेति सवेप्राणाजाव सवे समाण हंतवाण अशावेय
 वा णपरिघेतवा णपरितावेयवा न उदवेयवा एवं स

म्मे ध्रुवे णीति ए सास ए समिच्चलोगं खेयन्ने पवे
 दिति) इहां इम कह्यो सर्व प्राणीने हणवा नही दु
 देवा नही मारिवा नही जगवंत इम कह्योठे यही
 उपदेस साधुनेठे ते माटे चितसारथी केसी अणगा
 ने कह्यो परदेसीने समजावतो घणा गुण नीपज
 ये ८४ बले वादी कहस्ये जिवाने स्युं गुण नीपजे
 णतो प्रदेसीने होसी नहीमारे ते माटे ते उत्तर अ
 दया उथापक थारे लेखे केसी कुमार उपदेस न
 देता अने चितसारथी परदेसीने नही ल्यावतो
 केसी कुमारेने अने चितने स्युं दोष लागतो पि
 जाणज्यो चितना परणाम एहवावां एहजीवां दो
 गा चोपगादी समण माहणादि अने देसमां कोई
 दुःख नही होयतो वारु अने परदेसी समजे तो
 वरु वले प्रश्न व्याकरणमां प्रथम संवर द्वारमध्ये पा
 ठे [इमच सब जगजीवरक्खण दयाठयाए पाव
 णं जगतासुकहिता] इहां कह्यो ८४ लाख जीवा
 नीने तेहना राखवाने विषय कारण एहवी दया ते
 अने अर्थे जगवंत प्रवचन जला कह्योठे बले विचा
 री जीवो ८५ बले वादी कहेसी ए पाठतो पांचोई सं
 वर द्वारमध्यंठे तो स्युं ग्रहस्तने परिग्रहनी रिख्या
 नेमते सूत्र कह्याठे पिण कोई जीव नीवर्ते ते जणी
 सूत्र कह्याठे इम कहेठे ते उत्तर अरे अविवेकीयो तुमं
 सूत्र ऊपर निरत करोगो के नही इहांतो पाठमें फेर

ठे (इमंच सबजग जीवरखण दया ठताए ३ इमंच
 अलिय पिसुण फरम कडुय चवल बयण पगी रखण
 ठयाए २ इमंच परदवहरण बेरमण परिरखण ठया
 ए ३ अबंज बेरमण परिरखण ठयाए ४ इमंच परि
 ग्गह बेरमण परिरखण ठयाए ५ पावयणं जगवता
 सुकहितं) इत्यादि जोवो पहिलामेतो जीव रिख्या
 कही १ दूजामे बचन रिख्या कही २ तीजामे पर
 द्रव्यहरण बेरमणनी रिख्या कही ३ अब्रह्मचर्यथी
 बेरमणनी रिख्या कही ४ पांचमामे परिग्रहना बेरम
 णनी रिख्या कही ५ वले ५ में संबरद्वारे साधू ६
 कारणे आहार करे ते बकाय परिरखणठा इम पाठ
 ठे तो जीवकी जतना माटे तो साधू पहिलो महावि
 रत पालेहीजठे तेइनी साख उत्तराध्येन २८ मे गा
 था ३३ मे पद (ईरीयठाए संजम ठाएए) इहां क
 ह्यो इरीया सोधवाने अर्थे साधू आहार करेठे वले
 गाथा ३५ मी पद ३ जो (पाणिदया तबहेठ) इ
 हां कुंथुवादिक प्राणीनी देयाने हेते साधू आहारगं
 ठे वले ठाणांमे ६ ठाणे पिण कहाठे तो साधूजीतो
 ६ कायनी रिद्धा करेठे तो साधूनो एहवो इज उप
 देसठे माहणो २ किणही जीवनें तो श्रावगनों यह
 वोहीज उपदेसठे माहणो २ जीवनें तो चितसारथी
 नी यहवी सदहणाठे जे प्रदेसी राजा किणही जीवने
 दुःख नही देंतो बारु ते माटे परदेसीने समजाव्योठे

८६ तथा तेरा पंथी इम कहेवे जे मारगमां वेइंद्रिया
 दि तस्स जीव पडयो होवे तेहने देखी तडका थकी
 गंहने मुंके अनुकंपा करे तो ठाणांग मध्ये कह्योवे
 १० प्रकारनो असंजमलागे ते माटे ए काम न करी
 ये ते उत्तर ठाणांग मध्ये इम नथी कह्यो इम कह्यो
 वे (पचंदिय समारंजमाणे दसविहे असंजमे केऊ
 ई) पांच इंद्रिना सुखथकी विगोडे अने ५ इंद्रिना दु
 खथकी जोमे पिण समारंज करतो थको हिवे समारं
 ज नामतो मारयानोवे दसविकालक अध्येन ६ [त
 म्हाणयतिवियाणिता दोसं दुगाई बहणं पुढवीकाय
 समारंजं जाव जिवाए बऊए १) इम ठउं कायनी
 ६ गाथा कहीवे तो जोवो ए सूत्रमां साक्षात हणानुं
 नाम दुखर्दाधानुं नाम समारंज कह्यो पिण सुखने हे
 तें अनुकंपा करे तेहने समारंज किम लागो ते सा
 ख दसवी कालक अध्येन ४ [सेनिखुवा निखुणी
 वासेकिडंवा पयंगंवा कुथुवा पपीलियंवा हत्थंसिवा
 पायंसिवा) इत्यादि पडिलेहणा करता तथा उपाश्र
 य पूंजता घणा जीव देखी वेगला परिठवे (नोणंसं
 घायमावळेजा) इत्यादि जतनासुं मुंके ते माटे समा
 रंज किम लागस्ये बले मूढ कहस्ये इरियावहि पमि
 कमस्ये तिवारे (ठाणोठाण संकामियां) नो बोल आ
 लोईयेवे तेमा ए पिण जीवनी अनुकंपा करता ठाण उ
 ठाण करयो ते पिण जेलो आव्यो एमा लाजस्यानो ते

ठे (इमंच सबजग जीवरखण दया ठताए १ इमंच
 अलिय पिसुण फरम कडुय चवल बयण पगी रखण
 ठयाए २ इमंच परदवहरण बेरमण परिरखण ठया
 ए ३ अब्रंज बेरमण परिरखण ठयाए ४ इमंच परि
 ग्गह बेरमण परिरखण ठयाए ५ पावयणं नगवता
 सुकहितं) इत्यादि जोवो पहिलामेतो जीव रिख्या
 कही १ दूजामे बचन रिख्या कही २ तीजामे पर
 द्रव्यहरण बेरमणनी रिख्या कही ३ अब्रह्मचर्यथी
 बेरमणनी रिख्या कही ४ पांचमामे परिग्रहना बेरम
 णनी रिख्या कही ५ बले ६ में संवरद्वारे साधू ६
 कारणे आहार करे ते ठकाय परिरखणठा इम पाठ
 ठे तो जीवकी जतना माटे तो साधू पहिलो महाबि
 रत पालेहीजठे तेइनी साख उत्तराध्येन २८ मे गा
 था ३३ मे पद (ईरीयठाए संजम ठाएए) इहां क
 ह्यो इरीया सोधवाने अर्थे साधू आहार करेठे बले
 गाथा ३५ मी पद ३ जो (पाणिदया तवहेठ) इ
 हं कुंथुवादिक प्राणीनी देयाने हेते साधू आहारठ
 डे बले ठाणांगे ६ ठाणे पिण कह्याठे तो साधूजीते
 ६ कायनी रिद्धा करेठे तो साधूनों एहवो इज उप
 देसठे माहणो २ किणही जीवनें तो श्रावगनों यह
 वोहीज उपदेसठे माहणो २ जीवनें तो चितसारथ
 नी यहवी सदहणाठे जे प्रदेसी राजा किणही जीवनें
 दुःख नही देतो वारु ते माटे परदेसीने, समजाव्यो

८६ तथा तेरा पंथी इम कहैवे जे मारगमां वेइंद्रिया
 दि तस्स जीव पडयो होवे तेहने देखी तडका थकी
 ठांहे मुंके अनुकंपा करे तो ठाणांग मध्ये कह्योवे
 १० प्रकारनो असंजमलागे ते माटे ए काम न करी
 ये ते उत्तर ठाणांग मध्ये इम नथी कह्यो इम कह्यो
 वे (पंचादिय समारंजमाणे दसविहे असंजमे केऊ
 ई) पांच इंद्रिना सुखथकी विठोडे अने ५ इंद्रिना दु
 खथकी जोमे पिण समारंज करतो थको हिवे समारं
 ज नामतो मारधानोवे दसविकालक अध्येन ६ [त
 म्हाएयंतिवियाणिता दोसं दुगाई बहणं पुढवीकाय
 समारंजं जाव जिवाए बज्जए १) इम ठउ कायनी
 ६ गाथा कहीवे तो जोवो ए सूत्रमा साक्षात हणानुं
 नाम दुखदाधानुं नाम समारंज कह्यो पिण सुखने हे
 लें अनुकंपा करे तेहने समारंज किम लागो ते सा
 ख दसवी कालक अध्येन ४ [सेन्निखुवा निखुणी
 वासेकिडंवा पयंगंवा कुंथुवा पपीलियंवा हत्थंसिवा
 पायंसिवा) इत्यादि पडिलेहणा करता तथा उपाश्र
 य पूंजता घणा जीव देखी वेगला परिठवे (नोणंसं
 घायमावळेजा) इत्यादि जतनासुं मुंके ते माटे समा
 रंज किम लागस्ये बले मूढ कहस्ये इरियावहि पदि
 कमस्ये तिवारे (ठाणोठाण संकामियां) नो बोल आ
 लोईयेवे तेमा ए पिण जीवनी अनुकंपा करता ठाण उ
 ठाण करयो ते पिण नेलो आवयो एमा लाजस्यानो ते

उत्तर एतो [अग्निहया वत्तीया लैसीयाथी मांडी
 जाव जीवीयाउ विवरोविया] सुधी हिंस्याना वो
 लंठे चढती २ हिंस्याठे पंथें परमादने बसे कोई जी
 व विराध्यो होवे तो आलोउंबूं (जेमें जीव विराहि
 या) यहवो पाठवे पिण जेमे जीवा उगारीया इ
 म नथी कह्यो ए १० बोलतो हिंस्यामाठे अने प्रा
 णीने अनुकंपा एतो प्रत्यक्षये दयाठे ८७ तथा तमें
 कहस्यो जे ठाणा उठाण करता दुख उपजे अने न
 ही उठावे तो किस्यो दोष लागे ते उत्तर दृष्टांत सा
 धू सुखें बैठाथका कोई श्रावके आवी कह्यो हे स्वामी
 तुमने फलाणे गामें गुरुतेडाव्याठे इम कह्या ठता
 साधू तावडामा विहार करे जद कहण वालानें गुण
 थयो के अवगुण थयो ते कहो १ तथा चोमासामे
 सामाचार गुरुवादिकना सुणेते विहार करी जायतो
 कहण वालाने गुणथयो के अवगुण थयो ते कहो २
 तथा साधूनें सररीं दुख जाणी श्रावके ओपध आ
 प्यो तेणें करी घणो दुःख उपनो रोगथयो अतिसा
 रादिक जोगव्यो हिवे ए दातारनें आसाता दीधी
 ते माटे असाता थायके साता वेदनी बंधाये ते कहो
 ३ ॥ ८८ ॥ तथा तुमे कहोवो जे असंजतीनें तावना
 थी उठाय गहडी मूकेतो असंजतीनी वियाबच्च ला
 गी अने असंजमजातिव बांठयो ते उत्तर अहो दया
 उथापक ए बेयाबच कीधी कहिये के अणुकंपा आ

णी कहिये बेयावच सो कहिये जे गृहस्तने असनादि क देवे तथा हाथ पगादि सरीर भसले मोहमता करीने उपध नेखज बतावे ते बियावचठे पिण वेइंद्री यादि जीवने तावडाथी उठावता गंहडी मूकतां बेयावचकरी न कहिये अनुवंपा करी कहिये ८९ तथा बले वादी कहिस्ये उणरो काम करयो ते माटे बियावचलागी ते उत्तर उपासगदसा अध्येन १ में गौतम स्वामी आणंदने देखवा आथा (जेणेव आणंदे समणोवासए जेणेव पोसह सालाइ तेणेव उवागवई २ ता तत्तेणसे आणंदे समणो वासए जगवंगोयमं य जमाणं पासई हठजाव हियये जगवंगोयमं बंदाति ए वं वयासी एव खलुजते अहं इम्मेणं उरालेणं धम्मेणा संतिते जाय नोसंचापमी देवाणुप्पियस्स अंति यं पाउ जदित्ताण तिखुत्तो मुद्धाणेणं पाय अज्जि वंदि तए तुजेणंजंते इत्ठा करेणं अज्जिण उयणं इउचेव एह आणंदे तिखुत्तो मुद्धाणेणं पाय सुवंदामी नमंसा मी तत्तेणं जगवं गोयमं जेणेव आणंदे समणो वासए तेणेव उवागवति) इत्यादि पाठ इए पाठमें आणंदनो काम कह्यो तो तुमारे लेखें गौतमस्वामीने आणंदनी बेयावच लागी ९० तथा तुमें कहिस्यो इहातो आणंदने लान दीठो तिणथी पासेगया पिण जीवने उठावतां स्युं गुणथाय ते उत्तर तथा उत्तराध्येन २९ में (वंदणथाएणं जंते जीवे किंजणई गो

यमा नियागोयं कम्मं खवेई उच्चागोयं कम्मं निबंध
 ई) ए लाजतो आणंदने थाय अने उत्तराध्येन २१
 में समुद्रपालजी केहवाठे [सच्चेहिं नूयांहिं दयाणुकं
 पी] अस्यार्थः—सर्व जीवने विषेदः दयाइकरी अःअ
 नुकंपा परजीवने दुःख देखीने कंपइ परजीवनाहित
 नु करणहारवेतो जीवने साधुजी थानकमां तथा एकं
 त ठाम बेठाथकां त्रसजीवने तावमांथी मरतो जाणी
 बाहडी मूकेतो अनुकंपामा जिलस्ये ते विचारी जीवो
 ९१ तथा केईएक कुबुद्धि हीयामां मोहला उपजावी
 ने खोटी खोटी युक्तिकरीने दया उथापकठे ते कहेठे
 जो तुम जीव उवारवामें धरम कहोतो श्रावक थारे
 पासे बेठो थको नवलखाय हेठो पडियो तेहनी ना
 ड तूटेठे तो तुम बैठा करो क्युं नही तथा सेवा विया
 बचकरो क्यो नही १ इमहीज वाईने बैठी करि वि
 याबच करो क्यो नही २ बलीकिसी पुरसरो पेट दूखे
 ठे जीव जायठे तुमे हाथ फेरो क्युं नही ३ बले को
 ई ग्रहस्त मार्ग नूल अटवीमा पडोठे तेहने मार्ग व
 तावो क्युं नही ४ बले रोडी परमुखमा घणी लटा
 कीडा किलबिलेठे तावडामा मरेठे थे पात्रा नरीने
 उठाय बाहडी मूको क्युं नही ५ बले साधू बेठाठे ति
 हां तालाव नाडामे पांणीमे नील फूल जोकां माठ
 ल्यां परमुखसुं नरयोठे इतरामे गायां नेस्यां पांणी
 पीवाने आवेठे तो तामो क्यो नही ६ बले सुसली

यां धानरो ढिगलो पक्योठे तेहने कुतरा खावेठे तुमे
 वरजो क्यों नहीं ७ बले बनसपती गाजर मूली आ
 दिदेई घणापमाठे तेहने वकरा खावेठे थे वरजो क्यों
 नहीं ८ मीनकी परमुख उंदरो पकडयोठे तुमे ढोडा
 वो क्यों नहीं ९ बले जीव उठायामें धरम होयतो
 आखोदिन योही कांमकरो क्यों नहीं १० इत्यादि
 क अनेक पाखंती युक्ति कहिकहिनें लोकानें नरम
 मा पाडेठे दयाहीण करेठे पिण सुध साधूनें पूठेतो
 सूत्रसाहमुंदिष्टी करेतो ठीक पडेपिण आपणा मूढाकी
 युक्ति लगाई माननें वसे पहुंचताठे तेहनें दया धरम
 किमरुचे ते साख सूयगमांग प्रथम स्कंधे अध्येन १३
 में गाथा ३ (जेयावि पुठापलियं चयंति आयाण
 मठंखलु वंचयंति आसाहुणो तेईहसाहुमाणी माया
 णिएसिं ते अणं घातं) इहां इम कह्यो जे परमार्थ
 ना अजाणनें पूठयो तुम किणपासे नएया जद आ
 पणा आचार्यने गोपवीने माया कपटाइं करी कहे
 अमे स्वयमेव नएया इसो कहे ग्यान न पामे अ
 साधू थका साधू कहावेठे ते रुलसी संसारमे अणे
 घात पामसी ता एहनें समजाविजे अहो मंद बुद्धी
 तुमे १० प्रश्न आदिदेई कह्यो ते उत्तर इहातो सा
 धूनो कलप होसी तिम करसी ए केने दुःख नही ऊ
 पजे इसो काम साधूजी करे थे धर्मनो नाम कहोठे
 ते सुणो साधूने पहोर रात्र ताई उतावलो शब्द क

रीने सिजाय करे थारे लेखे जो धर्म होयतो आ
 खीरात सिजाय किम नही करे १ साधूने परमाण स
 हित जयणासुं पफिलेहण करे थारे लेखे जो धर्म हो
 यतो आखोही दिन पफिलेहण किम नही करे २ सा
 धू मर्जादासे आहार करे थारे लेखे जो धर्म होयतो
 घणोही २ खावो किम नही करे ३ साधूने विहार
 परिमाण सहित करवो थारे लेखे जो धर्म होयतो ए
 कठिकाणे कदेइ रहिवो नही ४ साधूने ध्यान करवो
 थारे लेखे जो धरम होयतो ध्यानहीमें क्युं नही रहें
 ५ साधू वखाण उपगार निमते करे थारे लेखे जो
 धर्म होयतो घर घरमें जाय वखाण करे क्यो नही
 ६ इत्यादिक अनेक हेतूबे तो थारी जुगतके लेखें ए
 युगति किम मिलस्ये तो जाणजो साधूना कल्प
 होसी जिम करसी धरमनी करणी अने चली जाण
 वी साधु केईएक काम करे तो नही पिण करतो हो
 यतो नलो जाने जाणेबे दयामाटे हिवे कोई अनुकं
 पा करुणा कीधा पाप कहे तेहने पूठीये ए पाप कि
 म थयो ९२ तिवारे ते कहे साधू आज्ञा नथी देतां
 तेमाटे तेहनो उत्तर साधूनी आज्ञातो साधूना क
 ल पमा होवे कोई वरसातमे साधू दिसा जावा चणी
 गुरुनी आज्ञामांगैतो गुरु आज्ञादेवे तो इहा निरव
 द्यनी आज्ञाबे के वदमस्तनाकारणनी आज्ञाबे तो
 आज्ञामे तुमे समजता नथी आज्ञा २ जेदबे आदे

स अने उपदेस तिहां आदेसठे ते कार्यठे उपदेसते
 कारणठे पिण कहो कोई दुष्ट ग्राम नगरादि वालेठे
 अने कोई वरजेठे ए बेने स्युं फलहोय ते कहो
 ॥ १ ॥ कोई सतीनासील खंडेठे अने कोई खंड
 ताने वरजेठे ए बेहुने स्युं फल होय ते कहो ॥ २ ॥
 कोई अज्ञानी बनडुंगर वालेठे अने तिणने कोई
 वरजेठे ए बेहुने स्युंफल होयते कहो ॥ ३ ॥ कोई
 पाणीमे चाठा नाखेठे अने बीजो वरजेठे ए बेने
 स्युं फल होय ते कहो ॥ ४ ॥ कोई अनार्य कुतुहल
 निमतै रूख बाडेठे अने बीजो तेहने वरजेठे ए बेने
 स्युं फलहोय ते कहो ॥ ५ ॥ कोई गाडी जंट महि
 प परमुख कीमी नगरा ऊपर चलावेठे अने बीजो
 तेहने वरजेठे ए बेने स्यु फलहोय ते कहो ॥ ६ ॥ को-
 इ ठगपापी किणने फासी देवेठे अने बीजो तेहने व
 रजेठे इन दोनाने स्युं फलहोय ते कहो ॥ ७ ॥ को
 ई खडगसु किणरो गलो काटेठे अने दुजो तेहने
 वरजेठे इन दोनोकू स्युं फलहोयते कहो ॥ ८ ॥ को
 ई पापी बाल हित्या करेठे अने तेहने बीजो वरजेठे
 उन दोनाने स्यु फलथयो ते कहो ॥ ९ ॥ कोई आ
 ठम चौदस पक्खीने दिवसे नीलोतरी रांधण निमि
 ते लायाठे अने बीजो तेहने वरजेठे ते दोनाने स्युं
 फलहुयो ते कहो ॥ १० ॥ कोई हिंसकने मृगनो टो
 लो वतायो अने बीजो ते हिंसकने मारता वरजेठे तो

बेहुने स्युं फल थयो ते कहो ॥ ११ ॥ कोई माकण
 ना माचा तावने मुंकेवे अने बीजो बरजेवे ते बेहुने
 स्युं फल थयो ते कहो ॥ १२ ॥ कोईक तो कीमी नग
 रामे अगन घालेवे अने बीजो बरजेवे ते बेहुने स्युं
 फल होय ते कहो ॥ १३ ॥ कोई अनंत कायनो आ
 रंज करावेवे और कोईक टलावेवे ए दोनोने स्युं फ
 ल होय ते कहो ॥ १४ ॥ एक जणोतो सुलीयो धान
 दलेवे बीजो तेहने बरजेवे तो दोनोने स्युं फल होय
 ॥ १५ ॥ कोईकतो दया निमिते गृहस्तने धर्म उप
 गर्ण पूजणी मालादी देवेवे अने कोई देनां बरजेवे
 ते दोनोने स्युं फल होय ते कहो ॥ १६ ॥ कोईक अ
 नार्य ज्ञानना पाना बांलेवे बीजो तेहने बरजेवे ते बे
 हुने स्युं फल होय ते कहो ॥ १७ ॥ कोईतो नितप्र
 ते परस्त्री तथा बेस्या गमन करेवे बीजो तेहने बरजे
 वे ते बेहुने स्युं फल होय ते कहो ॥ १८ ॥ कोई सि
 रदार सिकार खेले अने बीजो तेहने बरजेवे ते बेहु
 ने स्युं फल होय ते कहो ॥ १९ ॥ कोईकतो चोरी क
 रेवे अने बीजो तेहने बरजेवे ते बेहुने स्युं फल होय
 ते कहो ॥ २० ॥ कोईक साधूनी आसातना करेवे
 अने कोई बरजेवे ते बेहुने स्युं फल होय ते कहो ॥
 ॥ २१ ॥ कोई अनार्य साधूने मारेवे अने बीजो व
 रजेवे ते दोनोने स्युं फल होय ते कहो ॥ २२ ॥ को
 ईक अनार्य साधूने रुखसे बांधेवे अने कोईक वो

डेठे ते वेहुंने स्युंफल होय ते कहो ॥ २३ ॥ कोई
 अनार्य साधुने श्वान लगावेठे अने बीजो तेहने व
 रजेठे ए दोनोने स्युंफल होय ते कहो ॥ २४ ॥ कोई
 बचनादिकना परीसा देवेठे अने कोईक परीसा देता
 ने वरजेठे ए दोनोने स्युंफल होय ते कहो ॥ २५ ॥
 कोईक तो साधुने अटवामे घालेठे अने बीजो तेह
 ने वरजेठे ए दोनोने स्युंफल होय ते कहो ॥ २६ ॥
 कोई झूलाने मारगवतावेठे अने कोई मारग झूलावे
 ठे ते दोनोने स्युंफल होय ते कहो ॥ २७ ॥ अने
 विमल वाहन राजासु मंगल साधुने परीसादेसी अ
 ने बीजो तेहने वरजेठे तो तेहने स्यु फलहोसी ते क
 हो ॥ २८ ॥ कोई अग्यानी जीव सहित इधन वा
 लेठे अने कोई तेहने वरजेठे ए वेहुंने स्युंफल होय
 ते कहो ॥ २९ ॥ कोईक राजा परजाने दुख देवेठे अ
 ने प्रधान तेहने वरजेठे ए दोनोने स्युफल होय ते
 कहो ॥ ३० ॥ कोईक तो बैरीने मारवा सारु जहर
 देवेठे अने कोई तेहने दया आणीने वरजेठे ए वेहुं
 ने स्युंफल होय ते कहो ॥ ३१ ॥ कोईक जहर खाइ
 ने मरेठे अने बीजो तेहने वरजेठे ते वेहुंने स्युफल
 होय ते कहो ॥ ३२ ॥ इमहीज फासीखाई ३३ पाणीमें
 पडी ३४ शस्त्र प्रहारी ३५ डुगरथीपडी ३६ अग
 नमे पडी ३७ जीनकाटी इत्यादि अकाम भरणे मरे
 ठे अने कोई दया आणी वरजेठे ए वेहुंने स्युंफल

होय ते कहो ॥ ३८ ॥ कोई कुव्यसनी मांस मदिरा
 घणो खावेवे अने बीजो बरजेवे ते दोनोकुं स्युंफल हो
 य ॥ ३९ ॥ कोईक आरंजी आरंज घणो करे अने
 कोईक तेहने बरजेवे ते दोनोने स्युंफल होय ते क
 हो ॥ ४० ॥ कोईक कसाई बकरा परमुख घणा मारे
 वे अने कोई दया आणी तेहने बरजेवे ए दोनोने
 स्युंफल होय ॥ ४१ ॥ कोईक अचखु कीमी नगरा ऊ
 परे पगदेवेवे अने कोईक तेहने बरजेवे ते दोनोने
 क्या फल ॥ ४२ ॥ कोईक तो घरमें कलहराड पर
 मुख घणी करेवे अने बीजो तेहने बरजेवे ते दोनो
 ने स्युंफल ॥ ४३ ॥ कोईक माहोमाही कटेवे अने द
 या आणी बुडावेवे ते बेहुने स्युंफल होय ॥ ४४ ॥ को
 ईकना गायाना बाकामे अगनलागी कोईक दया आणी
 वानो खोलेवे तेहने स्युंफल होय ॥ ४५ ॥ कोईक डुंगरथी
 मनुप हेठो पम्तेवे अने कोईक पम्ताने दया आणी
 ऊलेवे तेहने स्युंफल ॥ ४६ ॥ कोईक श्वानपरमुख र
 स्तेमें सूतोवे इतरामे गाडो आयो जद कोईके कर
 णा करी श्वान जुठाई दीयो तेहने स्युंफल ॥ ४७ ॥
 कोइ मंजारी परमुख अंदरो पकडेवे कोईक दया आ
 णी लोडावे ते दोनोने स्युंफल होए तथा वचनसु
 बुटावेती तेहने स्युंफल लागे ते कहो ॥ ४८ ॥ कोई
 क गरीबने मारेवे कोईक मारताने बरजेवे ए बेहुने
 स्युंफल होए ॥ ४९ ॥ कोईक जाला बरगी सेल पर

मुख घडेते और कोई दया आणी तेहने वरजेते य
 हदोनोने स्युंफल होय ते कहो ॥ ५० ॥ कोईक तो
 रांड परमुख घणी करेते और कोईक तेहने वरजेते
 ए २ स्युंफल होय ते कहो ॥ ५१ ॥ कोईक तो घर
 में अणवाणो पाणी पीवेते और कोईकहे हे जाई
 अणवाणो पाणी मत पीवे ए दोनोने शुफल होय ते
 कहो ॥ ५२ ॥ कोईक साधूना दरसन करता वरजेते
 अने कोईक दरगण कराववाजणी बीजाने तेडी ले
 जापते ए दोनोने स्युंफल होयते कहो ॥ ५३ ॥ को
 ईक तो उघामे मुख बोलेते अने कोई वरजेते ए दो
 नोने स्युंफल होय ते कहो ॥ ५४ ॥ कोईक तो आ
 गधूवाडे करी त्रस जीव मारेते और कोई तेहने वर
 जेते ते दोनोने स्युंफल होय ते कहो ॥ ५५ ॥ कोई
 क तो नीलो बात्र वाधीने मारेते अने कोई तेहने व
 रजेते इनदोनोको स्युंफल होय ते कहो ॥ ५६ ॥ को
 ईक वागरी मञ्जी पकडवा बैठेते इतरामे कोईक वरजे
 ते ते दोनोने स्युंफल होय ते कहो ॥ ५७ ॥ कोई हि
 रणारे वास्ते तीर मारेते और कोई तेहने वरजेते ते
 दोनोको क्या फलहोय ते कहो ॥ ५८ ॥ कोईक अ
 नार्य कर्म करेते अने कोईक तेहने वरजेते ए दोनोने
 स्युंफल होय ते कहो ॥ ५९ ॥ कोईक पूरस उपवा
 सकर जांगतो होय और कोईक तेहने वरजतो होय
 ते दोनोने स्युंफल होय ॥ ६० ॥ कोईक तो होली

परमुख लगावेते और कोईक वरजेते ते दोनोने
 स्युंफल होय ते कहो ॥ ६१ ॥ कोईक श्रावकने का
 चा पाणीतो नेमते अब मारगमें प्यास लागी जद
 काचो पाणीतो मने थयो इतरामे अचित पाणी को
 ईक पावे काचो पाणी टलायो एहने क्या फल ला
 ग्यो ते कहो ॥ ६२ ॥ कोईक श्रावक गामथी आव्यो
 आरंज करवानो मनथयो इतरामें दूजो श्रावग अ
 चित आहार खवाय आरंज टलायो एहने स्युंफल
 लाग्यो ते कहो ॥ ६३ ॥ कोईकना उन्हां पाणीमे मा
 खी पडीहोय कोईक करुणा करी बतावे तेहने स्युंफ
 ल होय ते कहो ॥ ६४ ॥ कोईकनी तेलनी मुण फू
 टी घणी दीठी नही अने आगे रुई अग्न पडीते
 तिणमे तेल जावेतो अग्न घणी वधे आगे घणाजी
 वानो घमसाण होय इतरामे किणी अनुकंपाकरी फू
 टी मुंणने बताई अब कहो अनुकंपामें स्यु थयो ते
 कहो ॥ ६५ ॥ इत्यादिक अनेक प्रश्न दया उथापकाने
 पूढीया प्रश्न ॥ ९३ ॥ जद दया उथापक खिष्ट हुयां थकां
 इम कहे यां सर्व बोलामे घणो पाप करे तेहने घणो
 पाप मारता वरजे तेहने थोडो पाप कोईकनो काया
 योग सायज अने मनयोग निरवद्य कोई एक असं
 जम जीतव्य बांते ते माटे लाय लगावे तेहने घणो
 पाप अने वरजे तेहने थोमोपाप पिण पुण्य नही इम
 कहेते तेहना उत्तर अरे अग्यानीयां तुमतो दयाही

एवो तिणसुं तुमने संवली बुद्धिआवे नधी पिण जो
 वो जगवती सतग १२ उदेत १ जयंती पूढ्यो (सु
 ततंजंते साहु जगरीयंतं साहु जयंति अत्ये गईया
 णं जीवाणं सुततं साहु अत्ये गईयाणं जगरीयंतं
 साहु सेकेणठेणजयांति जे इम्ममे जीवा अहम्मिया
 अहमाणुया अहांमिठा अहम खाई अहम्म पलोई
 अहमपलजणा अहम्म समुदायारा अहम्मेणं चेववि
 ति कप्पे माणा विहरंति ए एणं जीवा सुतासमाणा
 नो बहुणं पाण जुयजीव सत्ताण दुखणयाए सोयण
 याए जाव परियावणयाए एवहंति) इत्यादि पाठवे
 इमहीज दुवलानो आलसीनो पाठवे तो इहां अध
 मी जीव अवलीया सुता आलसी रूडा कह्यावे ते
 सापेक्क वचनवे जे अधरमी जीवतो सरवथा चूडावे
 पिण जागतानी अपेक्कार्ये सूतानला कह्या जागता
 थका घणाजीवाने [अमम्मियाहिं संजोयणेहिं संजो
 यतारो जवति] इत्यादि अधर्मकारी संजोगना प्रे
 णाईं करी प्रेरइ घणा जीवाने मारस्ये ते जणी सूता
 थकां थोमा पाप करेवे ते माटे सूता जला कह्या बी
 जुं सूताथकां स्यु जलो काम करेवे तिम घणो घणो
 आरंज टालेतो तेहनें बीतरागे गुणना पक्कमा गवे
 स्यो जिम किणिनें तृपालागी काचो पांणी पीवा मा
 डयो हतो पिण अरिहंतनें वचनें करी दया आणी
 पीवो मूक्यो तृपानही खमाई जद उंन्हो पांणी पीवो

हिवे उनो पाणी पीधो तेहमा स्युं गुणठे पिण उठणो
 दकना योगथी सीलो पाणी टाल्यो ए पाप टलावा
 नो कारणातो उनो पाणी थयो १ वली विद्या जणवा
 नो कारण ते गुरुठे तेहनो गुणलेणो के नही २ जि
 म आपरे घणो पाप टलेतो वारू ॥ ९४ ॥ वली वा
 दी कहसी इमतो हम कदावाइज पिण पलारा अ
 र्थात् दूसरारो पाप टलावामे स्यो गुण ते कहो ते उ
 त्तर जिम कोईकने राजा दंडे तिणें सो रूपीयामगे
 सो रूपीयानो खत लिखावी लीधोठे तिवारे घरना
 धणी जाणीजे सो रूपीया म्हारागया एहवें कोई प्र
 धान बीचमें पडी ५० रूपीयातो मुकाया अने ५०
 देवराया अब कहो प्रधान ऊपर चूडो जानें जे ए
 णें पापी म्हारा ५० रूपीया खोवराया इम जाणेके
 इम जाणे शावास जाई तुमे माहिरा ५० रूपीया
 बूटको कराव्यो तुमें माहिरे घणो गुण कह्यो इम
 जाणीने गुणलेय के अवगुण लेय इण द्विष्टांते कोई
 अज्ञानी के उं अर्थात् पूर वालतो इतो तेहने उठणो
 देई अगनीनो आभंज बुटायो ए देणहारो मुहतानी
 परे अवगुणनो करणहार कहिए कि गुणनो करण
 हार कहिए अरे अज्ञानीओ वस्तु वस्तु थकी मापी
 जोउ ९५ वली तुमें कह्यो जे जीव हणसी तेहने पा
 प लागसी पिण असंजमीने बुटावेतो स्युं गुण उप
 जे ॥ ते उत्तरः जगवती सतग ७ में उदेसे ६ गो

तम स्वामी पृथगो हे जगवान जीव कर्कस वेदना क
 र्म किम करे (गोयमा पाणाइवाएणं जाव मिध्या दंस
 णं सल्लेणं) ए १८ पाप सेवतो कर्कस वेदनी उपार्जे
 इम २४ दंडके उपारजे १ हे जगवान जीव अ क
 र्कस वेदना किम उपार्जे (गोयमा पाणाई बाय वेर
 मणेणं जाव परिग्गंह वेरमणेणं कोह विवेगेणं जाव
 मिच्छा दंसणंसल्ल विवेगेणं) ए १८ पाप थानकनो
 पचखाणं करतो थको जीव अकर्कस वेदना उपार्जे ए
 क मनुप विना ओर दडकमे न उपार्जे संजमना अ
 चावंमाटे रहिवे हे जगवान साता वेदनी कर्म किम उपा
 रजे (गोयमा पाणाणुं कंप्पयाए नूयाणुकंप्पयाए जीवा
 णुकंप्पयाए सत्ताणुकंप्पयाए बहूणं पाणाणं जाव सत्ताणं
 अदुक्खणयाए असोयणाए अजुरणयाए अतिप्पणया
 ए अप्पिट्ठणयाए अपरिता वणियाए) इम साता वेदनी
 उपार्जे २४ दंडकां साता वेदनी करम उपार्जे ३ हे जग
 वान जीव असाता वेदनी कर्म किम उपार्जे (गोय
 मा परदुखावणयाए) इत्यादि असाता वेदनी उपा
 र्जे २४ दंडका असाता वेदनी उपारजे ४ हिवे इहां
 तो प्राणीनी अनुकंपा करतो थको साता वेदनी वां
 धतो कहोवे इहां मारताने वंचावे तो अनुकंपामें जि
 लसी तिवारे वादी इम कहे अनुकंपा तो नही मारे
 ते कहिये ते उत्तर अरे अबिवेकीयो नही मारे ते
 तो पाठ कहोहीजवे (अदुक्खणया) इत्यादि ९६

बलीवादी कहस्ये नारकीयादि देवता ५ थावर ३ वि
 कलेंद्री ए केहने ठोमावेठे ॥ ते उत्तर ॥ अहो मंदबुद्धि
 कठेहीतो ठोडावा आश्री कठेही प्रणामाआश्री जाणि
 वो कठेही सत्ता आश्री जाणवो इम थे एकेंद्रीनो ना
 मलेइ दया उथापक ठो तो कहो एकेंद्रीमा क्रोध कां
 ई करेठे इम मान माया लोन काई करेठे इम ४ सं
 ज्ञा काई करेठे तो जाणजो सत्ता आश्रीठे तथा ठा
 णांग उववाई परमुखमें नारकादिक गतमें जावणरा
 चार चार बोल कहाठे (महा आरंभियाए १ महा परि
 गहियाए २ पचिंद्रीए बहेणं ३ कुणिसमहारेणं ४)
 ए बोल सेवेतो नरकमें जाय १ (माइल्लयाए १ नि
 यडिल्लयाए २ अलिय वयणेणं ३ उक्कंचणया बंचण
 याए ४) ए ४ बोलां करी तिर्यंचमा जाय २ [न
 गति नदियाए १ पगइ विणिया ए २ साणुकोसि
 याए ३ अमठरियाए ४) ए ४ बोलाकरी मनुपमें
 जाय ३ (सराग संजमेणं १ संजमा संजमेणं २ अ
 काम निज्जराए ३ बालतवो कम्मेणं ४) ए ४ बो
 लां करी देवमां जाया।एवं सर्व १६ अब कहाठे तो अब
 कोई दया आणी ठुमावेठे थे केहा बोलमें घालस्यो
 ते कहो बले सूत्र उववाईमें पृथयो (जीवेणं चंते असं
 जय अविरते जाव एगंते सुत्तं उसण तस्स पाणघा
 ती कालेमासे कालंकिच्चा णेरईएसु उववज्जंति हंता)
 इत्यादि कहाठे, पिण जीव वचायामें पाप होयतो

सूत्र काठी देखानो प्रश्न ९७ वली वादी कहेवें ते
 तुम जीव वचायामें धर्म जाणो तो कोई कसाई पर
 मुखनें आहार कपडा दे दे जीव वचावो क्यो नही
 पिण जीव वचावामें धर्म नही तो थे आहार पानी
 नही घोबो ते उत्तर अहो मूढ मती थे सर्वथा चूला
 गो साधुनो आहार पानी देवानो कलप ग्रहस्तनें न
 ही तथा तुम्हारी कहण ऊपर दृष्टांत कोईक ग्रहस्त
 कहे मोने आहार पाणी खवरावो तो संजम लेऊं ज
 द थारे लेखें साध पणो देवामें धर्म होयतो देवो
 क्यो नही १ तथा किणही ग्रहस्त घरमा आहार पा
 णीनें साधू आया जद ग्रहस्त कह्यो अठेवेसो मो
 नें बखाण सुणाउ अब तिहा साधूजी बेसे नही जद
 थारे लेखे बखाण सुणावामा धर्म होयतो बेसे क्यो
 नही २ तथा किणी ग्रहस्ते कह्यो मोने कपको देवो
 तो संजम लेऊं जद थारे लेखे साध पणो देवामें
 धर्म होयतो देवो क्यु नही ३ इत्यादि अनेक युक्त
 ठे जो जाणजो साध संजमरो काम चलो जाणैवे
 पिण आहारादि ग्रहस्तनें देवे नही तिम कसाईने
 समजाइ जीव वचावे पिण आहारादि देवानो कल
 पनथी ॥ ९८ ॥ वली दया उथापक कहेवे अयोग
 दृष्टांत देवेवे जो जीव वचायामें धर्म होयतो उजारु
 में नाहरनें मारी नाखेंतो घणाजीव बचें इम मंजारी
 सिकरा परमुखनें मारितो घणाजीव वचजाय जीव ब

चायानें धर्म जाणेंतो मारे क्यों नहीं इत्यादि खोटा
 दृष्टांत देवेते ते उत्तर अहो मुग्ध थे केहवा कहोगे
 [विसोहियते अणुका हयंति जे आय चावेण विया
 गरेजा अठाणिए होई बहुगुणाणं जेनाण संकाय मु
 सं वदेजा ३) इहा इम कह्यो निरमल शुद्ध मार्गने
 ते मिथ्याती विपरीत पणें आघोपागे कहे जे कोई
 पोतानें अज्ञिप्राये जिम तिम परूपें ते अज्ञानी घ
 णाने अस्थानक अजाजन होय जे अज्ञानी संकषा
 इं मृपा परूपे इम कह्यो ते तुम्हारी सर्दा दीसेवे
 जिम किणही अजान नरनें कह्यो जो साधुनें अस
 नादि ४ आहार देवामें धर्म होयतो सचित अचित
 तथा फासु अप्रासुक घणो घणो देवो क्यों नहीं जद
 साधुयें समजाव्या हे जाई जिस वरतके साधु त्या
 गीहें ते देणी तिसमें धर्म नहीं ओर अप्रासुक दीधा
 मिश्रफल होयहै एकंत धर्म तो जो साधुनें कल्पे
 तिस माहिं होयते जिम जीव बचावामें धर्मते पिण
 नाहर मंजारी सिकरा सर्पने मारीनें बचावामें धरन
 होय नहीं जो अनुकंषा परिणाम होसीतो जीवनें कि
 म मारसी डाहाहोय ते विचारी जो ज्यो ॥ ९९ ॥
 वली दुष्ट खोटा दृष्टांत देवेते दोय गणका कसाईना
 वाडामे २ हजार पंचेद्री मारता दीठा जद एक ग
 णकातो आपरो सर्व गेहणो देइ हजार पंचेद्री गो
 डायानें बीजी चोथो आश्रव सेवीनें हजार पंचे

द्री गोढाया अब धर्म कहो केहनें हुवो इसो द्विष्टांत
 देई दया जथापेठे—ते उत्तर इण लेखें २ जणी थारे
 दर्सन करवा जणी आवता बीचमें चोरा पकडी जद
 एक जणीतो सर्व गेहणो देई बूटी थारे दर्सन जणी
 १ बीजी थारे दर्सन जणी चौथो आश्रव सेवाय बू
 टी थारो दर्सन कीयो २ अब बहो थारा दरसन
 करयामें धर्म होयतो दोन्यानें होसी अने थारा दर
 सन करयामें पाप होयतो दोन्यानें होसी जद वादी
 कहे म्हारा दर्सनमातो धर्मठे पिण ए काम कीयो
 ते अधर्मठे ते उत्तर अहो अचरमीयो इमतो हम क
 हावां जीव बचावामे धर्मठे पिण ए काम कीयो ति
 णमा गेहणो देई जीव बूटाया तेहना परिणाम अ
 नुरुपानाठे ते किम गेहणो अजीवठे ते माटे अने
 बीजीनें हिस्वानो काम घणोठे ते तो काम करवोज
 नही अने जे स्त्री मैथुन सेवास्ये तेहने घटना अनु
 कंपा किम रहसी साहाहोय ते विचारी जो ज्यो ॥
 प्रश्नोत्तर ॥ १०० ॥ केतलाएक इम कहेजे साधु
 तथा आवक नव जोगें करी जीवहणे नही हणवे
 नही हणतानें जले जाणे नही यहवो अजय दानतो
 कह्यो अने मारता बचावेतो अनुकंपा थई ए वेमां
 लानतो घणो अजय दाननोठे ते तो नहीहणा माटे
 थयो अनुकंपामे केहो अजयदानठे ते उत्तर जगवती
 सतक ५ में तथा ठाणांगें ३ प्रकारे अल्प आजखो

बांधे ते जीवहणता १ जूठ बोलता २ अफासु अपे
 सणीक आहार अर्थात् अफासु यानें जिम चोजन
 पाणमें ससख नही फरस्यो स्थावर जीव सहित जै
 से पाणी कच्चाहै नतो उसमें अग्नीसख प्राप्त हुवा
 न राखादि धोवनसें प्रासुक हुवा तथा सागनाजी
 आदी नूनादिसें प्रासुक होजाताहे सो जिस्में फर
 सा नही ते अप्रासुक तथा बीजादि वस्तुका दूसरा
 फर्स बिना प्रासुकनही ऐसा अफासु आहार आपे
 तो ३ तथा ३ प्रकारे सुन्न दीर्घ आऊखा बांधे
 जीवनही हणेतो १ जूठ नही बोलेतो २ साधूने प्रासुक
 आहारदि आपेतो ३ इहां पूर्वअल्प आऊखा बांधे ते
 आयुष्य पिण शुन्न बांधे अर्थात् सुखदायक अशुन्न
 नही बांधे कारणक्या जगवती सूत्रके आठमें सत
 कके ठठे उद्देशेमें कह्योठे ते पाठ (समणो वासग
 रसणं जंते तहारुवं समणं वा माहणं वाअफासुएणं
 अपेसणिजेणं असणं पाणं जावपफिलाने माणे किं
 कऊई गोयमा बहुतरियासे निऊराकऊइ अप्पतरा
 एसे पाव कम्मे कऊति) ॥ अर्थ ॥ साधूनें अफासु
 अपेसणीक आहार देतां अल्प अर्थात् थोडासा
 पाप अनें बहोत निर्जरा होय तो देखियेकि बहु नि
 र्जरा वालो जीव एवो अशुन्न अर्थात् दुखदायक
 आऊखा बांधे नही ओर जगवती सूत्रमें रेवती श्रा
 विकाने महावीरनो लोहीठाण मेटवा वास्तें बीजोरा

पाक बनाव्यो ओर घोडां वास्ते कोला पाक कराया
 पिण जगवत केवलनाणना धणी सिंहा अणगारप्र-
 तें जणाव्यो तो कोलापाक लीधो पिण रेवती चाव
 सें तो करे माणे करेकी अपेक्षा दान दे चु
 कीथी तो पिण अलप आऊखो बांध्यो नही परत
 तीर्थकर गोत्र बांध्योले ॥ इहां वादी कहेले ए ठामे
 जीवहणेतो अलप आऊखो बांधे १ नही हणेतो दी
 र्घ आऊखो बांधे २ हिवे उगारे तो स्युं फल पामें
 ते कहो ते उत्तर जीवने उगारवो अर्थात् वचाना ते
 नही हणवामे पैठो जेणे जीव उगारवो तेणे मरणना
 जयथकी मुकाव्यो के जयमा नाख्यो बले तुम कहो
 ऊठ बोले ते अलप आऊखो बांधे १ ऊठ न बोले
 ते दीर्घ आऊखो बांधे २ साचा बोलाता स्युं फल ते
 कहो १०१ जद वादीकहे मारता वचावे तो त्रीजे क
 रणे हिंस्यालागी तेहनो उत्तर अहो अजाण तुम नू
 लागे तुम ३ कर्ण ३ जोगमे पूरा समऊता नथी ॥

हिवे १८ पाप ऊपर ३।३ बोलरे मांहि यंत्र लिखीये
वे ॥ तेहथी जाणीये ॥

प्रणातिपात ९ यो गें करे	९ जोगे नहणें	९ जोगें तुडाव
मृपावाद ९ जोगे बोले	९ जोगे न बोले	९ योगे वरजे
अदत्तादन ९ जोगे करे	९ जोगे न करे	९ जोगे वरजे
मैथुन ९ योगे सेवे	९ जोगे न सेवे	९ जोगे वरजे
परिग्रह ९ जोगे सेवे	९ जोगे न सेवे	९ जोगे वरजे
क्रोधमान साया लोच ९ जोगे करे	९ जोगे न करे	९ जोगे वरजे
रागद्वेष ९ योगे करे	९ जोगे न करे	९ जोगे वरजे
कलह अत्रिख्या न पिसुन परिप रिवाद रतारति ९ जोगे करे	९ जोगे न करे	९ जागे वरजे
मिथ्यातदंसणसल्ल ९ जोगे सेवे	९ जोगे न सेवे	९ जोगे वरजे

(अफासु) अर्थात् सचितादि तथा अशुद्ध सरीरको दुःख कारक आहार देतां अल्प आऊखो बांधे १ अफासु न आपे २ फासु आपे ३ तो दीर्घ आऊखो बांधे एहना एक फल जिम जीवहणेतो अल्प आऊखो बांधे १ जीव न हणें अनें मारतानें बचावेतो दीर्घ आऊखो बांधे ॥ ३ ॥ १०२ ॥ हिवे वादी कहेवे पोतें जीव न हणवो पिण आगलारा ऊग मारें क्यो पडणो तेहणो उत्तर साधू नव जोगे जीव न हणतो नथी पिण आगलानें उपदेस देवेवे ए उ पदेस नही हणयामा के पारका जीव उगारवानो ते कहो १ महा सतकने दोष लाग्यो तिवारे जगवंत गौतमनें कह्यो (नोखलु कप्पई गोयमा समणो वा सग्गस्स अपच्चिम जाव ऊसीयस्स सरीरस्स चत्तपाण प्पडिया इखियस्स परोसंतेहिं तयेहिं अण्णिठेहिं अकं तेहिं अप्पिएहिं अमणुत्तेहिं अमणामेहिं वागरितेहिं तं गउहणं देवाणुप्पिया तुम्मं महासयहिं समणो वा सय एवं वदेह नोखलु देवाणुप्पिया कप्पई जाव तन्नं तुम्मं एयरस ठाणस्स आलोयेहिं जाव जहारिहं च पायच्चित पज्जि वज्जाहि) इहां जगवंत गौतमने मेळीने प्रायचित देवायो थारे लेखें जगवंत पराया ऊगडामें क्यो पड्या वली जगवती सतग १२ में उदेसे १ जगवंतना समोसर्णमां सर्व श्रावकां संख श्रावकने हिलवा निंदवा लाग्या तिवारे जगवंते वर

ज्या (माणं अज्जो तुम्मे संख समणो वासगं हिलह
 निंदह खिसह गरह अवमन्नह संखेणं समणो वास
 ह प्पियधम्मचेव ददधम्मचेव) इहां जगवंत संख
 श्रावकने हिलवाथी वचायो तो मरताथी वचावानो
 स्युं अटकावठे वली श्रावकांने हिलणां करतां वरजां
 तो जीवमारतां वरजे तेहनो स्युं अटकावठे २ व
 ली उपासगदसा ६ अध्ययने जगवंत आपणा सा
 धु साधवीने कह्यो (अज्जोसमणेहिं एणीगंथेहिं दुवाल
 सगं गणपडिगं अदिक्कमाणेहिं अणउत्तियाए अठे
 हिय जाव निप्पठसिण वागरणं करेति ते) इहां क
 ह्यो तुमे अन्य तीरथीने पिष्ट करो जिम जस पाभसो
 तो तुम्हारे लेखे इहां जगवंतने स्युं गुण थयो पिण
 जगवंतरो मिथ्यात मिटावणरो उपाय कह्योठे जिम
 जगवंत जीवहिंस्या टलावानो उपाय करयोठे बले
 मारगमां कीमी हरीकाय पडीहोय पोते तो टालीने
 हटायां पिण बीजाने कह्यो इण तस्स ऊपर पग मति
 देवो ए उपदेस न हणानो कि जीव उगारवानो ५
 तथा केसी गुरु चित्त सारथीने परदेसीनो कीधो पा
 पतो न लागतो पिण एतला उपाय करी समजाव्यो
 ए उपदेस माहणोमां के जीव उगारवानो ६ तथा द
 साश्रुत खंधमां १२ पडिमामे पाठठे साधु अगनी
 मे बलतो होवे तिवारे कोई साधूने काढेतो साधु वो
 हनी अनुकंपा काजे निकले पिण इम न जाणे ए प्रा

णी नीकलीने स्युं धर्म करसी अने हूं नही निकळूं
 तो ये जेलो बलसी तो कोई मोने हिंस्या लागती न
 थी इम न जाणे सुखे नीकले ए उगारवापाटे कि मा
 हणो माटे-७ ॥ १०३ ॥ बली वादी कहस्ये जीव उ
 गारामे लानवे तो तुम ठाम ठामना जीवाने पूंजता
 क्यां नथी धर्मनो कामतो तुमने पिण करवोवे ते उ
 त्तर-धर्म करवो ते खरो पिण अमारो कलप होय जि
 म करा पिण तमें धर्म उपदेस देवामें लान जाणोवो
 तो घर घरमें उपदेस क्यां देता नथी बले पहररात
 पवे उंचे शब्दे सजाय नथी पिण करो तो जाणजो
 आपणो कलप होसी तिस करसी १०४ बली वा
 दी कहस्ये साधूनो कलप नथी पिण श्रावक सामा
 इक पोसामा विरतमे वेठोवे तिवारे पूंजतो क्या न
 फिरे ते उत्तर-सामाइक पोसा मांहिनो और पिण घ
 णा रूडा कारज अटकाव्यावे पोसह सामाइक मातो
 साधु मुनिराजने दान पिण देवरावे नही अने दूजो
 खुजो थको दान देवे तिणने जलो जाणोवे तिम सा
 माइकमें पिण जीव वचावे तेहने जलो जाणोवे इत्यादि
 जो ज्यो ॥ प्रश्न ॥ १०५ ॥ तथा केई अज्ञानी इम क
 हेवे साधुजीतो उपदेस देवेवे ते निरजरा निमित्तें दे
 वेवे पिण जीव उगारवा माटें नथी देता ते सा
 ख देवे सुयगमाग ३७ में (सेनिकखु धम्म किहे
 माणेणो अणस्स हेव धम्मं आइखेज्जा णो पा

एणस्स हेतुं धम्मं आइखेज्जाणो वत्थस्सेहेतुं धम्मं आ
 इखेज्जाणो लेणस्स हेतुं धम्मं आइखेज्जाणो सयणस्सहे
 तुं धम्मं आइखे जाणो अन्नेसं विरुव रुवाणं काम
 जोगाणं हेतुं धम्मं आइखेज्जा अंगिलाय धम्मं माति
 खेज्जा ननत्थ कम्म निज्जरठयाए धम्मं माइखेज्जा)
 तं उत्तर ए पाठतो सुधठे पिण तुम रहस जाणता
 नथी इहांतो खुसामदी तथा आजीवका निमतें धर्म
 नही सुणावे ए मनुष धनवंतठे येहनें सुणांजंतो मुज्
 नें मनोवाठित आहार देस्ये इम जाणी नही सुणावे
 तथा तुम कहस्यो जे पाप कर्मथी मुकावानो उपदे
 सदेणो दसवीयाल अध्येयन ४ गाथा (कहंचरे क
 हंचिठे कहंमासे कहंसुय कहंचुजंतो जासंतो पावकम्मं
 नबंधई १ जयंचरे जयंचिठे जयंमासे जयंसुय जयंचु
 जंतो जासंतो पावकम्मं न बंधई ॥२॥ १०६ ॥ इहां
 पाप कर्म न बंधवानो उपदेसठे पिण जीवरिख्यानो
 उपदेस किहांठे ते उत्तर अहोभंद बुद्धि तुमनें अज्ञा
 न तिमर ठायोठे इहां जतना कही ते आपकी के
 पारकी ते कहो जगवती सतग २ उदेसे १ खंदक
 दिख्यालीधा जगवंतने पूढ्यो तथा ग्याताये १ मे
 घ कुमारे पूढो संजमनी विध जगवंत कह्यो (यवं
 देवाणुप्पिया गंतवं चिठियवं णिसियवं तुयट्टियवं नु
 जियवं चासियवं यवं उवठावय उठाए पाणेहं नुते
 हिं जीवहिं सतोहिं संजमेणं संजमियवं असिचणं

अठे णोपमादेयवं) इहां कह्यो प्राणियादि ४ तेह
 सर्वनी रिख्याते संजमेइ परवरतवो ए पाठ ओर
 पिण घणा सूत्रमेठे ॥ १०७॥ बले वादी कहेठे पृथ्वी
 काय जीवठे ते दयाठे के पृथ्वीकाय नें नही हणे ते
 दयाठे १ इम पाचोंही थावर जीवठे ते दयाठे कि
 याने नही हणे ते दयाठे ५ इम वेइंद्रीया पचेद्री
 लगे जीवठे ते दयाठे के याने नही मारे ते दयाठे ९
 बले वादीकहेठे ए ९ जीव आपने आऊखे मरेठे
 ते पापठे के याने मारे तेहने पापठे १८ तो जाणजो
 मारे तेहने पाप, नहीमारे तेहने दया स्वचावे जीवमारे
 ते पाप दया नथी इत्यादि कुबुधीनी वाता कर दया
 उथापेठे पिण जाणजो अठे गोता चलतो नथी हिवे
 उत्तर कहेठे इमतो अम कहांगाइज मरे ते पाप न
 थी जीवे ते दया नथी पिण मारे तेहने तो पापठे अ
 नें दया आणी मारेनही तेहने अने मारता दया आ
 णी बचावे तेहने दयाठे अने जो थे नही समजो तो
 युक्तसुणो पाना ऊपर अद्धर मांड्या ते ज्ञानठे कि
 अद्धरमे समजे ते ज्ञानठे १ रजोहरणो दयाठे
 के रजोहरणथी दया पाले तेहने दयाठे २ गुरु वि
 नोठे के सिष्य विनो करे ते विनोठे ३ साधनो चेखठे
 ते साधपणोठे के माहिला परणामें साधपणोठे ४ गृ
 हस्थ वखाण सुणेठे ते उपदेसठे के सर्वहे ते धर्म रु
 चे ते धर्म उपदेसठे ५ पद्मासन बेठो ते ध्यानठे के

ध्यावे ते ध्यानवे ६ गुरुवादिक वैयावञ्चवे के चाकरी
 करे ते ते वियावञ्चवे ७ मुपती ते जैणावे के उघाडे
 मुखे दया परिणामे नही बोले ते जैणावे ८ गुरुवा
 दिक मोखवे कि धर्म करे जद मोखवे ९ इत्यादि अ
 नेक युक्तिवे तो जाणजो कार्ण बिना कार्ज किम नीपजे
 जोतुम कारण नही मानोतो पाना परमुख ९ बोल कि
 म सेवोवो अनुयोगद्वारमें (से कित्तं कारणेणं २ तं
 तावो पडिस्स कारणं नोपडो तंतु कारणं एवं वीर
 णा कम्हस्स कारणं नकम्हो वीरणा कारणं मयपिंडो घ
 र्हस्स कारणं न घडो मयपिंडस्स कारणं) ए पाठवे
 तो जोवो कारणवे तिहां कारजनी जजनाः अर्थात्
 होय या न होय ॥ अने कारजवे तिहां कारणानी
 नीयमावे माटीनो पिंडवे ते घमानों कारणवे पिण
 घडो ते माटीनो कारण नही तिम जीववे ते दया
 नो कारणवे पिण दयावे ते जीवो कारण नथी तो
 जाणजो मारता जीवने देखीने करुणा आणी बचा
 वेवे ते एकंत अनय दानमें जिलेवे सुयगडाग १
 अर्धेन ६ [दाणाणसेठं अनयप्रयाणं] इति बचना
 त् बले पन्नवणा पद २२ में (कहिणं जंते जीवा पा
 णा तिवा तिकिरिया कळंति गोयमा वसुजीवनी
 कायसु) इम पाठवे तो जाणजो जीवआश्रितो दया
 पालेहीजवे ॥ प्रश्न ॥ १०८॥ तथावले पाखंडी दया उ
 आपक दृष्टांत देवेवे ते सुणो अने किणहीक साहूका

रके २ वेटा हुता जिणामे एक वेटो तो रिण मार्ये
 करे १ अने बीजो वेटो ते रिण चुकावे २ अब वा
 प क्किणने वरजे अने क्किण ऊपर राजीहोय इम पूठे
 तेहनी रहस एठे पहलाने वरजे १ दूजा ऊपर राजी
 होवे २ जिम कसाई परमुख बकराने मारेवे ते तो
 बैर लेवेवे अने बैर करो ते रिण चुकावेवे ते नणी
 साधु श्रावग मारताने वरजेतो तेहनो रिण किम क
 टे इसो दृष्टांत देवेवे तेहनो उत्तर अहो दुरबुद्धी
 इण थारे लेखेतो पशुपंखी आरजाने पकमी होयतो
 बुडावणी नही १ साधु साधवी रोगमे पडा होयतो
 पैयाबच्च करणी नही वेदनी घणी निरजरे तिणलेखे
 २ साधु साधवीने जुख त्रिपानो परीसो होयतो आं
 वकने आहार पाणी बहरावणो नही परीसामे कर्म
 घणा निर्जरे तिण लेखे ३ इत्यादि अनेक युक्तिवे
 थारा द्विष्टांतरे लेखे सर्व दया धर्म विवेदत हायजा
 य १०९ तथा वादी कहिस्ये आप २ ना करम क
 री पचेवे क्किण २ ने बुटावसो तेहनो उत्तर जे आ
 पणे वम पहाता तेहनी रिरुया करसी जिम अनंता
 जीव डूवेवे पिण साधुकने वाणी सुणस्ये तेहने तार
 स्ये ॥ ११० ॥ वली वादी कहेवे जीव बचायामे धर
 म होतो तो नेमनाथजी पशु बुटाव्या किम नथी पशु
 ने देखी पावाहीज फिरगया पिण बुडाव्यातो नथी
 ते उत्तर अहो तुमें सृजतो नथी अंतर हीएमें जे

उत्तराध्ययनमे पाठवे २२ में अध्ययने पशूवाना
बाडा देखीने नेमनाथजी सारथीने पूठयो (कर्म
अठाइमेप्पाणा ए ते सवे सुहेसीणो वाडेहि पिंजरेहि
च सन्निरुद्धा ए अर्थेहं १६ अहसारही तउ नण
ई ए एनदाउपाणिणो तुळं विवाहकळंमी नोयावय व
हु जणे १७ सोऊण तस्स सोवयणं बहु पाणि वि
णासणं चिंते इसे महापन्नं साणुकोसेजिईहिंय १८
जइ मळं कारणाए हणंति सुव हुजिया नम्मे एयं
निस्सेसं परिलंगेनविस्सई १९ सो कुंम्लाण जुय
लं सुतगंच महायसो आचरणायिय सवाणि सारहि
स्स पणामए २०) इहां कह्यो नगवंत सारथीना व
चन सुणीने अनुकंपा दया करी जीवाना हित बांवे
अने १९ मी गाथामे स्वयंते पोतायनी दयावे हिवे त
में कह्योणे जे जीव नही वंचाया पोतेंहीपावा फिग
वे ते कहो फिरया ते तो आपणी आत्माना हितु वां
वे पिण जीवाना हितवा किम हुया ते कहो तथा त
में कहस्यो जे नही मारया ते नणी हेतु वांवे तो ठी
क पिण (जई मळं कारणाए) ए पाठवे तथा आ
पणें अर्थे जीव हणे तेहने वरजणो कह्योवे ते साख
आचारांग २ अध्येन उदसे ९ में [सियासे परो
कालेण अणुप्प विठस्स आहाकम्मियं असणंवा ४
उव करेऊवा उवखडेऊवा तंचेव गतिउ तुसणीउ उ
वहेऊ आहमेव पचई खिस्सामी माइठाणं संफासे

मो एवं करेका) इहां इम कह्यो कोईक ग्रहस्त सा
 धूना सगपणना रागे करी आधा करमी आहार नि
 पजावे अने साधू जाणें हिवणातो नही बरजुं मोनें
 देसी तरे निखेदसुं इसोजाणीं मोनें रहतो कपटाई
 लागे तो स्युं करे [सेपुवामेव आलौयका आजसो
 तिवा नगिणितिवा नोखलुमे कप्पई आहाकम्मियं
 असणंवा ४ जातयवा पाइतयवा माउवकरेहिं माउव
 खेडेहिं सेसेवज्जव दत्तस परो अहाकम्मियं असणंवा ४
 उवखमेत्ता अहददलएका तह पगारं असणंवा ४ अ
 फासुयं लाजेसते नोपग्गिहाहेका] इहां कह्यो पहलें
 ही बरजे मतकरो मतरांधो इहां जोवो ने साधूजी
 आपणे अर्थे हंस्या करता बरजेवे तो नेमनाथजी प
 शुवानें मुकाव्याहीज जाणज्यो वले दसवीयाळ अ
 ध्येन ५ उदेसे १ में [सम्मदमाणीपाणाणी वीयाणि
 हरियाणीए असंजमं करंनधा तारिसंपरिवज्जए २९]
 इहां इम कह्यो साधूनें आहार देवाजणी ग्रहस्तणी
 वेइंद्रीयादिकने दमती थकी वीज अने धान हरी
 ते दरजादिकने दमतीथकी असंजम ते साधु निमतें
 सावज्जनी करणी करती थकी एहवो जाणीने साधु
 ते स्त्री परतें बरजे यो असंजम मतिकर इहां बरज
 वो चाल्योवे तथा तुम इहां इम कहस्यो इहांतो आ
 हार लेणो बरजे तो तुम्हारे लेखे पाठते आगे ठाम
 ठामवे (दितियंपडि आईरुके नमे कप्पई तारीसं)

एहवो तो नथी तो जाणज्यो इहां स्त्रीने आरंभ
 रता बरजीवे तो नेमनाथने पशु मुकावी दिख्या
 धीवे तथा तमे कहसो ठोडाव्याना पाठ नथी ते
 त्तर-बरसी दाननो इहां पाठ किहावे पिण जे
 एजो तीर्थकर होसी ते संबत्तर दान देसीहीन यो
 नेमठे ॥ १११ ॥ वले वादी कहेवे दया उथापे
 मेघकुमार पूर्वे हाथिने जवे एक सुसलारी दया
 नुकंपाकीधी ते चालीवे पिण माडलामेंतो घणाजी
 वचावावे र्यारी अनुकंपानही कही ते उत्तर अह
 तुम सरीखा सूत्रना अजाणगे ते सूत्रना शब्द
 समजता नथी पिण जोवो ग्याता १ जगवंत मेघ
 कुमारने कहेवे हे मेघ तुम पूर्व जवे (जेणेव मंडले
 तेणेव पहारत्य गमणाए तत्थण अन्ने बहुवे सीहाय
 वग्घाए वग्गए दीईया अन्ना तरत्ता परासारा सियाल
 विराता सुणहा कोला ससा कोकंतिया चित्ता चिल्ल
 पवं पविठा अग्गिजया जिहया ए गय उविल धम्म
 चिठंति तत्तेणंमेघा जेणे वसे मंडले तेणेव उवागर्ह
 २ ता तिहिं बहूहिं सिंहेहिं जाव चिल्लय हिय ए गय
 उविल धम्मणं चिठंति तत्तेणं मेघा तुम्मं पाएण गत
 कंडुइ सामिति कद्रुपाए उखियते ते सिचणं अंतर
 सि अहोहिं बलवतेहिं सत्तेहिं पणोलिक्कपाणे ॥ २ ॥ सस
 ए अणुप्पविठे तएणं तुम्मे मेहाग्गइं कंडुइ २ ता
 पायपडिनिखमिस्सामि तिकट्ट उ तंससयं अणुपविठं

ससंपाससि पाणाणुकंपयाए जुयाणुकंपयाए जीवा
 णुकंपयाए सत्ताणुकंपयाए सेपाय अतराचेव संधारिए
 णोचेवणं णिखिते तत्तणं तुम्मे मेहा ताउ पाणाणुकंप
 याए जाव सत्ताणुकंपयाए संसारे परितीकय माणुसा
 उयए निवंधे) इहां पाठमेंतो पाणाणं ४ इत्यादि व
 हु वचनवे तो ४ जाणज्यो - सुसाने देखीने सर्वनी
 अनुकंपा आईवे जो एक सुसानी अनुकंपाहोयतो
 (सस्सस्स अणुकंपणठयाए) इस पाठहोवे ते सा
 ख जगवती सतग १५ में गोशालानी जगवंत अ
 नुकंपा कीधी ते पाठ (तएणं अहं गोशाला तव अ
 नुकंपणठयाए) इहां एकनी अनुकंपा कही बलीजा
 ता १ धारणीराणी (तस्सगन्नस्स अनुकंपणठया
 ए जयं चिठई जयं आसेएति ययं सुविति आहारं
 पियण आहारे माणी) इत्यादि इहां पिण गर्जनी
 अनुकंपा कही अंतगढमा हरिणगमेखी देवता सुल
 सानी अनुकंपा करी कही वळे कृष्ण डोररानी अनु
 कंपा कीधी कही बले उत्तराध्येनसे हरकेसीनी अनु
 कंपा कीधी कही तो जोवो इत्यादि अनेक ठामें तेह
 नी अनुकंपा कीधी तेहना नामवे तो सुसानी ठामें
 सुसानो नाम किम नथी पाणाणं ४ इसो बहु वचन
 नों पाठवे तो जाणजो जेतला मांडलामे निजरथा
 दीठा ते सर्वनो पाठवे तेहनी साख ज्ञाता १६ में (त
 तेणंतस्स धम्मई रुईस्स इस्सेयारुवे अजत्थिय जई

ताव इमस्स सालइयस्स जाव ए गंसि विद्धंसि पखि
 तंसि अणेगाई पिपीलिगा सहस्साति ववरोविज्जति
 तंजईणं अइएयंसालितियं थंमिल्लंसिसवंपिसरामि तो
 णं बहुणं पाणाणं ४ बहु करणं नविस्सति तंसयं ख
 लुममेयंसालियं जावगाढं संयमेव आहारित्तए ममं
 चवणंए सररि एणंपिद्याउ तिकट्टु) इहां पाठमें बहु
 णंनो पाठवेहीज बले किड्यां सिवाय उर पिण घणा
 जीवनी हिंस्या जाणी धर्मरुचीजी जहरनो आहार
 खायोवे तो जाणजो मेघकुमार पूर्व जवे घणानी अ
 नुकंपा कीधी संजवेवे ॥प्रश्न ॥ ११२ ॥ तथा तुम क
 होंगे जे अनुकंपा आपरी करवी पिण पारकी कर
 वी किहां कहीवे ते उत्तर अरे अज्ञानीयो आपकी
 अनुकंपातो कुयगडांगमें १७ में अध्येने कहीवे (य
 थंसेजिक्खुः आतठी आयहिते आयगुत्ते आयजोगे
 आय परकम्मे आयरखीय आयाणुकंपए) इम इ
 हां आत्मानी अनुकंपाकरे ते आत्मानी जन्म जरा
 मरणना दुःख थकी बुटावे इम कह्योवे पिण जगवंत
 आदिदेई परकी अनुकंपा करीवे ॥ ११३ ॥ बली के
 ईक बादी इम कहैवे जो जगवंतनी पहिली बाणी
 खाली गईवे तिहां देवता परमुख मिल्यावे तेइने ज
 ती धर्म तो आवे नथी पिण जगवंत इम कहता अ
 हो देवता साराद्वीप समुद्रामें मढ गिलागिल लगरही
 वे हजार हजार जोजनरा मढेवे ते अनेक मढने

खाईनें पेट भरें जीवानें मारेवे ॥ तो तमें जात जी
 व बचाउ तो घणो धर्म होसी इम कहतातो देवता
 मानता धर्म करता तो वाणी खाली क्यानें जावती
 इमतो कह्यो नथी ते उत्तर अहो कुबुद्धी थारा मनमें
 मोहनीना प्रजोगथी अनेक विभ्रम उपजेवे पिण थारे
 लेखेंतो जगवंत कहता अहो देवता श्रमण साधूनें ४
 प्रकारे आहार देवानुं घणो लाजवे तो तमें घर घर
 में जाई आहार सूऊतो राखो तो घणो गुण नीपजे
 वे इम कहता तो देवता तुरत थो काम करता पिण
 थारे लेखें जीववचायामें धर्म नथी तिम साधूनें आ
 हार देवामें धर्म नथी तो अहो कुबुद्धि जगवत तो उ
 पदेस धर्मनो दीधोवे पिण देवतासुं तो चारित्त धर्म
 होय नही अने मनुष तिहां पिन होता नही ते माटे
 वानी खाली गईवे पिण तुम खोटो चोज दे दया उ
 थापोवे ते किम उथापसो सिद्धांतमेंतो दयाहीज सा
 रवे ॥ ११४ ॥ तथाकेईक इम कहेवे जे साधू नावा
 में बैठावे तिहां नावामें पाणी आवतादेखी साधू ना
 वडीयानें जणावेतो लोक कुसलखेमें घरें आपे जो
 जीव वचायामें धर्म होय तो साधू वतावे क्यो नही पिण
 जीव वचायामें धर्म नही तिणसुं साधू पाणी आवता
 वतावे नही तेहनो उत्तर—आचारंग दूसरे अध्येयन
 तीसरे ईरज्याध्यायनमें उदसे १ (सेजिरुखुवा २
 णावाए उतिंगेण उदयं आसवमाणं पेहाए उवरुवारिं

णावां कचलावे पेहाए णो परं उवसंकमित्तु एयंवा
 आऊसंतो गाहावती एतं तेणावाए उदयं उतिंगेण
 आसवति उवरुवरिं णावाकळ लावेतिय तप्पमारं
 मणंवा वायंवा णोपुरउकट्टु बिहरेजां) इहांतो साधू
 नो कल्प नथी पिन जो साधू नावनीयाने पाणी आ
 वतो बतावेतो नावडीयो इम कहेवे तु मुऊने बतावे
 तो तुं पाणी रोके किम नही जद साधू कहे मुऊने क
 लप नथी जद नावडीयो रीसकरी साधूने पाणीमे
 पटके तिण कारण बतावे नही तथा बतावेतो पाणी
 नी हिंस्याघणी होय ते साधूने लागे पाणी उलिचे ते
 माटे वली साधूने तो जीव रिख्या कारणे मोन करवी
 कहीवे आचारांगे ईरजध्येने ३ उदेसे ३ (सेजिखुवा
 २ गामाणंगमं दुईकमाणे अंतराविसे पांके पधिया
 गठेजा तेणं पाडिपधिया एवं वदामी आउसंतो सम
 णा अवियाइं एतो पडिपहे पासह तंजहा मणुस्संवा
 गोणंवा महिसंवा पसुंवा पखिंवा सरिसिवंवा सिंहंवा
 जलयरंवा संतुस्से आइख धदंसेह तं नो आइखेजा
 णोदंस्सेजा णोतंसतपरिणं जाणेजा तुसीणीउठ्ठहेजा
 जाणंवानो जाणंति वदेजा ततो संजयामेव गामाणु
 गामं दुतिकेजा) इहा पाठ मध्ये कोई साधूने पथ
 मां पूठयो हे साधू तोनें हिणं परमुख मिला होयतो
 बतावो जद साधू जीव रिख्याचणी मोन साजे पिण
 इम न कहे जे मुऊने मिलाग तो इहाही जीव रिख्या

निमित्त मोन साधवी कही अने नावानें अधिकारे णि
 ण अप्पकायनी रिख्याजणी मोन साधवी कही अ
 नें जो बोलेतो वचन जोगमें सावद्य लागे ते माटे
 मोन कहीठे पिण साधुं इम जाणे जे हूं पाणी आव
 तो वताविसुतो ए लोक वच जावसी ते माटे हूं नहीं
 वतावूं इम चिंतवेतो साधुनें दोषलागे ते नणी इमते
 नहीं चिंतवणो अने कल्प नहीं ते माटे नहीं बोलवों
 ॥ ११५ ॥ तथा केई एक इम कहेठे जे साधू के
 हनो जीवणो वठे नहीं वंठे तो पाप लागे वले साधू
 आपणो जीववो वांठे तोही पापलागे तो पारका जा
 वणो किमवठे इम कहेठे तेहना उत्तर प्रथमतो साधू
 जी सूऊतो आहार पाणी गवेपीने करे ते स्याजणी
 (सजम चार वहण ठाणाएनुजेळा पाण धारणठया
 ए) इहां कह्यो जे प्राण धरवानें अर्थे जीवतव्य रा
 खणनें काजे आहार करेठे १ वले उत्तराध्ययन २६
 में गाथा ३३ पद ३ (तहपाण वत्तियाए) इहां पिण
 जीवतव्यने निमित्त आहार करेठे २ वले दसवियाल
 अध्येन ५ उदेसे १ गाथा २९ पद ४ (साहुदेहस्त
 धारणा) इहां पिण देह धरवानें अर्थे साधू आहा
 र करेठे ३ वलि दसवीयाल अध्येन ५ (साणसुइयंग
 वं दित्तं गोणं हयंगयं संक्किंकलहंयुवं दूरजं परिव
 ऊए) १२ इहां कह्यो स्वान १ व्याइगाय २ मदो
 न्मतवलद ३ घोडा ४ हाथी ५ रमता बालिक ५ रा

मनो संस्थान ७ संग्राम ते शस्त्रनो संस्थानक ८ त
 था पूर्वे कहरा ते स्वान परमुख लडता होय तिण स्था
 नक ८ ए ८ ठामें साधू नही जाय ते प्राण राखवानें
 अर्थे ४ इत्यादि अनेक ठामें साधु आपणो संजम
 जीतव वंठे वले ठाणांगे ५ में (हयणवा गयस्सवा
 दुठस्सवा आगवमास्सनीय एयंते उरमणुप्प वि
 सेजा ३) इहां कह्यो जे साधु हया दिकने देखीने रा
 जाना अंतेवरमें पैसेतो आज्ञा उलंघे नही इहां पि
 ण आपणो जीतव वांठयोठे ५ वले आचारांग २ अ
 ध्येन ३ उदसे ३ नावानें अधिकारे साधु इम जाण्यो
 मुऊने एह पाणीमें पटकस्ये इम जाणीने [सेपुवामे
 ववदेजा आजसंतो गाहावती मामेतो वाहाए गहाय
 णावातो उदगंसि पखिवेह सयं चेषणं अहंनावतो उ
 दगंसिजगाहिस्सामि] इहां पाठमध्ये कह्यो साधु ना
 वडीयानें वरजे मोनें पाणीमें नाखो मती इहां पिण
 जीतव्य वंठयोठे ६ वले ठाणांग ५ मे उदसे २ पा
 चकारणें साधु चोमासामे पजुसणा पहिली विहार
 करे ते पाठ [जयंसिवा] ते राजादिकने जयें तथा
 बैरीनें जये १ (दुजिक्खंसिवा) ते जिह्वा न मिले
 तो २ पवहेऊमाणवा ते ३ उदयो ० पाणीनो प्रवाह
 आवतो जाणीने ४ कोई अनार्य आवता जाणीने
 ५ इहां पिण साधू जीतव वंठेठे ७ वले कारण पण्यां
 उप्रधादि लेवेठे ८ इत्यादि घणा सूत्रामें साधूजी सं

जम जीवतव्य वंशता कह्योते ॥ ११६ ॥ इहां वादी.
 कहेते सूत्रमे तो साधुने यहवो कह्योते (जीवियासा
 मर्णजय विष्पमुक्का) तो इहां जीतवनी आसा न रा
 खेवी कही ते उत्तर इहा तो आसा तृशनारूप जी
 वणो नही वावे श्लाघताजणी जे हुं जावूंतो रुडो मा
 हिरी महिमा पूजा घणीते ते माटे इसो जीतव आ
 स नही राखे अने मर्णजय ते पिण नही राखे मरण
 स्युंतो स्युं होसी इम नचितवे नहीतरतो जगवती
 सतग ९ उदेसे ३३ में जमाली माताने इम कह्यो
 हे माता हुं [संसारजडविग्गे जीएजम्मण मरणे
 णं] इहां तो मारवानो जयकीनोते तिवारे संसार
 बूटोते तो जाणजो साधु आपणो संजम जीतव वंशे
 वे ॥ ११७ ॥ वली वादी कहेते पारको वंशवो किहां
 चलयोते ते उत्तर ज्ञाता अध्येन १६ मे कह्योते धर्म
 रुचि मुनिराज नागश्रीना घरथकी कडवो तुंवो ले
 ई गुरांने दिखायो जद धर्मघोष आचार्य अति गं
 ध जाणीने (एगविदुयं गहाय करय लंसी आ
 सादेती तितगं खारं कडुयं अखळं अन्नोळं विसन्नू
 तिं जाणता धर्मरुतिअणगारं एव वयासि जइणं दे
 वाणुप्पिया एयं सालतियं जावणे हावगाटं आहारेसि
 तोणं तुम्म अकालं चैव जीवियांन ववरो विज्जसि तं
 गच्छइणं तुम्मे देवाणुप्पिया इम्म सालतियं एगंतम
 णवाते अचितथंभिले परिठवेहि २ अणं फासुयं ए

साणिकं असणं ४ पडिगाहेता आहारं आहारेति)
 इहां धर्मरुचीनो जीववानो उपाय कह्यो तथा ठाणा
 ग ५ में साधु आरजाने ५ कारणे संग्रहे पकमे ते
 यहीराखे ते बोल ५ पूर्वे कहाहीजठे तथा ५ कारणे
 साध साधवी एक उपाश्रये जेला रहिवो कहाठे त
 था ठाणांने ५ मे पांच कारणे करि साधु राजाना अं
 तेवरमे प्रवेशकरे (तं नगरे सिया सबउं समंता गु
 ता गुत्तदुवारे वहवे समणमाहणा नोसंचाएति जत्ता
 एवा पाणाएवा निखमित्तएवा पविसित्तएवा तेसिं
 विन्नवणठयाए रायतेउरमणुप्पविसेज्जा) तो जोउं
 इहा पिण अनेरा साधुनो आदिदेई सर्व साधु वली
 जगवंत सुनखत्र सर्वानुत्ततिने वरज्याठे व्यवहार
 भाटे जीवानो उपाय करयो जीववानो उपाय कह्यो
 वले व्यवहार सूत्रने ५ मे उदेसे (एगांथंचणं राउ
 वा वियालेवा दीहपुठो लुसेज्जाते इत्थी एवा पुरिसो
 उमजेज्जा पुरिसावा इत्थी ए उमेजेज्जा येवंसे कप्प
 ति येवंसेचिठति परिहारचणो पाउणेति यसकप्पो थे
 र कप्पियाणं) इहां कह्यो जे साधवीने सर्प डस्यो
 होयतो पुरप साध तथा ग्रहस्त पासै तिगठो करा
 वे अने साधुने डस्यो होयतो आरज्याने तथा ग्रह
 स्थनीने पासै तिगठो करावै इम करतो थेवर कल
 प साथी अष्ट न थाय तो जोउं इत्यादि अनेक ठा
 मे पर साधुना जीववानो उपाय कह्यो ॥ ११८ ॥

हिवे इहां वादी पिष्ट हुया थकां इम कहेवे साधु सा
 धवीनो संजोग एकठे ते माटे जीववानो उपाय क
 रयामे अमे पाप किहां कहांगं ते उत्तर अहो अली
 क वचनना बोलणहार तुमें साधु साधवीनो उपायमें
 धर्म जाणोतो मर्म किम कहोवो गजमुकमालनी अनु
 कंपा नेमनाथजी नही कीधी वीरनी अनुकंपा देव
 ता न कीधी जो धर्म जाणतातो गोडावता किम न
 ही इम कहोवो तेहना प्रायचित्त लो आगेसु इम क
 हवो साधु साधवी माहो भांहीं अनुकंपा करी बुडावे
 तो धर्मठे पिण तुमारा वचनरी एक धारा नहीठे ॥
 प्रश्न ॥ ११९ ॥ वली वादी कहेवे साधुनी अनुकंपा
 साधुकरे पिण साधुनी अनुकंपा भ्रहस्तनें करणी न
 ही ते उत्तर जगवती सतग १६ उदेसे ३ (अणगा
 रस्सणंजंते जावीयप्पाणो ठं ठं अणिखित्तं ॥
 जाव आया वे माणस्स तस्सण पूरि त्थेमेणं अवठं
 दिवसं नो कप्पति हत्थंवा पायंवा वाहंवा ऊहंवा आ
 उटा वेत्तयवा पसारितयवा पचत्थिमेणसे अवठ दिव
 सं कप्पइ हत्थंवा पायवा जावउरुयंवा आउट्टा वेत्त
 यवा पसारितयवा तस्सय असिया उउवंति तेचेव वे
 जे अदखु इसिंपाकेति २ ता असियाउ विदेज्जा से
 नुणं जते जे विंदइ तस्स किरिया कऊई जस्स तिथि
 जइ नोतस्स किरिया कऊई एणत्थगेणं धम्मं तरा
 इएणं हत्ता गोयमा जे विंदइ जाव धम्मंतराइएण

सेवंचते सेवंचतेति १६।३) इहां कह्यो जे को
 ई साधु ध्यानमां खडोठे अने नासिकामा हरस ल
 टकेठे इतरामां वैद्यदेखीनें लगारेक साधुनें हेटो पा
 डीने हरस ठेदीतो वैद्यने शुन प्रकृतिनो बंधवारूप
 क्रिया करी साता दीधा माटे १ अने साधुजी कटावा
 रूप असाता गमावारूप किरिया न करी २ पिण का
 टता बेदनी होयी जद ध्यान रूप धर्मनी अंत्राय पडी
 साधुनें ३ तो इहां वैद्यनें साधुनी साता होयवानी बु
 द्विठे ते माटे शुन प्रकृतिनो बंधपडे हिवे इण पाठनो
 अर्थ केईक उंधमती इम करेठे वैद्यनें पाप रूपणी
 किरिया लागी ॥ १२० ॥ साधुनें ध्याननी अंत्रायदी
 धी ते माटे तेहना उत्तर इहां पाठ मध्ये तो अंत्राय
 दीधानो पाठनथी (धम्मंतराइणं) येह पाठे ते
 अंत्राय पफिवानु पठेते ते किम कोइक ग्रहस्तसाधुने
 आहार आपता असूऊतो थयो तो हिवणा साधुनें
 आहारनी अंत्रायपडी के ग्रहस्ये अंत्रायदीधी ते क
 हो १ बले साधु बखान करता घणा श्रावक सुणता
 किणोक आय कह्यो स्वामी तुमनें तुम्हारा गुरु ता
 कीदमुं बुलावेठे इम कहता विहार करेतो सुणणवा
 लाके अंत्राय पमी के उण कहणयाले अंत्राय दीधी
 ते कहो २ बले साधु रात्रे बखान करतां घणा श्रा
 वक सुणता किणहीक ग्रहरत कह्यो स्वामी पहिर रा
 त्र आइ गईठे इम कह्या थका बखान उठावेतो सु

एणवाले के अंत्राय पडो के उग कहणवालाइ अं
 त्राय दीधी ते कहो ३ बले कोई साधुनें आहार कर
 वाकी त्यारी करी इतरामे दूना साधु बोलयो आहार
 उण्ण घणोठे ते माटे धीरारहो इम कहता साधुनें अं
 त्राय आहारनी पडीके कहणवालाने अंत्राय दीधी
 ४ इत्यादि अनेक युक्तिवें तिम जाणजो वैद्यनें हरस
 काटिवानी बुद्धिबे ते साता होयवानी बुद्धिउे पिण
 धर्म अंत्राय देवानी बुद्धतो नथी बले क्रिया शब्दे पु
 ण्यनी क्रीयाबे पिण पापनी क्रियानथी ते किम साता
 थावा माटे बले मारता साधुनें वचावेतो जीवतव्य
 दान दीधो कर्हाजे तेहनी साख जगवती सतग ७
 में उदेसे १ [समणो वासएणं जते तहारूवं समणं
 वा महाणंवा फासुएसणिकेणं असणं ४ पडिलाजे
 माणे कि लऊइ गोयमा समाणो वासएण तहारूवं
 समणंवा जाव पडिलाजे माणे तहारुवस्स समणस्स
 वा माहणस्सवा समाहिं उप्पायति समाहिकारणं
 तामेवसमाहि पफिलजई समणो वासएणं जते तहा
 रूवं समणवा जाव पडिलाजे माणे किं चीयइ गोय
 मा जीविपं चयइ) इत्यादि आगे पाठवे इहा कह्यो
 जे श्रावक साधुनें आहार पानी प्रतिलाजे माणे तो
 साधुने समाधि उपजावे जिसी साधुनें समाधि दीधी
 तेहजो समाधि आप पामें बले कह्यो जे साधुनें
 आहार पानी दीधो तो जीवतव्य दीधो कहीजे तो

जीवोनें आहार पानी दीघां जीवतव्य दीघो क्ह्यो
 तो साधूनें मारता बचावेतो जीवतव्य दीघो किम
 न कहीजे वली साधूनी असाता मेट्या पिण जीवत
 व्य दीघो कहीजे इण लेखे बैद्य पिण साधूने माता
 दीघी कहीजे १ बली साधूनें पाणीमें वहतां डुवता
 थी ग्रहस्थ काढेतो साधूनें जीवतव्य दीघो कहीजे २
 साधूनें अन्नमासुं बलताने ग्रहस्थ काढेतो साधूनें जी
 वतव्य दीघो कहीजे ३ किणी अनार्जे साधूनें बांधी
 नें मूकयोळे हिवे ग्रहस्त बंधणथी ठोकेतो साधूनें जीव
 तव्य दीघो कहीजे ४ किणी अनार्जे साधूनें बांधीनें
 रूखके बांधयोळे हिवे ग्रहस्त बंधनथी ठेडेतो साधूनें
 जीवतव्य दान दीघो कहीजे ५ बले साधू ग्रहस्तके
 घर गयो थको नवलखाई हेठो पडयो अचेत होय ग
 यो हिवे ग्रहस्त साधूनें बैठो करे तो साधूनें जीवतव्य
 दान दीघो कहीजे ६ इत्यादि अनेक युक्तिवे थोडो
 कह्यांथी घणो समज्यो पिण साधू ग्रहस्थनी चाकरी
 अनुमोदेतो प्रायश्चित आवे ग्रहस्तनो साहज बंध
 णो नही सूत्रमां ठाम ठाम क्ह्ये वे जे साधू ग्रहस्त
 नें पासे कहीने वैयावच करावे तो प्रायश्चित आवे
 पिण (सहसातकारे) अर्थात् अचानक करण वा
 लाने स्युं थयो ते क्हो ॥१२१॥ इहा वली बांदी इम
 कहस्ये जे साधूनें (अप्राशुरु) अर्थात् सचित सहि
 त आहार पाणी दीघातो अरु आऊं वा बंधवो क

ह्योठे तो साधूने पाणीयादिक माहिथी काढताहीज
 अल्प आउखा वधेते ते उत्तर अहो दुरवुद्धी थे अ
 प्रासुक आहारनो न्याव मति लगावो अप्रासुक अ
 र्थात सचितादी आहार पाणीनो नेमठे ते जाणीनें न
 लेवो अनें अजाणें आयो-होयतो ठीक पढ्यसूं पर
 ठदेवे तथा जोगवे तथा अणाशुद्धिथी शुद्ध जाण्या
 तो जोगवे ते आचारांगमें घणे पाठठे पिण दमाश्रु
 त खंधमध्ये कह्योठे जे परिमा धारी साधूनें अन्नमा
 हिथी गृहस्त काढतो सुखें निकले पिण प्रायचित्त क
 ह्यो नथी थारे लेखें अप्रासुक तथा असूक्तो आहा
 र पाणी नलेवो तिम पडिमाधारीने निकलवो पिण
 नथी कल्पे १ तथा अप्राशुक आहार अजाण पणे
 आयो ठीकपरुयां संजोगीनें देवो पिण न कल्पे थारे
 लेखें तो नदी मांहिथी पहती साधवी तथा साध सं
 जोगीनें पिण काढवो नही वले असूक्तो आहार प
 ष्ठेहीज थारे लेखे जिम साधूनें पाणी मांहिथी गृह
 स्थ काढे तो जीवत असूक्तो थयो जीवणो न कल्पे
 ३ वले अप्राशुक आहारतो श्रावकने विना कारणें दे
 णो नही साधूनें लेणो नही तिम थारे लेखे लायादि
 कमासूं साधूने गृहस्तनें काढणों नही अनें जो काढे
 तो साधूने निकलतो नही ४ वली अप्राशुक आहा
 र दीधा व्रतमें अतीचारलागे अनें साधूने अन्नादि
 कमेसू काढेतो किंसा विरतमें अतिचार लागे ते क

हो ५ वली आवाकरमी आहार दिन दिन प्रते जो
 गर्वाने खुसी होय तो ४ गतिमें घणो रुले तिम थारे
 लेखें अन्न माहिसुं नीकलता पिण रुले ६ इत्यादि
 अनेक युक्तते तो आहारनो न्यावतो लागतो नथी
 ॥१२२॥ तथा वादी इम कहेस्ये जे देवगुरु धर्म नि
 मते हिंस्या करवी नही ते उत्तर इमतो अमे कहा
 इज किंचत मात्र धर्म निमते हिंस्या करवी नही त
 पाठ (एवं खुनाणीणोसारं जंनहिं सइ किंचण) इ
 ती वचनात् तो साधुने काढतां जेतली हिंस्याहोय ते
 तली सर्व सावद्यते अने साधुनो काढवो ते एकांत
 धर्मते अन्नयदानते वली वादी कहसी जो गृहस्त
 साधुने नही काढेतो कियो पापलागे अने कियो ब्र
 त जांगेते ते कहो आरज्यां बहतीने साधु न काढेतो
 कियो पाप लागे कियो ब्रत जांगे ते कहो तद कह
 सी संज्ञोग जांगे नही काढेतो ते उत्तर - संज्ञोग नि
 मिते कियो हिंस्या करवी कहीते जीवघाततो काढण
 आश्री गृहस्तने पिणते साधुने पिणते ते विचारी जो
 जो बले जगवती सतग ९ में उदेसे ३४ में कोई पु
 रपने घोडाने हाथीने सिंहने वाघने बली अनेरा व
 सजीव प्राणीने इत्यादिकने हणतो थवो अनेराइ
 पिण हणावे इम कह्यो अने ऋषीश्वरने हणतो थ
 को अनंता जीवांने हणे इम कह्योते तो एक ऋषी
 श्वरनी रिख्या करी तिणे अनंता जीवनी रिख्या करी

केहीजे-॥ १२३॥ बली बादी कहस्ये साधुतो अनंता
 जीवाना पीहरते पिण ग्रहस्थनो जीवतो अबिरतमा
 वे तेहने बुडावेतो असंजम जीवतव्य वंथयो कही
 जे ते जणी बुमाणो नही इम कहते ते उत्तर अहो
 दुरवुद्धी मोह ममता करे ते पापते पिण जीवणो बढे
 तेहनो तो पाप किहांइ कह्यो नथी वली दसवे काल
 क अध्येन ५-में (सवेजीवाविइठंती जिवीयंन मरि
 ज्जीयो तम्हापाणवहं घोरं णिगंथावज्जयंतेणं १)
 इहां कह्यो जे सर्व जीव जीवणो वंठेते पिण मरणो
 कोई न वंठे ते जणी साधूजी जीवनी हिस्स्या न करे
 वली सूत्रमे ठाम ठाम कह्योते (माहणो माहणो)
 किणही जीवनें मतिहणो इहा जीवनी रिस्स्या करवा
 नो वचन कह्योते तथा मारतां थका वरजवानो वच
 नते बले एहनो अर्थतो वरजवानोते किणे अनार्ये
 कोई तिर्यचादिकने गाढे बंधन बांध्योते इतरामें
 साधूनों उपदेसे करुणा ऊपनी पढे जायठोम्यो तेह
 नो स्यु फल तथा गेडयो ते काम अज्ञा माहिलोके
 बाहिरलो ते कहो ॥ १ ॥ कोई अनार्य कसाईरी जा
 त गऊनें विणासतां कोई पुण्यवंत जीव रोटी तथा
 रूपीयो देईने करडासूस कराय दीया गऊनें बुडाय
 दीधी पढे कसाई दुजो जीव पिण मारयो नही अब
 उण बुडावण वालानें स्युं होय ते कहो २ कदाच बु
 डावणरो उपाय करतां कोई जीव मुवो तिणरो पाप

मुख गिणोतो थाने आहार पानी दीधो पेटमें क्रिम
 उपना दिसां गया मर्ण पाम्या थारे लेखे लेवाल हे
 वाल दोनोही डुठ्या ॥ ३ ॥ बले अंतकृत गढमां क
 ह्योबे श्री कृष्ण महाराजनें जरद कुमरने वाण म
 रयो पढे श्रीकृष्ण कहे हे जाई जा नहीतो नलनद्र त
 ऊनें मारसी ये जगारवानी सिखामण दीधी ए केही ले
 स्या शुन कि अशुन ते कहो पढे नरकनी आनपूर्वी
 आवी तव कह्यो जे मुऊनें मारीने वली ए जीवतो
 किम जासी ए जाव आव्या तिवारे ७ सागरने आ
 उखे गया इत्यादि दया ऊपरे अनेक प्रश्नोत्तरवे ॥
 बले दसाश्रुत खंधमा पडिमाधारीने अधिकारे वल
 ता पडमाधारी साधूनें कोई कुरणावंत उत्तम प्राणी
 काढेतो न कल्पे पोतानी खातर नीकलवो पिण ए
 तलो विशेष आगला प्राणीनी अनुकंपा माटे नीक
 लवो कल्पे इहा जोवो साधूई अनेरानी अनुकंपा क
 री के न करी साधू अगनी मांहिथी न नीकलेतो ते
 पुरष जो अगनीमा वले तो काई साधूना ९ जोग
 मा पाप न लागे पिण साधू ते पूरप काढनहारनी
 अनुकंपा माटे सुखें नीकले ॥ १२४ ॥ बले बादी क
 हेबे जो रुपियादेइ जीव बुडावेतो तारे रुपीयाना बीजा
 तीर्थच मोल लेईने मारे तो बोडावण वालाने पाप ला
 गे तेहनो उत्तर जगवती सतग ५ में उदेसे ६ में क
 ह्योबे जे कोई ब्रध पूरप पंखीने हणवामाटे वाण ना

खेठे ते पंखी बाणथी मूवो तिवारें ते बाणना जीवनें
 अने धनुषना जीवने अने नाखणहारनें ए ३ ने
 पांच पांच लागती क्रिया कही अने तेहिज बाण पो
 ताना मारथकी हेठो पडयो तिवारे पडता विचाले अ
 नेरो जीव हएयो बीचलो जीव मूठ ते आश्री बाणना
 जीवनें धनुषना जीवने पाच पांच क्रिया लागी कही
 अने बाणना नाखणहार पुरपने च्यार क्रिया लाग
 ती कही प्राणातिपातरी क्रिया न लागी इम कह्यो
 वे ॥ हिवे जोवो जे जीवमारवाना परणाम हुता ते
 जीव आश्री पांच क्रिया लागती कही अने जेमा पो
 तानो हणवानो जोग नथी तो ते च्यार क्रिया न क
 ही हिवे उगारे तेहनें केटली क्रियालागे ते कहो उ
 गारण वालानो ध्यान च्यारमां केहो ठहलेस्या मांहि
 ली केही लेस्या जोग अशुनके शुन ते कहो वली
 जगवती सतग ५ में उदेसे ६ में कह्योठें (गौयमा
 जेणपर अलीएणं असंतएणं अजाखाणेणं अजाइख
 ई तस्सण तह प्पागारा कम्मा वज्जए) इहा कह्यो
 जे जेहवा ऊठ बोले जेहवा आलदेवे तेहवा आवने
 नवे तेहवाज फल पामें पिण एतलो विशेष कीई सृ
 गप्रधानें समे मृग रक्षादिक कारणे ऊठ बोले ते द
 याना परिणामनो ऊठ टालीने बीजा ऊठना माठाफ
 ल कहो इहां प्रचुर्ये पिण ए ऊठ टालीने माठा फल
 कह्या इहां ऊठ बोलवानी प्रचुरी आज्ञा नथी पिण

ए पुरपने जूठ बोलवाना परणाम नहीं मृगादिक जी
 व राखवाना परणामवे ते माटे कोई एक ग्रहस्त सा
 धूनें पात्र नरीनें घृतनो दान दीधो कोईके कह्यो हे
 नाई तुमे धन्यतो आरीते पात्र नरीने घृतादिक दा
 न देवोबो तिवारे तिण दातारे कह्यो हे नाई हूं तो
 स्युं दान दीधोबे लगारेक दान दीधोबे हिवे ए दा
 तारने ए दान दीधाना स्युं फल लागे के जेहवो जूठ
 बोल्यो तेहवा फलपामें जिम जीव दया ऊपर जाण
 वो ॥ कोईक ग्रहस्त साधूने सरिर रोगादिक जाणीने
 श्रावके महा विरस कडु कसायेलीया परमुखनी उष
 धी दीधो उपधी लेतांज साधूने वमन बिरेच अवस्था
 थई घणो दुःख पाम्यो पबे साता थई रोग मिट ग
 यो हिवे ए दातारने साधूने आसाता ऊपनी तेहना
 पाडुया फल लागे वे सुनीने साता दीधी तेहनो फल
 पामें ते कहो करतव्य परिमाणे फल लागे के जेहवा
 मन परिणाम होय तेहवा फललागे ते कहो जिम जी
 व उगारवानो परिणाम दयानोबे तेहवा फल पामस्ये
 ॥ प्रश्नोत्तर ॥ १२५ ॥ अथ दान आश्री प्रश्न लि
 ख्यते ॥ केतलाइक दान विध्वंसी जीव कहेवे साधू वि
 ना श्रावकथकी मांडी सर्वने दान दीधा एकंत पाप
 कहेवे तेहना उत्तर नगवती सतग ८ में उदेसे ६ में
 (समणो वासगस्सणं जंते तहारुवं समणंवा मांहेण
 वा फासूय सणिक्केण असणं पाणं खाइमं साइमं प

ढिलान्ने माणस्स किं कज्जई गोयमा एकंत सोसे णि
 जरा कज्जई नत्थियसे पावकम्ममे कज्जई १ समणो वा
 सग्गस्सणं जंतं तहारुवं समणंवा माहणंवा अफासु
 यसणिक्केणं असणं पाण खायमं सायमवा पडिलान्ने
 माणे किं कज्जई गोयमा बहु तरायसे-निज्जरा कज्जई
 अप्पत्तरायसे पाव कम्ममे कज्जई २ समणो वासग
 स्सणं जंतं तहारुवं असंजय विरय पण्हिय पच्चखाय
 पावकम्मं फासुएणवा अफाम्बुएणवा एसणीक्केणवा अ
 णेसणिक्केणवा असणं ४ पडिलान्नेमाणे किं कज्जई
 गोयमा एकंत सोसे पावकम्ममे कज्जई नत्थियसे किंचि
 णिक्करा कज्जई ३) इहां तीजा पाठमां तथा रुप अ
 संजतीने दान दीधां प्रतिलाज्याथका स्यु पामे एतले
 प्रतिलाज ते गुरुनी बुध्ने देवतो पाप कह्यो पिण अ
 नुरुंपा भाटे दान दीधा पाप नथी कह्यो गाथाटीका
 भावे (मोखत्थं जंदाणं ने पियस विही सभरकाउ
 अनुरुंपा दान जिणेहिं कयाइ नपमि सिद्ध १) इहां
 पिण इम कह्यो जे गुरु बुध्ने आपे मोक्षहेते जाणीने
 तो मिथ्यात्वलागे पले वादी कहेवे ए तो तुम जुक्त
 मेलोवो तेहनो उत्तर एह तीन पाठ लगतां दान दी
 धानावे जेहवो असजतीना दानमा पाप वोल्हो ए
 पाठ जेहवो कह्यो तेहवोज मानसो काई हेतु युगत
 मानसो नहीतो बीजा पाठमां तथा रूपसाधुने प्राशु
 क अप्राशुक एसणीक अणेपणीक आपेतो अल्प

मां जो कोई अन्यतीरथी कृधा वृषा पीरयो थकी
 आवे जिह्नुक मागणाने दान लेइ जाइतो ते दीधा
 नो आगारठे एतले जिह्नुकने दानतो आनंद श्रा
 वक देवेठे इणलेखेतो अनुकंपा दान परमुख करणी
 ना धणीतोठे पिण एहवो नथी कह्यो जे हुं असंज
 तीने न आपुं असंजतीमां अन्य तीरथीमां घणो अं
 तरठे बेहुं सरीखा नथी अन्यतीरथीतो ३६३ पाखं
 ड मिथ्यातीना दिपावणद्वारा जिनमारगना निंदक
 तेहने आपतां बांधतां आलाप संलाप करतां जिन
 मारगनी लघुता लागे पाखंरु मारगदीपे लोक पिण
 इम जाणे आनंद श्रावक यहवा माहाठे तो पिण पा
 खंडयाने मानेठे तो कांडक खरादीसेठे इसी शंकादि
 दूपण घणा जीवपामे ते माटे अन्यतीरथी निषेध्या
 ठे अने जो सर्वथा दान निषेध्यो होयतो इसो पाठ
 होये [नोकप्पई अऊप्पजिइचणं असंजय] इत्या
 दि ते तो नथी वली जेहवो आनंदनो आचार तेह
 वो १ लाख ५९ हजार श्रावकानो आचारठे अन्य
 तीरथीना तीन बोल सर्वने नकल्पे वली आनंदादि
 क तीन बोल पूर्वे बांदताहता ते टाल्या अने तुम जि
 ह्नुक दालद्रीने रांकने अन्य तीर्थीने गिणोठो तो तु
 मारे लेखे आनंदादि श्रावक स्युं रांकवणी मग पर
 मुखने वांदताहता तो हिया थकी तो विचारो जेहने
 करता हता तेहने जे टाल्याठे एतो पांचवां गुणठा

एानी करणीवे ॥ १२८ ॥ तथा केईक वादी कहेवे
 चीककरांक ए अन्यतीरथीमा गिणस्यो के स्वयती
 रथीमे गिणस्यो ते उत्तर च्यार तीर्थवीना सर्व अन्य
 तीरथी अनंतावे पिण आनंद श्रावक पचरूया ते
 अन्यतीरथी पटदरसनना धणीवे जे वांदवा जोग कह
 वाइवे तेहने नवाटूं न बोलाउं मिथ्यातमें ए काम कर
 तो हिवे न करूं ६ ॥ १२९ ॥ तथा केतलाएक
 कहेवे जे श्रावक असंजतीने दान देवेवे पिण पनरमो
 करमादानवे असंजतीना नरण पोषण करया होयतो
 तस्समिसत्तामि दुक्कं तो एह पडकमावा जोगवे ते माटे
 देवा जोग नथी ते उत्तर इहातो १५ कर्मादान शब्दे
 व्यापार वृती आजीविकाकरी जीवो नही ए अर्थवे
 एहनी साख उपासगदसा अध्येयन १ सातमा वृत्त
 ना २ जेद (ज्ञोयणउय १ कम्मोउय २) ज्ञोयण
 कहता ज्ञोजनना पाच अतीचार ते (सचित्तहारे)
 इत्यादि ५ वे अने कम्मोय कहता व्यापारना १५
 जेद (इंगालकम्मे) इती इंगालाकरीवेची तेहनो
 लाज लेई पोतानी वृती करे ते काम श्रावक न करे
 जे सहजे काम अर्थे घर अर्थे लावेतो (इंगालकम्मे)
 न कहिये इम जाव १४ बोलकरी पोतानी आजीव
 का न करवी तिम पनरमो बोल (असई जणपोस
 णया) तेह स्यां बुद्धे हिंसकजीवने पोषे कुर्कट मार्जा
 र शुक कूकर इत्यादि तथा दासी दास पोषण जाडा

लेवा माटे तथा गणिकाने पोषे स्वार्थ जोग हेते त
 था कुतरा पाले सिकार हेते हिरण परमुख जीव ह
 णवासारु इत्यादिक १५ पंदरमो करमा दानवे पि
 ण कोई दान देवो ते पनरमो कर्मादान नथी अने
 दान देतां करमा दान लागे तो दाननो देणहारने सा
 तमो वृत मूलयीज रहे नही तेहनी साख जगवती
 सतक ८ मे उदेसे ५ में जे श्री वीरना श्रावकवे ते
 १५ कर्मादान त्रिविधे त्रिविधे वोसराव्यावे ते पाठ
 (जे इम्मो समणो वासगा जवंति तेसिनो कप्पंति
 इम्माइं पन्नरस्स कम्मा दाणाइं सयं करे तयवा कार
 वे तयवा करंतंवा अन्न समणु जाणत्तएतं) एहवावे
 ते माटे दान दीधा करमादान लागेवे तो वृत किम
 रहेवे बले पन्नवणा पद १ (नाणावटी) सूत्रे (वजा
 जरुथाला) इत्यादि आर्य व्यापार कह्यावे ते स्या
 माटे पाप थोडा जणी अने करमा दान न कहीए अ
 ने १५ करमादान वरज्या ते स्या माटे हिंस्याघणीवे
 तथा असजीव हणवेवे ते माटे ए काम करी पेट न
 रिवो वाज्योवे ए अर्थ साचोवे अने तमे पाठ खोटो
 वतलावोवे मत थापवा माटे (असंजती पोस
 णया) एहवो कहोवो एक अद्धार अधिको उगे वो
 लावेवे तो अर्थनो अनर्थ थई जाय जिम कुंती पुत्री
 युधिष्ठिर अने विंदूनो आलोपथी कुंती पुत्री
 यधिष्ठिरथाय एहवो फेर पडीजायवे अने सत्रमा तो

(अमई जणपोषणया) एइ पाठवे ते जाणज्यो वली ए अज्ञानी दानने करमा दानमा घाल्यो तो अहो अज्ञानीत एवमो स्युं पापवे ४ कारण नरक जावना कहा ४ कारण तिर्यंचमा जावणना कहा अने १८ पाप पिण कहा एमा कठेई दाननो पाप घाल्यो नही तथा सूयगडांग १८ में अधर्मना लक्षण वखाणाठ ते इम [हणहविंदह निदहकाकिणीम साइ करेह हडिवधण करेहिं इम्मं हत्तिगिन्न पायठि न्नं कन्नठिन्नं नकठिन्नं ऊठठिन्नं वेयठिन्नं करेह) मा हली बाहरली परपदाने थोडे अप्रादे नारी दंन देवे एहवा लक्षण कही देखाडया तेमा पिण दाननी करणी नथी कही वली नारकीना जीवने परमाहधामी हगेवे ते पूर्वला जवना दुकृत सजारीने देवेवे ते मा परदारगमन जीव हिस्सा चोरी कपट आल निंदा प्रमुख कार्य सजारीने वेदना देवेवे तेमा पिण दान रूपीया अधर्म सजारीने वेदना देता न कहा तो इहा श्री वीतरागे एहवो - दानमां स्युं पाप दीठो ते कमी दानमाज घाल्यो तो जाणज्यो जे अनुकंपा दानने कर्मा दानने कहेवे तेहने एकंत जूठ लागेवे उत्तर सुत्रमाथी जाणज्यो वली परदेसी राजा केसी समण पासे धर्म पास्या तो पहिला मिथ्याती नास्तक बादी हता ते दिनना लक्षण तिहां वरणव्या (लेहिये पाणीसेउ) हाथ लोहीखरडया रहेवे अणदीठीने दीठी

कहे दीठिनें अणदीठी कहे इत्यादि (उक्कंचणवंचण)
 क्रियानो धणीठे इम कह्योठे वली जगवती स
 तग १५ में विमल वाइन राजाना लक्षण वरणव्या
 तिहां (समणपडिकुला) कह्यो तेमां पिण दाननो
 वरणव नही जंबुदीव पन्नतीमें (अवाडचीलाया) अ
 नार्य राजाना लक्षण वरणव वखाएया तेमां पिण दा
 न देता कह्या नथी अने परदेसी राजा धर्म मारग
 पाम्या तिवारे पठें दान देवो मांडयो तो इम जाण
 ज्यो यह दान दीधानीकरणी आरज पुरषोनीठे पिण
 अनार्य पुरपानी नथी अनेए दान अनर्थादंडमा होवेतो
 १२ वृत लीधा पठेए काम किम करे वली प्रदेसी च्यार
 जाग करया तिहां तीन जाग करया बिना तो सर
 तो नथी पिण चोथो जाग किम करयो ते विचारज्यो
 वली केसी कुमारे वरज्यो पिण नथी तु समजीनें नथो
 पाप किम बधावेठे इम पिण कह्यो नथी अने रमणी
 क पणामा दानने वृत ए दो घाल्याठे ७ ॥ १३० ॥
 तथा कोई कहे एह करणी सरव अविरतमाठे विरत
 मा ए काम करवो नही ते उत्तर विरतमातो ए कारज
 नथी तेतो जाणेठे पिण दाननी करणी निषेधो स्या
 नेंठो जिम कोई पुरपें साधू पासें आवीने कह्यो स्वा
 मी मुऊनें अणगल पाणी पीवानी विरत करावो ति
 वारे साधू सूखे वृत करावे कोई कहे मुऊनें पाणी ग
 लीने पीधानो पचखाण करावो तिवारे साधू न करा

वे ते किम साहमो गलवान्नी हिंस्या टली ते रुडो थ
 यो पिण ए अजोग पचखाण पिण न करवो तिम
 साधू दानना पचखाण पिण न करावे पोताना खा
 वाना पीवाना पचखाण करावे पिण अनुकंपा परमु
 ख दान दीधाना पचखाण न करावे जो अनर्था त
 था करमा दान जाणेतो पचखाण क्या नहीं करावे
 पिण जिन मारगना श्रावकनी करणीमा पिण दान
 देवो दीसेठे ते पाठ जगवती सतग २ में उदेसे ५
 में तुंगीया नगरीना श्रावकनो वर्णवमा तिहां दान
 आश्रीतीन आलावा कहावे [विठडिय विपुल नत्त
 पाणा] एहतो घरनो आचार जे अन्नपाणी पुष्कल
 नीपजेठे जे खाधो पीधो तेहथी वधतो नाखी पिण
 देवेठें एरीते विस्तीर्ण जात पानी रंधायठे पठे श्राव
 कना पांचमा गुणठाणाना गुण वरणव्या तेमां (उ
 सियकलिहां अवंगुयदुवारा) ए बोलमा चिह्नुकनें
 दान देवा सारू कमाड उघामा राखेठे पठे तीजो बो
 ल साधूने दान दीधानो कह्यो [समणे निग्गंथे फा
 सुए सणिकेणं असणं ४ जाव बहरंति] दान दी
 धा करमा दान जाणे तो श्रावक (अवंगुयदुवारा)
 किम राख्यो ॥ १३१ ॥ तिवारे बादी कहेठे अचंग
 द्वारातो साधूने प्रवेस करवा माटेठे जे आडेवारणे सा
 धू आवे नहीं ते माटे कमार उघामा राखेठे तेहनो उ
 तर जे साधूने काजे द्वार उघाडा मूकेतो साधू तिण

घग्ना जावे तोहीज नथी बली परदेसीनो जीव त
 था अंबरुनो जीव महा विदेह खेत्रमा दृढपईन्ना प
 णो पामस्ये तेहना घर बखाएया तिहां (विद्यमियन
 तपाणा) ए गुण घरना आचारनोठे ते तो कह्यो पि
 ण (अन्नंगदुवारा) न कह्यो एतले श्रावक पणु न
 ही हनो तिहां सुधीतो आडे वारणे जीमवानो नेम
 नही अने तिहांथी श्रावक पणो पांस्या ते दिवसथी
 अन्नंगदुवारो पिण केडे बलग्यो जिन मारग पांस्या त
 दिवसथी उदार्य पणो अधिक अधिक बध्यो द्रव्य अथिर
 जाण्यो ते माटे अधिक दान देवा लाग्या वली कोईक
 हस्ये (अन्नंगद्वारो) तो साधूने काजेठे ते उत्तर सा
 धूनी तो दान आर्य खेत्रमाठे अनार्य खेत्रमा साधु
 नथी हिवे अनार्य खेत्रमां श्रावकने (अन्नंगद्वारो)
 किम नीपजे ते कहो तथा आर्य खेत्रमां कोई ग्राम
 साधु चोमासो नथी कह्यो पिणश्रावक (अन्नंगदुवा
 रो) राखे के नही ते कहो वले साधूनी उत्तम कुलनी
 आहार लेवेठे अने कोईक अ कल्पनीक कलमा श्रा
 वक होयतो तेहने (अन्नंगदुवारो) किम नीपजे ते
 कहो ८ ॥ १३२ ॥ केतला एक कहे साधुविना ओ
 रने दीवा पुण्य अन्य पुण्यनो खेत्र किहाइ नही ते
 उत्तर साधूना दानमें तो एकंत धर्मठे पिण अनुंवा
 जावे बीजाने दीवा पुण्यनी ना न कही वले साधुतो
 आर्य खेत्रमा ठे तिहांतो नव प्रकारे पुण्य नीपजे पिण

अनार्य खेत्रमा केतला प्रकारे पुण्य नीपजे ते कहो
 १८ पापतो तिहां नीपजेठे तिवारे वादी कहस्ये अत्र
 प्रमुख दीधां पुत्र थाय एहवोतो पात्र नथी पिण ३ जो
 ग शुर्न वरते तेह पुण्यठे तेहनें इम कहिये सूत्रमा
 ठाणांग ३ ठाणे परमुखमा कह्यो होय सो अनार्य खे
 त्रमा पुण्य बंधायठे इम कह्यो होयतो देखासो वली
 ठाणांगे नवमें ठाणे इम नथी कह्यो जे आर्य खेत्र
 मा नव पुण्य नीपजेठे पिण अनार्य खेत्रमा न नीप
 जेठे तथा ठाणांग १० में ठाणेदस प्रकारे दान कह्या
 ठे तेहना नाम अनुकंपा १ संग्गेहे चैव २ जय ३ को
 लुणितिय ४ लज्जाते ५ गारवेणं ६ धर्म दान ७ अधर्म
 दान ८ कोहे तीय ९ कथंतीय १० ए दसमा धर्म
 दान ते साधूनो चित्तवित्त पात्र शुद्ध होवे ते तथा
 उत्कृष्टे जावे दानने परिणामे निशाणादि दुखण रहि
 त दीधां थाय १ अने एक अधर्म दान ते पोताना
 विषय कपाइने हेने जीवहिंस्या दिक् मोटा दूसेण त
 थावेस्यादिकना दान विषयहेत देवे ते अधर्म दान
 कहिये २ अने शेष ८ दान ते धर्म दानमें जिले अ
 धर्म दानमें पिण जिले जिम किणहीक ग्रहस्थनें सु
 पात्र कुपात्रके गुणकीतो ठीक नही पिण जूख त्रीपा
 ना पीमथा थका सुपात्र तथा कुपात्र देखीने अनुकं
 पा आणीने देवेतो अनुकंपादान कहिये अनें सेठा
 णीने अर्णक मुनीको दान विसेहेते दीधो ते अधर्म

दान पिण कहिये जिम चोरनें चोरी करवानो साहेज
देवेतो अधर्म दान स्यां माटे जेलो पोतानो पिण
स्वास्थ्यते ते माटे इम करता वेहीज चोर बंधणमां प
ड्या तेहनें खान पान देवेतो अनुकंपा दान थाय पो
ताना परणाम जेहवो होवे तेहवो दान कहिये फल
पिण पोताना परिणाम शुद्ध अशुद्ध जेहवा होवे तेह
वालागे जिम पात्रनो धर्म रुचि साधू घणा शुद्धहतां
पिण नागश्रीना परिणाम अशुचथा तेहनें कडवा तूं
वा दीधा तेहवाज फल लाग्या ते माटे दान तप जप
द्विमा दया ए सर्व पदार्थना फल पोताना परणाम
पक्षे लागेते कोई अन्नव्यते अनें साधू मध्ये रहेते सा
धू जेलो खावो पीवो रहवो करेते पिण परिणाम हो
वे तेहवो फललागे तेहनें वली विवहार सुध देखी
कोई साधूनी बुद्धे वांदैतो तेहने अमाधु वाद्याना फ
ल लागे के साधू वाद्याना फल लागे पोताना परि
णाम ऊपर घणी बारतावे ते माटे ८ दान श्री बीत
रागे एकंत धर्ममां पिण घाल्या नही एकंत अधर्म
दानमां पिण घाल्या नही तथा सूयगमांग अध्ययन
११ में (जेयदान पसंसांति बहभिषंती पाणीणो जेएणं
पडिसेहांति वित्तिवेयं करतिते १) तथा दूजा सूयगडाग
अनाचार अध्ययन (दुखणोय पडिलंज्य अत्थिवानत्थि
वा पणो नविद्यागेर जमेहावी संतिम ग्गंच वूहय १)
एठले वेठामें प्रचूर्ये मध्यस्थत्तावे रहिवो कह्यो ॥ १३३ ॥

॥ श्रीवीतरागायेनमः ॥

॥ अथ पांच वादीयाकी चर्चा लिख्यते ॥

शार्दूल विक्रीडितं वृत्तम् ॥ पंचांशगजमीक्ष्णार्थ
मगमन् कर्णाद्वि शृंडाद्विजः । पुञ्जान् वीक्ष्णगजो वदंत्य
थमथोदृष्टोमयाकी दृशः ॥ सूप्रार्थंनकदल्पयोश्चत्रल
वच्चक्रु विवावंजडा । स्तद्वत्यंचमतानु गामदयुता सर्वा
गवादी जिनः ॥ १ ॥ अस्यार्थ ॥ पांच आंधे एक न
गरमें हाथी देखणे गये एक अंध सूं ऊपर हाथ फे
रे १ बीजो पगऊपर फेरे २ तीजोदात ऊपर ३ चो
थो कान ऊपर ४ पांचमो पूंठ ऊपर ५ पाठे आवी
एकठा मिल्ये हाथीनो स्वरूप कहिवा लागे आपसमें
एकें पूंठयो हाथी केहवोठे तिवारे एक बोलया केलि
ना थमा सरीखो १ बीजो कहे देहरानो थंन सरीखो
२ तीजो कहे मुसला सरीखो ३ चोथो कह्यो सूपडा
सरीखो ४ पांचमां कह्यो वली वंस सरीखो ५ इम मा
हो माहि वाद करिवा लाग्या एक कहे तुं खोटो बी
जो कहे तुं खोटो इण दृष्टातें आधोनी परे पंचमतके
धणी अहंकारना लीधा एक एकनें धर्म करीमाने अ
थवा कालादिक एक मनने विपे पंचे बोल परिमाण
करे ते जिन मतमें मानीये ॥ दोहा ॥ मत खटवे सं
सारमें ॥ पंच अंधसमान, एक एक वस्तु ग्रहे, जिन मत
सवे प्रमाना ॥ १ ॥ अथ पाच वादी नाम ॥ काल वादी १
सुजाव वादी २ नियत वादी ३ पूर्व कृत वादी ४

पुरपाकार बादी ५ ए पांच बादी भांहिंथी काल बादी बो
 ल्या एक कालहीज प्रधानते ते किम काल जे जोवन
 आवे गर्ज धरे काले जन्मे बोले चाले आसाढे श्राव
 णी खेतीहोय वदामादिमेवा होय इत्यादि वस्तु काले नी
 पजे १ हिवे काल बादी प्रते स्वभाव वादी बोल्या
 सर्व वस्तु स्वभावे नीपजेते ते किम मोरका पंख कि
 णे चितरयाते गाय जेसने किये तरबो सिखायोते
 बचावचीने चूघनो किये सिखायोते पंखीने आलणा
 करणा किये सिखायोते मनुपना बच्चा जनमता पगे
 न चाले अने तीर्यचना चालेते तीर्यचना बच्चा जन
 मता थन पकडे मनुपना बच्चा जनमतां थनकिम न
 पकडे एक साथे दो स्त्री निज निज पुरप संजोगमें हु
 ई एक स्त्री गर्ज धरे एक स्त्री गर्ज न धरे किसीने
 कोडीयां उठाली ते मांहिंथी कोई सीधी पडी कोईक
 ऊर्धी पडी एक काल माहिं न्यारी न्यारी जात कि
 मपडी एकजात क्युं नही पनी इत्यादि सर्व वस्तु स्व
 भावे परगमीते २ हिवे स्वभाव वादी प्रते नियत वा
 दी बोल्या सर्व जीव नियतने बसते ते किम कोई क्रो
 धी स्वभावते खिमावान नही खिमावान ते क्रोधी स्व
 भाव नही किसीना सकत स्वभावते कोमल स्वभाव
 नही कोमल स्वभावते सक्त स्वभाव नही सरल स्व
 भावते कपटी स्वभाव नही कपटी स्वभावते सरल
 स्वभाव नही लोनी सुभावते निरलोनी नही निरलो

जी स्वभावसे लोभी नहीं इस अनेक जावना अनेक
 स्वभाव थाय ते नीयत स्वभाव होणहारपे सब जाव
 इत्हा जीवने बसथी ॥ ३ ॥ हिवे नियत वादी प्रते
 कर्म वादी बोल्या सर्व जीव कर्मने बसठे ते किम ए
 क इंद्री १ वेइंद्री २ तेइंद्री ३ चतुइंद्री ४ पचेंद्री ५
 इना मांहि जीव उपजे तस्स मरीनें थावर माहि उप
 जे थावर मरीनें तस्स मांहिं उपजे राजा मरीनें रंक
 होय रंक मरीनें-राजा होय ब्राम्हणथी चडाल होय
 चंडालथी ब्राम्हण होय स्त्री मरी पुरप थाय पुरप म
 री स्त्री थाय सत्रू मरी मित्र होय मित्र मरी सत्रू हो
 य जे निश्चे होणहारठे एकेंद्री मरी नारकी देवता क्यो
 नहीं होय नारकी देवता तिर्यंचथी मोक्ष क्यो नहीं
 जाय दलद्रीनें संपत क्यो नहीं होय रंकते राजा क्यो
 नहीं होय चोरी जारी कर्म करी शुलीयादि क्यो हो
 य निर्लोनी ब्रम्हचारी सत्यवादी क्यो पूजीये ते न
 णी सुजा शुभ कर्म जोगे विना वूटे नहीं ते कारणे
 कर्म करतठे ॥ ४ ॥ हिवे करम वादाप्रते पुरपाकार
 वादी बोल्या जो परदेसी राजाने महा पाप कीया ते
 पाप किहां जोगसी जो जो पाप जीवने कीया ते पा
 प सर्वा जागेसूं वूटेतो जीवका वुटकारा किम थाय ते
 णी पुरपाकार ज्ञान दरसन चारित्र तप करी नि
 काचित्त कर्म अनेक जवना शुभ पिण जोगवी निद्ये
 त कर्म खपावीने मोक्ष जाय जे करम वलीया होय

तो जीवने मुक्त जावा नहीं देता ॥ यतः ॥ अठ विहं
 पीयकम्मं अरी नूये सब जीवाणं ते कम्मणे अरिहंता
 अरिहंता तेणवुच्चंति ॥१॥ ते माटे पुरषाकार प्राकृत उद्य
 म विना कोई कारण नीपजे नहीं ॥ ५ ॥ ए पांच वा
 दी आप आपणी सरधाथापता पारकी सरधा उथा
 पता थका तिवारे पढे जैन मती बोल्या जो बादी
 तुमे पोताना पद्ध थापता थका पारका तुम्ह पद्ध
 उथापता थका जासुं तुम्ह मिथ्या बादीहो तिवारे पा
 चो बादी बोल्या तुम स्युं सरधोढो तिवारे पढे ते जे
 न मती बोल्या हमतो पाचोनें सरधेढे तिवारे पढे
 ते ५ बादी बोल्या पांचोना स्वभाव न्यारा न्यारा
 ठे घणा फरक दीसे ते किम पांचोने खरा मानो ति
 वारे पढे ते जैनमती बोल्या हम अ प आपने ठाम
 बीच उनानुं जुदा जुदा राखूते ते माहो माहिं विरुद्ध
 न थाय ते कहेते प्रथम् काल लब्धी विनां मोद्ध
 प कार्य सिद्ध न थाय एतले काल सर्वनो कारणे जे
 काले कार्य होणहारवे ते कार्य तिण वेला थाय ते
 कहेते कोईक जीव समकित पामी तथा विरत पामी
 नें पढे ते किम काल पका नहीं देसऊणा अर्द्ध पुद
 गल संसारथकी तिरवानो बाकी रह्यो ते माटे ए काल
 समवाय अंगीकार कह्यो तिवारे सिष्य पढेते अनव्य
 मोद्ध क्यो नहीं जाय तिवारे उत्तर कहेते जे अन
 व्यनो काल मिले पिण अनव्यमे सुभाव मिले नहीं

जिम नारकीनो खिमा करवानो स्वभाव नही १ युग
लीयने क्रोध करवानो स्वभाव नही २ देवतानें वि
रत करवानो स्वभाव नही ३ बांजरी गायने दूध
देवानो स्वभाव नही ४ तिण कार्ण मोक्ष जाय नही
एतले काल स्वभाव दोनो कार्ण चाहिज्ये तिवारे क
हे जे ज्ञानो तो मोक्ष जायवानो स्वभावते तो सर्व
ज्ञान मोक्ष क्युं नही जाय तिवारे कहे जे नीयत
निश्चे समकित गुणजाग्यां मोक्ष जाय एतले काल
१ स्वभाव २ नीयत ३ ए तीन कार्णमाना तिवारे
कहेजे समकित आद कार्ण श्रेणक नेथी मोक्ष क्यो
गयो नही उत्तर पूर्व कृत कर्म घणाथा वा पुरपाकार
प्राकृत उरमे करयो नही तिवारे कहे जे सालजद्र प्र
मुख घणाने उद्यम कीधो ते उत्तर पूर्व कृत कर्म खपा
या नही तिणे पाचो समवाय मिल्या कार्य सिद्ध था
य तिहां कोई पूढे जे मरुदेवी माताने च्यार कार्ण मि
ल्या पिण पुरपाकारतो कोई कीधो नही तिवारे क
हिजे अल्प कर्म माटे शुद्ध ध्यान द्वापक श्रेण चढ
वानो उद्यम कीधो (यतः॥ कालो सहावय नियइ पु
वक्यं पूरस कागणो पंच समवाय समस्त एगंन होइ
भिच्छतं ॥ १ ॥ इति पाच वादी मतम् प्रश्नोत्तर १३४

अथ ३६३ मत जिसके ४ नेद क्रियावादी १ अक्रियावा
दी २ अज्ञानवादी ३ त्रिनय वादी ४ एकसो अस्सीमत
क्रिया वादीनां ते कहेते आपणो जीव सास्वतोठे पिण

काले नीपजे १ आपणी जीव सास्वतोळे पिण निय
 तने बसठे २ आपणी जीव सास्वतोळे पिण स्वजावे
 नीपजे ३ आपणा जीव सास्वतोळे पिण इश्वरने नी
 पायो नीपजे ४ आपणी जीव सास्वतोळे पिण एक
 आत्मा सर्व व्याप्तठे ५ परका जीव सास्वतोळे पिण
 काले नीपजे ६ परका जीव सास्वतोळे पिण नियतने
 बसठे ७ परका जीव सास्वतोळे पिण होणहार रज
 जावे नीपजे ८ परका जीव सास्वतोळे पिण इश्वर
 ने निपाया नीपजे अर्थात् इश्वरका पैदा करया होय
 ९ परका जीव सास्वतोळे पिण एक आत्मा स
 र्व व्याप्तठे १० आपणी आत्मा असास्वती
 ठे पिण काले नीपजे ११ आपणी आत्मा असास्व
 तीठे पिण नियतने बसठे १२ आपणी आत्मा अ
 सास्वतीठे पिण स्वजावे नीपजे १३ आपणी आत्मा
 असास्वतीठे ईश्वरीनी नीपाई नीपजे १४ आपणी
 आत्मा अशाश्वतीठे पिण एक आत्मा सर्व व्याप्तठे
 १५ परकी आत्मा अशाश्वती पिण काले नीपजे १६
 परकी आत्मा अशाश्वती पिण नियतने बसठे १७
 परकी आत्मा अशाश्वती पिण स्वजावे नीपजे १८
 परकी आत्मा अशाश्वती पिण ईश्वरनी नीपाई
 नीपजे १९ परकी आत्मा अशाश्वती पिण सर्व
 व्याप्तठे २० ए बीस जीव ऊपर लीला तिम २० नो
 तत्व ऊपर लेणा जीव १ अजीव २ पुण्य ३ पाप ४

आश्रव ५ संवर ६ निर्जरा ७ बंध ८ मोक्ष ९ वीस
 नम्मा १८० हूवा इति क्रियापत वादी ॥ हिवे ८४
 अक्रियावादीना मत ते कहेवे अपणी आत्मा शाश्व
 ती पिण काले नीपजे ए पांच पहली तरे कहणा ठ
 ठी इत्ता ६ एवं ६ अपणी आत्मा शाश्वती एह ६
 परकी आत्मा शाश्वती पूर्ववतु कहणा एवं १२ जी
 व आश्री अजीव आश्री १२ कहणा साततत्व उप
 र ८४ मत हूवा पुन पाप आश्री नही कहणा इती
 ८४ अक्रियामत वादी ॥ अथ ६७ अज्ञान वादी म
 त कहेवे कोई-कहे जीव ठतोठे पिण कह्यो न जाय २
 जीव ठतो अठतो पिण कह्यो न जाय ३ कोण जाणे
 जीव ठतोठे ४ कोण जाणे जीव अठतो ५ कोण जी
 व ठतो अठतो ६ अवाचत ठतो अठतो कह्यो न
 जाय ७ ए सात नव तत्व ऊपर लेणा एवं सर्व नो
 स्तां ६३ हूआ उत्पत्ति ठती १ उत्पत्ति अठती २ उ
 त्पत्ति ठनी अठती ३ अवाचत ठती अठती नही क
 ही जाय ४ ए ६३ अने ४ एवं ६७ मत अज्ञान वा
 दीना कहा ॥ हिवे विने वादीना ३२ मत कहेवे सू
 र्यकी विनय १ राजाकी विनय २ साधाकी ३ ग्यान
 की ४ थेवरकी ५ माताकी ६ पिताकी ७ धर्मकी ८
 ए आठरी मनसे बचनसे कार्यसे आठतीया २४ ए
 आठरी नक्ति करे १ बहु मानदे गुण ग्राम करे २ अ
 सातना टाले ३ एवं पूर्व २४ बोल मांहिं आठ मिला

ये तो सर्व ३२ मत विनय वादीना कइया (यतः ॥
 अस्सीसयं किरियाणं अकिरियाणं चुलसीय अना
 नियाणं सतसठि विणैयाणं चवतीसं १ ॥ इति ३६३
 मत क्रिये अक्रिये अज्ञान विनय वादी इन च्यारोके
 ३६३ मतहें प्रश्नोत्तर ॥ १३५ ॥

॥ अथ चेईये शब्दका अर्थ लिख्यते ॥

श्री केवली परूपिया धर्म प्रमाणहै लेकिन द्रोपदी
 और सूरियाज देवतानें तथा सक्र इंद्रने तथा चमर
 इंद्रने इनोंने इत्यादिकोने धर्म नहीं चलायाहे धर्मतो
 केवलीजी महाराजका फरमाया प्रमाणहे तुम कहते
 हो चमर इंद्र जबउंचे लोकमें जाय तब प्रतिमाका
 वीसरना लेकर जाय ऐसा तुम बिना विचारे कहतेहो
 सरणा अरिहंत महाराजका १ तथा अरिहंत
 चेईयाणी वा जिणका अर्थ अरिहंतोका चैतः ॥ सो
 बढमस्त तीर्थकरहै २ और तीसरा अणगाह साधू
 ए ३ सरने लेकर जावेहै ए प्रत्यक्ष देखो जो चमर
 इंद्र श्रीमहावीर स्वामीके सरणे आया उसवक्त जग
 वान बढमस्त तीर्थकरथे लेकिन ३ कालमे कोईजी
 वक्तमें प्रतिमाके सरने आया होयतो जवाबलिखो इ
 सवास्ते जगह जगह सूत्रके पाठहे अरिहंत महाराज
 कुं देवताओंने तथा श्रावग लोगोंने बंदना नमस्का
 र करीहै जिसका पाठ कल्लाणं मंगलं देवयं चेईयं दे
 खो श्री तीर्थकर महाराजकुं सूत्र जगवती ठाणायंग

राय प्रसेनीमे चैत कहाहै जिसका अर्थ टीका कार
 में कहाहै जगवान ग्यानवान तथा मन प्रसन्नका का
 रण तथा प्रसस्तमन हर्ष उपजनेका कारण जगह ज
 गह अज्ञेदेवसूरीजीनेबी टीकामें अरिहत महाराज
 कुं चैत शब्दका ए अर्थ कराहै और केसी कुमारजी
 कुं तथा और साधोकू पारसनाथ स्वामीके ५०० अ
 णगार तुंगीया पुर नगरीमें पधारे उनको और इत्या
 दिक घने साधोकू घणे श्रावकोने वंदना नमस्कार क
 री जिसका पाठ (कल्लाणं मंगल देवयं चेईयं) इहां
 जी टीका कारने अर्थ कीयाहै चेईयं शब्दका अर्थ
 साधू मन प्रसस्तका कारणहै और श्री तीर्थकर महा
 राजने अरिहंत मिद्ध केवली साधू सरणे ४ सूत्रमे
 कहे जिसमे प्रतिमाका पांचमा सरना कहा नहीं ॥
 १३६ ॥ दोहा ॥ आदि ऋपज अरिहंत जिन, अंत
 नाम महावीर॥सरन चौवीसी वंदता, कुमती जावे दूर
 ॥१॥गौतम गणधर गुण निलो, पामी केवल ज्ञान॥वीर
 पठे जिन केवली, वारह वर्ष प्रमान॥२॥ पाटो धर हू
 वा सही, स्वामी सूधर्मा जाना॥सिष्य साखा वरती घ
 णी, शुद्ध सत्ताईस जाना॥३॥जैन धरम उत्तम खरो, आ
 राना परमान ॥ठलनी सरीखा ठेक जिन, खेंचातानी
 आना॥४॥पंचपरमेष्ठी सुमरीए, तीर्थच्यारो माहि॥धर्म
 दयामें नेदन्ही, मुख चितमन सांहि ॥५॥नागोरीगठहै
 बडो, श्री पूजवृद्धिमान ॥लघुभ्राता तपवंतहै, मनोहर

रिखसुजान॥६॥नगर मेडते पहोचीया, वैरागे बहु फेशा
 कर्म संग्राम करि वामणी, पकडी तिन समशेर॥७॥सो
 प्यो शकल शरीरको, तपस्याके परभाव ॥ श्री पूज म
 नोहरदासके, नित प्रतमें गुणभाव ॥८॥तास सिष्यपं
 डित हूवा, बहुत गुनाकी खान॥पूज जागचंद्र विचरत,
 आगमके परवान॥९॥तास पटो धर जानीये, गुनधार
 क बहु जात ॥पूज्यजु सीतारामजी, जारे मनमें पांति
 ॥१०॥सिष्य ज्यारा गुनवंतहै, बहु आगमके जान, पूज
 स्योरामजुदासजी, गुरु भक्ता गुनवान ॥११॥ताससि
 ष्य गुनागरा, आज्ञाकारकजान॥नूनकरनजी साधूहै, सु
 ध संजम मतिमान ॥१२॥श्री पूजस्योरामजी, बहुविध
 गुनचंडार ॥दूजा सिष्य तेहना नसूं, हरजीमल हित
 कार॥१३॥अंतेवासीतास सिष्य, रतनचंद्र मुनिजाना
 ज्ञान क्रियाके नेदको, चिन्न चिन्न कहे बखान॥१४॥कु
 वरसेनजी तास सिष्य, तिनके सिष्य ऋखराज॥प्रश्नो
 त्तर संग्रह लिख्यो, सुजनोके हितकाज॥१५॥ सूत्र अ
 र्थ गंचीरहें, जाणे बुद्धिनिधान ॥मनशाकरता सूत्रनी,
 नेद अनेक बखान॥१६॥जैसे पूर्व प्रश्नथे, तैसेही मन
 धार ॥इस प्रश्नोत्तर ग्रंथमें, लिखे बुद्धिअनुसार॥१७॥
 माफ करो सब माहिरा, गुणि जन देखी दोगा॥तुब बु
 द्धी जाणुं नही, पूर्ण शब्द वर कोश ॥१८॥१३७ ॥

॥ गाथा ॥ नोकाएइ नायरई नोपालइ चावउय
 क्लिणधम्मं ॥ तिपणहिं अठचंगा ॥ तेसिदिठं तथा ए

ए ॥ १ ॥ सामण लोय तव लिंगधारिणअगीयत्थ से
 णियार्इया ॥ पंचुत्तरसुर संविग्गपखिणो अठमे सुऊ
 ई ॥ २ ॥ पढमा मिच्च दिठी चउरो संसार नमणहेउ
 ति इयरा सम्मदिठी अरिहा निवाणगमणस्स ॥ ३ ॥
 इत्यागम सौरजम्म् ॥

॥ अर्थ ॥ नही जाणताहै जे परिज्ञा प्रत्याख्यान
 परिज्ञा करिके १ नही आदरताहै २ नही पालताहै
 प्राणी जावसेती जिन धर्मकुं ३ इनतीनोपदो करके
 आठ चांगे होनेहै तिनुंके दृष्टांत ए कहितेहै ॥ १ ॥
 सामान्य लोक १ बालतपस्वी २ द्रव्यलिंगी सम्यक्त
 रहित ३ अगीतार्थ अपठित ४ श्रेणक राजादिक ५
 पाच अनुत्तर विमानके देवता ६ संविश्र पाक्षिक अ
 ध्यात्म मत धारक ७ आठमें चांगे शुद्ध चारित्र धर
 यती अर्थात् साधू॥८॥ २ ॥ पहिले चांगे मिथ्यादृष्टि
 च्यारहै सो जब भ्रमणके कारणहै ओर अगले च्यार
 सम्यग् दृष्टिहै सो योग्यहै मोक्ष जावणेकुं पहिले४चां
 गे नही ऐसी सिद्धातकी सुगंधता जाणणी ॥

न जाणे ॥ न आदरे ॥ न पाले ॥ सामान्यलोग १
 न जाणें ॥ न आदरे ॥ पालइ ॥ तपस्वी २
 न जाणें ॥ आदरे ॥ न पाले ॥ द्रव्यलिंगी ३
 न जाणे ॥ आदरे ॥ पालइ ॥ अगीतार्थ ४
 जाणइ ॥ न आदरे ॥ न पाले ॥ श्रेणकादि ५
 जाणइ ॥ न आदरे ॥ पालइ ॥ अनुत्तरसुर ६

जाणइ ॥ आदरे ॥ न पाले ॥ संविज्ञपद्धी ७
 जाणइ ॥ आदरे ॥ पाले ॥ चारित्रीयो ८
 ॥ श्री गौतमायनमः ॥ जिनेस्वरतारकहै ए देशी ॥
 ये नर जव उत्तमहै, उत्तम श्री जिन सेव ॥ ये० ॥
 ए टेक ॥ उत्तम आरजदेस कुल उत्तम, उत्तम नर ज
 व पायो ॥ इंद्रीपाचों पांमी उत्तम, उत्तम दीर्घआयो ॥
 ये० ॥ १ ॥ उत्तम देह निरोग अवस्था, और
 उत्तम चतुराइ ॥ उत्तम साधू उत्तम बानी, उत्तम समकि
 त पाई ॥ ये० ॥ २ ॥ उत्तम विरती उत्तम करणी, करता
 सुधगति जावे ॥ मनुप जनम सुफलाकेर जविजन, तव
 उत्तम पदवी पावे ॥ ये० ॥ ३ ॥ तीर्थकर चक्री अरु हलध
 र, केसव पदवी पावे ॥ केवली साधू श्रावक सम्यग्, मं
 डली जूप कहावे ॥ ये० ॥ ४ ॥ ऐसी ऐसी पदवी उत्तम, मनु
 पतणें जव पावे ॥ केवलज्ञानी धर्म अराधी, जन्म मणें
 मिटावे ॥ ये० ॥ ५ ॥ ऐसा मनुपतणा जव उत्तम, श्री
 जिन राज बतायो ॥ च्यारगतीमें जमतां जमता, अब उ
 त्तम नरजव पायो ॥ ये० ॥ ६ ॥ क्रोधमान माया अरु म
 मता, इनसें प्रीत हटावो ॥ ज्ञान दरसन चारित्र वली
 तप, इनसें कर्मखपावो ॥ ये० ॥ ७ ॥ संवत उनीसे अधिक
 पचासें, करनाल नगर चोमास ॥ ऋखराज कहै श्री जि
 न सेव्यां, पूरें मनकी आस ॥ ए० ॥ ८ ॥

॥ वंद शिखरिणी ॥

विद्यारत्नसरसकविताङ्घ्रिमार्त्तपाश्री ॥

वांगारत्नंपरमपदवीयानरत्नंतुरंगः ॥

अंनोरत्नत्रिदशतटनीमासरत्नवंसंतः ॥

भूभृद्रत्नकनकशिखरीदेवरत्नंजिनेंद्र ॥ १ ॥

इति श्री सत्यार्थसागर स्वामीजी ऋग्वराज प्रश्नो
त्तर संग्रह करता नविजनोके उपकारार्थ द्वितीयो जा
गवर्णनम् ॥ इति श्री सत्यार्थ सागरका द्वितीयो जाग
॥ संपूर्णम् ॥

॥ अथ सत्यार्थ सागर तृतीय जाग प्रारंभः ॥

॥ श्री ॐ नमः सिद्धं ॥ एमो अरिहताणं॥ एमो सि
द्धाणं॥ एमो आयरियाणं॥ एमो उवक्कायाणं॥ एमो लो
एसवसाहूणं॥ एसो पंच एमुक्कारो सवपावप्पणासणो
मंगलाणं च सवेसिं पढमंहवडु मंगलं ॥ १ ॥ श्री सि
द्धांत मांहि मोक्क भारगनों मूल कारण श्री सम्यक्तवे
जेहनें सम्यक्त तेहना तप नेम सर्व प्रमाण ते सम्यक्त
श्री आचारगनें चउथे श्री सम्यक्त अध्येनें लाने ते
अध्ययने लिखीयेवे ॥ (सेवेमिक्केयप अतीता जेय
पडुप्पन्ना जेय आगमिरुसा अरहंता जगवंता तेस
व एवमाइ क्कंति एवं चासंति एवं पणयेंति एवं परू
वेंति सवेपाणा सेवन्नूता सवेजीवा सवेसत्ता नहंतवा न
अद्यावेतवा न परिघेतवा न परितावेयवा नउहवेयवा ए
सधम्मेषुद्धे णितिए सासए समेवलोयं खेतझेहिं पवेति
ते तंजहा उठिएसुवा अणुठिएसुवा उवठिएसुवा अ
णुवठिएसुवा उवरयदंडेसुवा अणुवरयदंमेसुवासोव हि

तेसुवा अणोवहिए सुवा संजोग रएसुवा असंजोग र
 एसुवातवंचैतं तहाचेतं अस्सिचेत पवुच्चई तं आइत्तु
 ण णिहेण णिखेवे जाणिज्जु धम्मंजधातधादिठेहिं णि
 वेयंग्जेजा णोलोगस्सेसणं चरे ज्जस्त एरिय इमाणा
 ती अज्ञातस्स कउसिया दिठं सुत्तं मयं विनायज्ज ए
 यं परिकहिज्जइ समेमाणा पलेमाणा पुणो पुणो जाति
 पक्कप्पेति अहोयरान्त्यज्जयमाणे धीरेसया आगयपत्ता
 णे पमत्ते बहिया पास अपमत्ते सया परिकमिजासि
 तिवेमि सम्मतस्स पढमो उद्देसो समात्तो १) ॥
 एणं उद्देसे एहवो कह्यो जे सर्व प्राण जूतजीव सत्व
 न हणवा ए धम्मं सूधो एतले दयामें धर्म ते सूधो
 अनें हिंस्यामं धर्म ते असुद्ध जाणवो ॥ इति प्रथम प्रश्न
 ॥ २ ॥ तथा सम्यक्कनें बीजे उद्देसे एहवो कह्यो जे
 समण माहण हिंस्यामं धर्म परूपे अनें बली एहवो
 कहेंहे धर्मनें काजें हिंस्या करतां दोस नही ते तीर्थ
 करे अनार्य बचन कह्यो एतलें एहवा बचनना बोल
 नहार अनार्य जाणवा ते अधिकार लिखीएणे ॥
 (आवंतीके आवंती लोयंसि समणाय माहणाय पुढो
 विवादवंति सेदिठचणे सुयंचणे मयंचणे विनायं च
 णे उट्टअधं तिरियं दिसासु, सबतोसु पडिलेद्वियंचणे
 सबेपाणा सबेजावा सबेजूया सबेसत्ता हंतवा अजावे
 तवा परियावेयवा किलामेयवा परिघेतवा उद्वेयवा ए
 त्थंपिजाणधनत्थित्थ दोसा अणारिय वयणमेयं

तस्य जेते आचरियाते एवं बयासी सेदुदिठंचने दु
 स्सुयंचने दुम्मुयंचने दुचिन्नायंचने उदं अहं तिरि
 या दिसासु सबतो दुप्पडिलेहियंचने जन्नं तुने एवं
 आइखह एवं नासह एवं परूवेह एवं पन्नवेह सवे
 पाणा सवे चूता सवेजीवा सवे सत्ताण हंतवा एअ
 जावेतवा ए परिघेतवा ए परियावेयवा ए उद्देयवा
 एथंपि जाणध नथित्य दोसो आरिय वयणमेयं पुव
 निकाय समयं पत्तेयं २ पुठिसामो हंचो पावा दुया
 किं जेसायं दुखं उदाहु असातं समितापडिबन्नेयावि
 एवं वूया सवेसिं पाणाणं सवेसिं चूयाणं सवेसिंजीवा
 णं सवेसिं सत्ताणं अस्सायं अपरिणिवाणं महजयं दु
 क्खं तिवेमि) ॥ २ ॥ तथा जे सम्यक्त अध्ययन
 ना बीजा उदेसाने धुरे कह्यो (जे आसवा ते परि
 सवा) ए आदिच्यार बोल तेहनो अर्थ लिखीयेते
 जे [आसवा] कहिता जे स्त्री आदिक कर्म बंधना
 कारण तेहज बैराग्यने आणवे करी (परिसवा) क
 हिता ते निर्जराना ठाम थाइ तथा जे (परिसवा) ते
 [आसवा] कहिता जे परिश्रव अरिहंत साधु आ
 दि निर्जराना ठाम ते दुष्ट अध्यवसाये करी आश्रव
 कर्म बंधना ठाम थाइ तथा जे (अणासवा) ते (अ
 परिसवा) कहितां जे अनाश्रव वृत्त विशेषते अशु
 च अध्यवसाये करी (अपरिसवा) कहिता ते नि
 र्जराना ठाम न थाइ कुंरुकीकनीपरें तथा जे (अप

तेसुवा अणोवहिए सुवा संजोग एएसुवा असंजोग र
 एसुवातवंचेतं तहाचेतं अस्सिंचेत पवुच्चई तं आड्डु
 ण णिहेण णिखेवे जाणिकु धम्मंजघातधादिठेहिं णि
 वेयंगत्तेजा णोलोगस्सेसणं चरे ज्जस्स णत्थि इमाणा
 ती अज्ञातरस कउसिया दिठं सुत्तं मयं विनायंज्ज ए
 थं परिकहिज्जइ समेमाणा पलेमाणा पुणो पुणो जाति
 पक्कप्पेति अहोयरान्थज्जयमाणे धीरेसया आणयपत्ता
 णे पमत्ते बहिया पास अपमत्ते सया परिकमिजासि
 तिवेमि सम्मत्तस्स पढमो उद्वेसो समात्तो १) ॥
 एणं उद्वेसे एहवो कह्यो जे सर्व प्राण जूतजीव सत्यं
 न हणवा ए धम्मं सूधो एतले दयामे धर्म ते सूधो
 अने हिंस्यामे धर्म ते असुद्ध जाणवो ॥ इति प्रथम प्रश्न
 ॥ २ ॥ तथा सम्यक्कने बीजे उद्वेसे एहवो कह्यो जे
 समण माहण हिंस्यामे धर्म परूपे अने बली एहवा
 कहेहे धर्मने काजे हिंस्या करतां दोस नही ते तीर्थ
 करे अनार्य बचन कह्यो एतले एहवा बचनना बोल
 नहार अनार्य जाणवा ते अधिकार लिखीएवे ॥
 (आवंतीके आवती लोयंसि समणाय माहणाय पुढो
 विवादंवाति सेदिठचणे सुयंचणे मयंचणे विनायं च
 णे उद्वअधं तिरियं दिसासु सबतोमु पडिलेद्वियंचणे
 सबेपाणा सबेजीवा सबेजूया सबेसत्ता हंतवा अजावे
 तवा परियावेयवा किलामेयवा परिघेतवा उद्वेयवा ए
 थंपिजाणधनत्थित्थ दोसा अणारिथ बयणमेयं

तस्य जेते आयरियाते एवं वयासी सेदुदिठंचने दु
 स्मुयंचने दुस्मुयंचने दुचिन्नायंचने उहं अहं तिरि
 या दिसासु सवतो दुप्पडिलेहियंचने जन्नं तुजे एवं
 आइखह एवं नासह एवं परूवेह एवं पन्नवेह सवे
 पाणा सवे जूता सवेजीवा सवे सत्ताण हंतवा एअ
 जावेतवा ए परिघेतवा ए परियावेयवा ए उद्देयवा
 एथंपि जाणध नथित्थ दोसो आरिय वयणमेयं पुत्र
 निकाय समयं पत्तेयं २ पुठिसामो हंनो पावा दुया
 किं जेसायं दुख उदाहु असातं समितापडिबन्नेयावि
 एवं वया सवेसिं पाणाणं सवेसिं जूयाणं सवेसिंजीवा
 णं सवेसिं सत्ताणं अस्सायं अपरिणिवाणं महन्नयं दु
 क्खं तिवेमि) ॥ २ ॥ तथा जे सम्यक्त अध्ययन
 ना बीजा उदेसाने धुरे कह्यो (जे आसवा ते परि
 सवा) ए आदिच्यार बोल तेहनो अर्थ लिखीयेठे
 जे [आसवा] कहिता जे स्त्री आदिक कर्म बंधना
 कारण तेहज बेराग्यने आणवे करी (परिसवा) क
 हिता ते निर्जराना ठाम थाइ तथा जे (परिसवा) ते
 [आसवा] कहिता जे परिश्रव अरिहंत साधु आ
 दि निर्जराना ठाम ते दुष्ट अध्यवसाये करी आश्रव
 कर्म बंधना ठाम थाइ तथा जे (अणासवा) ते (अ
 परिसवा) कहितां जे अनाश्रव वृत्त विशेषते अशु
 च अध्यवसाये करी (अपरिसवा) कहिता ते नि
 र्जराना ठाम न थाइ कुंफरीकनीपरें तथा जे (अप

रिसवा) ते [अणासवा] कहिनां जे अपरिश्रव
अधिरतिना ठाम तेहिजे अविरतना ठाम हीबे पाड
वा जाणी वैराग्ये करी अध्यवसाय विसेपे अविरति
ने ठामवे करी अनाश्रवना ठाम थाइ एतले कर्म बंध
ना ठाम नि थाइ ॥ तथा कोईक एहना अर्थ फेरवने
कहेजे जे (आसवा) ते (परिसवा) कहिनां जे ध
र्मने कारणे हिंस्या करीये तिहां निर्जरा थाइ तथा
बाली केतला एक इम कहेवे जे धर्मने काजे हिंस्या
कीजे ते हिंस्या न कहिये तो हिवे चतुर होय ते बि
चारी जोवो जो धर्मने काजे हिंस्या करतां निर्जराया
इ अने जो धर्मने काजे हिंस्या कीजे तो ते हिंस्या
न कहिए तो रेवतीनुं पाक श्री महावीरे किम न ली
धो पिण रेवती सुध जावनी अपेक्षाये अल्प कर्म
बहु कर्म निर्जरा कीधी परंत महावीरने तो थोमीसी
नी हिंस्याको टालीवे तथा बखान सुणता मुहठे हा
थ तथा वस्त्र देई ते स्याजणी तथा धर्मने काजे हिं
स्या परूपे तेहने बीतरागे अनार्य बचनना बोलणा
हारा कयां कहा तथा जे समण माहण हिंस्या परू
पे तेहने (बहुदंरणाणं मुंरणाणं जाव ते माई मरणा
णं पीयामरणाणं) इत्यादिवोल कयां कहा विवेकी
होय ते बिचारी जो जो अने वली जो धर्मने कधि
आश्रव नही तो साधू ईरज्यांइचाले ते स्याजणी
पिण जाणज्यो ते सूत्र ४ बिरुद्ध कहेवे ॥ ३ ॥ तथा

श्री बीतरागदेवे श्री सूर्यगङ्गा अध्ययन १७में एहवो
 कद्यो जे पूर्व पश्चिम उत्तर दक्षिणने विषे एणीपरें
 मोक्षपामें ते अधिकार लिखीएवे ॥ (सेवेमि पाईणवा
 जाव एवसे परिन्नायकमे एवं सेविये बेयकम्मे एवंसेवियं
 तकारए नवतीति मरकाथं तत्थ खलु नगवता व
 जीवनीकाय हेउपन्नता तंजहा पूढवीकाईए जाव त
 स्म काईए सेजहानामए मम अस्सायं दमेणवा अ
 ठीणवा मुठीणवा लेलूणवा कवालेणवा आउडि ज्जमा
 एस्सवा हंममाणस्सवा तज्जिज्जमाणस्सवा ताडिज्जमा
 एस्सवा परियाविज्जमाणस्सवा किलाज्जमाणस्सवा
 उदविज्जमाणस्सवा जाव लामुखण एमातरुवि हिंसा
 कारगं दुक्खं जयंप्रप्पि संवेणमि इच्चेवं जावणं सवे जीवा
 सवेचूतासवे पाणा सवेसता दडेणवा जाव कवालेण
 वा आउटिज्जमाणा वाहंमणाणा तज्जिज्जमाणावा
 तालिज्जमाणावा परिताविज्जमाणावा विउदज्जमाणा
 वा जावलोमुखरणमायमवि हिंसाकारगं दुक्खं
 जयंप्रप्पिसंवेदेति एवं नवा सवे पाणा ४ जाव
 सत्ताणहंतवाणज्जेथवा न परिघेतवा न परितावेय
 वा न उद्वेयवा सेवेमि ज्जेअतीता ज्जेयपडुपन्ना ज्जेय
 आगामिस्सा अरिहंता नगवतो सवेते एवमाइक्खंति
 एवं जासंति एवं पन्नवेति सवे पाणा ४ जावसत्ताण
 हंतवा एअज्जेयवा एपरिघेतवा एपरितावेयवा ए
 उद्वेयवा ए सधम्मं धुवे णीतिए सासए समे सव

लोगं खेयणेहिंपवेदिते) ॥ इहां श्री वीतरागे एकांत
 दयाइमोक्ष कही दया सहित करणीये मोक्ष जाण
 वी पिण कही हिंस्याइमोक्ष नथी ॥ ४ ॥ तथा श्री
 सूयगडांगने १८ में अध्ययने एहवो कह्यो जे श्रमण
 माहण हिंस्या परूपें ते संसारमांहीं रुलें गाढा दुखी
 थाइ बारवार जनम मर्ण करे दारिद्री दो जागीथाइ
 हाथ पगादि सरीरनुं बेद पामे अने जे श्रमण माह
 ण दया परूपें ते सासारकांतार मांहीं रुलें नही ते
 दुखी न थाइ तेहनां हाथपगादि बेद न पामें ते सी
 जें बूजें सर्व दुःखनो अंतकरे ते आलावो लिखीयेवे
 ॥ (एसत्रुलाएसप्पमाणे एससमो सरणे पत्तेयंतुला
 पत्तेयं पमाणे पत्तेयं समो सरणे तत्थणं जेते समण
 माहणा एवमाति क्वंति जाव परूवेति सवेपाणा जा
 व सत्ताणं हंतवा अजावेयवा परिघेतवा परितावेय
 वा किलामेतवा उहवेयवा ते आगंतु ठेयाए ते आगं
 तु नेयाए जाव ते आगंतु जाईज्जरा मरणे जेणि ज
 म्मण संसार पुण नव गजवास नवएवंच कलकली
 जागिणो नविस्सति ते बहूणं दंडणाणं बहूणं मुंण
 णं तज्जणाणं तालणाणं अदुबंधणाणं जाव घो
 णाणं माई मरणाणं पिति मरणाणं जातिमरणाणं न
 गणी मरणाणं नजापुत्तधूत सुएहा मरणाणं दारिदा
 णं दोहग्गाणं अप्पियसंवासाणं पियविप्प उग्गाणं
 बहूणं दुक्ख दोमणसाणं अजागिणो नविस्संतिनो सि

ज्जंति नोवुज्जंतिस्संति जाव नोसव दुखाणं अंतं करि
 स्संति एसतुलाए सपमाणे एससमोसरणे पत्तेयंतु
 ला पत्तेयंपमाणे पत्तेयं समो सरणे तत्थंणं जेते सम
 णा माहणा एवमाइखांति जावपरूवेति सवेपाणा जा
 वसवेसत्ता एहंतवा जावण उदवेयवा तेणो आगंतुवे
 याए तेणो आगंतु नेयाएजाव जाईकरामरण ज्जोणी
 ज्जमण संसार पुणनव गजवास नवएवंच कलंकली
 नागिणो णोचविस्संति तेणो बहू दंडणाणं जावणें बहूणं
 दुक्खदो मणसाणंणो अजागिणो चविस्संति अणातीयं
 चणं अणवयग्गं दीहमद्धंवा उरंत संसार कंतार चूज्जो
 णो अणपरियट्ठीस्संति ते सिज्जिस्संति जाव सवदुखाण
 मंतं करिस्संति)॥ ए आलावाने मेले जे श्री वीतरागना
 संतानिया ते एकांत दयाइ धर्म परूपें पिय हिंस्र्यां
 में धर्म न परूपें ॥ ५ ॥ ॥ ६ ॥ केतलाएक इम क
 हेंवें जो दयामें धर्मतो चारित्रियो नदी किम उतरे ते
 हनो उत्तरं प्रीणो जो नदी उतरे धर्म होयतो वार वा
 र रयूं न उतरे श्री वीतरागेतो नदी उतरवानी संद्धा
 बोली तथा श्री समवायांगने इकवीसमे समवाइं तथा
 दशाश्रुतस्कंधमध्ये एहवा कह्या जे [अंतोमासस्स
 तज उदगलेवे करे माणेसवले] तथा (अंतो संवत्त
 रस्स दस उदग लेवे करेमाणे सवले) इहां इम क
 ह्यो जे महीना मध्ये तीन लेप लगावे ते सवलु वर
 स दिवसमाहिं दसलेपलगावेतो सवलु तो हिवे जोवो

अने जो नदी उतरे धर्म तो श्री बीतरागे जिको अ
 धिकी नदी उतरे तेहने सवलो क्यां कहे तथा जे ध
 र्म कर्तव्यते ते बहू बहू कीजे अने बली करीने अनु
 मोदीए अने नदीतो बहू बहू उतरवी न कही अने
 उत्तरयांपडे अनुमोदे पिण नही जे विराचना हुवीहोय
 ते निंदे ग्रहे तथा साधूने विहार करता केईक वरस
 तथा केइयकमास तथा केइयक दिवस खेत्र विशेषे
 तथा देस विशेषे नदी नावी तथा न उतरयो तो ते
 काई साधू नदी अण उतरयांनो पश्चातापतो न करे
 पिण प्रतिमानो पूजणहारो केइयक मासे केइयक दि
 वसे कारण विशेषे प्रतिमा पूजा न सके तो पश्चाता
 पकरे इम चिंतवे जे माहिरे पोते पाप जेमे प्रतिमा न
 पूजाणी पिण साधू नदी अण उतरे इम न चिंतवे
 जे म्हारे पोते पाप जे मे नदी न उतराणी जिको प्र
 तिमा ऊपर नदीनो दृष्टात माडेते ते सूत्र विरुद्ध दी
 सेते ते एतलानणी जे प्रतिमाना पूजनहारने प्रति
 मानी पूजा अनुमोदवाने खातेते अने साधूनेतो नदी
 नो उतार निंदवा खातेते तथा हिवे जेणे खाते नदी
 ते ते प्रेठयो नदी असक्य प्रहारते अने अनाकुटि
 ते ते अनाकुटि श्री समायांगमध्ये एकवीसमे समवा
 येते बिबेकीहोयते विचारी जो ज्यो ॥ ६ ॥ ॥ ७ ॥
 तथा सिद्धांत माहि तुंगीया नगरीना तथा आलंजी
 या नगरीना तथा सावत्यी नगरीना परमुख श्रावक

गाढाघणाना अधिकार दीसेवे पिण कुणें श्रावकें प्र
तिमाघडावी तथा जरावी तथा प्रतिष्ठावी तथा पूजा
तथा जुहारी कही दीसती नथी ॥ मनुष्य लोक मां
हि एक द्रूपदीए पूजादीसेवे ते पूजवानो प्रस्ताव के
हु सिद्धांतना अर्थतो नय ऊपरि चाल एतो नय सं
सारना आरणकारणनों दीसेवे जे परणती वेत्ताइं पूजा
बली पुनरपी आखा नवमाहि द्रोपदीइ प्रतिमापूजा
कही नथी जो मोक्षने खाते होयतो परणवाना अव
सर टाली बली बली पूजे पुन ए मोक्षने खातें नथी
दीसती अने जे वास्तुक शास्त्र तथा विवेक विलास
मांहि प्रतिमा घडावा जरावानी विध बोली थता जे
हिवडां नवी प्रतिमा जरावे तथा घडावे ते घडावना
हारां जेहने पूजे मुजने प्रतिमा घडावा जरावा तथा
प्रतिष्ठानी विधी कहो तेहने ते जेहवीविधिवहे तेहने जो
तां संसारने हेत दीसेवे ते किमते लिखीयेवे (एक धीति
स्थयरासं तिकराहुंतिगेहेसु) जे एकवीस तीर्थकरनी प्र
तिमा घरि मांडी शांति करे पिण त्रिण तीर्थकरनी प्रति
मा घरिन मांडे जो मोक्षने खाते होइतो त्रिण तीर्थकर घ
रे मांडया शांति स्युं न करे तीर्थकरतो चौवीसें मोक्ष
दायकवे जेणें इम कह्यो जे त्रिण तीर्थकर घरे न मां
डीये जेह जणी तेहने बेटा न होवे ते जणी न मांडी
ये एणें कारणें संसार हेतें दीसेवे पिण मोक्षने खाते
नथी तथा जिको नवी प्रतिमा जरावे तेहनीरा

मि पूढीने तीर्थकरनी शमिसंघाते मेलता विसै जोई
 इम करते जे तीर्थकर संघाते नामी वैद्य पडे तथा वी
 था बारू पडे तथा नवपंचकपडे तथा पद्माष्टको पडे
 इत्यादिक योग उपजे ते प्रतिमा घडावे नही चरावे
 नही घरिमांडे नही एहे जोतां संसारने हेते दीसेवे त
 था वली जिहां प्रतिमा प्रतिष्ठाइते तिहां आरण का
 रण घणा करेते जवारा चावेते चउरी बांधेते मरडा
 सांग मीढौलगेवा सूत्रइं तथा जव अरीठानो काठलो
 तथा वली अनेरा आरण कारण गाढा घणा करेते
 तेहहेते जोते पीण संसारने खाते दीसेवे तथा वली
 जे जिणदत्त सुरिनो कीधो विवेक विलास तेहमाहि
 प्रतिमा घडावा चरावानी बिधिबोलीते तिहा इम क
 ह्योते जो प्रतिमानो मुख रोद्र पडे तथा बीजा अव
 यवपाडुआपडे तउ ते प्रतिमाना करावनहारने घणी
 जनसिनी हाणि बोलीते पुत्रनी हांण तथा मित्रनी
 हांण तथा धननी हांण तथा सरीरनी हांण इत्यादि
 घणा दोष बोल्याते एह ठाम जोते संसारने हेते दी
 सेवे तीर्थकरतो केहने इज्यांन न करे डाहाहोयते बि
 चारी जोज्यो ॥ तथा जिहां सुरियाचने प्रतिमा पू
 जी तिहां पिण मोक्षने खाते पूजी नथी एतला चणी
 जे श्री बीतराग देव बांध्या तिहां यहवा कह्या जे ॥
 (एयेणे पेच्चा हियाए) इत्यादि पेच्चा कहिता परजव
 जाणिवो अने जिहा प्रतिमा पूजी तिहां (पुर्विपग

हियाए सुहाए) इत्यादि कह्यो एह अधिकार जोता
 भोहने खाते नही जो प्रतिमाने अधिकारे कह्यो हुं
 तोतो बीतरागवाद्या अने प्रतिमापूजी सरीखो थाय
 इहांतो बीतरागवाद्या अने प्रतिमा पूजी विचाले श
 ब्दनो फेरतो गाढा सवला दीसेवे जे चतुर होयते वि
 चारी जोजो ॥ तथा केतलाएक इम कहेवे जे सम्यक्
 दृष्टी टाली नमोत्थुणं कोई न जणे ते श्री अनुयोग
 द्वार मांहि इम कह्यो [जेइमे समण गुणमुक्कजोगी ठ
 कायणिरणुकंपा हयाइव उदामा गयाइवनिरंकुमा ध
 ठा मठा तुप्पोठा पंडुर पड पाउरणा जिणाणं अ
 णाणाए सबंद विहरिऊण उजयोकालमावस्स गस्स
 उवठति] तो जोवो अने लोकोत्तर-द्रव्यावश्यकता
 करणहार ते दिनप्रते वार वे आवश्यक करे ते मांहि
 नमोत्थुणं कहे अने ते बीतरागें समकित दृष्टी न क
 ह्या आज्ञा वाहिर कह्या तो जोउने जे कोई इम क
 हेवे जे सम्यग् दृष्टी टाली नमोत्थुणं कोन कहे ते वा
 त सूत्र विरुद्ध दीसेवे तथा श्री नंदी सूत्र मांहि इम
 कह्यो जे चौदह पूर्व पठनहारनी मति समी होवे जा
 व दस पूर्व पुराना जणनहारने मति समी होवे अ
 ने नव पूर्वना जणन हारनी मति समीहोवे अने मि
 थ्यात पिण-होय एतले नमोत्थुणं आदिदेई ग्रंथ घणो
 जणें पीण मति मिथ्यातहोय ॥ अने समी पिण होइ
 तो इणें मेले जोता जे इम कहेवे जे सम्यग् दृष्टीटा

ली अनेरा कोई नमोथुणं न कहे ए बात सूत्रमुं वि
 रुद्ध दीसेवे तथा प्रत्यक्त खमणा यत्येण नोजग प्रम
 ख घणाइं नमोथुणं कहेवे ते काई सम्यग् दृष्टी ज
 एया नथी चतुर होयते विचारी जो ज्यो तथा केत
 लाइक इम कहेवे जे गणधरे इम क्यां कह्यो जे (जि
 णधरे जिणपडिमा) तथा (धुवंदाऊण जिणवराणं)
 तेहना उत्तर प्रीठो जे जगमाहिं जेहना नाम जेइवां
 परवरतता होय गणधर पिण तेहनो अधिकार आवे
 तेहने तेहवे नामे कहे जिम श्री ठाणांम मध्ये तीजे
 ठाणे गणधरे इम कह्यो जे (चारहेबासे तउ तित्था
 पन्नता मागहे बरदामे पचासे) तो जोउने जिम ग
 णधरे तीर्थ कहा तिम इम क्यांन कह्यो जे तउ (कु
 तित्था पन्नता) जो गणधरे ते तीर्थ कहा तो काई आ
 पणपे तीर्थकरी आराधवा नही एतले गणधरे जेहनुं
 जेहवो नामहोवे तेहने तेहवो नाम कहे ते नाम कहा
 माटे काई आराध्यन न थाय श्री बीतरागे तो
 ज्ञान दर्सेण चारित्र आराध्ये त्रिजे ठाणे वे ल्या (ति
 विहा आराहणा पन्नता तं नाणाराहणाए दंसणारा
 हणा चरित्ताराहणा) तथा गणधरे आपणे मुखें इ
 म कह्यो पूर्णचंद्र यद्धने [जे दिवे सञ्जे] ये यद्धसा
 चो जो गणधरे इम कह्यो जे ए यद्धसाचा तो काई
 आपणने आराध्य थयो नही तथा गणधरे इम क

घृतागा अस्मा पीऊ सम्यु सगा] गणधरे इम कह्यो
 जे गोशालाना श्रावकने अरिहंत देवठे पिण गणध
 रे इम स्युं न कह्यो जे गोशालाना श्रावकने गोशा
 लो कुदेवठे एतले इम जाणजो जे लोक मांहि जे प
 दार्थ जेहवा परवरतेवे ते गणधर पिण तिमहीज कहे
 तथा द्रूपदीना आलावानी वृती माहिं इम कह्यो
 वे जे एक वाचनामे एहवोवे [जेजिण पडिमाणं अञ्च
 णं करेति] एतावन् एव दृश्यते जिनप्रतिमानी
 अर्चा कीधी एतलो दीसेवे एणें (जिणधरे) इत्या
 दिक बोल कह्या नथी हिवका जे सूत्र ग्याता प्रति प्र
 वर्तेवे अने ते प्रति बिचालें ओतरागाढा घणा दीसे
 वे डाहा होइते विचारीजो जो ॥ तथा केतलाइक इम
 कहेवे जे द्रूपदीये नारदने इम कह्यो जे (अंसजए
 अबिरए) इत्यादि ए बोल सम्यक् दृष्टी विना किम
 कहवाय तेहनो उत्तर परण्या पठे समकित तथा वृत्त
 उदे आव्हावे नियाणा तीत्र परणामें नहीथा तिस
 कारणें विवाहपठे सम्यक्तनो उदेवे इम जाणीयेठ जे
 डाहाहोय ते विचारीजो ज्यो ॥ इती ७ मा प्रश्न ॥
 तथा श्रीबीतरागदेवे सिद्धांतमांहिं साधु चारित्रीया
 नें श्री ठाणांगमध्ये पंचमहाव्रत पाल्याना फल तथा
 श्री उत्तगध्ययन चोवीसमामध्ये पांचसमिती निण
 गुप्तिनाफल तथा अध्ययन ववीसमें दस विधि समा
 चारीना फल फामु आहार दीधाना फल श्री जंगव

ती मध्ये वारे नेद तपकीधाना फल त्रीसमे अध्ययने
 दसविधि वियावच्चना फल बोलया श्री ठाणागमध्ये
 तथा विनय कीधाना फल अध्ययन पहिले तथा अ
 ध्येन ३१ में चारित्र पाल्यानाफल उगणत्रीसमें अ
 ध्ययने बोल घणाना फल बोलया तथा श्रावकने
 वारे व्रत पाल्याना फल श्री उववाई उपांगे तथा स
 माई चौवीसथो इत्यादि आवश्यकना फल श्री अनु
 योग मध्ये तथा श्रावकने जो साधू चारित्रिया बंद
 नीकठे तो साधूने बांधाना फल तथा साधूनी पर्युपा
 स्त्रि अर्थात् सेवाजक्ति कीधाना फल तथा अन्नपाणी
 दीधानाफल तथा उपाश्रय दीधानाफल तथा वस्त्र पा
 त्र दीधाना फल तथा उषध जेपद दीधाना फल इ
 त्यादि जो तीर्थकर देव गणधर आचार्य उपाध्याय
 साधु जो आराध्यठे तो तेहना घणा परिना फल
 श्री सिद्धांत माहिं कह्याठे अने जो प्रतिमा मोक्ष मा
 रगमें आराध्य नथी तो कही सिद्धांत माहिं प्रासाद
 कराव्याना प्रतिमा घडाव्याना प्रतिमा जराव्याना
 तथा प्रतिमा पूज्याना तथा प्रतिमा प्रतिष्ठाना तथा
 प्रतिमा बांधाना तथा प्रतिमा आगलिं घणी पर ठो
 इठे तेहना अर्थात् चढाव्याना फल तथा प्रतिमा आ
 गल जावना जाव्याना फल इत्यादि घणा वाना ठो
 क प्रतिमा आगल करेठे पिण एते कुबोलना फल
 सर्वे श्री वीतरागदेवे नथी कया तो जोवो ने मोक्ष

ना फल पापे जिको वंदना पूजना करेते तेहने मोक्ष
 नो लाज किम होसी चतुर होइते विचारी जो ज्यो
 ॥ ८ ॥ तथा जीवाजीगम उपांगे मध्ये लवण समुद्र
 ना अधिकार कह्याते तिहां श्री गौतम स्वामीने पू
 ळ्योते जो पाणी ए बडो ऊंचोते तो जंबूद्वीपने एको
 दकस्युं नथी करतो तिहां बलतो श्री बीतरागे इम
 कह्याते ॥ ते सूत्र पाठ लिखीयेते ॥ (जतीणजते
 लवण समुद्रे दो जोयणसय सहस्साइं चक्रवाल विखं
 जेणं पन्नरस्स जोयण सय सहस्साइं एकासीइंचस
 हस्साइं सतंच उयालं किंचि विसे सूणे परिखेवेणं ए
 गं जोयणसहस्सं उवेहेणं सोलस जोयण सहस्साइं उ
 रसेहेणं सत्तरस जोयण सहस्सामतिं सवग्गेणं पन्नते
 कम्हाणंजते लवण समुद्रे जंबूद्वीवंदीवं नो उवीलेति
 नो उप्पीलेइ नोचेवणं एकोदगं करेइ गोयमा जंबूद्वी
 वेण दीवे नरहेरवते सुवासेसु अरहंत चक्रवट्टिस्स
 बलदेवा वासुदेवा चारण विद्याधरा समणा समणी
 सावयाउ मणुया पगति न्हिया विणीता ते सिणं प
 णिहाय लवणे समुद्रे जंबूद्वीवे दीवं नो उवीलेति नो
 चेवणं एकोदकं करेति गंगोसिंधूरत्ता रत्तवई सुंसलि
 लासुहंययाउ महिद्वियाउ जाव पलितोवम ठितीयाउ
 परिवमंति तासिणं पणिहाय लवणसमुद्रे जाव णोचे
 वणं एकोदयं करेति चुल्लहिमवंतं सिहरि सुवासधर
 पवतेसु देवा महिद्विया तेसिं पणिहाय हेमवय रत्तव

मिद्धांत मांहि जिहां जिहां देवताए अथवा मनुषे
 श्री बीतराग बांधा तिहा (पेच्चाहियाए) अथवा
 इहजवे परजवे (हियाए) कह्यो पिण कही (पूर्वि
 पछाहियाए सुहाए) न कह्यो अनें जिहां प्रतिमा पू
 जी देवताइं तिहां [पूर्विपछा हियाए सुहाए] क
 ह्यो पिण किहांइ पेचा अथवा परजवे [हियाए सु
 हाए) न कह्यो एणें कारणे प्रतिमा मोद्धने खाते न
 थी जिम जगवती सूत्रमध्ये बीजे प्रातके खंदकने आ
 लावे बेहु अधिकार जूजया कह्ये ते लिखीएबे (जे
 एव समणे जगवं महावीरे तेणव उवागठइ २ समणं
 जगवं महावीरं तिखुत्तो आयाहिण पयाहिणं करेइ २
 नाव नमंसित्ता एवं वदासी अलितेणं जंते लोए प
 उत्तेणं जंते लोए आलितपलितेणं जंतेलोए जराए
 अरणेणंय सेजहानामति किति गाहावती आगारं सि
 क्कियायमाणं सिक्केसे तत्थजंडे जवइ अप्पसारे मोल्ल
 गुरुएतं गहाय आयाए एगंत मंतं अवकम्मति ए
 ल्ले नित्थारिए समाणे पछापुराए हियाए सुहाएख
 णाए निस्सेसाए आणुगामियत्ताए जविस्सई एवामे
 देवाणुप्पिया मज्जपवि आयाएगे जंडे डठे कंते पि
 मणुणे मणामे धेक्के विस्सामिए समए बहुमए अ
 णुमए जंडकरंरुग समाणे माणं सीयं माणं उएहं
 णुणखहा माणं पिवासा माणंचोरा माणं वाला मा
 णुदंसा माणंमंसया माणं वाइय पिच्चियसं जियसन्नि

वाइयविविहारोगायंका परीसहो वसग्गा फुसंतु तिकट्ट
 एसनिट्यारिए समाणे परलोग्रस्स हियाए सुहाए खमा
 ए निसेसाए अणुयगामियत्ताए नविस्सइ) अहीयें
 खंदके श्री महावीरनें इम कह्यो जिम कोई एक गृह
 स्थनें घरे आग लागी होयते घरनो धणी सारवस्तु
 काढे अने इम कहे ए सार भंडार काढयो होइ हुंतो
 मुऊनें (पढा पूरा हियाए सुहाए) आदिहोसी ॥ अ
 नें हुं जे चारित्र लेऊंते ते मुऊने (परलोगस्स हिया
 ए सुहाए) आदिहोसी हिवे जोउने लक्ष्मी काढयाना
 अने चारित्र लीधाना शब्दना केतला फेरवे (हिया
 ए सुहाए जाव आणुगामीए) ए शब्दतो बहु अ
 धिकारे कह्यावे पिण लक्ष्मी काढी तिहा इम कह्यो
 (पढापूरा) अने चारित्र लीधो तिहा इम कह्यो
 (परलोगस्स) तो जीवोनें इम इहां एतला बडा फे
 र शब्दनावे तिम सूरियाऊनें पिण आलावे जिहां प्र
 तिमा पूजा तिहा (पुर्विपढा) अने जिहां वीतराग
 बांध्या तहां [पेन्ना] इम कह्यो एवका शब्दना फेर
 वे ए आलावाने मेलें सूरियाऊनी देवताई प्रतिमा पू
 जी अने प्रतिमा आगे नमोथूणं कह्यो ते जूनी म
 र्याद अर्थात् पुरानी मर्याद रीतहै तथा जिम प्रति
 माने (पुर्विपढा) कह्योवे तिम दाढानी पूजानें पिण
 [पुर्विपढा] कह्योवे एवेहुं अधिकार एकठाजवे त
 था केतलाएक इम कहेवे जे सुवर्मासनाइ तीर्थकर

नी दाढाढे तिहां देवता मैथुन न सेवे ते जणी ते
 दाढ सम्यक्त्तमें खातेढे तो जोवो अने जो सम्यक्त्त
 ते होइ तो ॥ पुर्वि पढा ॥ क्यां कहे अने ॥ धम्मिय
 विवसाईयं ॥ पीण क्यां कहे तथा श्रीठाणांगमध्ये
 त्रीजेठाणे व्यवसाय त्रीण कहा ते लिखिपेढे ॥ तिवि
 हे विवसाए पन्नते तंजहां धम्मिए विवसाए अध
 म्मिए विवसाए धम्मिया धम्मिए विवसाए ॥ ते धम्म
 विवसाए साधनो धर्मा धर्म श्रावकनो बाकी २२
 दंडक अधर्म विवसाये कहा तो जोवोने देवता श्री
 वीतरागे अधर्म व्यवसाई कहा अने जिहां सरीया
 न देवता प्रतिमा तथा द्रह वावि इत्यादि पूजवा ऊ
 ठयो तिहां इम कह्यो जे धम्मियं विवसाईयं गिणिह
 जा अने ठाणांगमध्ये दसमेठाणे धर्मतो दस कहा
 ॥ दसविहेधम्मे पन्नते तंजहां गाम धम्मे १ नगर
 धम्मे २ रठधम्मे ३ पासरु धम्मे ४ कुलधम्मे ५ ग
 णधम्मे ६ संघधम्मे ७ सुयधम्मे ८ चरित धम्मे ९
 अत्थिकायधम्मे १० ॥ ए दस धर्म कहा तेहमाहि
 जे ॥ धम्मियं विवसाईयं गिणिजा ॥ कह्यो ते तो कु
 ल धर्म माहि आवेढे अने केतलाएक इम कहेढे जे
 ॥ धम्मियं विवसाईयं ॥ कहता श्रुत धर्म कहिये तो
 डाहाहोयते विचारी जो ज्यो ॥ जे मूरीयाजे तो प्र
 तिमा द्रह वावि हाथियार इत्यादि घणा वाना पूज्या
 ने अने ॥ धम्मियं विवसाईयं ॥ तो समचयपद कह्यो

ठे ज्यो (धम्मियं विवसाईयं) श्रुत धर्म तो द्रह वा
 वि हथियार प्रमुख जेतला वाना पूज्या ते सहु श्रुत
 धर्म थाय अने तिहांतो इम न कह्यो जे प्रतिमानी
 पूजा तथा नमोथुणं ते श्रुत धर्म अने द्रह वावि
 हथियार इत्यादि ते कुलधर्म तिहांतो समुच्चय जे प
 दे (धम्मियं विवसाईयं) कह्योवे प्रतिमा नमोथुणं
 द्रह वावि हथियार परमुख सहुने कह्योवे डाहा होइ
 ते विचारीजो ज्यो तथा वली प्रीवयो (धम्मियं वि
 वसाईयं) कह्यो ते पुस्तक बाच्या पठे कह्यो अने ते
 पुस्तकने एहज. सूत्र मांहिं इम कह्योवे जे (धम्मि
 येसत्थे) एतले ते पुस्तकनों नाम ते धर्म सास्त्र अने
 आचाराग आदिक जे सम्यक् सास्त्रे ते तो ते न
 होय तो जोवोने ते कोनसे धर्म शास्त्रे जो श्रुत ध
 र्म शास्त्र होइतो तेहमाहिं द्रह वावि हथियार प्रमुख
 जे वाना पूज्या ते पूजवा न नीकले एणे कारणे ते
 श्रुत धर्म शास्त्र न होय डाहाहोय ते विचारी जो
 ज्यो ॥ इति सूरिआज्ञाधिकारः ॥ १० ॥ तथा केत
 लाइक इम कहेवे ॥ जे साधू चारित्री आने विद्याचा
 रण जंघाचारण लब्धि उपजेवे ते लब्धिने प्रमाणे
 मानुषोत्तर पर्वते जाइ तिहां (चेईयायं वंदित्तए) ए
 हवो शब्दवे तिहां केतलाइक इम कहेवे जे मानुषोत्त
 र पर्वते (चेईय) शब्दे प्रतिमा वांदातेहना पडुत्तर
 प्रीवयो श्री बीतराग सिद्धांत माहिं मानुषोत्तर पर्वत

पे च्यार कूट कहा पिण सिद्धायतन कूट न कहा अ
 ने अनेरे पर्वते जिहां सिद्धायतन कूटते तिहां कूटनी
 वर्णव करता सिद्धायतन कूट पीण माहे कहाते अने
 जो एणे पर्वते सिद्धायतन कूट न कह्यो हिवे श्रीठा
 णांगमांहिं मानुषोत्रे जे कूट कहा ते लिखीयेते (मा
 णुसत्तरस्सणं पवएसस चउदिसि चत्तारि कूडा पत्र
 ता तंजहा रयणे रतणुवते सवरयणे रयणसंवए) तो
 जोवोने इहां शाश्वती प्रतिमा नथी तो (चेईय) श
 ब्दे स्युं वांच्यो अने श्री अरिहंत तो जिहां रह्या बा
 दीए अने (चेईय) शब्द अरिहंतने तो घणे ठामें
 कहाते ते ठाम लिखीएते [तंगगामोणं देवाणुप्पिया
 समणं जगवं महावीरं बंदामो णमंसामो सक्कारेमो
 सम्माणोमो कल्लाणं मंगलं देवयं चेईयं पक्कवासामो
 एतंणे पेच्च जवे इह जवेय हिताए सुहाए खमाए णि
 रसेसाए आणुगामियत्ताए जवस्सती तिक्कटं] श्री
 जववाई मध्ये अरिहंत विद्यमानने [चैत्य] तंगग
 मोणं देवाणुप्पिये समणं जगवं महावीरं बंदामो नमं
 सामो सक्कारेमो सम्माणोमो कल्लाणं मंगलं देवयं चे
 ईयं पक्कवासामो एयंणे इहजवेय परजवेय हियाए सु
 हाए खमाए निसेरसाए आणुगामियत्ताए जावस्स
 ति) श्री जगवती मध्ये शतव. ९ ॥ चैत्या ॥ तंगग
 मिणं समणं जगवं महावीरं बंदामि णमंसामि सक्का
 रेमि सम्माणोमि कल्लाणं मंगलं देवयं चेईयं पक्कवा

सामि ॥ रायपसेणी मध्ये अरिहंत विद्यमान ॥ चैत्य ॥
 अम्हेणं जंते सूरियाजस्स देवस्स अज्जियोगा देवाणु
 ष्पियाणं बंदामो णमंसामो सक्कारेमो सम्माणोमो क
 ह्छाणं मंगल देवयं चेईयं पज्जवासामो इम रायपसे
 णी मध्ये चैत्य कह्या ॥ उपासगदशा मध्ये ॥ चैत्य ॥ इ
 ह महा माहाणे उपन्न ज्ञाण दंसणधरे तीयपडुप्पणा
 णा गय जाणए आरहा जिणे केवली सवनु सवदरि
 सीते लोक्कमहित पूयिते सदेव मणुया सुरस्सा लोग
 स्स अच्चणिके बंदणिके पूयणिके सक्कारणिके सम्मा
 णणिके कल्लाणं मंगल देवयं चेईयं पज्जवासणिके)
 इहा उपासगदशांग सातमा अध्ययनमध्ये अरिहं
 त विद्यमान [चैत्य] इत्यादि घणे ठिकाणे अरिहं
 तने चेईय शब्द कह्योवे जो मानुपोत्तरे रह्यां अरिहं
 त वाद्या तो इम जाणज्यो जे मगलेहीज अरिहंत वा
 द्या डाहा होयते विचारीजो ज्यो तथा कोई इम कह
 स्ये जे नंदीसरवरे (चेईय) शब्दें स्युं वाद्या तेहना
 उत्तर प्रीवंधो जेव मानुपोत्तरे [चेईय] शब्दें अरिहं
 त वाद्या तजे नंदीश्वर वरें प्रमख सघले (चेईय)
 शब्दें अरिहंत जे वाद्या मानुपोत्तरे अने नदीसरवरे
 शब्द फेर काईवे नही इहे सरीखा शब्दवे तथा रुद्ध
 कदीपे पीण शाश्वती प्रतिमा सूत्रें किहा कही नथी
 तथा जंघाचारणने आलावे बीजा प्रत्युत्तरवे पिण जो
 मानुपोत्तरे शाश्वती प्रतिमा नथीतो बीजा प्रत्युत्तर

नो स्युं कारण ॥ महा होइते विचारीजो ज्यो ॥ ११ ॥
 तथा श्री जगवती सूत्रमध्ये चमरेंद्रने अधिकारे ए
 वा शब्दते जे [एणत्थ अरिहंतेवा अरिहंतचेतिय
 णिवा अणगारेवा चावियप्पणो निरुसाएउटं उप्प
 ति) तिहां केतलाइक इम कहेते जे (अरिहंत चे
 याणिवा] कहतां जिन प्रतिमानी नेश्राइं जाइ ते
 ना प्रत्युत्तर लिखीयेते जो प्रतिमानी नेश्राइ होइ त
 चमरेंद्र चरतखंड लगे स्याने आवे शाश्वती प्रति
 मातो चमरेंद्रने दुकमी हती अने जो तेने गरजमरेत
 चरत खंडलगे कयो आवे तथा सौधर्मइंद्र वज्र मुंकी
 कयो तिवारे चमरेंद्र चयभ्रांत हुंतो चरत खंडलगे
 स्युं आव्यो जठ प्रतिमाइं गरज सरइतो तिहां श
 श्वती प्रतिमा पासे हती अने तेहने सरने जात पि
 ण जेहना सरणथी बूटीए तेहने सरणे आव्यो दीसेवे
 अर्थात् महावीरजिके सरणे सेंगगयाथा ओर उनही
 के सरणे आयोते तथा सौधर्मेंद्रें पिण वज्र मुंकी
 एहवो चितव्यो जे चमरेंद्रने एतली शक्ति नथीजे आ
 पणी नेश्राये इहां लगे आवे पिण अरिहंत चैत्य अ
 णगार एहेनी नेश्राये आवे अने मंतो वज्र मुंकोते
 सो ते अरिहंत जगवंत अणगारनी आसातनाइं मु
 ऊने महा दुःख होइ एतले जोवोने अरिहंत जगवं
 त तथा उदमस्त जिन तथा अणगारनी आशात
 ना कही पिण कांई प्रतिमानी आसातना न कही

एतले सौधम्भेद्रे अरिहंत तथा बृदमस्त जगवंत
 (चैत्य) शब्दने कहरा दीसेवे अने वृत्तिमाहिं पिण
 अरिहंतज फलाव्यावे पिण प्रतिमा नथी फलावी ॥
 बाहा होयते विचारी जो ज्यो ॥ १२ ॥ तथा श्री उव
 बाई उपाग मध्ये अंवन श्रावकने अधिकारे एहवा
 शब्दवे जे ॥ ननत्थ अरिहंतेवा अरिहंत चेईयाणि
 वा) तिहां केतलाएक इम कहेवे जे अरिहंत ॥ चेई
 य ॥ शब्दे प्रतिमा तेहना प्रत्युतर लिखीयेवे ॥ अरि
 हतेवा अरिहंतचेईयाणिवा ॥ ए वेहु शब्दे अरिहंते
 ज जाणवा केतलाइक इम कहेवे जे अरिहंतने वेश
 ब्द किम कहीये वा शब्दतो विकल्प होय तो जोवो
 ने मिद्धांत मांहिं ठाम ठाम इम कह्यो जे ॥ समणंवा
 माहणंवा ॥ एक साधूने वेहुं नाम कहरा तथा वा श
 ब्द पिण कह्यो तथा श्री सूयगमांग अध्ययन सतर
 में एक साधूना तेरे नाम कहरावे अने १३ नामे वा
 शब्द पिण कह्योवे ते लिखीयेवे ॥ समणेतिवा १ मा
 हणेतिवा २ खंतेतिवा ३ दंतेतिवा ४ गुत्तेतिवा ५
 मुत्तेतिवा ६ इसीतिवा ७ मुणीतिवा ८ कितीतिवा ९
 विदूतिवा १० जिखुतिवा ११ लूहेतिवा १२ तीर
 रठीतिवा १३ ॥ इमवली एक वस्तुना घणा घणा
 नाम आवेवे तथा वली वृत्तिकारे पिण ॥ अरहंतेवा
 अरिहंत चेईयाणिवा ॥ तिहां अरिहंतज फलाव्यावे
 तथा ॥ चेईय ॥ शब्दे मंत्रमांहिं घणे ठामें अरिहंत

कहावे ॥ तंगवामो देवाणुप्पिया समणं जगवं महा
 वीरं वदामो ॥ इत्यादि वाकी आलावा-जे (चेईय)
 शब्द अरिहंतने कहावे ते पूर्वलीपरें जाणवाः तथा
 केतलायेक इम कहेवे जे वृत्तिकारे (चेईय) शब्द
 उघाडा माटे न फलाव्यो तो जोवने [चेईय] श
 ब्द उघाडोके अरिहंत शब्द उघामो जो उघाडो श
 ब्द न फलावे तो इहां अरिहंत शब्दने फलाव्यो जो
 ईये डाहा होइते विचारी जो ज्यो ॥ १३ ॥ तथा श्री
 उपाशगदशांगमध्ये आणंद श्रावगने अधिकारे के
 तलाइक इम कहेवे जे प्रतिमा आराधेवे तेहना प्र
 त्युत्तर प्रीठयो ॥ नो कप्पई ॥ कह्यो ते माहिं तो आ
 पणें काई संमंध नथी आपणने तां संमंध ॥ कप्प
 ई ॥ माहिंवे अने ॥ कप्पई ॥ माहिंतो प्रतिमा न क
 ही तथा ॥ नोकप्पई ॥ माहिं केतलाइक इम कहेवे
 जे अन्यतीरथी परिग्रहित ॥ चैत्य ॥ न कल्पे तो अ
 ण परिग्रहित कल्पे तेहना प्रत्युत्तर प्रीठयो इहां प्रति
 मानो स्युं अत्रिकारवे इहातो इम कह्यो जे ज्या लगे
 ए नथी बोलावे तां लगे हूं पूर्वे नथी बोलुं तथा मि
 थ्यातीने गुरुनावे अन्न पानादिक न देवुं तो जोवो
 ने प्रतिमा काई बोले क्या अन्नादि प्रतिमानें काम
 आवे माहाहोइते विचारी जो ज्यो ॥ १४ ॥ तथा
 श्री प्रश्न व्याकरण मध्ये त्रीजे संवर द्वारे ॥ चेईअ
 ठे ॥ एहवो शब्दवे तिहां केतलाइक इम कहेवे जे

साधू चारित्रीयो प्रतिमानो विधावच्चकरे तेहना प्रत्यु
त्तर प्रीतयो तिहांतो एहवो अधिकारठे जे साधू चा
रीत्रीयो गृहस्थना घरथकी उपधिनात पाणी
आणें अने आणीनें अनेरा साधूनें आपे ते स्यां न
णी आपे ते प्रीतो जे (चेई अठैय] चैत्यार्थ ज्ञा
नार्थे ज्ञाननें अर्थे तथा निर्करार्थिं आपे तथा एहि
ज सूत्रमध्ये घणुं विस्तारठे जे अप्रीतिकारीयाना
घरमाहिं न पेसे अप्रीतिकारीयानो जातपाणी उपधि
न लिये वली इम कह्यो जे ॥ पीढ फलगसिक्का सं
धारक वत्थ पाय कंबल दंडग रजोहरण निसिक्क
चोलपट्टय मुहपोतीय पायपुठणादि जायण जंडो वि
हि उवगरण ॥ एतला वाना मांहिलो प्रतिमानें स्युं
काजे आवे अने साधूनेंतो ए सगला वाना काजे आ
वे इहांतो दत्तनो अधिकारठे जे दातारनो दीधोलेवो
डाहा होयते विचारी जो ज्यो ॥ १५ ॥ तथा प्रश्न
व्याकरण माहिं पहिले आश्रव द्वारिं पृथवी कायने
अधिकारें गढ पाटण आवास घरहाट प्रतिमा प्रासाद
सजा इत्यादिकनें कारणे पृथवीनेहणें ते श्री बीतरागें
अधर्मद्वार माहिं घाल्यो इहातो विशेष करि आश्रव
अधर्मद्वार माहिं प्रतिमा कहीठे डाहा होई ते विचा
री जो ज्यो तथा केतलाइक इम कहेठे जे इहांतो इम
कह्यो जे ॥ पृथ्वी हिसांति मंदबुद्धियात ॥ ते मंदबुद्धी शब्दे
मिथ्यात्विए अर्थ सूत्रस्यु मिले नही ते एतलाजणी जे

पाचमा अधर्म द्वारमांहीं परिग्रहने अधिकारे चक्रवर्ति
 वासुदेव बलदेव अनुत्तर विमानवासी देवता ॥ इत्यादि
 घणा कही आगले कह्यो जे मंद बुद्धी हुंता परिग्रह
 हनों संचो करतो जोवोनें जे कोई कहेते मंदबुद्धी
 शब्दें मिथ्यात्वी ते अर्थ जूठा सूत्र विरुद्ध दीसेते हा
 हा होइ ते विचारी जो ज्यो ॥ १६ ॥ तथा केतलाइ
 क इम कहेते जे आज्ञामे धर्म कहिये पिण दयामे ध
 र्म न कहीये तेहना प्रत्युत्तर प्रीतयो श्री बीतराग देवे
 घणेठामे दयामे धर्म कह्योते अने यही आज्ञा धर्म
 ते दयामे धर्मते ते लिखीयेते ॥ तुलीया विसे समा
 दाय दया धम्मस्स खंतिए विप्पसी इज्जमेहावी तहा
 ज्ञूयणअप्पणो १ ॥ श्री उत्तराध्ययन पाचमामध्ये त
 था ॥ दयावरंधम्म दुगंढमाणो वहावहं धम्म पसंस
 माणे एगंपिजे ज्ञेययती असीलं णिवोणि संजातिक
 उसुरेहिं ४५ ॥ श्री सूयगडांग अध्ययन बावीसमा
 मध्ये गाथा ॥ धम्मो मंगल मुक्कठं अहिंसासं
 जमोतवो देवावित्तं नमंसांति जस्स धम्मे सयामणो १ ॥
 श्री दसवैकालिक प्रथम अध्ययनमध्ये तथा ॥ सेवेमि
 ज्ञेय अतीता ज्ञेयपडुप्पन्ना ज्ञेय आगमिस्मा अरहं
 ता जगवंतो ते सवे एव मानिखांति एवं ज्ञासांति ए
 वं पन्नवेति एवं परूवेति सवेपाणा सवेचूता सवेजी
 वा सवेसत्ता न हंतवा न अद्यावेतवा न परिघेतवा
 ण परितावेयवा न उहवेयवा ए सधम्मे शुद्धे ॥ श्री

आचारांग चउथे अध्ययनेते तथा श्री बीतरागे द
 याई करी मोक्ष कही ते लिखीएते (सगरो विसाग
 रंतं जरह वासं नराहिवो इस्सरियंकेवलं हिच्चा दया
 ए परिनिबुज) श्री उत्तराध्ययन अठारमे मध्ये
 गाथा ३५ तथा श्री बीतरागे कुसीलीया दया रहित
 कही ते लिखीएते (नत्तंअरीकठ विता करेइ ज्जंसे
 करे अप्पणिया दुरप्पया सेणाहिईमच्चु मुहंतुपत्ते प
 गणुतावेण दया विहूणो) श्री उत्तराध्ययन २० में
 मध्ये गाथा ४८ तथा आज्ञा दयामें कही ते लिखीए
 ते (तमेवधम्मं दुविहं आइखंति तंजहा आगार
 धम्मं च अणगार धम्मं च अणगार धम्मोत्ताव इहख
 लुसवत्तं सवताए मुंडे नविता आगारातो अणगारि
 तं पव तितस्स सवातो पाणाई वायातो वेरमणं म
 सावाय अदत्तादाणं मेहुण परिग्गह राई नोयणात्त
 वेरमणं अयमानसो अणगार सामाइए ए धम्मे प
 नत्ते एयस्स धम्मस्स सिखाए उवठिए णिग्गथेवा
 निग्गंथीवा विहरमाणे आणाए आराहए नवति
 आगारधम्मं लुवालस्सविहं आइखई तंजहा पंचअ
 णुवयाइं तिन्निगुणवयाइं चत्तारिसिखावयाइं पच अ
 णुययायं तंज्जहा थूलान पाणाई वायात्त वेरमणं थूला
 त्तं मूसावायात्त वेरमणं थूलान् अदिन्ना दाणात्त वेरम
 णं सदार संतोपे इच्चा परिमाणे तिन्निगुणवयाइं तंज
 हा अणत्थ दंड वेरमणं दिसिवयं उवन्नोगपरिन्नोग

परिमाणं चत्वारिसिखावयाइं तंजहा सामातियं दे
सावगासियं पोसहोववासो अतिहिं संविजागो अप
ठिम मारणंतिया संलेहणा जुसणा अराहणा अयमा
उंसो आगार सामाइये धम्मे पन्नते एयस्स सिखा
ए उवठिउ समणो वासएवा समणो वासिएवा विहर
माणे आणाए आराहए जविति) इहां पंच महाव्र
त अने वारा व्रत आज्ञा कही एह मांहितो हिंस्या
काई नथी श्रीउववाई उपांगे तथा (तत्थिमातत्तियाजा
सा जंवदित्ताणुतप्पती जंबन्नं तंनवत्तवं एसाअणाणि
यंठिया) श्रीसूयगङ्गां अध्ययन नवना मध्ये गा
था २८ इम घणाइ अधिकारठे दयामे धर्म सूत्रे घ
णेठामे कहावे तथा केतलाइक इम कहेवे जे धर्म
आज्ञाईं कहीयेते अरुहारे आज्ञागाढी प्रमाण ते डा
हो होइते बिचारी जो ज्यो जे श्री बीतरागनी आज्ञा
तेतो पंच महाव्रत अने १२ व्रत तथा वारे निह्नु प
दिमा ११ श्रावगनी पडिमा इत्यादिक बोलनुं पालि
वो ते श्री बीतरागनी आज्ञा ते तो दयामईवे तथा
कोइएक इम कहस्ये जे साधूने आहार निहार विहा
र करता काई काई सावद्य लागेवे तेहना उभर प्रि
ठयो ते तो असकय परिहार अनाकूटिठे अने ते
पण असकय परिहार अने अनाकूटिइं जे काई साव
द्य लागे ते सर्व आलोये निंदे एतावता श्री सिद्धांत
मां हिंस्याते आलोवी निंदवीवे पिण श्री सिद्धांतमां

हिं हिंस्या कही अनुमोदवी नथी तथा श्री वीतरागे
 श्री प्रश्न व्याकरण मांहि श्री जीवदयाने सम्यक्तनी
 आराधना कही तथा बोधिकही तथा निर्मली दृष्टि
 कही तथा पूजा कही एहवा घणा बोल तथा उदाहर
 णा कहांते ते अधिकार लिखीएते [तत्थ पढमं अ
 हिंसाजासा सदेव मणुया सुरस्स लोगस्स चवित
 दीत्रोत्ताणं सरणगती पईठा नेवाणं नेवुई समाहिः सं
 ता कित्ती कंतीरईय विरतीय सुयगति तीदया विमु
 ती खती सम्मत्ताराहणा महती बोही बुद्धी द्विती
 संमिद्धीरिद्धीविद्धीठिती पुठी नदी च्छाविसुद्धी लद्धि
 विसिद्धदिठी कल्लाणं मंगलं पामाउ विञ्चूतिरक्खा सि
 द्धावासो अणासवो केवलीणहाणं सिव समिय सील
 संजमोत्तिय सीलघरो सबरोयगुत्ती ववसाउ उस्स तो
 य जणो आयतण जयणमप्पमाउ आसासो वीसा
 सो अन्नउसवस्स वियमाघाउ चोख पवित्तासु पूया
 विमल पनासाय निम्मलत्तरति एवमादीणि निययगुण
 निम्मियाइं पक्कवनाभणिहोति अहिंसाए च्छगवतीरा ए
 सा च्छगवती अहिंसा जासाचीयाणं पिव सरणं प
 क्खीणं पिवगयाणं तिसियाणं पिवसलिल खुहियाणं
 पिव असणं समुद्धमन्थेव पोतवइणं चउप्पयाणंच
 आंसमपयं दुहठियाणंच उसहिवलं अटवीमन्थेवस
 थ्वगमणं एतो विसिठतरिका अहिंसाजासा पुढविज
 ल अगणि मारुय वणप्फति वीजहरिय जलचर खह

अर तस थावर सवजूय खेमकारी एसा जगवती अ
 हिंसा) एहवी जीवदया श्री बीतरागेसार प्रधान क
 ही एहवी जीव दया श्री बीरागना मारगमांहिठे पिण
 अनेथिनथी जेहनी मिथ्यामतिठे तेहनी कहणठे पिण
 करणि नथी ॥ १७ ॥ तथा श्री ठाणांगमांहि इम क
 ह्यो (चउविहेसचे पन्नते तंजहा नामसचे ठवणसचे
 दवसचे नावसचे) इहा केतलाइक कहेठे जो बीत
 रागे स्थापना सच्च कही तो स्थापना आराध्यथई
 तेहना प्रत्युत्तर प्रीठयो ए चारि सत्यकह्याते जाप्या
 ऊपरठे पिण आराध्यऊपरी नथी एहज ठाणांगमध्ये
 दसमे ठाणे दससत्य कह्याठे तो ते कांई दसस्युं आ
 राध्यठे ते तो जाप्या ऊपरठे ते लिखीयेठे (दसवि
 हे सचे पन्नते तंजहा जणवयसचे समयसचे ठवणास
 चे नामसचे रुवसचे पडुवसचे विवहारसचे नावसचे जो
 गसचे उवमसचे) तथा श्री पन्नवणाजी मध्ये दसवि
 हेसचे जाषा पदमध्ये कह्याठे तो जोत्रोनें ते मध्ये (ठ
 वणसचे) कह्यो ते जाषा सत्य कहीये पिण आरा
 ध्यनही डाहा होइ ते विचारी जो ज्यो इहां स
 चे शब्द कह्यो ते एतला जणी जे जेहवो नामहोय
 तेहने तेहवे नामे बोलावतां ऊठ नही इमकोईकनो
 नाम कुलवर्द्धन होई अने तेह जनस्या पठे कुलवर्द्ध
 ययो होइ तेहो पिण तेहने कुलवर्द्धन कही बोलावतां
 कूठो नही तथा चित्रकारे हाथी चितारयां हाथी आ

लेख्यो होइ अने ते देखीने तेहने हाथी कहतां ऊठो
 नहीं तथा घानो घडोहोइ अने तेइमाहिंथी घी ठाल
 व्यो होइ अने ते घमाने घानो घडो कहिये तो तेहने
 कहितां ऊठो नहीं इत्यादि ए जाषा ऊपरिठे इहां आ
 राध्यनों विशेष काई नहीं डाहा होइ ते विचारी जो
 प्यो ॥१८॥ तथा श्री अनुयोगद्वारमध्ये आवश्यकना
 च्यारी निक्षेपा कह्याते तिहां केतलाइक इम कहें
 इहां आवश्यक करतां थापना करी माडवी कहीते ते
 कहण गाढासूत्र विरुद्ध दीसेते ते प्रविधो इहांतो आ
 वश्यकना ४ निखेपा कह्याते ते इम कह्याते नाम आव
 श्यक ते कहिये जे कोई जीव अथवा अजीवनुं नाम आ
 वश्यक दीधो होइ तथा थापना आवश्यक ते कहिये
 जे साधू अथवा साधवी अथवा श्रावक अथवा श्रा
 विका जिम आवश्यक करे तेइवो आकार कोईएक
 करे अथवा असद्भावकाष्टादिकने कहे जे ए आव
 श्यक ते स्थापना आवश्यक कहिये तथा द्रव्यावश्यक
 ना घना एक जेद कह्याते जाणग सरीर नवीयशरी
 र तथा लोक विहाणामाहिं ऊठी मुख धोइ लूगमां प
 हिरै तंबोल चावरे इत्यादिक करे द्रव्यावश्यक कहिये
 तथा (समणगुण मुक्कजोगीऊ व आवस्सयं चिठई)
 एह पिण द्रव्यावश्यक कहिये इत्यादि घणा बोल क
 ह्याते एहमाहि आपणें काई आराध्यनथी आपणेंतो
 लोकोत्तर जावावश्यक आराध्यते माहाहोइ ते विचारी

जो ज्यो इहां सूत्रनांहि आवश्यक करतां स्थापना
 करवी कही नथी तथा इहां सूत्रना पिण च्यार निखे
 पा कहावे तथा खंध आदिदेई घणा बोलना निखेपा
 कहावे एकठा आवश्यक उपरितो निक्षेपा
 कहा नथी डाहा होइते विचारी जो ज्यो ॥ १९ ॥
 तथा केतलाइक इम कहेवे जे राजा वांदवा गया न्हा
 ण करीने गया ते स्युं घोडाहाथी लेई गयाते स्युं न
 गर फूटरा कराव्या ते स्युं तथा मल्लिनाथे भोहन
 घर कराव्या ते स्युं तथा सुबुद्धी मुहते फरस्यो ब्रहनो
 पाणी आणाव्यो ते स्युं तथा संखपाखलीने अधि
 कारे श्रावक एकठा जीम्या ते स्युं तथा चारित्र महो
 त्सव कस्या ते स्युं इत्यादि घणा बोल कहेवे तेहना
 प्रत्युत्तर प्रीठयो श्री सूयगनांगमध्ये अठारमे अध्येय
 न किरीएठाणे श्री बीतरागे त्रिण पद्धकहा तिहां
 धर्म पद्ध ते सर्व सर्व विरति कह्यो अने अधर्म पद्ध
 ते अविरतिकह्यो अने त्रिजो मिश्रपद्धते काई विर
 ति कह्यो इम त्रिण पद्ध कही सर्व बोल के ओक की
 धी एक धर्म बीजो अधर्म श्रावकनी जेतली विर
 ति तेतली धर्म मांहि घाली अने जेतली अविरति
 तेतली अधर्म मांहि घाली हिवे जोउने जे न्हाया घो
 डा हाथी लेईगया इत्यादि सर्व तेहनी विरति के अ
 विरति न्हाया घोडा हाथी लेईगया इत्यादि सर्व ते
 तेहनी अविरतीवे अने अविरत तो श्री बीतरागे अ

धर्म माहिं कही अने विरतते धर्म माहिं कही जो सा
 धूने विरतते तो ते साधू न्हावे नही घोडे हाथी चढे
 नही तथा श्रावकने जो पोसह माहिं वरतते तो पोस
 हलीधे न्हाय नही घोडेहाथीइं चढे नही डाहाहोयते
 विचारी जो ज्यो ॥ २० ॥ तथा श्री जीवार्त्तागममध्ये
 नंदीस्वरने अधिकारे तीर्थकरना कल्याणकादि कार
 णे घणाएक देवता एकठा मिले मिल्याहुंता क्रीडाकरे
 इम अठाई महोठवकरे एतो देवताओनी स्थिती दी
 सेवे तथा मागधवरदाम प्रज्ञास १०२ तीर्थना तीर्थो
 दक तीर्थनी माटी ल्यावेते तथा गंगासिंधूआदिदेई न
 दीने विपे जई गंगानो गंगोदक गंगानीमाटी तथा
 बीजी नदीना उदक माटी तीर्थकरने जन्ममें ल्यावेते
 तथा द्रहनो उदक ल्यावेते ए आदिदेईने देवतानी
 गाढीघणी सूत्रमें स्थितिदीसेते केतली एक लिखीये
 ते जोउने गंगानागंगोदक गंगानीमाटी द्रहना उदक
 आणयामाटे तथा मागध परमुख तीर्थना
 तीर्थोदक तीर्थनीमाटी आणयामाटे कांई गंगा अथ
 वा द्रह अथवा ए तीर्थ मोद्धने खार्ते न थाय इम दे
 वतोनी घणी स्थितीते डाहाहोइते विचारी जो ज्यो ॥
 ॥ २१ ॥ तथा प्रतिमाना थापक कने पूगीयेते जे प्र
 तिमा केही अवस्थानी करी मांडेते श्री महावीरतो प
 हिले तीसवरस ग्रहस्थी पणेंहता पते ४२ वरप चारित्री
 या थया तेहवे पूगीयेते जे को श्री महावीरकी प्रतिमा

करी मांडीएते ते कही अवस्थानी करी मांडवेठे जठ
 इम कहे जे अम्हे ग्रहस्थना अवस्थाकरी मांडेते तो
 चारित्र्याने बंदनीक टले ग्रहस्थनेतो चारित्र्यायो बंदे
 नही अने जे इम कहे जे अम्हे चारित्र्यानी अव
 स्थाकरी मांडाठा तो जोवोने ए प्रतिमा मांहे चारि
 त्र्याना स्युं लक्षणते चारित्र्यानेतो फूलपाणी
 आचरण इत्यादि एको न कल्पे अने प्रतिमातो फूल
 पाणी आचरण आदि घणा वाना सहित दीसेते मा
 हा होइ ते विचारी जो ज्या जेहने बंदना कीजे तेह
 ने विणउलखे किम वादीए मोक्ष मारगे तो आरा
 ध्य गुणते पिण मोक्षमारगे आकार आराध्य नथी
 जिम चारित्र्यायो गुणवंत होइ अने सहू श्रावकादिक
 ते चारित्र्या गुणवंतने वांदे कदाचित कर्मयोगे चा
 रित्र ज्ञथयो होवे सीतोदक सचितादिक सेवे सम
 कित अष्टहोवे मिथ्यात परूपे मिथ्यात मतीयोमे रहे
 मिथ्याती देवगुरुकी नक्तिकरे और लिंग तेहिजहोइ
 तो पिण तेहने कोई डाहो होइते वांदे नही एतलाज
 णी जे गुण सम्यक्त होणो थयो तउ जोवोने जेहमाही
 ज्ञान दरसन चारित्रनो एको गुण नही तेहने किम
 वांदे सिद्धांत मांहे मोक्ष मारगे बंदनीक गुणते विवे
 की होइते विचारी जो ज्यो ॥ तथा श्री बीतरागे सि
 द्धांतमांहे प्रतिमा कही आराध्य न कही अने जे को
 ई प्रतिमा आराध्य कहेते तेह कन्हें एहवा एहवा

बोल पूजीयेते ते बोल लिखीयेते ॥ २२ ॥ प्रतिमा
 स्याहनी कराववी कहीते, चंद्र कांतिनी सूर्यकांतिनी
 वेदुर्यनी पाषाणनी सप्तधातनी काष्ठनी लेपनी चीता
 रानी सिद्धांत सूत्रमाहिं केहवी कहीते ॥ २३ ॥ प्रति
 मानी ८४ आशातना कोणसे सूत्रमे कहीते ते देखा
 मो, तथा सूत्र सिद्धांत माहिं गुरु आचार्य उपाध्या
 यनी ३३ आशातना कहीते अने ८४ आशातनातुम
 कहो ते केही ॥ २४ ॥ प्रतिमानी प्रासादनी दंडवा ध्व
 जनी प्रतिष्ठा किम कहीते प्रतिष्ठा श्रावक करे कि सा
 धु करे आचलीया गठवाले कहे कि श्रावक करे वी
 जा गठमां कहेते महातमा करे सिद्धांत सूत्रमें किम
 कह्योते ॥ २५ ॥ दिगंबर पमणा इस कहे प्रतिमा न
 गन कीजे सेतावर कहे नगन न कीजे सिद्धांत सूत्र
 में किम कह्योते ते देखामो ॥ २६ ॥ तीर्थंकर जिवारे
 मोक्ष पर्वोता तिवारे अणसणकीधा पालठी वाली
 पर्यंक आसन ऊजा काठसगिग निसिज्जा आसण
 हिवे एह माहि प्रतिमाकेणें प्रकारे काजे सिद्धांत सूत्र
 माहि किम कह्योते ते देखामो ॥ २७ ॥ प्रतिमा त्रि
 ण कालमाहि केहवे काले पूजीये सूत्र सिद्धांत माहि
 किम कह्योते ॥ २८ ॥ प्रतिमा पूजता कैसा फूल च
 ढे कैसा न चढे अने वलि प्रतिमाने काजे शुचिकरी
 नें वस्त्र धोया पहिरीनें सोनाना नख करीनें आपणे
 हाथे फूल चूटीये कि माली पास मंगावीये अने दि

गंवरीआ इम कहे भचित फूलसैं प्रतिमा न पूनीये
 ए त्रिहुं प्रश्ना माहि सूत्र सिद्धांतमाहिं किम कह्योवे
 ॥ २९ ॥ प्रतिमाचउवीस २४ माहिं कोणसी प्रति
 मा मूल नायक कीजे कितनी बडी कितनी ठोटी मू
 ल नायकनी प्रतिमानें आचरण सुकडी जोग फूल
 घणा चढै अने बीजी प्रतिमानें थोडा चढै मूलनाय
 कनी प्रतिमा ठाकर थई बैठी बीजी प्रतिमा पाखती
 बैठी मूल नायकनी प्रतिमा ऊंचे आसणें बैसारी बी
 जी नीचे आसणे बैसारीये तीर्थकर सगला सरीखा
 तो ए बडो अंतर काई करे ॥ ३० ॥ तीर्थकरनो श
 रीर ऊंचो जघानि सातहाथ प्रमाण उतकृष्टो पांसै ध
 नुप परिमाण एह प्रमाणमाहिं प्रतिमा केहे प्रमाणें
 कराविये किम कह्योवे ॥ ३१ ॥ प्रतिमा अण प्रति
 ष्ठी पूजता स्युं होय अने प्रतिष्ठी पूजता स्युं होय प्र
 तिष्ठी प्रतिमा माहिं केहागुण आव्या ग्यानना दरसनना
 चारित्रना तपना पूजनीकतो गुण बोल्पावे प्रतिमा प्र
 तिष्ठयां पूठे केहागुण आव्या जेहवी अण प्रतिष्ठी ह
 ती तेहवी प्रतिष्ठी दीसेवे ॥ ३२ ॥ प्रतिमा आगें ठो
 इवे अर्थात् जे वस्तु चढाइयेवे धान फल वस्त्र सोना
 रूपा वलि वाकला पकवान तेह मालीनें आपीये के
 नापीये तेह द्रव्य स्युं कीजे व्याजे दीजे कि व्यवसा
 यकीजे किम करी बधारीये सूत्रमाहिं किम कह्योवे ॥
 ॥ ३३ ॥ अठोतरी सनाननी बिधी आरती मंगलेवु

पहिरावणीनी विधि जेहलूणसचित अगनि माहि हो
 मीयेते तेह सघली विधि केहा सिद्धांत सूत्र
 मां कहीते ते काढी देखाडो ॥ ३४ ॥ सिद्धांत माहिं
 श्रावकने ११ प्रडिमा आराधवी कहीते तिहां काई
 पूजा करवी कही नथी अने हिवे पहिले प्रतिमाई त्रि
 काल पूजा करावेते ते केहा सिद्धांतमाहि कहीते ॥
 ॥ ३५ ॥ श्रीमहावीरे सिद्धांत माहिं तीर्थ बोलीयाते
 चतुर विध संघ तीर्थ महात्मा महासती श्रावक आ
 विका अने वली परदर्सनना तीर्थ सिद्धांत माहिं क
 ह्याते मागध तीर्थ १ बरदाम तीर्थ २ प्रजासतीर्थ ३
 वीतरागे सिद्धांतमाहिं परदरसनना तीर्थ बोल्या अ
 ने शेत्रुंज्यो गिरनार आवू अष्टापद जीरावलो एह
 तीर्थ सिद्धांत माहिं किहाइ न बोल्या तो इम जाणि
 वो एहतीर्थ न होइ ॥ ३६ ॥ ठवणाचारी लाकडानो
 सूर्यकातिनो अखिनो इत्यादि एहनी प्रतिष्ठा करीने
 थापना चार्थ करी थापेते आचार्यना गुण ३६ अथ
 वा वली ज्ञान दर्सन चारित्रतप एके एहवो गुण ठव
 ण चारी माहिं दीसता नथी जिवारे न हुंतो प्रतिष्ठो
 तिवारे जेहवो हतो अने प्रतिष्ठो पिण तेहवो दीसे
 ते ठवण चारी माहिं पहिलो अने पढे गुण दीसता
 नथी थापनाचार्थ थापीने तेह आगळे खमासमण
 देईने वादेते अने वली तेहिज ठवण चारीने पूठिदे
 इने वैसे तो ते आसातना नथी हती तेहमे पूठिदेइ

किम बैसीये एइतो विपरीत उपराठो दीसेबे ॥ ३७ ॥
 श्री अरिष्टनेमीने वारे पांचपांखवहुवा इम कहेबे पाड
 वे शेत्रुंजे ऊपरि उध्धार कराव्यो प्रासाद प्रतिमा करा
 वी अने तेणें जिवारे श्री थावचा पुत्र अणगार सह
 श्र १००० परिवार संघते सुक अणगार १००० प
 रिवार सेलगराजरिखी अणगर ५०० संघाते अने
 ५ पांडव अने वली यादवना कुमर चारित्रलेईने शे
 त्रुंजे ऊपर अणसण कीधो पीण पहिले जिवारे च
 ढया तिवारे प्रतिमा न वदी चैत्य बंदन न कीधा
 नाव पूजा न कीधी प्रतिमा आगलि तो इम जाणि
 येउे तेणें वारे प्रतिमा प्रासाद न हुंता अने वली इ
 म कहेबे श्री आदिनाथ सेत्रुंजा ऊपरि पूर्व निन्याण
 वे ९९ वार चढया ते कोणसासूत्र माहिं कहराबे ते दे
 खाडो ॥ ३८ ॥ तथा केईएक इम कहेबे शेत्रुंजा ऊप
 रि घणासीधा तेहजणी तीर्थ कहिये अने घणासी
 धा जणी तीर्थ कहिये तो अढाईद्वीप ४५ लाख जो
 जन माहिं तेहठाम नथी जेहू वालाग्रठामथी अनंता
 सीधानथी (जत्यएगोसिद्धा तत्य अनंतसिद्धा) इ
 मतो अढाईद्वीप सगलो तीर्थ जाणवो सिद्धांत माहिं
 सेत्रुंजो तीर्थ किहा नथी कह्यो ॥ ३९ ॥ श्री जग
 वती माहिं श्री महावीरने श्री गौतमे पूबयोबे सनत
 कुमार इंद्र तीजा देव लोकनो (सणं कुमारेणं अंते
 देविदेवराया किंजवसिद्धीए अनवसिद्धीए समदिठी

मित्रदिदिठी परित्तसंसारिए अनंत संसारीए सुल
 नवोहीए दुल्लन बोहीए आराहए विराहए चरिमे अ
 चरिमे गोयमा सणं कुमार नवसिद्धी समदिठी परत
 संसारी सुलनवोही आराधक चरमे सेकेणठेणनं
 ते गोयमा सणत कुमार बहुणं समणाणं बहूणं सम
 णीणं बहूणं सावियाणं बहूण सावियाणं हिए कामए
 सुहकामए पत्थकामए आणुकंपिए णिस्सेयसिय हि
 य सुह अणुकंपिए णिस्से सकामए सतेणठेणंगोय
 मा समदिठी नवसिद्धी परित्तसंसारी सुलनवोही आ
 राधकचरिमे) श्री बीतरागे इम न कह्यो जे प्रतिमा
 पूजता समकितलहे अथवा केणे लाधो होइ ते देखा
 डो साधू चारीत्रीयाना रुप देखी घणे जीवे समकित
 लीधा अथवा पूर्व जवना सम्यक्त उदय आव्या प
 रित संसारकीधा अथवा बली जीवनी अनुकंपा थ
 की परित संसारकीधा तेह जघन्यतो अंतर मुहूर्त
 माहिं सीजे उतकृष्टो तो अर्द्ध पुद्गल माहिं सीजे
 हिवे प्रतिमा पूजतां केणे जीवे सम्यक्तलाधो अथवा
 परित संसारकीधो होई तेह सिद्धात माहि देखामो
 ॥ ४० ॥ श्री आचारांग मूल सूत्रमाहि साधू चारि
 त्रीयाने पांच महाव्रत कहावे एकेक महाव्रतनी पांच
 पांच जावना बोलीवे जिम आचारांगमाहिं बोलीवे
 तिम श्री प्रश्न व्याकरणमाहिं व्रत व्रतनी पांच जाव
 ना बोलीवे अने श्री आचारांगनी निर्युक्ती अने व्र

तिमाहिं इम कह्यो जे सम्यक्तनी जावना जावीए ते
 ह जावना लिखीयेते तीर्थकरनी जन्म जूमि चारित्र
 जूमि ज्ञान उपजवानीजूमि निर्वाण मोक्ष गयानी-जूमि
 मि तथा देवलोक तथा मेरु पर्वत तथा नंदीस्वर दी
 पादो तथा जवनपति सास्वती प्रतिमा तथा वली
 अष्टापद सेत्रुंजा गिरनार तथा अहिष्ठतायां श्री पा
 श्वनाथने धरणेंद्र महिमा एव रथा पर्वति वयरस्वामी
 नां पादिकां श्री वर्द्धमानने चमरेंद्रें निश्चा कीधी तेह
 ठाम तीर्थ कह्यो एतला सघला तीर्थानी जावना
 जावीये निर्युक्ति माहिं वृती माहिं कह्यो अने श्री आ
 चारांग माहिं नथी तो श्री आचारागनी निर्युक्ती व्र
 ती माहिं किहांथी आव्यो इम कहैते निर्युक्ति वृ
 तिइं सूत्रना अर्थ कहियाते आचारांग माहिं ए केहा
 आलावानो अर्थ जेह एतला ठाम वंदनीक कह्या अ
 ने श्री बीतराग गणधरें न कह्या जे जे प्रतिमा प्रा
 सादना ठाम ते मूल सूत्रमाहिं कहीं कह्या नथी वि
 वेकी होय ते बिचारी जो ज्यो ॥ ४१ ॥ हिवे अत्र
 कितनेक श्रावकानें परिग्रह परिमाण देइते तिहां एह
 वा नेम देइते प्रतिमा वांघ्या पूजा पाखें जीमूं तो नेम
 चंगे एकासणों करु अथवा वलि प्रतिमाने बरस १
 प्रति आंगलूणा ४ सुकडीसेर ४ सोपारीसेर ४ व
 दामादि सामग्रीसेर १० फूल नवोधान नवोफल मुह
 में घालुं जो प्रतिमा आगे चढायो होइ एहवा नेम

श्रावकने देइते अने श्री आणंद श्रावकने परिग्रह
 परिमाण माहिं प्रतिमाने विहरइ एहवा नेम नही ले
 ह स्युं कारण तो इस जाणियेते प्रतिमा बीतरागने
 मारगे नथी जो बीतरागने मारगे प्रतिमा होइतो आ
 णंद श्रावकने एहवा नेम जोईये ॥ ४२ ॥ हिवे श्री
 जगदतीमाहिं श्रावक कहियाते घणा तेह श्रावकना
 क्या क्या आचारनो करिवो कह्योते तेह आलावो लि
 खीयेते (तेणं कालेणं तेणं समएणं तुंगीया नामं न
 गरी होत्था वणउ तत्थए तुंगीयाए एगरीए वहवे स
 मणो वासया परिवसति अट्टादिता विविन्ना विपुल
 जवण सयणासण जाणवा हणाइन्ना वेहुधण बहुजा
 त रूवरयत्ता आउग पउग संपउता विठहित विपुल
 जतपाणा वहूदासी दासगो सहिस गवेयलप्प चूता
 यहू जणस्स अपरि चूता अजिगतजीवा जीवा उव
 लद्ध पुन्नपावा आसवसवर निज्जर किरियाहिं करण
 बंधमोख कुसला असहेज्ज देवा सुरणाग सुवन्न जक्ख
 रक्खस किनर किंपुरप गरुल गंधर्व महोरगादिएहिं
 देव गणेहिं निग्गंथा तो पावयणाउ अणत्तिकमणिज्जा
 णिग्गंथे पावएणे णिस्संकिया णिकंखिया णिविति
 गिठिया लध्ठा गहियठा पुठियठा अजिगतठा अ
 ठमिंज्ज पेम्माणरागता अयमाजसो निग्गंथे पावयणे
 अठे अयं परमठे सेसे अणठे ऊसिय फलिहा अवंगु
 त्त दुवारा वियत्तंते उरपुरघरप्पवेसो वहूहिं सीलवय

गुण वैरमण पञ्चखाण पोसहोव वासेहिं चाउदसस
 सुदिठपुन्न मासिणी सुपडिपुन्न पोसहं सम्म
 अणुपालेमाणो समणे निग्गंथे फामुएसणिक्केणं अ
 सणं पाणं खाइमं साइमेणं वत्थ पक्खिग्गह कंवल पा
 दं पुवणेणं पीठ फलग सिक्का संथारएणं उसइ जस
 क्केणय पडिलाने माणा अहापरिग्गहिंएहिं तवो क
 म्मेहिं अप्पाणं चावे माणा विहरति) हिवे एह आ
 लावा माहिं श्रावकनें समकित कह्यो व्रत कह्या पोस
 ह कह्या साधूनें आहारादि देता कह्या तो इहां श्राव
 कनें बीतरागे इम क्या न कह्यो जेह प्रासाद कराव्या
 अने प्रतिमाभंरावीअने पूजी तो इम जाणजो जे बीता
 रागने गणधरने बचनें प्रासाद प्रतिमा नथी जोहतातो
 एह श्रावकना आलावा माहिं कहतां ॥ ४३ ॥ श्री
 वकनें एहवीमनसा करवी तेह आलावो लिखियेथे ॥
 (तिहिंठाणेहिं समणो वासए महानिज्जरे महापक्कव
 साणे जवति तंजहा क्याण अहं अप्पंवा वहुंवा प
 रिग्गहं परिवयिस्सामि क्याणं अहंमुने जवित्ता अ
 गारात्त अणुगारियं पवयिस्सामि क्याणं अहं अप
 विम मारणांतिय संलेहणा जूसणा जूसित जत्तपाणपडि
 या इखित्ते पाजवगए कालं अणुक्खं माणे विहरिस्सा
 मि एवं समणसा सबयसा सकायसा जागरमाणे सम
 णो वासए महा नज्जरे महा पक्कवसाणे जवति) श्रावकनें
 बीतरागे एहवी मनसा श्री ठाणांगमाहिं करवी कही

पिण इम कही नथी कह्यो प्रासाद प्रतिमा सेत्रुंजो गि
 रनार जात्रा करवी एहवी मनसा कही सूत्र माहिं क
 रवी न कही ॥ ४४ ॥ श्री आचारांगना बीजा अ
 ध्ययननें बीजो उदेसो ते माहिं श्री बीतरागे इम क
 ह्यो जे लोक एतले एतले कारणें आरंज करे अनें
 साधू चारित्रीयो एतले कारणें आरंज करे नही करा
 वे नही कर्तां प्रते अनुमोदे नही ते अधिकार लि
 खीएणे (एत्य सत्य पुणो पुणो से आतबले सेनाय
 बले से सयणबले से भितबले से पेचबले से देवबले
 सेरायबले से चोरबले से अनिथिबले से किवनबले
 सेसमणबले इच्चेतेहिं विरुव रूवेहिं कळेहिं दंड समा
 याणं संपेहाए नयाकळाति पाव मोखोति मन्नमाणे
 अदुवाआ संसाए तंपरिजाय मेहा वीणेवसयं एएहिं
 कळेहिं दंड समार जेळा एव अन्नं एतेहिं कळेहिं
 दंड समार जावेळा एहि कळेहिं दंड समारजं तण
 अत्रेसमणु ऊणेळा ए समग्गे आयगिणहिं पंचंदिए
 जहित्य कुमलेणो वलिंपेळासितिवेमि) ए आलावा
 माहिं इम कह्यो जे लोक संसारनें हेतें हिंस्या करेवे
 अने मोक्षनें हेतें पिण हिंस्या करेवे अने साधू चा
 रीत्रीयो एणें कारणें हिंस्या करे नही करावे नही अ
 नुमोदे नही तो जोवोने आवडी हिंस्या लोकमोक्षनें का
 रण करेवे ते केहनी देखाडी करे साधू तो देखामे नही
 जाहो होइते विचारी जो ज्यो ॥ ४५ ॥ तथा श्रीआ

चारांगने अध्ययन ठठाने उद्देशे पांचमे साधने श्री
 वीतरागे इम कह्यो जे श्रोतारने एहवो उपदेशदेजे ते
 अधिकार लिखियेते (पादीणं पडीण दाहिएण उदीणं
 आइखे विजये किहे वेदवीसे उठिएसुवा अणुठिएसु
 वा सुसुसुमाणे मुपवेदएसंति विरतिं उवसम णिच्चा
 णं सोयवियं अऊवियं महवियं लाघवियं अणइवति
 यं सवेसिं पाणाणं मवैसिं चूयाणं सवेसि जीवाणं स
 वेसिसत्ताणं अणुवीई निक्खु धम्मं माईक्खेजा अण
 वीई निक्खु धम्ममाई खमाणे णोअत्ताणं आसादे
 जा णो पर आसादेजा नो अज्ञाणं पाणाइं चूयाइं
 जीवाइं सत्ताइं आसादेजा) ए आलावाने मेलैसा
 धू चारित्रियो जिहां जाइ तिहां दयामई उपदेशदेवे
 पण हिंस्यानो उपदेश न देइ ॥ तथा श्री सिद्धांतमां
 हिं ठाम ठाम श्री जीव दया गाढीसार प्रवाग कही
 छे ते अधिकार लिखिएछे (एवंतुसमणाएगे मिळ दि
 ठी अणारिया असंकियाइं संकति संकियाइ असंकि
 णो १ धम्म पन्नवणाजासा तंतुसंकति मूढगा आरं
 चाइणंसंकति अवियत्ता अकोविया २) श्री सुयग
 डागे प्रथम अध्ययने द्वितीये उद्देशे ॥ (एयं खना
 णीणोसारं ऊन्नहिंसइ किंचणं अहिंसा समयंचेव ए
 तावतं वियाणिया १) सुयगडागे प्रथम अध्ययने
 चतुर्थो देसकः ॥ (पाणाइं वातेवदंता सुसावाए असं
 जया अदिज्ञादाणे वदंता मेहुणेंय परिग्गहे १ एवमे

गै उपांमत्था पन्नवंति अणारिया इत्थी वसंगयावा
 लाः जिणसासण परम्मुहा १) श्री सूयगमागे तृती
 य अध्ययन चतुर्थो देसकः ॥ (एता णिसोच्चा णि
 रगाणिधीरे नहिमए किचणसवलोए एगंन दिठी अ
 परिग्गहेउ वुच्चपेच्चयलोयस्स वसंनगठे १) श्री सूय
 गडागे निरए विनती वीडु उद्देशो ॥ (दाणाणसंठं
 अन्नय प्ययाणं सञ्चे सुया अणवज्जंवरंति तचे सुया
 उत्तिम वंनचेरं लोगुत्तमे समणे नायपुत्ते १) श्री सू
 यगमागे षष्ठे अध्ययने ॥ पृथ्वीय आऊ अगणीयि
 वाऊ तणस्म रुखरुसवीयाय पाणा ज्जेअंडया ज्जेरऊ
 राउपाणा ससेययाज्जेरसयाज्जिहाणा १ एयाइं का
 याइं पंचेदियाहिं एतेमुजाणे पफिलेहसायं एतेण का
 येणय आयदमे एते सुयाविप्परिया मुचिति २ जा
 तिचखुद्विच विणासयंते वीयाइं अरुसऊय आयदडे
 अहा हुसे लोय अणऊधरुमे धीयाड्जेहिंसनि आय
 साते ३) तथा जेहवी अवस्थाइं वरतती वनरुपती
 वेदे तेहवा मरण पापे ते ऊपरि लिखीयेठे (गज्जा
 इ मिज्जति वुयावुपाणा एरापरे पंच सिहाकुपारा ऊ
 वाणगामच्चियमथेरगाय चरंतिते आऊखए पलीणा ४)
 श्री सूयगमागे सातमे अध्ययने ॥ (पृथ्वीवाउ अ
 गणिवो ऊतणरुखसवीयगा अंडया पोय ऊराऊर
 ससंसेतउ च्चिपया १ एतेहिं उहिं काएहिं जेविज्जंपरि
 जाणिया मणसाकायवक्केणं एारंजीण परिग्गही २

तत्स्थिमावत्तियाञ्जासा जंवदिताणुतप्पती जंबंनंतं न
 वत्तव एसा आणाणियंठिया ३) श्री सूयगडांगनांमे
 अध्ययने (पूढवीजीवा पुढोसत्ता आजजीवातहागणी
 वाजजीवा पुढोसत्ता तणरुखसवीयगा १ अद्वावरातसा
 पाणा एवंबक्काय त्राहिया इत्तावए वज्जवकाय नावरे वि
 ऊईकाए २ सवाहिं अणुज्जतीहिं भइमं पमिलेहिया सबे
 अकंत दुग्वाय अतो सबे अहिंसया ३ उदंअहेय तिरियं
 च केहेति तस्सथावरा सबव्यविरतिकुजा संतिनिवाणमां
 हियं४हणंतताणु जाणेजा आयगुत्ते जिइंदिए ठाणाइमं
 ति सद्धीणं गामे सुन्ननगरे सुवा ५तहा गिरं समारंज
 अत्थिपुन्नं तिनोवए अद्वानत्थिपुन्नंति एवमेयं मह
 नयं ६ दाणठयायकेपाणा हम्तंति तस्स थावरा ते
 सिंसारखणठाए तम्हा अत्थि तिनोवर ७ जेसित्तंउ
 व कप्पंति अन्नगण तहाविहं तेसिलानं तरायति
 तम्हाणत्थित्तिनोवदे ८ जेयदाणं पमंसंति वहंमिठं
 तिपाणिणं जेयणं पडिसेहंति वित्तेवेयं करंतिते ९ दु
 हज वित्ते ॥ न.मति अत्थीति नत्थिवा पुणो आयंरय
 स्म हेच्चाणं निवाणं पाउणंतिते १०) इति श्रीसूय
 गडांग ११ अध्ययन मध्य तथा जे साधू चारित्री
 यो धर्मने स्थानके तथा सम्यक्त्तने कारणे जिहां आ
 रंज होइ पिण आदेस न देइ लान देलामे पिण क
 रावे नही और जिहां मिथ्याती असंजतीके दान
 आदिक कथनहै तिहां मोन धारणी ॥ पुणय पाप जे

ला जाणकर ॥ [तेणवकुवंतिणकारवति चूताहिं स
काए दुगंठमाणा सयाऊताविप्पणमांतिधीरा विन्नति
धीरायहवंतिएगे १ रुहरेय पाणे बूढेयपाणे ते आय
उपासति सबलोए उवेहती लोग मिणं महतं बुद्धप्य
मत्ते सुपरिवएजा २] श्रीसूयगडांग अध्येयन वारमे
[उहंअहेयंतिरिय दिसासु तसाय जे थावर जेयपा
णा सदाऊएते सुपरि वएजा मणप्पनसं अविकपमा
णे श्री (सूयगमांग अध्येयन १४ में [चूएहिं न
विरुच्चेजा एस धम्मे वुसीमठ साहू जग परिन्नाय
अस्सिजीवित जावणा १] श्रीसूयगमांग अध्येय
न पनरमें ॥ ४६ ॥ तथा आरंज परिग्रह निरता न
जाणे एतावता पाडूआ न जाणे तिहां लगे धर्म न
लहे ते लिखीयेठे ॥ [दोठाणइं अपरियाणित्ता
आयाणो केवली पन्नतं धम्मं लजेजा सवणयाए तं
जहा आरंजेचेव परिग्गहेचेव दो ठाणाइं अपरिया
दित्तिता आयाणो केवल बोधिं बुच्चेजा] श्री ठाणांग
बीजे ठाणे ॥ ४७ ॥ तथा जीवसाता वेदनी असाता
वेदनी बाधे ते ऊर लिखीयेठे (अत्थिणंजते जी
याणं साता वेदणिजा कम्मा कऊति हंताअत्थि कह
णंजते जीवाणंसाता वेदणिजा कम्मा कऊति गोथ
मा पाणाणुं पयाए चूताणुं पयाए जीवाणुं पयाए स
त्ताणुं पयाए वहुणं पाणाणं जावसत्ताणं अदुखणयाए
असोयणत्ताए अकुरणत्ताए अपिप्पणत्ताए अपिदणत्ता

ए अपरि तावणताए एवखलु गोयमा जीवाणंसा
 वेदणिजाणं कम्मा कर्जंति एवणेरनियाणवि एवं ज
 वेमाणियाणं अधिणचंते जीवाणं असाता वेदणि
 कम्मा कर्जंति गोयमा परदुखणत्ताए परसोयणत्ता
 परऊरणत्ताए परतिप्पणत्ताए परपिहणत्ताए परप
 तावणनाए बहूणं पाणाणं जावसत्ताए दुखणताए
 यणत्ताए ऊव परितावणत्ताए एवं खलु गोयमा
 वाणं असाता वेदणिजा कम्मा कर्जंति एवणेरइ
 णवि एवं जाव वेमाणियाणं) श्री जगवती शतक
 तमे ॥ ४८ ॥ तथा गीतनाद तथा नोग नोगा
 जीव वेदै पिण अजीव न वेदे अर्थात् अजीव
 नोगवे ते ऊपरि लिखियेवे (रूवीचंतेकामा अरु
 कामा गोयमा रूवीकामाणो अरूवीकामा सच्चिता
 ते कामा अचित्ताकामा गोयमा सचित्ता विकामा
 चित्ता विकामा जीवाचंते कामा अजीवा कामा गो
 मा जीवाविकामा अजीवाविकामा जीवाणं चंतेकामा
 अजीवाणंकामा गोयमा जीवाणंकामा णोअजीवा
 कामा कतिविहाणं चंते कामा पन्नता गोयमा दुवि
 कामा पन्नता तंजहा सहायरूवाय रूविचंते नोगा
 रूविचंते नोगा गोयमा रूविचंते नोगानो अरुविचंते नोगा स
 ता चंते नोगा अचित्ता नोगा गोयमा सचित्ता
 विचंते नोगा अचित्ताविचंते नोगा पुण
 यमा जीवाविचंते नोगा अजीवाविचंते नोगा जीवाणं च

जोगा अजीवाणं जोगा गोयमा जीवाणं जोगाणो अ
 जीवाणजोगा कति विहाणं जते जोगा पन्नता गोय
 मा तिविहाजोगा पन्नता गोयमा तंजहा गंधारस्सा
 फासा कतिविहाण जते कामजोगा पन्नता गोयमा पं
 चविहा कामजोगा पन्नता तंजहा सदा रूवागंधा र
 स्सा फासा) श्री जगवती सातमोसतकनो ७ मो उ
 देसो ॥ ४९ ॥ तथा केवली जेहवी जाण्या बोलें तेह
 लिखीयेठे [रावगिहजाव एवंदासी अन्न उत्थिया
 णं जते एवं आई खंति जावपरूवेति एवंखलु केव
 ली जखाएसेणं आतिह्वाति एवं-खलु केवली ज
 खायसेणं आतिठे समाणे आहच्च दो जासा ज्ञास
 ति तंमोसंवा सच्चामोसवा सेकहमेयं जते-एवं गोय
 मा कन्नते अन्न उत्थिया जाव जेते एवमाहसु मिहं
 ते एवमाहंमु अहं पुण गोयमा एवमा तिखामि ४
 नोखलु केवली जखाएसेणं अदिस्संति नोखलु केव
 ली जखाएसेणं आतिठे समाणे आहच्च दो जामाजं
 जासंति तंमोसंवा सचा मोसंवा केवलीणं असावजजं
 अपरोव घाईयाजं आहच्च-दो जासाजं जासंति तंस
 चंवा असवा मोसंवा) श्री जगवती अठारमा सतंक
 नो सातमो उदेसो ॥ ५० ॥ तथा श्री बीतरागे जे
 तीर्थ कह्यो तथा जे आलंवन कह्या तथा जे जात्रा
 कह्यो ते लिखीयेठे (तित्थं जते तित्थ तित्थकरे तित्थं
 गोयमा अरहाताव नित्थमा तित्थं करे तित्थं पुण चा

उत्रणाइ संघो तंसमणाउ समणीउ सावगाउ सावि
 याउ) श्री जगवती वीसमासतगनों ८ मो उदेसो
 ठे ॥ [धम्मस्सएण्जाणस्स चत्तारि आलंबणा पन्नता
 तंजहा वायणा पडिपुठणा परियट्ठणा धम्मं क्हा]
 श्री जगवतीसतक २५ में उदेसे ७ मे ॥ श्री महावी
 रे सोमिल ब्राम्हणनें जे यात्रा कही ते लिखीयेठे
 [किंतेजंतेजता सोमिलाजंमे तव नियम संजम स
 ञ्पायञ्पाणा व सग्गमादीए सुजोए सुजयणा सेतं
 जता) श्री जगवती शतक १८ में उदेसे १० मेंठे ॥
 श्री थावचा पुत्रे अणागारे जे यात्रा कही ते लिखीये
 ठे (तएणं सैसुए थावचा पुतं एवं वयासी किंजंते
 जता सुयाजन्न ममनाण दंसण चारित्त तवसंजम मा
 ईएहिं जोएहिं जयणासेतं जता) श्री ज्ञाता अर्धय
 न पांचमेंठे ॥ ५१ ॥ तथा फूल मांहिं जीव श्री बी
 तरागे कह्या ते लिखीयेठे (पुष्पाजलया थलयाय
 वेंट वद्धायंणालवद्धाय संखेजमसंखेजा बोधवाणंत
 जीवाय १ जे केइनालियावद्धा पुष्पा संखेज जीवि
 या ञ्णियानिहया अनंतजीवा जेयावन्नेतहा विहा
 २ पुष्पफलं कालिंगं तुवंतंत सेलवा लुवालुकं घोसाल
 यं पंडोलंतिं रूयंचवते रूसं ३ विटमंसंकडाहं एयाइं
 हवंति एगजीवस्स पतेयं पताइं सकेरमे केसरंमिजा
 ॥ ४ ॥ ५२ ॥ तथा केतलाइक इम कहेठे जे सूचि
 कीधा विना धर्म कर्तव्य न होय अर्थात्स्नान करया

विना धर्म कार्य न होय ते ऊपरें लिखियेठे (तएण
 थावचा पुते सुदंसणं एवं वयाति तु जेणं सुदंसणा
 किं मूलधम्ममे पन्नते अम्हाणं देवाणुप्पिया सोयमू
 ल धम्ममे पणते जावसग्गं गच्छति तएणं थावचा पुते
 सुदंसणे एवं वयासी सुदंसणा सेजहा नामए के पुरि
 से एगंसहं रुहिरकयं वत्थं रुहिरेणचेव धोएज्जा तएणं
 सुदंसणा तस्स रुहिर कयस्स रुहिरेण पखालिजमाण
 स्स अत्थिकायसोहीणो तिण्ठे समठे एवामेव सुदंस
 णा तुच्चपि पाणा तिवाएणंजाव मित्तादंसण सल्लेणं
 नत्थिसोही जहातस्स रुहिर कयस्स रुहिरेणचेव प
 खालिज माणस्स एत्थि सोही) श्री ज्ञाता पांचमे अ
 ध्ययने कहे ॥ [तएणं मल्ली विचोखं परिवाइयं ए
 वंचतुच्चेणं चोखे किं मूल धम्ममे तएणं साचोखा परि
 वाइया मल्लिवि एव वयासी अम्हेणं देवाणुप्पिए सो
 यमूलए धम्मजेज्ज अम्हं किंचि असुइच्चवाते तंनं उ
 दए दणमद्वियाए जाव अविग्घेणं सग्घं गत्तामो तए
 णं मल्लीविचोखं परिवाइयं एवं वयासी चोखं सेजहा
 नामए केइ पुरिसे रुहिरकयं वत्थं रुहिरेणं चेवधो वेज्जा
 अत्थिणं चोरकीतस्सरुहिर कवयस्स वत्थस्स धोवमाण
 स्स कायसोही णोइण्ठे समठे एवामेव चोखीतुच्चे
 णं पाणाइ वाइएणं जावमित्ता दंसणसल्लेणं एत्थिका
 इ सोही] श्री ज्ञाता अध्ययन आठमें ॥ ५३ ॥ त
 था श्री सिद्धांतमाहिं घण्ठामे यद्धना देहरा कहेठे

पिण तीर्थंकर २४ माहिं किसी तीर्थंकरके नामसे
 सूत्रामें देहरा कहा नही जो धर्म कारणे देहरा हो
 तातो तीर्थंकरोंके नामके सबपूत्रामें होणे चाहियेथे
 परंत इहांतो विशेष करिके यद्दोके देहरे संसारकी
 मर्याद अर्थात् रीतीमें वर्णन करेहे तिन माहिला
 कितनेक के नामसे वर्णन लिखीयेते [तीसेणंचपाए
 नयरीए वहिया उत्तर पुरस्थिमे दिसिजाए पुणजेहे
 नामं चेईये हुत्था चिरातीए पुव पुरिस पणते पोरा
 णेसदिए वित्तिएणाए सत्थते सेरुए सघंटेसे पमागा
 इ पमाग मंमिती सलो महत्थो कय वेयट्टीए लाउल्लो
 इय महिते गोसीस सरसरत्त चंदण दंदरादिण पंचगु
 ली तले उवचिय चंदण कलसे चंदणघड सुकयतोर
 णे पडिदुवारे देसजागे आसतो सत्त विउल वट्ठव
 ग्घारीत मल्लदाम कलावे पंचविद सरस सुरिणिमुक्
 पुष्क पुंजो वधारकलिते कालागुरु पवर कुंदरुक धू
 व मघमघंतगं धुधुता निरामे सुगंधवरगंधगंधिए
 गंधवादि चूतेणडणद कङ्कळ मल्लमुठिय वेळंबक पव
 ग कह कलासक आइखक लंखमख तूण इल्लतुं व वी
 णिय चूयग जागरु परिगते बहुजण जाण वयस्सय
 कितीए बहुजणस्स आहस्स आहुणिजे पाहुणिजे
 अ्रवणिजे वंदणिजे पूयणिजे सङ्करणिजे सम्माणणिजे
 कल्लाणं मंगलं देवयं चेईयं विणएणं पजवासाणिजे
 दिवे सवे सवोवाए ससिहिय पाडिहेरे जागसहस्स

नाग पडिठिए वहुजणोअच्चेइ) श्रीउवाई उपांगे इ
 म कल्या १ (रायगिहेणामं एगरे होत्था वरुणउ
 तस्सणं रायगिहस्स एगरस्स वहिया उत्तर पुरत्थिमे
 दिसिजाए गुणसिलए चेईये होत्था) श्री नगव
 तीमध्येठे २ (तस्सणं उज्जाणस्स बहुमज्ज देसजा
 ए सुरप्पिये नाम जखायायणे होत्था दिव्व वन्नउ
 तत्थणं वारवतीए नयरीए) श्रीज्ञाता ५ अध्येय
 ने ॥ ३ ॥ (तेणंकालेणं २ मिद्यागामं नामे नयरे
 होत्था वन्नउ तस्समियागामस्स नगरस्स वहिया
 उत्तर पुरत्थिमे दिसी जाए चंदपादवे नामं उजाणे
 होत्था सव्वीय वन्नउ तत्थणं सुहमस्स जखस्स ज
 खायतणे होत्था चिएतीए जहा पुणनदे) श्री
 विपाक प्रथम अध्येयने ४ (तेणंकालेणं २ वाणिय
 गामे नगरे होत्था रिद्धि तस्सणं वाणियगामे उत्त
 र पुरत्थिमे दिसी जाए दुतिपलासेणाम उजाणे हो
 त्या तस्सणं दुतिपलासे सुहमस्स जखस्स जखा
 यतणे होत्था) श्रीविपाक दुतियोअध्येयने ५ (ते
 णंकालेणं २ पुरिमनाले नामं नयरे होत्था जाव
 पडिठिमे दिसी यत्थणं अम्मोहं दंसीउजाणे तत्थणं अ
 मोहदंसीस्स जखस्स जख आयतणे होत्था)
 श्रीविपाके तृतीयाध्येयने ६ (तेणंकालेणं २ साहंज
 णी नामं नयरी होत्था रिद्धिधम्मिता तीसेणं साहं
 णी वहिता उत्तर पुरत्थिमे देवरमणे णामं उजाणे

होत्था तत्थणं अमोहस्स जखस्स जखायतणे हो
 त्या) श्रीविपाक चतुर्थ अध्ययने ७ (तेणंकालेणं २
 कोसंबी नामं नयरी होत्था रिद्धि वाहिं विंदोतरणे
 उक्काणे सतज्जे जखे तत्थाणं कोसंबीए णयरीए)
 श्रीविपाक पंचम अध्ययने ८ (तेणंकालेणं २ स
 हुरा णगरी जंभीरे उक्काणे सुदरिसणे जखे) श्रीवि
 पाक षष्ठोध्ययने ॥ ९ ॥ [तेणंकालेणं २ पाम्लीसम
 नगरे वणसंड उक्काणं उवर जखे) श्रीविपाक स
 त्तमध्ययने १० (तेणंकालेणं २ सोरियपुरे णयरे सो
 रियवडेसगं उक्काणं सोरियजखो) श्रीविपाक अष्ट
 मध्ययने ११ (तेणंकालेणं २ रोहिण्णामं णयरे हो
 त्या रिद्धी पुढवी वंडीसए उक्काणे धरणोजखो)
 श्रीविपाक नवमें अध्ययने १२ (तेणंकालेणं २ वद्ध
 माणपुरे णगरे होत्था विजयवद्धनाणे उक्काणे मणि
 नदोजखो) श्रीविपाक दसमध्ययने १३ [तत्थणं
 हत्थीसीसगरुम वहिया उत्तर पुरत्थिमे दिसी चाए
 पुष्फकरंडए णाम उक्काणे होत्था सबोउय तत्थणं
 कतवणमाल पियस्स जखस्स जखायतणे होत्था)
 श्रीविपाकमें १४ (तेणंकालेणं २ उसनणयरे थुल
 करंडग उक्काणं धरणो जखो) श्रीविपाकमध्ये १५
 (सोगंधीया नगरी नीलासोग उक्काणं सुत्तोसलोज
 खो) श्रीविपाकमध्ये १६ (कणगपुरं णयरं सेताउ
 य उक्काणं वीरनदोजखो) श्रीविपाकमध्ये १७

(मुघोपं नंगरं देवरमणं उद्याणं बीरसेणो जखो)
 श्रीविपाकमध्ये १८. (तेणंकालेणं २ सामं एगंशं
 होत्था उत्तरेकुरे उद्याने पासमिद्ध जखो) श्रीविपा
 कमध्ये १९ और ज्ञाता सुत्रमें शेलग यद्ध कह्या
 २० अंतगढ सुत्रमें मोगरपाणि जद्ध कह्या २१
 उत्राध्ययनमें तिंदुक नामें जद्ध कह्या २२ इत्यादि
 ॥ ५४ ॥ तथा केतलाइक इम कहंते जे अम्हारे
 वृत्ती टीका चूर्ण निर्युक्ति जाण्य सहु प्रमाण ते मा
 हो होइते विचारी जो ज्यो जे श्रीसिद्धांत पाठसैं मि
 लतीहुई टीका तथा और प्रकरण ग्रंथादि ते सहु
 प्रमाणते अने जे सिद्धांतसैं विरुद्ध होय ते किम प्र
 माणथाइ वृत्ती टीका माहिं एहवा एहवा अधिका
 रते ते लिखीयेते जो साधु पंचक मांही कालकरे तो
 डाजना पुतला करवा कह्याते ते लिखीएते [दुस्ति
 यदविद्विखिते दजमया पुतलाय कायवा समरिकतं
 मिअइक्को अवद्वअजिईन वायवो) १ अवश्यक निर्यु
 क्ति पारिठाविणीया सुमति माहि तथा बहतकल्प
 नी वृत्तीमध्ये पणिपुतला करवा कह्याते तथा देहरा
 मांहिथी कोलीयावडानाघर तथा जमरी जमरानाघर
 साधु चारित्रीयो अपणें हाथें परहा करै नकरै तो
 तेह साधुनें प्रायश्चित प्रावै बहतकल्पवृत्तिमध्ये ॥
 साधुनें पासडा पहिरवा कारणें तथा कारणें पान
 खावा तथा कारणें फल केला आदि वृद्धथी खूटा खावा

बोल्यो इत्यादि बोल आदिदेह गाढा घणा बोल
 वृत्तिचूर्ण माहिं सूत्रासैं विरुद्ध दीसेबें तो वृत्ति चू
 णि किम मानिये सूत्रासैं बहोत फरकहै सो कितने
 बोल लिखेहै और कितने बोल ग्रंथ बहु विस्तार
 होने कर नही लिखेहै सो इतने बोलोंसैं चतुर हो
 य ते विचारी जो जो इति ॥ ५५ ॥ मा प्रश्नः ॥
 हिवे जे जीव अनंता मोक्ष पहुता अने बरतमान
 कालें जे मोक्ष पहुचैवें अने अनागति कालें अ
 नंता मोक्ष पहुचसी ते श्रीबीतरागें एणें परें मोक्ष
 कही ते लिखीएवें (अतर्विसु पुराविनिखवो आए
 रसाविनवांतिमुवता एयाइं गुणाइं आहुते कासव
 रसअणुवम्म चारिणो १ तिविहेण विपाण माहणे
 आयहिंए अनियाण संवुमे एवंसिद्धाअणंतसो संप
 यजे अणागथावरे २ एवंसे उदाहु अणुतरनाणी ॥
 अणुतरदंसी अणुतरनाण ॥ दंसणधरे अरहानायपुत्ते ॥
 जगवं वेसालिएवियाहिंए तिवेमि ३) श्रीसुयगडांगे
 बियाध्ययने तृतीयोद्वेसक ॥ इहा श्रीजीवदयाइं करी
 मोक्षः ॥ ५६ ॥ श्रीबीतराग देव तथा श्रीगणधर
 तथा साधु चारित्रीया संसार माहिं एह उतमवें तो
 बंदनीक पूजनीकवें अने एहज तार्थकरादिक जिवा
 रें ग्रहवास मध्येहोइ अने पट कायने आरंजे बरतें
 तिवारे श्रीसाधुने बंदनीक नही तो जीवोंने जे अ
 जीव अचेतन चित्राम प्रतिमा माहिं कांई ज्ञान दर

सन चारित्र्यनो गुणनथी अने खटकायनो आरंभ
 तिहां वरतेवे ते किम बंदनीक होय ते विचारी जो
 व्यो ॥ ५७ ॥ तथा तीर्थंकर गणधर साधू एहनी
 नक्ति आरंभे नथाय तो प्रतिमानी नक्ति आरंभमे
 किम थाई ५८ तथा गुण बंदनीके आकार बंद
 नीक अने जो गुण बंदनीकतो प्रतिमा मांहीं केहवो
 गुणवे अने जो आकार बंदनीक तो आ वडा पुरुष
 आकार वंतवे ते बंदनीक किम नही ॥ ५९ ॥ प्रति
 मा मांहीं केही अवस्थावे जो गृहीनी तो साधुने बंद
 नीक नही अने जतीनों तो चिहन तो वे नही अने
 जती अर्थात् साधू वृत्ती जाणो तो फूल पाणी दीवा
 प्रमुख आरंभ किम करीवो ॥ ६० ॥ तथा देव मोठा
 कि गुरु मोठा जो जाणो जे देव मोठा तो देवने फू
 ल जडे तो गुरुने स्यून पहिरावो फूलमाला अने जो
 जाणो गुरुमाहाव्रतीवे तो देव क्या अविरतीवे तेवि
 चारी जो जो ६१ तथा श्रावक साधुने वांढवा आ
 व्यो होइ अने फूल फल कने होइतो अलगा रहे
 जो संघट थाइ तो देवने संघट स्यो न थाय ते वि
 चारीये ६२ तथा केतलाइक श्रावक पास प्रतिमा
 पूजावेवे पूजनार धर्म जाणीने पूजेवे तो जती स्यून
 पूजे धर्म तो जतीनेवी करवो तो केतला इक कह
 सी जे जती विरतीवे पिण जोवोने जतीने अर्थात्
 साधुने पाप करवानोनेमवे पिण धर्म करवानो नेम

नथी ते कहो ६३ तथा प्रतिमाना वंदन वाला
 प्रतिमानें बंदे तिवारे बंदना केहनें करेवे जो इमकहे जेहुं
 प्रतिमानें बांदुं तौ वीतराग अलगा रह्या बंदणा नही
 अने इम कहे जे ए वंदना वीतरागनें तउ प्रतिमा अ
 लगीरहे अनें जो इम कहे जे एहज वीतराग जूदा
 जूदा नही तो (अजीवे जीव सज्ञा] थाय अ
 र्थात् अजीव काष्ठ चित्रामयें की प्रतिमाको जीव क
 ह्या ते मिथ्यात संज्ञा कही अनें जीव एकसमें वे
 क्रिया नवेदे ६४ तथा केतलाइकना देवगुरु अनें
 धर्म सारंजी सपरिग्रहीवे अनें केतलाइकना देवगु
 रू धर्म निरारंजी न परिग्रहीवे ते विचारी जो जो
 ६५ तथा केतला एक कहेवे जोउनें जो पुतली दीठे
 जो राग ऊपजे तो प्रतिमा दीठे वैराग स्योंन ऊप
 जे तेहना उत्तर कोईएक अनार्य पुरुपनें प्रहार मुके
 तो पाप लागे तो तेहनें बादे तो धर्म स्यों न लागे
 तथा बेटा बोसराव्या न होय तो तेहनो कीधो पाप
 वापनें लागे पिण बेटानो किधो धर्म स्यों न लागे तथा
 केतला इक इम कहेवे जे बाणानो गोहीस कीधो होई
 अनें जाजे तो पाप तो तथा तेहनें बादे तथा दुध
 धरी पूजे तो धरम किम नही ६६ तथा केतला ए
 व इम कहेवे जे अम्हारे प्रतिमानी पूजा करें ते हिं
 स्या अहिंस्यावे तउ रेवतीनों पाक श्रीमहावीरे स्युन
 लीधो जो हिंस्या अहिंस्या समानथी फूल पाणीनी

हिंस्या प्रत्यक्षे ६७ तथा कोईएक गुलीना बिणज
 नो नेम नव चांगे लेई अने गुलीना बिणजनो ला
 न बीजाने देखाडे इम तेहना नेम चाजे तो जोवोने
 जेणे पंच महावृत ऊचरया होय ते सावळ करणी
 माहि लाज देखाडे तो तेहना विरत किम सुख रहे विचा
 री जो जो ६८ तथा श्रीअरिहतनी स्थापना मांहिं अ
 रिहंतनागुण नथी अने गुरुनी स्थापना माहि गुरुना
 गुण नथी अने केतला इरु इम कहेठे जे गुण तो
 स्थापना मांहिं नथी जो पण आपणो जाव जेलेतो
 बंदनीक पूजानीक थाय तो हिवे जोवोने गुणविना दे
 वनी गुरुनी स्थापना मांहिं आपणो जाव घाली गरज
 सरेतो वापनी मानी तथा रुपानी सोना रतन गुल
 खांड साकर परमुख आपणो जाव घाले गरज नसरे
 आगलिबरतु मांहिं पिता दिकनो गुण नथी अणे आ
 पणो जाव जेलेथे गरज काई नसरे डाहो होइते विचा
 री जो जो तो देव गुरुनी गरज किम सरे धर्म ठिकाणे
 गुणविना गरज नसरे मोक्षमारगमे तो ज्ञान दर्शन
 चारित्र तप प्रधानवे ॥ ६८ ॥ प्रश्न धर्म आ
 ग्यामेहे अथवा आज्ञा बाहिरवीहे उत्तर धर्म आज्ञा
 मे सबही कहतेहे परंतु इसका यह प्रमार्थहे आज्ञा
 नाम उपदेसकाहे जगवंतकी आज्ञा उपदेस आराधि
 तिणाको आराधक कह्यो जवलग साधुकुं संपराय क
 षाय संबधी क्रिया लगेहे तवलग ओ साधु उल्सूत्र

चालेगे पिण्यथा सूत्र नहीं चालेउे यथा सूत्र तो य
 था ख्यात संजमी १२ में १३ में गुण ठाणे वाला
 चाले तिणाने इरियावही क्रिया लागे पिण उत्सूत्र
 चलने वाला आज्ञा विराधक नहीं किसकरके केवली
 ये उपदेसमें एही ज्ञाप्यो सराग संजमी ते उत्सूत्र
 चाले उपसांतिराग खीणराग होवे तिकेयथा सूत्र
 चाले एउपदेसहै अवार वादीहै ते निन्हव वादी वा
 तेरापंथी जिनको नीष्म पंथीनी कहतेहै तेकहेगे (सा
 धूतो यथा सूत्रही चाले) थे इणा केवलीनो उपदेस
 उथाप्यो तथा श्रावक पोसह पक्किमणो पडिमाको
 वहिवो इत्यादिक काम करे तिणमें पूजण पफिलेहण
 राथडलो मातरो परिठणरी आज्ञा मागे तो साधू दे
 वे नहीं तथा पडिमा धारी श्रावक आहार पानी
 ल्यावणरी आज्ञा मागेतो साधूनी आज्ञा देवे नहीं
 मांनराखे उन्हाने पूढणो एहवातनो पाठ किसो सूत्र
 में कह्योवे थेतो मुहलें कह्योगे हमे सूत्र मुजव कहा
 वं सो जिण सूत्रमे एहवात कहीहै सो सूत्रपाठ बता
 वो तुम कहस्यो गृहस्तनी वियावच्च साधूनें नहीं क
 रणी तो १० प्रकाररी वैयावच्च सूत्रमे कहीगे तिण
 रो प्रमार्थकांईहै संघनाम किणरोगे जगवती सूत्रमा
 पाठगे (चउविहेसमणसंघे) इम संघ ४ विधि व
 ताथो इणारेमतवाला संघशब्दनो अर्थ आपणी इडा
 सें यह करेहै संघनाम घणा आचार्याकाचेला इसो

कहेते इणवातरे अर्थमें पिण ऊठा जाणीयेते इणमें
 तो साध साधवी दोय आया (चउविहे समणसंघे)
 एहबचन इणां उथाप्यो जगवंतरो तो साधूनें हिथे
 उपदेसते साधू जयणासें चाले जयणासे ऊजारहे प
 रंतु एहवो केवलीको आदेस नही जयणासे चालो
 जयणासे उजारहो एह आदेस नही एह आदेस नही
 देवेसो आज्ञा नाम केवलीके उपदेसकोहै ७० प्रश्न ध
 र्म व्रतिमें कि अविरतमे वा दोनोमें उत्तर धर्मतो कर्मकी
 निर्जरा तथा दीर्घ कालरी थिती कर्मांरी थोडा काल
 की करणी तीव्ररजकर्म प्रकृति मंदरस करणी बहुल
 प्रदेसरी थोडा प्रदेसरी करणी एतो धर्म ॥ कर्मरो अ
 शुनदलीयो सो पाप कर्म सुनदलीयो सो पुन्य ए ती
 नोही जीवरे परिणाम लेस्या अध्यवसायसें होवे ति
 ण ऊपर दृष्टांत विपाक सूत्रमध्ये सुमुखगाथापती
 विरत विगर जो मनुपरे देसविरत पिण होयतो
 मनुपरो आउखो किम बंधे साधूनें दानदीधो संसार
 परतकीधो मनुपरो आउखो बाध्यो तो विचारो इण
 सुमुखरे किसीविरतीथी पिण परिणामें संसार परत
 कीधो ते धर्म सुनमनुपरो आउखोते पुन्य अविरत
 है तिणसे पाप बंध पिणकीणही कारजमें एपरी रो
 टी होवे पुन्य बंध पलेथनरुपहोवे अनें किणही कार
 जमें पुन्य रोटी पाप पलेथणरुप होवे एकलो पापजी
 वरे नही बंधे एकलो पुन्यपिणजीवरे नही बंधे रोटी

रुवं) इण पाठरो अर्थ नही करे सो इणानें सूत्र उ
 थाप्यो नय थोमो दासेवे ७३ प्रश्न तथा सूयगडां
 गें अध्यन ३ उदेसे ४ गाथा ५ तथा ६ मे इसो क
 ह्योवे कोईजीवकहेवे सातादियां सातापामें तिणनें न
 गवान आर्य मार्गसें अलगा कह्या जिन धर्मनो हील
 एहार कह्यो इसतरे जीपम पंथी कहेवेउत्तर सो उणजी
 पम पंथीयांनें पूठनों एह गाथानों अर्थ तुम्हारे पंथ
 बालानें पुठजो कि तुम अपने मनोक्त अर्थ करोगे
 पिण तुमारे ताई सूत्र विपरीति कहवानो नय नही
 मत पद्धी बणनहार होई उदेसे ४ पाठली गाथामें
 अन्यमती वखाणयोवे तिणारेहिज वरणव ५, ६, ७ मी
 गाथामेवे उणा अन्यमतीरीकही नगवतें कहीवे उर
 वे शाक्यादिक कहेवे (सायंमाण विऊरसु) अप
 णे जीवनें सातादीया सातापामें एहजीव सुखनो अ
 रथीवे तिणवारुते इणजीवनें सुखहीजदेणो औमो उ
 णारो मत नगवंत वखाणयोवे सातमी गाथारे बेहले
 पदमे कह्यो (अयहारीबजूरह) लोहवाणीयांनीपरें
 वेजूरसी लोहस मानडणा आपणा जीवनें सुख वि
 चारयो परं परजीवनी पीमा नहीविचारो इणागाथा
 में यह प्रमार्थहै सो जाणज्यो नगवंतें सर्व जीवनी
 रिद्धा वरणवीवे ७४ प्रश्न आश्रव पांचवे तिणमें
 मिथ्यात १ अविरत २ परमाद ३ कपाय ४ योग
 ५ जिनमे एहच्यार आश्रव पुन्य करतावे कि पाप

करतावे किसका करतावे ॥ उत्तर ॥ तिणरो परमार्थ येह
 है मिथ्यांत १ अविरत २ कपाय ३ परमाद ४ इणा
 गी तो एकही वजेहै परंतु योगना २ जेदवे शुच
 योग अने अशुच योग तिणमे अशुच योग परवर
 ते तिवारे पापकर्म बंधे अने शुच योग परवरते
 तिवारे पुन्य प्रकृतिनो बंध होवे च्यारुंही आश्रवा
 मांहिं जोगनो प्रधान पणोठे प्रमादीसाधुने शुचजो
 ग आसरीयने जगवती मांहिं कह्योठे (सुहंजोगं प
 दुच्चनो आचारंजा नोपगरंजा नोतदुचचारंजा) अ
 णारंजा शुचयोगनो एहवो प्रधान पणोठे तथा आ
 श्रवहे सो शुच अशुच कर्मनो आगमनसो आश्र
 व परंतु सब कर्म जीवरे कर्मनो आगमनठे तिणसें
 आश्रव रूपीहै कर्मना प्रधान पणार्थी जैसे जीव ना
 वा सकर्म जीवरे कर्म आगमनसो आश्रव विद्म परं
 त नावरो गुण तिरवानो सो विद्ममे नही विद्मरो सुजा
 व पानी आवारो सो नावा गुणमे नही इणवास्ते
 आश्रव रूपीहै ७५ प्रश्न ॥ उपशम समकितमे उद
 य मांहिं मिथ्यांत होवे सो खयजावे वा नही ॥ उत्तर
 अने उदयमें दलिया मिथ्यांतना होवे सो उपशमहे
 एहीतरे खयोपसमरीठे परंतु उपसममे अनुजागथी
 प्रदेसथी दोनु प्रकारें उपसम रहे ते उपसम खयोप
 सममे अनुजागथकी तो मिथ्यांत नही वेद उपस
 म खयोपसममे एविसेपठे वेदनी कर्मीके दलियाको

दोई तरेठे. अनुजागधी प्रदेसथकी ७६ प्रश्न ॥ क
 षायरी चौकडी च्यारठे तिणमे जिस चौकडीमे परच
 वनो आउखो बांधे उसको मरती वक्त उही चौकडी
 उदे आवे कि और चौकमी उदे आवे ॥ उत्तर चौकडी
 ४ च्यारठे कोईसी चौकमीमे तरकादि आऊखो बांधे
 परंत मरती वखत सूत्र नगवतीमे शतक ३ उदेसे
 ४ जोगरो परिणाम लेस्या प्रधान कहीहै (जीवेण
 नत्ते जे नवीए ऐरईयेसु उववज्जितए सेणंनत्ते कि ले
 स्सेसु उववज्जई गोयमा जल्लेसाइं द्वाइं परियाइत्ता
 कालंकरइ तलेस्सेसु उव वज्जई तंजहा कएहलेसेसु
 वा णीललेसेसु काउलेस्सेसुवा एवं जस्स जा लेस्सा
 सातस्सजाणियवा) ए पाठ देखतां भरती वक्त चौक
 डी सागीरो नियामक नही लेस्यारो नियामक
 ७७ प्रश्न ॥ अबके कालमें स्वयंबुध तथा प्रत्येक बु
 ध तो ठे नही बुधिवोधितहै सो साधुपणो साधुके दी
 या आवे के और किणतरे आवे ॥ उत्तर ॥ सो स्व
 यंबुद्धने करमनीह्योपसम होवे जद स्वयं बुद्ध होवे औ
 सी करमनी ह्योपसम पंचमे अरामे संजवे नही गौत
 म स्वामीने महावीर स्वामीके सासनके साधाको कहा
 (बंकजडाउ पत्तिमा) इणाने परका उपदेससँ समी सर
 धा रहे तथा विरत धरम आदरे तो पिण सुकरहै (सुच्चा
 जाणइ कल्लाणं सुच्चाजाणइ पावंग उचयंपिजाणइसुच्चा
 जंसयत्ते समायरे १ ए हवो नगवंतनो उपदेसहै ७८

प्रश्न ॥ पुलाकलविधने पुलाक नियंठा एकठे के दोयठे
 तथा पुलाकनो स्वरूपकिनतरेठे ॥ उत्तर ॥ पुलाक नियं
 ठामे लेस्या ३ तेज १ पद्म २ सु ३ तथा नोसन्ना वज्र
 ता कहीठे और वृकसनियंठामे नी लेस्या ३ जगवतीम
 ध्ये कहीठे कषाय कुसील नियंठामे लेस्या ६ है सन्या
 ४ है इणने माठी लेस्या पिणठे सन्या संयुक्त है सो
 पुलाक नियंठो तो उणांसाधरो गुण है अने लविध है
 सो उणांरी शक्तिरूप है अने ज्ञानादि पुलाक न्यारो
 लविध पुलाक न्यारो आसेवन पुलाक लविध पुलाक
 ना २ जेदठे कार्यपिण न्यारठे सो इणरो स्वरूप ऐ
 सो है लेस्या इणमे ३ है सुज लेस्यानाव आसरीठे
 ज्ञानीने जाव लेस्या कहीठे और कषाय कुसीलमे ६
 लेस्या है सो संजम आदरतां तो ३ सुध लेस्यामे
 आदरयो परंतपीठे कषाय कुसील पणाथीठे मा
 हली अनेरीलेस्या कषाय के जोरसें होवे एह नियंठा
 नो घर उगे है उडोपिण है पुलाकने नोसन्ना वज्रता क
 ह्यो सुग्यान संज्ञावंन जादा है तिणसे आहरादि स
 ज्ञा ग्यानीने लेखवी नही अमुख्यपणाथी निसार
 धान कणकने पुलाक कहीजे संजमवांन है पिणथोको
 सो असार सजम करे पुलाक ७९ प्रश्न ॥ अनुयोग
 द्वारसूत्रमे ४ निखेपा है ते गाथा (जत्थयज्जजाणिजा
 तिखेवं निखेवेनिरविसेसं जत्थयज्जंतजाणिजा चउकं
 निखेवेतत्थ १) इसका ज्ञावार्थ कैसें है ॥ उत्तर ॥ अर्थ

जिहां जिस वस्तुमें जितना निक्षेपा जाणें तिहां तेंत
 ला निक्षेपा करे और जे वस्तुमां अधिका निक्षेपा
 न जाणीसके ते वस्तुमां च्यार निखेपातो अवश्य क
 रे मित्यर्थ ॥ पिण निखेपो करी चीजरो नाम ठहरयो
 जदइणांदिलसे नाम लिख्यो १ द्रव्य निखेपो २ स्था
 पना निखेपो ३ जाव निखेपा ४ आपणो निखेपो जद उ
 ण द्रव्यमें तो एक आपरो द्रव्यहैसो तेहीज उणद्रव्य
 से इणानें च्यारुंचीजां अपणी इठामें निक्षेपा जदइणा
 री इठामेंहीज प्रतिमामें ४ निखेपा हुया पिण
 उण द्रव्य धातु अथवा पृथ्वी माहितो नही हुया चि
 त्तमें विचारी देखो जे नगवंते कह्यो होवे
 नाममें पिणमाहिरो निखेपोहै थापनामें पिण
 माहिरो निखेपोहै द्रव्यमें पिण माहिरो निखेपोहै जा
 वमें पिण माहिरो निखेपोहै जदतो चारोहीज निखे
 पां बंदनीक होय सो सूत्रमें एहवो उपदेस नगवंत
 रो नही होवेतो सूत्र वतावो चारों निखेपा बंदनीक
 ठहरावो स्थापना निखेपेने बांदोतो नाम द्रव्यने कि
 म नही बांदो परंतु इणारी इठामें एचार निखेपा प्र
 तिमाजीमें ठहरावेते जैसे बालक आपणी इठामें ला
 ठारो द्रव्य तिणने घोडो कहै जद उण घोडारो नाम
 निक्षेपो स्थापना पिण बाकीरा लोकामें कहे एह मां
 हिरो घोडोते द्रव्य निखेपे म्हारे घोमारो हाथ लगा
 वजो मति जाव निखेपे दोय सांथला विचे आपणा

जावसें कूदे म्हारे घोडे कूदे ए ४ निखेपा पिण जा
 वनिखेपा उणवालकरे मनकाहै तिम इणा पिण आ
 पणे मनका अत्रिप्रायसें च्यारोही निखेपावत्तावे सो
 (अदेवेदेव सन्ना) एहिज मिथ्यादृष्टीपणोंडे इणार
 ही ग्रंथ तथा आवश्यक्की निर्युक्तीमे एहवी गाथा जि
 न शद्वरा निखेपारी कहीठे (नाम जिणा जिण ना
 मा ठवण जिणा जिण पन्निमाण दवजिणा जिण जीवा
 जावजिणा समोसरणे १) एहवी गाथाहै इणानें आ
 पणे मनसं जिन मंदिरही समोसरण ठहरायो एपिण
 एह गाथा मुजव मिथ्या वादीहे अनुयोगद्वारनी गाथा
 (जत्थयजं जाणेजा) इत्यादि इण गाथा साहितो
 व्याख्यान करणो सो अनुयोग कहिजे तिण चार द्वार
 उपक्रम १ निखेप २ अनुगम ३ जय ४ एह ४ द्वार
 उपक्रम ते तो सिद्धांत वांचवानो उद्यम १ निखेपना
 ४ जेद मुख्यनाम निखेप जैसे जंबुद्वीप पन्नती थाप
 नासुं जंबुद्वीप पन्नती सूत्रनी परंत द्रव्य निक्षेपसुं
 पोथी माहिं पानाना अक्षर तथा विगर उपियोग वा
 चणे वालो जाव निखेप सो उपियोग सहित वांचणे
 वालो इसबजे ओर निक्षेप क्षेत्र कालादिनही नि
 क्षेपा जाणे तो चार निखेपा जाणेसुं अनुयोग व्या
 ख्यान करें इण गाथामे परमारथहै यह कहे हमे इमा
 रो जाव प्रतिमाजीमे निखेप्योहै सो तुम्हारे जाव
 तो एकहै सो फूल सचित पाणी मृदग दुकमा ताल

कंसाल बजावामे बर्तेहै के जगवंत मांहि बरतेहे चि
 तविगरतो मृदंग दुकडा ताल कंसाल पिण नही
 वाजे जावतो एक जगा बरते सराग जावमे तो इंद्रो
 यानो पोषणवे परंत जगवंतनी जक्ति नही जगवंत
 जक्ति (मनसा स्मरणीयं वचसावक्तव्यंस्तुतिः कार्ये
 नतद्गुणाचरणीयं) एहवो ध्यानते जगवतेनी जक्तिहै
 इणाने प्रतिमाजीकुं नाम स्थापना द्रव्य आपणे जा
 व करीने थास्पाहै तो सस्यक्तदृष्टी प्रतिमाने पूठ न
 ही देवे विप्रीत बचन नही बोले ॥ दोहा ॥ (जिन
 पडिमा जिन सारखी, कहेसो मिथ्यादृष्टी ॥ जिन पदि
 मा जिनपडिमा कहे जाठो बचन अनिष्ट ॥) समकती पु
 रूपे जे चीज जिन जावे होवे तिन जावेहीन जाणें और
 नाम सामाइक करुंबु थापना सामाइक आसणऊपर अं
 ग मोडने बैठयो दोय घडीती मर्यादा द्रव्य सामाइक
 उपियोग विगर सामाइकना उपगरेण जाव सामाइक
 उपियोग सहित स प्राप जोगनो छांडवो एह सामा
 इकरा चार निखेपा उगारी कहणी स्थापना सामाइ
 क करतां मुंदडीही सामाइकरी थापना करी किणने
 उठायलीनी जद उणरी सामाइक गई और फेर
 तिसने पाबी मुंदडी दीधी तो कहो मुंदडी दीधी के
 सामाइक दीधी ८० प्रश्न ॥ (सुत्तथोखलुपढमो वीउ
 नीयुती मिसुत्तनणित्तईत्त निरवसिसो एसविहीहोइ
 अणुत्तगो १) इह गाथा जगवती मांहिहे ॥ उत्तर ॥

पिण इण गाथा, मांहिं तो अनुयोग नाम वखाणरी
विधि करवारो अधिकारहै एक अनुयोग करतां सूत्र
अर्थही वाचे दुसरो, निर्युक्त मेले जैसे मेरु गिरिरे पू
र्वे अंतरो ४५ हजार जोजन विजय दरवाजो हे
तिणां योजनारी युक्ति मेले नद्रमालवन वखारा विजय
अंतर, नदी सीता प्रमुख वन इणारे जोजनारी चो
डासरी युक्ति मेले इसतरेसे पठिम दिसिना जोजन
मेले दस हजार जोजननो मेरु जेले, जदलाख जो
जन प्रमाण पूर्व पश्चिम होवे इम युक्ति मेलवीने वां
चे तीसरो, निरवसेख ते धर्म कथानुयोग हेतु, दृष्टात
करी समजावे (एम विहीहोई अनुवगो) व्याख्यान
करवाकी ए विधिहोवे जणारी कहणीनिर्युक्तिरी कह
णी पंचागी मानीतो पाचारो, पाच मत न्यारा न्यारा
निर्युक्तिकार, कहे टीकाकार युं कहेठे टीकाकार कहे चू
र्ण काररो, मतठे चूर्णकार कहे अवचूरकारको एह
मतहे अवचूर कार कहे ज्ञाप्यकारको, एह मतहे
तो विचारो पांचारो, पाचमतहे तो एक निर्युक्तिके कह
णे पंचागी, किम मानी जावे और केवलीनो एक मत
इणापांचारो पाच मत तो विगर केवली के वचन
किम पंचागी मनाय ८१ प्रश्न ॥ अनुयोग चार द्रव्या
नुयोग १ गिणतानुयोग २ चरणानुयोग ३ धर्म क
थानुयोग ४ एह च्यार अनुयोग च्यार प्रकार को व
खाणहे द्रव्यानुयोगमे पट द्रव्यनो वखाण गिणतानु

रहै ८२ प्रश्न ॥ द्रव्य हिंस्याकिणने कहिजे जीव हिंस्या किणने कहीजे द्रव्य हिंस्यारो फल कांई ओर जाव हिंस्यारो फलकांई ॥ उत्तर ॥ सो द्रव्य हिंस्या इसतरे कहीजे श्रावकने त्रस जीव हणवानो पच खाण करयो तिको माटी खणवानेकिहाइं गयो तिको पृथ्वी खोदतो त्रस जीवने राखवानो कामीबे त्रस जीवहणवानो पिण संकल्प पिण नही अने त्रसनी पृथ्वी खणता विराधना होवे तो उणरोवृत्त पिण अतिचरे नही इतरे वृत्तमे अतिचारपिण नही लागे असो जगवती शतग ७ उइसे पहिले कह्योबे तो उण श्रावकने द्रव्य हिंस्यालागी पासे खडो होय सो कहै ते त्रस जीव मारनाख्यो एहिज इनरो फल ॥ जाव हिंस्यारो फल अशुभ कर्मरो फल सो जीवरे अशुभ कर्मना दलियारो बंध प्राणातिपातहै सो जिणजिवमें जितना प्राणबे तिणारो अतिपात सो वियोग पापसो प्राणवालेरे पर प्राणरो वियोग कीयोसो कर्म बंध ८३ प्रश्न ॥ केवलीरो मारग सावध कहे कि तनेक ते किसतरे ॥ उत्तर ॥ एइ वचन बोलणे वाले केवलीके वचननी आसातना करेबे (सियअस्थि सियनस्थि) एहयोस्याद्वादवचनहै सो पट द्रव्य आसरी वचनबे द्रव्य धर्मास्तिकाय आपरे स्वजावे सियअस्ति कहताबे अधर्मास्तिकाय आसरीने सियनास्ति नहीबे धर्मास्ति कायरो चलणगुण

अधर्मास्ति कायरो थिरगुण चरणो सु ठहरणो
 नही ठहरनो सो चलनो नही अैसे षटद्रव्य रत्नप्रजा
 दि पृथ्वी माहो माहिं अपेक्षाई (सियअत्थिसिय
 नत्थी) एहवो सिद्धांतमे पाठवे एह पाठ हिंस्या
 राकार्य अने दयाना कारजमे मिलावे तो कठे कठेहिंस्या
 मे धर्म दयामे धर्मयाने बावलेरी लंगोटी कनीकमरमे वां
 धे कनी मस्तकमे लपेटे एहवा केवली ज्ञापित मि
 द्वात नही सुयगडांग माहिं कह्योउ (एवंखुनाणी
 णोसारं जंनहिंसई किंचणं अहिंसा समयंचव एता
 वत वियाणह १) एह उचन केवली गणधरारो
 जूठो नही केवली महाराजरी सम टिष्टा चोधा गुण
 ठाणावाळारी श्रद्धा तो एकठे परुपणा नाम बोलण
 रोउ सो बोलता तो साधु परमादी हां बोलनो ना क
 हे ना बोलनो हां कहै सो परुपणामे फेरहै ८१
 प्रश्न ॥ संवेगी प्रतिमानी पूजा करेवे सचितपाणी फू
 लचढावेवे आरंजसारंजकरेवे मुक्तफल वत्तावे ॥ उत्तर ॥
 सो मुक्तफलतो जमामे अजाण मत पक्षासे कहेवे
 पुन्य फलता घणा कहेवे सो केवली तो सिद्धांतमे
 ए कहीवे (नहुपाणवहंअणजाणे मुच्चइकयाविस
 वदुखाणं - एवं प्रायरियेहिं अफ्हायं जेहिइममेसाहुध
 म्मो पन्नतो १) अर्थः निश्चे जिहां प्राणकोवध होवे
 तिणकारजको नलो पिण मतजाण कयूनही नलो
 जाण प्राणवध किणही कारजमे दुखसु बोडावे नही

इस्यो आर्य पुरपे कह्यो जिणाकोनलो नाख्यो
 धर्महै ए गाथारो अर्थ इणाने मुक्तफल पुन्य फल इ
 णजीवाने बंधमे दीस्यो तो केवलीने नही दीस्योदिसे
 वे इणारो ज्ञान केवलीके ज्ञानसेही जादा सो दीसे
 वे ८५ प्रश्न ॥ संवेगी सूत्र ४५ मानेवे आपणे ३२
 की परुपणाहै सो १३ पईना औरहै तिणमे शास्त्रसे
 मिलतो जुवावकाई कहिये तथा १३ ही अणमिल
 ताहै क्या ॥ उत्तर ॥ पईना सगले तो अण मिलता
 नही पिण ए पईना नाम प्रकीर्ण बिखरी वस्तुनोवे
 सो बदमस्त आचार्याने बिखरी चीज जेला करीहै
 परंतु जेला वस्तु करतां कूडो जिले बदमस्तनो ए
 कांत उपियोग न रहे तिणकारणे ३२ रो पिण आ
 क आपरे परंपरायसे कहेवे सूत्र माहिं तो (दुवाल
 संगंगणि पिडगं) एह १२ अंग गाणि आचारजनो
 रत्ननो करंडीयोवे एहवा पाठवे सुद्ध श्रद्धा वालेको
 निरपाप वचन रागद्वेष रहित सर्व सिद्धातवे ८६
 प्रश्न ॥ देवता प्रतिमारी पूजा करेवे सो सम दृष्टा करेवे
 मिथ्यादृष्टी करेवे ॥ उत्तर ॥ सो सूत्रनी नेश्राय जग
 वंत देवाने कहाहै देव तुम्हारो पुरानो जीत आचार
 वे जगवंते एतो नही कही समकती देवतानो पुरा
 णो जीत आचारवे देवता पिण आपरे सामानिक
 देवताने पूबयो [किंमेपुवंकरणिजं किंमे पढाकरणिजं]
 इसो पूबयो जब इण पाठमे सामानीक देवतानी कहनी

इसी-पिण जुदी दीसे नही सो साहिब जैन श्रद्धा वा
लाने तो एह प्रतिमा पूजनी श्रेष्ठे और श्रद्धावाला
ने उणरी श्रद्धारी प्रतिमा बतावे चाकर धणीरी श्र
द्धा मुजव अरज करता मनुष्य लोकमे पिण दीसेवे
उणरे उवा श्रद्धाही नही जद प्रतिमाजी उह श्रद्धा
विगर देव करिके कद पूजे मिथ्यातीरे देव पूजनरी
दूजी हरिहरादिकनी प्रतिमा पिण सिद्धातमे पिण
नही चाली देव लोकमे तो पूजारो प्रतिमा संबधी
तो एहीज ठिकाणो तथा च्यार महेंद्र ध्वजरे चौगर
दे प्रतिमा कहीवे इण टालके और हरिहरादिकनी
प्रतिमानी वस्त सिद्धातमे नही कही उणारे लेखे स
मकती तो एह प्रतिमा पूजे पिण मिथ्यादृष्टी देवा
धिदेवकरके किणने पूजे जैसे मनुष्य लोक जे इणारी
श्रद्धा मुजव येतो जिन प्रतिमाने देवाधिदेव कहिके
पूजे मिथ्यादृष्टी अनमती नारायण रघुनाथजी माहादेव
इणाने देवाधिदेव कहिके पूजे इण दृष्टी वालाने बाल
तपकार्य अकाम निर्जरासे देव लोकमे जावे जदि वे
कोणसी प्रतिमा पूजे सो सूत्रानुसारे जाणीयेवे उणा
देवारो कुलाचार प्रतिमाने पूजवारोवे (हियाए सु
हाए खेमाए निरुसेसाए अणुगामियत्ताए नविस्सई)
ए पाठवे तिणऊपर सवेगी कहेवे हित सुख खेम
मोख फल हमारे गेल एह कार्य चालस्यो एह पाठ
तो घरमे लाय लाग्या घरको धणी विचारे एह न

गदी धननी गांठडी इण लायमांसे काढया मुऊने
 (हियाए सुहाए खेमाए निसेयस्साए अणुगामिय
 ताए जविस्सइ) सरीखो पाठबे तो देखो धननो पर
 जवमे गेल क्या चलसी पिण धन लाइसे वच्या सा
 री बातरी वर करारी घरमे रहै तैसें देवा पिण एह
 बात कहीहै यथायोग्य ३२ बाना पुज्यासे नवा देव
 रे सारी बातरी वर करारी इण जवमें रहैगी इस
 वास्ते एह बाना ३२ पूजवा योग्यबे ८७ प्रश्न ॥ प्रश्न
 व्याकरणजीरा संवर द्वारमे दयारा ६० नाम कह्या
 तिणमध्ये ४७ मो नाम (पूया) सो संवेगी कहैबे
 पूजा दयामा गिणीबे ॥ उत्तर ॥ सो इणाने द्रव्य पू
 जा सचित पाणीरो ढोलणो फूज फल सोना रुपानी
 कचोली धूप दीप वाजित्र वजावणा सारंगी सतार
 ताली वजावणी मुखमे राग गावणा द्रव्य पूजा ठै
 रो सो दयामे गिणीयो पूजानो संवेगी अर्थ करे तो
 प्रश्नव्याकरणमे ६० नाममे जाणो दयाने (यग्य)
 कहीये सो (यग्य) अन्यमती धर्म जाण करेबे अ
 श्वमेधी गोमेध गजमेधीय महीपमेधीय अजामेधीयएह
 [यग्य] करेबे तस थावर जीवांना प्राण बध करेबे
 अने (यग्य) कीयानो मोटो स्वर्गादि फल बतावे
 बे सो (यग्य) दयामे होय साठा नामामे यज्ञ पि
 ण नामबे परंत मत पद्धी (पूया) नाम प्रश्न व्या
 करणमे दीठो जदखुसी थया पूया नाम दयानो

अर्थ द्रव्य पूजानो करेते जैसे मथेन बंदामि
 इसो शब्द सुणिने कहै सगलाही जैनी मथेणा बंदा
 मी कहैते सो हमारैताइ बंदना करेते जैसे पिण इणा
 (पूया) इसो पाठमे देखके मनराजी करेते हमे द्र
 व्य पूजा करावां सो दयामे गिणीते परंतु अजयदेव
 सूरि (यज्ञ) नामनो अर्थ जाव अर्चननो करयो
 ते जिणपर जीव दया जाव अणयो तिणे जाणे
 सर्व [यज्ञ] कीधो अने [पूया) शब्दगे अ
 र्थ (पूया) प्राकृतमे शब्द होवे संस्कृतमे (पूना)
 इसो होवे (पूता) नाम पवित्र निर्मला दया समान
 दुसरी वस्तु पवित्र नहीं (सर्व नूतदयाशौच्यं] इ
 सो शब्द अनमतीके पिण शास्त्रमे कह्योते सो पूया
 शब्दनो अर्थ टीकाकारे करयो जीवहिंस्था होवे ति
 को दयागो नाम कदेही नहीं जाणनो ८८ प्रश्न ॥
 पक्षीकरनेकी चरचालिरुच्यते गाथा नमीऊण सयल
 जिणवर धम्मसमायारीय चउविहोसंघो पव पखीय
 वियागो जणामि जिणसामणेसारो १ आगारि समा
 ईयगाणि सर्वाकाएण फासए पोसहोदुहउ परखं एग
 राईनहावइ २ सवे सुकाल पवेमो पसत्थो जिणमए
 तवो जोगो अठमिपनरसीसूय नीयमेणहविज पोस
 हीयो ३ ठठि सहियाउ अठमि तेरससयं न पखीयं
 होई पडवे सईयं कयावि ईय जणीय जिण वरिंदे
 हिं ४ पनरसंमि दिवसे कायवं पखीय तुपाएण च

उदससयं कईयावि नह तेरस सोलमे कहवे ५ अ
 ठमि दिणमिसायं कायवा अठमीखयाएण कईयावि
 सत्तमंमि नवमे ठठे न कयावि ६ पखस अद्धा अठ
 मि मासद्धा उए पखीयंहुति सोलसम दिणे पखियं न
 का यवं होड कयावि ७ पखीयपडिकमणां सठिय पुहरं
 मि अठमा होई तत्थेवपञ्चखाणं करंति पवसुजिणव
 यणे ८ जहीयां अठमीलगा तहीयां हवंति पख
 संधीसो सठि पुहरंमिनेया गरेए तिहि पखिपडिकम
 ण ९ चदेचदेअजिवढीईया चंदे अजिवढीएचेव प
 चसहि ययुगमिणं जणीयंतिलुकदंसीहिं १० जहवक
 तीपोसे फागुणवयसाह मासि आसाढो एया पडंति
 तत्थी नूणं ए ए सुमासेसु ११ किन्हे वीयचउत्थी ठ
 ठमि दसमि दुवालसीचेव चाउदिसी सुक्केपुण पडि
 वतीयाय पंचमीया १२ सतामिनवामिकारसित्तेरसि त
 हपुणमाय बोधवा एया युगपरिमढि ताइचियपडि सिद्धि
 वि १३ पडिवगं विय तइयाय चउत्थी पंचमीय ठठीया
 सत्तामि अद्धमि नवमी दसमी एकारसीचेव १४ वार
 सि तेरसि चाउदिसीय निठ विणगाय पनरसी कि
 न्हंमि [शुक्ल] जोन्हंमिय एसवि वहीमणे यवो
 १५ ॥ इति श्रीसूत्रात् पादिक विचारो ज्ञेयः ॥

एह गाथानो विस्तार पूर्वक अर्थ लिख्यते.

प्रथम चंद्रवर्ष १ ॥ जाद्रपदवदि २ कार्तिक वदि ४
पोस वदि ६ फाल्गुन वदि ८ वैसाक वदि १० आ
पाढ वदि १२.

द्वितीयचंद्र वर्ष २ ॥ जाद्रपद वदि १४ कार्तिक सु
दि १ पोससुदि ३ फाल्गुन सुदि ५ वैशाक सुदि
७ आपाढ सुदि ९

तृतीय अजिबर्द्धनवर्ष ३ ॥ जाद्रपद सुदि ११ का
र्तिक सुदि १३ पोस सुदि १५ फाल्गुन सुदि २ वै
साक वदि ४ आपाढ वदि ६

चतुर्थचंद्र वर्ष ४ ॥ जाद्रपद वदि ८ कार्तिक वदि
१० पोसवदि १२ फाल्गुन वदि १४ वैसाक सुदि १
आपाढ सुदि ३

पंचम अजिबर्द्धन वर्ष ५ ॥ जाद्रपद सुदि ५ कार्तिक
सुदि ७ पोस सुदि ९ फाल्गुन सुदि ११ वैसाख सु
दि १३ आपाढ सुदि १५

आठमनी तिथी विचार---तिथी नाम जया ॥ दिन
नाम इंद्रसुधाजिसलेय ॥ रात्रि नाम वैजयती ॥ रात्री
नी तिथी नाम जोगवती ॥ तिथी खुटे तिवारे साते
दीन आठमि होई सूत्र मांहीं विमासी जो जो सिद्धां
ते जो तिथी न खुटे तो आठे दिन आठमी होवई
॥ जया तिथी आठमकिजे ॥

पाखी पूर्णा तिथी किजीये---तीथी नाम पूर्णा ॥ दि

न नाम भवसमे १ सुवयगा १ ॥ रात्री नाम देवानंदा २
द्वितीय निरती २ ॥ रात्रीनी तीथी नाम जसवती ॥ ति
थी खुटे जदचऊदे दिने पाखी आवे तिहां कीजे
अतिचार आलोईये विशेषजो तिथी न खुटे तो पंधरे
दिनमे पाखी होय ॥ पूर्णा तिथी पाखी किजीये ॥
प्रश्न ८९ ॥

॥ अथ संवत्सरी पंचमीके दिन करणी ते चौथकी
संवत्सरी करणे वाले साधु श्रावकोसे प्रश्न लिख्यते ॥
प्रश्न १ चौथके दिन पंचमी कोणसे सूत्रसे करतेहो
प्रश्न २ चौथको चौथ कहणी पंचमीको पंचमी कह
णी चौथको पंचमी कोण कहै औसा विवहार वरत
ताहै सो आप चौथको पंचमी तथा संवत्सरी कैसे
कहते हो ॥ प्रश्न ३ और आलोयणा गये कालकीहै या
ने बीते हुये कालकीहै तो पंचमीका काल बीता न
ही तो आलोयणा पूर्ण कैसे हुई क्योकि दिन ठिपे
पे चौथमे पंचमी आई तवतो पहर दो पहरकी पंच
मीकी आलोयणाची न हुई ॥ प्रश्न ४ और आगमी
कालका तो पंचखानहै परंतु आलोयणा नहीं होवे
तुम संवत्सरीकी आलोयणा कैसे करते हो विना
कालधीतेपे दिनकी आलोयणा सूर्य अस्त होते
वक्त करतेहैं रातकी आलोयणा सूर्य उदै होते
वक्तक करतेहैं इसीतरे संवत्सरीका दिन व्यतीत हो
लेवे तव आलोयणा करणी युक्तिहै ॥ प्रश्न ५ और

कालिका आचार्यने तो काण सिर चोथमे पंचमी करीथी ॥ पईठान पुरमे सालिवाहन राजाने कहा कि महाराज पंचमीको इंद्रमहोत्सव मेला करुं ठठको पोसह करहुंगानव गुरूने १ रात दिनका अंतर याने फरक पडता जानकर चोथमे पंचमी कराई क्यों कि ठठके दिनमे तो पंचमीका कोई अंस ज रासाजी नही रहता और वहातो सप्तमीकी घ डीया आजातीहै इसवास्ते एक रात दिनका अंतर पडता जानकर उनोंने चोथमे संवत्सरी करीथी परंतु पहली अस्तलमे महाबीरजीके बारेसे तथा परंपरायसे पंचमीकी संवत्सरी चली आवेथी तो तुम लोगोने उसका मानना कैसे ठोड दिया ॥ प्रश्न ६ और बहोतसी बातें नवे ग्रंथ शास्त्रोकी नही भानतेहो कि जैसे धर्म रत्न शास्त्रकी गाथा (अवलंबिऊण कळं जं किंपसमधारंतिगीयत्या थोवावराह बहुगुण सवेक्षितं प्रमाणंतु ८५) अर्थ अवलंबनको अश्रित होके जो जो संजोपकारी कृत्य गीतार्थ सिद्धांतानु सारी आचरण करतैहै तिस्मे दूषणतो अल्पहै और निष्कारण परिचोग करे तो प्रायश्चित्त पामे और जिस्मे बहुत गुण होवे गुरु ग्लान बाल वृद्ध प्रमुखोके उपकारक होवे मात्रक अर्थात् मोटे बडे पत्रादि परिचोगकीतरे जो सब चारित्र्योको परिमाणहै मित्यर्थ ॥ और आर्यरक्षित रारिने मुनीयोकी दयाकरिके मात्रक मोटे बडे पात्रके परिचोग

एमैतवा आहार माहारित्तएवा एणत्थ गाडेहिरोगायं
 केहिं) इसका अर्थ इसी पाठके शब्दोंसे, समजना
 तथा वृहत्कल्प सूत्रके शब्दोंसे अर्थ जानना इसतरे
 गाडे रोगादि कारण सूत्रमें निषेध नहीं और कारणों
 साधू वृद्ध अवस्थामें एक नगरमें रहै १ कारणों को
 मास उत्तरया पठे उसी नगरमें साधू रहै २ कारणों औप
 धी साधु लेवे ३ कारणों साधु जलमेंसे वहती साधुवीको
 निकाले ४ कारणों साधु चामासमें विहार करे ५ का
 रणों साधु नदी उत्तरे ६ कारणों साधु रोग तथा संथा
 रमें लेच नकरे ७ कारणों साधु आहार लेवे ८ का
 रणों साधु आहार न लेवे ९ कारणों साधु नवणी प्रत
 तीन पहिर तक खके १० कारणों खाडामे पडता
 साधु वृद्धकी साख पकडै ११ कारणों साधु लब्धि
 फोडे १२ कारणों साधु जोतिस प्रकासे १३ कारणों साधु वे
 के लब्धी करे १४ कारणों साधु मास उग्रान्त गामन
 गरमें रहै १५ साधु गृहस्थीके घर बैसे १६ इम का
 रणों साधुके औरजी बहोतहै तो इस वास्ते श्री प्रवच
 ण सारोद्धार ग्रंथमें रातको सूचिके लिये पाणी रख
 णा लिखाहै १७ और कितनेक साधु वा श्रावकोको
 जिस गुरुने धर्म उपदेस दीया और समकित धर्म
 बताया आरे समकित धारण कराई तथा धर्म ध्या
 नका करण धर्म लक्षण बताया मिथ्यात बुडया
 अनेक सूत्र वा शास्त्रोके जाणकार कीये तो ऐसा

परम उपकार गुरु महाराजका हुआ जिस ते मनु-
 पो की बुद्धि निर्मल हुई और ज्ञान दरसन चारित्र्य
 तपके धणी हुये फिर वे ऐसे उपकारी गुरुको ढोड
 कर, ऐसा हमरे गुरुकी समकित सरधा करतेहै औ
 र पूर्व गुरुके द्वेषी बनजातेहै वा, अवगुण बाद बो
 लतेहै तो वे महा दोषके अगवाणी होतेहै सो आ
 गमद्वार स्मरण कराके कहतेहै (एवंअवमन्नतो वुतो सु
 त्तमिपावसमणुत्ति महमोहबंधगोविय खिसंतोअप्प
 डि तप्पंतो) अर्थ ऐसे पूर्वोक्त कहे गुरुको हीलता
 हुआ साधु सूत्र उत्तराध्ययनमें पापी श्रवण कहाहै
 और गुरुको निंदने खिजने वाला आवश्यक समवा
 यांगादिकमें महा मोहनीय कर्मका बध करने वाला
 कहाहै मित्यर्थ ॥ और जो शिष्य कठिन क्रिया का
 रकनी होवे तोजी गुरुकी आज्ञा करने वाला होवे
 उक्तं च (वठम दसम दुवालसेहिं मासद्ध मासखमणे
 हिं अकरंतो गुरुवयण अणंत संसारीव नणिऊ) अर्थ
 वठ अठम दसम द्वादसम अर्ध मास मास क्लमण तप
 करनेवाला शिष्य गुरुका वचन न मानेतो अनंत
 ससारी कहाहै अथ गुरु सेव्यया फल साह ॥ (वि
 दलयतिकुबोध बोधयत्यागमार्थ सुगतिकुगति मार्गो
 पुण्य प्रापेव्यनक्ति अवगमयतिकृत्याकृत्य जेदंगुरो
 यो नविजलनिधिपोतस्तंविना नास्तिकश्चित) व्या
 ख्या ॥ जोनव्यास्तं गुरुं विना अन्यः कश्चित नवजल

निधि पोतः नव संसार सएव जलनिधि समुद्रस्तत्र पौत
 इव पोतः संसार समुद्र तारणे प्रवहण समानो गुरु
 बिनाऽन्यः कश्चिन्नास्ति तं कथं योगुरुः कुबोधं कु
 र्सित ज्ञानं मिथ्यात्वं विदंलयति पुनर्योगुरुः आग
 मार्थानां सिद्धांतानां अर्थं बोधयति ज्ञापयति पु
 नर्योगुरु पुन्यपापे अन्यंच पापंच पुन्यपापे तद्ध
 धर्माधर्मो अपिव्यनक्ति प्रगटयति इदं पुन्यं पापं
 इति कथञ्चूते पुन्यपापे सुगति कुगतिमार्गो सु
 गतिश्चकुगतिश्च सुगतिकुगति तयोमार्गो पुन्यं देव
 रादि सुगतिमार्गः पापं नरक तिर्यकरूप कुगतिमार्गः
 पुनर्योगुरु कृत्या कृत्यं जेदं अवगमयति कर्त्तुं यो
 ग्यं कृत्यं अयोग्यं अकृत्यं कृत्यंच अकृत्यं कृत्याकृत्ये
 तयोजेदोविवेको विचारस्तं ज्ञापयति यथा प्रदेसी
 नृपः महानास्तिकमातिः केसी श्रमण गुरुणां प्रतिबो
 ध्य तत्त्व मार्गं स्थापितः ॥ पुनः गुरुसेवायाफलमाह ॥
 पितामाता भ्राता प्रिय सहचरी सुनुनिवहः सुहृत्स्वा
 मी भाद्यतकरिजटरथाश्वपरिकरः निमज्जंतंजंतुनरक कु
 हरे रक्तुमलं गुरोर्धर्माधर्मं प्रगट नपरात्कोपिनपरः
 ॥ व्याख्या ॥ नरक कुहरे नरक विवरमध्ये निमज्जंतं वुढं
 तं पततं संतं जंतु जीवं गुरोः परोऽन्यः कोपि र
 क्षितुं न अलं कोपिन समर्थः कथं पिताजनको र
 क्षितुं नालं माता जननीनालं भ्राता सहोदरं नालं प्री
 या अत्यंत बल्लजा सहचरी स्त्रीरक्षितुं नालं सुनुनि

वहः पुत्र गणोपिरक्षितुनालं सुहृत्पित्रमपिनालं सम
 र्थं स्वामी नायकोपिनालं किञ्चुतः स्वामो माद्यत क
 रि चटस्थाश्वः माद्यतो मदोन्मत्ता कारिणो गजा न
 टाः मुञ्जटाः रथा अश्वश्वयस्यस एवं विधो बलवानपि
 स्वामी रक्षितुनालं पुनः परिकरः प्रचूत सेवकादि वर्गो
 पि नकरे पतंतं जीवं रक्षितुं न समर्थः किं विशिष्टात्तुरो
 धर्माधर्म प्रगट न परात धर्मश्च अधर्मश्च ध
 र्मा धर्मा पुण्य पापे तयोः प्रकटने प्रकाशने परस्त
 परोयः स तस्मात्गुरुः धर्मा धर्मो ह्यावपि दर्शय
 ति ततश्चयः प्राणा धर्म मंगी करोति सनरके नपत
 ति किंतुमुगति सुखं चवति ॥ इस वास्ते सुगुरुसेवा
 सदा सुखदायक है ९२ प्रश्न ॥ मुह्यति कोणसे सू
 त्रमे कहीहै ॥ उत्तर प्रश्नव्याकरण उत्तराध्ययन सू
 त्रमे कहीहै ॥ ९३ प्रश्न रजोहर्ण का प्रमाण कोणसे
 सूत्रमें कहा ॥ उत्तर नसीथ सूत्रके पांचमे उदेसेमें
 ९४ प्रश्न ॥ मैलाबस्त्र बहोत जादे माधुरखे कि नही उत्त
 र ॥ नही रखे जो रखेतो तिस साधुको प्रायश्चित कहा
 नसीथ उदेसे ६ मे ९५ प्रश्न ॥ साधुने रोग उपना साधु
 औपधी देवेके नही उत्तर ॥ साधु औपधी आणी दे
 वे नही देवेतो प्रायश्चित कहा नसीथ उदेसे दसमे ९६
 प्रश्न सूत्र ॥ कितने प्रकारके होतेहै उत्तर सात, प्रका
 रके ते विधि सूत्र १ उद्यम सूत्र २ वर्णकसूत्र ३ ज
 य सूत्र ४ उत्सर्ग सूत्र ५ अपवाद सूत्र ६ उचय सू

त्र इन सातोंका ७ स्वरूप इसतरे हैं कि कितनेक सूत्र विधि मार्ग कहै तथा दशवैकालिकके पांचमे अर्धयने (संपत्तेचिख कालंमि असंनंतो अमुचित इ म्मेण कम्मजोएण नत्तप्राणं गवेसए १) इत्यादि १ और कितनेक उद्यम सूत्र जैसे उत्तराध्ययन दस मे अध्ययने [दुम्म पत्तए पंडुए ज्जाहा निवडइ रा यगणाण अच्चए एवंमणुयाण जिवियं समय गोयम मापमायए १) इत्यादि २ और कितनेक वर्णक सूत्र जैसे ज्ञाता उववाडं प्रमुखमे जैसे (रिद्धित्य मियसमिद्धा) इत्यादि ३ और कितनेक नय सूत्र कि जैसे सुयगडांग प्रथम श्रुत्कध निरय विनती पंचमाध्ययने प्रथम उदेसे (हणविदह निदह द हेणं सदंसुणित्तापरहम्मियायाणं ते नारगाउन्नयन्निन्न सिं ह्हा करंकिंकिंत्तामदिसंवयामो) इत्यादि ४ उत्सर्ग सुत्राणि यथा [इच्चेसिंठएहं जीवनिक्कायाणं नेवस यं दंडं समारंजिक्का) इत्यादि ५ अपवाद सूत्रतो प्रायेवेद ग्रंथोसे जाने जातेहै तथा [नयाल्लज्जिक्का निउणं सहायं गुणाहियं वा गुणउस्समं वा इक्कोवि पावाइ विवज्जयंतो विहारिक्कामे सुय सज्जमाण १) इत्यादि जावार्थ जब निपुण सहायक गुणाधिक अथवा बराबर गुणवाला न मिले तब पापाको बर्जता हुआ और काममे अनासक्त होकर एकलानी विचरे साधू ॥ ६ ॥ तथा तदुन्नय सूत्र जिनमे उत्स-

गर्वापवाद दोनो युक्त कहे जातेहै यथा (अट्काणा
 नावेसमं, अहियासियव भ्रवाही ॥ तज्जावं मित्रवि
 हिणा, पडियार पवतणत्तेर्य ॥ इत्यादि जावार्थ जिस
 रोग व्याधिके हुए आर्तध्यान न होवे तव तो सहनी
 जेकर आर्तध्यान तिस रोग व्याधिके हुए हुवे तव तिस
 वे उपचारमे वर्तना औपधी करणी ऐसे नाना प्रकारके
 स्वसमय परसमय निश्चय व्यवहार ज्ञान क्रियादि
 नाना नयोके मतके प्रकासक सिद्धातमे गंजार जाव
 वाले महा मतिवालोके जानने योग्य जिनका अत्रि
 प्रायहै इस इस तरहके सूत्र बहुत विस्तार करिकहै
 ॥ ७ ॥ ९७ प्रश्न ॥ श्रावक कितने प्रकारकेहै ॥ उत्तर
 च्यार प्रकारके श्री ठाणांग सूत्रके चउथे ठाणेमे क
 हेहै यदुक्तं (चउविहा समणो वासगा पन्नत्ता तंजहा
 अम्मापिइसमाणे १ जायसमाणे २ मित्त समाणे ३
 सबत्ति समाणे ४ ॥ गाथा ॥ चिंतइ जइ कज्जाइ नदिह
 ठ खलिउविहोईनिन्नेहो एगंत वबलो जइ जणरसज
 णणी समोसट्ठो १) जापार्थ साधुओके सर्व कार्य
 आहार पानी वस्त्र पात्र औपधी प्रमुख जे होवे ति
 नको तिनके दान देनेकी चिंतवणा रखे शुद्ध जाव
 सें दान देवे कनी परमादके वसते साधु समाचा
 रीसै चूक जावे तव आखोसे देखकेनी स्नेह रहित
 न होवे साधुजनाका एकांत वत्सल कारक होवे सो
 माता पिता समान श्रावक कहतेहै १ (हिजएससि

ऐहोच्चिय मुणीणमंदायरो विणयकम्मे जाइ समोसा
 हुणं पराजवे होईसुसहाउ २) जावार्थ ॥ हृदयमे तो
 साधुओ उपर बहुत स्नेह रखताहै परतु साधुओ
 की विनय करनेमे मंद आदर वालाहै साधुओको
 संकट पमे तव नलीरीते सहाय्य करे सो श्रावक
 जाई समानहे २ (मित्त समाणो माणाई सिरुसइ
 अपुविउकज्जे सन्नंतो अप्पाणं मुणीण सयणावअळ
 हियं ३) जावार्थ ॥ जब साधु किसी कार्यमे न पु
 बे तव रूमजावे परंतु साधुको अपने स्वजनोसेंजी
 अधिक भानताहै सो मित्र समान श्रावकहै ३ [थ
 द्दोबिदप्पेही पमाय ॥ खलियाणिनिच्च मच्चरईसद्धो ॥
 सवत्तिकप्पोसाहु ॥ जणं तणसमंगणइ ४ ॥ जापार्थ ॥ अ
 जिमानी काष्ठवत कठिन होवे बिद्र देखने वाला हो
 वे प्रमादसे चूकजावे तो तिस दोषको नित्य कहे
 साधुजनोको तृण समान गणे सो श्रावक शौकन
 तुल्यहै ॥ ४ ॥ ९८ प्रश्न ॥ तथा श्रोताजन श्रावक चतुर्द
 स प्रकार उपमा सहित कहहैं यदुक्तं (मृत १ चालिनी
 २ महिग ३ हेस ४ शुक ५ स्वजावा ६ मार्जार ७ कंक
 ८ मशकौघ ९ जलोक तुल्य १० सविद्र कुंज ११
 पशु १२ सर्प १३ सिलोपमाना १४ ते श्रावका नू
 विचतुर्दशधाजवंति ॥ १ ॥ जाषार्थ ॥ पृथ्वीवतधी
 र्यवान १ चालिनीवत जिम वाणसलेय तिम अवगुन
 लेवे २ जैसाजिम पाणी गदला करी पिवे तिम

जिन वाणी मेलें प्रणामसैं सुणें ३ हंसं जिम दुध पा
 णी न्यारा न्यारां करै तिम मिथ्यातें दूर करै जिन
 वाणीके रसको धारण करे ४ तोता जिम फल कुत
 र कुतर गैरे तिम गुरुनां वचन काटे ५ श्वान जिम
 जीने करी ज्वल करे औरने देखी चुके तिम ईर्ष्या
 करे ६ बिलाव जिम छिद्र ताके जीव मारवाने तिम
 साधुना छिद्रताके ७ कागसों जिम बलकें कस जुं
 दे करे तिम संदेह दूर करे ८ मठर जिम चठका
 देवे तिम कठिन वचन बोले ९ जलोक जिम दुध
 न पीवे तिम जिन वाणी रसको न चाहे १० छिद्र स
 हित घना माहि पाणी न रहे तिम जिन वाणी याद
 न रहे ११ गाय जिम पाणी पीवे गातन जिंगोवे ति
 म प्रणाम मेला न करे शुद्ध जावसे जिन वाणी सु
 णै १२ सर्प डंकवतें वचन कहीने क्रोध करे पिण
 मुरख बुद्धी समजे नहीं जैसे (उपदेशोहिमुखीणा
 परंकोपायनशांतये पयपांनञ्चुयंगानां केवलंविश वर्द्ध
 नं १] १३ सिलाऊपर जिम मेघबरसे पिण जेदे
 नहीं तिम जिन वाणी सुणे पिण समजे नहीं १४
 अक्रोध बैराग जितिंद्रियत्वं द्विमादयासन्नजणे न
 प्रीतं निर्लोक दातानय शोक मुक्ता ग्यानप्रलब्धेश
 लक्षणानि १ ॥ ९९ ॥ प्रश्न कितनेक वादी ऐसा कहते
 हैं कि मुखपोतियं का पाठहै परंत सूत्रमे डोरेका
 पाठ नहींहै ॥ उत्तर जो डोरा नहोतो रायसी देवसी

का पडिकमेणा करे जवें इच्छामी खमासमणोके १२
 आवर्तन प्रदक्षिणा दोनो हाथ जोरके मस्तक मि
 लाट पर लगाके किसतरां करेगा मोपती मुखके बां
 धे बिना तो १२ आवर्तन तथा प्रदक्षिणा ३ का
 लमे वणें नही और तामे बिना मुहपती बंधाजावे
 नही और सूत्र जगदती शतक ९ मे उद्देशे ३३ मे
 (अठ पडलाए पोतिय मुहबंधति मुहबंधईता) ऐसा
 पाठहै तो डोरे बिना मुहपती का बंधई पाठ न हो
 ता इहातो (बंधई २ ता) कहाहै कि मुहपती
 बांधी बांधीनें और सोमिल ब्राम्हणेने अम्यमत
 की दिक्षा व्रतमे (कठमुदाएमुहबंधई बंधईता) अ
 र्थ काठकी मुखपतीसे मुख बांधीबांधीनें ऐसा निरा
 वलका सूत्र मांहिं पाठहै इस वास्ते मुहपती बांध
 नी योग्यहै और ३२ सूत्रां मांहिं किसी सूत्रमे हा
 थमे रक्खणा मुहपतीका कही कहा नही और बं
 धई का पाठ तो कई जगेहै सोइ लिखदिखलायाहै
 और कितनेक अज्ञानी विवेक रहित ऐसा कहतेहै कि
 मोहोपती मुखपर बांधेणसे मुहपतीमे जीवकी उत्प
 ती होतीहै जिसका उत्तर जैसे नठीमे अंगारे ज
 लरहैहै उनके ऊपर मट्टीकी हंडी चढा दिया उसमें
 आटा और पानी डाल दिया लेकिन जबलग नठी
 मे अग्नीहै तबलग उसहंडीमे जीव नही उपजेगे और
 अग्नीतो बुजजावे लेकिन जबलग हंडी गर्महै तोवी

जीव नही उपजेंगे जब हंडी शीतल ठंडी होजावेगी
 और जोतरका आटा तथा पानी बिलकुल ठंडा शीतल
 होजावेगा जब कितनाक काल पीठे जीव उत्पन्न होने
 का संभव है इसतरह तेनरुस - सरीर जटी समान है
 प्रत्यक्ष देखो ठंड कालकी ऋतुमे तडके के वखत आ
 दमीके मुखसे धुवाकी लाटे निकलती है साक्षात जै
 से अग्नीमसे धुवा निकलता है और कबूतर पारेवा
 पखेरू इत्यादिक कंकर पत्थरका आहार करतेते है
 लेकिन पेटमे गया फिर सब यूना बनजाता है एह स
 ब तेजरुस सरीर का पराक्रम है जैसे अग्नी जलत ज
 ठी पर मट्टी की हंडी चढी है इसतरा मुखपर मोहोपती
 है सोई मुहपतीमे जीव उत्पन्न नही होते और जो
 कोई कहै सो अपने कर्म जारी करता है.

श्लोक ॥ अनुष्ठुव वृतम् ॥ इत्यक्तं बहुशः धर्मं सा
 रस्य लिखितं मया दृष्ट्वा ग्रन्थाननेकस्य संग्रह्यते प्रथ
 मतः ॥ १ ॥

॥ इति श्री स्वामीजी ऋखराज कृत सत्यार्थ साग
 र ग्रंथका धर्मसार संग्रह नाम तृतीयो भाग संपूर्ण
 स् ॥ श्री ॥ शुभं भवतु ॥

॥ श्री वीतरागायनः ॥

॥ अथ सत्यार्थ सागर चतुर्थ भाग प्रारंभः

अथ सम्यक्त निर्णय लिख्यते ॥ अरिहंतो महादे

वो जाव जीव सूसाहूणं गुरुणं जिनपल्लतं ततं एस
 तं मे गहियं ॥ १ ॥ अस्यार्थं अरिहंतादि पंच पर
 ष्ठीमे प्रथम देव लक्षण जाणकर देव अरिहत क
 मानीये ते देवाधिदेवके गुण लक्षणोका वर्णन
 थ्यते ॥ बंद ॥ उपजातिवृत्तम् (अर्हन् जिनः पारगत सि
 कालवित् क्षीणाष्टकर्मा परमेष्ठ्यधीश्वरः शंभूः स्वयं
 र्जगवान जगत्प्रभूः तीर्थकरस्तीर्थकरो जिनेश्वरः
 स्याद्वाद्यत्रयदसार्वाः सर्वज्ञः सर्वदर्शिकेवलीनो देवाधि
 व बोधिद पुरुपोत्तम वीतरागात्ताः २) अर्हन् पुल्लि
 (चतुस्त्रिंशतिमतिशयान सुरेंद्रादिकृतां पूजां वा अ
 ति इति अर्हन्) अथवा अष्ट कर्मरूप वैरियोंको हननने
 से तीर्थकरकानाम अर्हन् है १ जिनः (जयतिरागद्वेषमे
 हादि शत्रून् इति जिनः) रागद्वेष महामोह आदि
 शत्रुवोकु जितनेसे जिनः २ पारगतः (संसारस्य प्र
 योजनजातस्य पारंकोर्थः अंतं अगमतामिति) संसा
 र समुद्रके पार जानेसें और सब प्रयोजनोका अंत
 करनेसें पारगतः ३ त्रिकालवित (त्रीनकालान वे
 ति) तीनकालकी वार्ता जाणे ४ क्षीणाष्टकर्मा (क्षी
 णानि अष्टौ कर्माणि अस्य) क्षीण होगये ज्ञानाव
 र्णादिकर्म ५ परमेष्ठी (परमेपदे तिष्ठति) परम उत्कृष्ट
 ज्ञानदर्शन चारित्रमेस्थित ६ अधीश्वरः जगतामधीष्ट
 इत्येवंशीलोऽधीश्वरः स्थसनासपिसकसोवर इति व
 रः जगत जनोको आश्रयन्तु है ७ शंभूः [शं शाश्व

तसुखं तत्र जवति] सदा सुखके समुदायहै ८ स्व
 यञ्चूः [स्वयंआत्मना तथा जव्यत्वादि सामग्री प
 रिपाकात् नतु पगेपदेशात् जवति] अपनी जव्य
 पनेकी स्थिति पूर्ण होनेसे स्वयमेव पैदा होताहै ९
 जगवान् ॥ जगः कोर्थः जगदैश्वर्यं ज्ञानं वा अस्ति अ
 स्य इति जगवान् अतिगायिने मतुः ॥ अर्थ ॥ इस
 जगतका सब ऐश्वर्य ओर ज्ञानहै जिसकुं ते जगवा
 न् १० जगत्प्रचूः (जगता प्रचूः) जगतका स्वामी
 है ११ तीर्थकरः (तीर्थते संसार समुद्रोऽनेन इति
 तीर्थं प्रवचना धारश्चेतुर्विधः संघः तत् करोति)
 च्यार प्रकारे तीर्थसंघकरे १२ तीर्थकरः तीर्थकरो
 ती ति तीर्थकरः) तीर्थसंघके प्रवर्तकहोनेसे तीर्थक
 रहै १३ जिनेश्वरः ॥ रागादिनेतारोजिनाः केवलिनस्ते
 पामश्विरः जिनेश्वरः ॥ रागद्वेषादि महाकर्मशत्रुकोके जि
 तनेवाले सामान्य केवलीकोजी जिनेश्वरः १४ स्या
 द्वादि ॥ स्यादिति अव्यय मनेकात् वाचकं ततः स्याहि
 ति अनेकात् वदतीत्येवंशील स्याद्वादी रयाद्वादोऽस्या
 स्तीति वा स्याद्वादी यौगकित्वाद्नेकात्वादी इत्यपि
 पाठः ॥ अर्थ सकलवस्तुस्तोम अपने स्वरूप करिके क
 थंचित अस्तिहै और पर वस्तुके स्वरूप करिके कथ
 चित नास्तिरूपहै ऐसात्व प्रतिपादन कर्ता रयाद्वा
 दीनामहै १५ अजयदः ॥ अजयंददाति ॥ सर्व जीवाको
 अजयदानदायकहै १६ सार्वः (सर्वेभ्यः प्राणिभ्यो

हितः सार्व) सर्व प्राणिके पर हितकारी है १७ सर्व
 ज्ञः सर्व जानातीति सर्वज्ञः सर्व पदार्थोक्तु ज्ञानकारी
 जाणते है १८ सर्व दर्शी सर्वपश्यती त्यवंशील सर्व
 दर्शी ॥ सर्व वस्तुदेखते है १९ केवली सर्वथाऽऽवरणवि
 लये चेतनस्वप्नावाविर्भावः केवलं तदस्यास्तीति के
 वली ॥ सर्व कर्म आवर्णके दूर होनेसे चेतन स्वप्नाव
 का प्रकट होना सो केवली है २० देवाधिदेवः (देवा
 नामपधिदेवो देवाधिदेवः) देवोंके देव है २१ बोधिः
 [जिन प्रणित धर्म प्राप्तिस्तां ददाति मिति बोधि
 दः] बोधबीजके देने वाले है २२ पुरुषोत्तमः (पुरुषो
 णां उत्तमः सर्व पुरुषोमें उत्तम है २३ वीत रागः वीतो
 गतो रागोऽस्मात्] दूरहुया अंगनादिकोसे राग २४
 आप्तः ॥ जीवानां हितोपदेश दातृत्वाल आप्त इव आ
 प्तः जो जीवोंके ताई हितोपदेश करने वाले है ऐसे
 गुणो संयुक्त अरिहंत देव १८ दोषोसे रहित है ते
 श्लोक ॥ अन्तराय दान लाज वीर्य जोगोपजोग
 गाः हासोरत्यरती नीति जुगुप्साशोकमेवच १ का
 मोमिथ्यात्वमज्ञानं निद्राचाविरतिस्तथा रागोद्वेषश्चनो
 दोषा स्तेषामष्टादशाप्पमी २) अर्थ दानगत अंत
 राय १ लाजगत अंतराय २ वीर्यगत अंतराय ३
 जोगगत अंतराय ४ उपजोगगत अंतराय ५ ए
 पाचों अंतरायोंके जगवानके विघ्न नहीं है हांसी ६
 रति अर्थात् प्रीति ७ अरति अप्रीतीतिथा चिंत्या ८

जय ९ जुगुप्सा अर्थात् तृष्णा १० शोक ११ काम
 अर्थात् मन्मथ १२ मिथ्यात दर्शन १३ अज्ञान
 मूढपणा १४ निद्रा-सोना १५ अविरति १६ राग
 १७ द्वेष १८ ए १८ दोष रहित अरिहत देव देव
 करिमान्नीये और यह देव स्त्री संयोग अस्त्र जपमाला
 कमंडल पुस्तक विचूति ऽस्वारी इनोके धारी नहीं है
 क्योंकि जो देव कामी होय तो स्त्री सग धारण
 करे जिस देवको बैरियांसें जय होय वह अस्त्र धारण
 करे जिसको पुराज्ञान नहीं हो वह जपमाला धारण क
 रे जो जिसका शरीर अशुद्ध होता होय वह पाणी
 का कमंडल धारण करे जिसको केवल ज्ञान वा अं
 तर जामी पणा नहो तो तिस वास्ते पुस्तक धारण
 करे जो कृत्याकृत्य धर्माधर्म हिताहित न जाणताहो
 वह विचूती रमावे और जो असमर्थपणा जिरमेहो
 वह सवारी करताहै और पशूपक्षीयोको पिडा देता
 है तिसको देव न कहीये देवता पूर्ववत् गुणलक्षणो
 सहित है ऐसे देवका जजन ध्यानस्तुती हमेस्या क
 रणे योग्यहै याने जावजीवतक इन्ही देवोको ध्यान
 करणा तथा स्तुती नमस्कार करणा योग्यहै और
 शुद्ध साधू कनक कामनीके त्यागी वहकायाके दया
 लते गुरु करिके मानीये २ और जिन, तथा के
 वली महाराजका कह्या उपदेश तिसको धर्ममे सत्य
 कर मानीये ३ ॥ दोहा ॥ देव अरिहत निग्रंथगुर

जीव दया धर्म सार ॥ एकवार आराधीयां निश्चैखेवा
पार १ ॥ ते देव ३४ अतिसय ३५ वाणीकर सहित
होय १००८ लक्षण बज्र रिषज नारायच संघयण
समचौरस संठाण जघन ७ हाथ सरीर प्रमाण उ
त्कृष्ट ५०० धनुष सरीर प्रमाण अनंत ज्ञान दर्स
न चारित्र तप बलवीर्य सहित ते देव अरिहंत के
१२ गुण अनंत ज्ञान १ अनंत दर्सन २ अनंत सु
ख ३ अनंत वीर्य ४ सोवनमय सिंहासन पाएपीठ स
हित ५ देवदुंदुभी ६ तीन छत्र ७ चौसठ चमर ८ जा
मंडल ९ अशोकवृक्ष १० देव कृत्यफूलाकीवर्षा ११
जोजनसमाणी वाणी १२ इत्यादि और अनंत गु
ण करी अरिहंत जाणीये १ गुरु ते सू साधु पाच म
हावृत पाले ॥ ते हिंस्याके त्यागी १ कुठ २ अदत्त
३ स्त्री ४ परिग्रह ५ के त्यागी श्रुत १ चक्षु २ घ्राण
३ रस ४ फरस ५ ए पांच इंद्रियांको वस करे १०
क्रोध १ मान २ माया ३ लोभ ४ कषाय टाले
१४ जावसञ्जे १५ कर्णसञ्जे १६ जोगसञ्जे १७ खि
मावंत १८ बैरागवंत १९ मन समाधारण २० वय
समाधारण २१ कायसमाधारण २२ नाणसंपन्ने २३
दंसण संपन्ने २४ चारित्र संपन्ने २५ सीतादिक वेद
नांसहे २६ मरण आए सम अहियासे २७ ए २७ गुण
जाणवा वली परिग्रहके २ जेद वाहिर परिग्रह १
माहिलो अर्थात् अजितर परिग्रह २ ते वाहिर परि

ग्रहके १० जेद-जूमि १ जान २ धन ३ धान ४
 ग्रह ५ जाजन ६ कूप ७ सयणासण ८ चौपद ९
 द्विपद १० अजित्तर परिग्रहके १४ जेद क्रोध १ मान २
 माया ३ लोच ४ हास्य ५ रति ६ अरति ७ जय ८
 सोग ९ दुगंगा १० मिथ्यात ११ वेद १२ राग १३
 द्वेष १४ सर्व मिली २४ जेद परिग्रह रहित ते शुद्ध
 साध जाणिये २ ॥ धर्म के २ जेद देसथी धर्म श्रावक
 नो १ सर्वथी धर्म साधुनो २ ते जीव दयाधर्म केवली पन्न
 तं धम्मं (अहिंसा मंजमोतवो) ते धर्म श्रद्धा स
 हित प्रमाण करिये ॥ ३ ॥ ते सम्यक्ती जीवकुं २५
 प्रकारकी मिथ्यात त्याग कर शुद्ध सम्यक्त करे ते
 लिख्यते (अधम्मधम्मसन्ना) अधर्ममें धर्म कहे
 १ [धम्म अधम्मसन्ना) धर्मसे अधर्म कहे २ उ
 मग्गो मसग्गन्ना) कुमारग कोमारग कहे ३ (मग्गो
 मसग्गन्ना) मार्गकुं कुमारग कहे ४ (अजीव जीवस
 न्ना अजीवसे जीव कहे ५ (जीवे अजीवसन्ना) जीवसूं
 अजीव कहे ६ [असाहूसाहूसन्ना) असाधूको सा
 धूकहे ७ [साहूअसाहूसन्ना] साधको असाधकहे
 ८) अमुत्तेमुत्तसन्ना] अमोद्धकुं मोद्ध कहे ९ [मु
 तेअमुत्तसन्ना) मोद्धकोअमोद्ध कहे १० ॥ अजिग्रही
 क मिथ्यात ॥ जो पकडी सोपकडी ११ (अणजिग्र
 हीक) जैननी अण शिवनी अण १२ [संसईक] मनमे
 संदेह रहे १३ (अनाप्योगी) अनादि कालकी १४

(अग्निनिसेवक) एक बचनों उथापक जमालीवत
 १५ [लौकिक) हरिहर ब्रम्हादिकको माने १४
 (लोकोत्तर) गुण रहित को गुण सहित मानणा
 १६ (कुप्परावचन) जोगी जंगमादिक १८
 (उणाइरिते जणा परुपणा १९ ॥ अइरिते ॥
 अधिकपरुपणा २० ॥ वइरिते ॥ विपरीत परुपणा
 ॥ अक्रिया ॥ दुष्टपणा माटे २२ ॥ अविनय ॥ सास्त्रकी
 अविनय २३ अन्नाण अज्ञान २४ आसातना गुण
 की तथा बडांकी २५ ए २५ प्रकारकी मिथ्यात दु
 र कर सम्यक्त सुद्ध पाले तथा सम्यक्तके ९ नेद द्र
 व्य सम्यक्त १ ज्ञाव सम्यक्त २ व्यवहार सम्यक्त
 ३ निश्चैसम्यक्त ४ निसरग सम्यक्त ५ उपदेस स
 म्यक्त ६ रुच्चकसम्यक्त ७ कारक सम्यक्त ८ दीपक
 सम्यक्त ९ प्रश्न ॥ द्रव्य सम्यक्त किसकुं कहिये उत्तर
 तीर्थकरके बचन ऊपर प्रतीत रक्खे लेकिन परमार्थ
 न जाणे नव तत्व खट द्रव्य ४ निखेपा इनके नेदा
 न नेद न जाणे देव अरिहंत साधु मुनिराय धर्म
 केवली चापित तिनकी सर्दहणा जिस्कूं होय तिकुं
 द्रव्य सम्यक्त कहिये १ ॥ प्रश्न २ ज्ञावसम्यक्त
 किसकुं कहिये उत्तर तीर्थकरके बचन ऊपर प्रतीत
 रक्खे देव गुरु धर्म इनकी सर्दहणा जिस्कूं होय न
 वतत्वकुं जाणे ते प्रथम तत्व जीव चेतनालक्षण
 अजीवजुड वस्तु २ पुण्यशुन कर्म ३ पाप अशु

४ कर्म ५ आश्रवकर्माका आवन ६ संवर करणांकुं रोक
 ना ६ निर्जरा पूर्व कर्म १२ प्रकारके तपसे दूर करना
 ७ बंध जीव अजीव संजोगसे कर्मका बांधना ८ मो
 क्ष कर्मासे निवर्त होणा अर्थात् कर्माका मोक्षना ९
 और जीव अजीव पुंण्य एह तीन जानणे लायवहै
 और पाप आश्रव बंध एह ३ मोडने जोगहै और
 संवर निर्जरा मोक्ष एह ३ आदरणे जोगहै षट् द्व
 व्यको जाणपणो करे रूपीको अरूपी बोलाको जान
 पणो करे ते नाव सम्यक्त कहिये ३ ॥ प्रश्न ३ व्यव
 हार सम्यक्त किसकुं कहिये उत्तर लक्षणे करी जा
 णे इसजीवकुं व्यवहार समकितते तथा ६७ बोला
 माहिसे ६१ बोलाके गुण करी सहित उपसम सम्य
 क्त द्वयोपसमसम्यक्त जिस जीवकुं होय तिसकुं
 व्यवहार समकित कहिये ३ ॥ प्रश्न ४ निश्चै सम्यक्त
 किसकुं कहिये उत्तर वेदक सम्यक्त द्वायक सम्यक्ती
 जे जीव होय समकत आयापीठे जाय नही तथा
 ज्ञानादिकने प्रणाम शुद्ध होय तिसकुं निश्चै सम्यक्त
 कहिये ४ ॥ प्रश्न ५ निसरगसम्यक्त किसकुं कहिये उत्तर
 निसरग समकतते पोताना द्वयउपसमे आपणी बुधे
 करी सर्व दस्तुनो प्रमाण करे साचो करी सरदेह जा
 तीसमर्ण ज्ञानकरीजाणे तेहने निसरग सम्यक्त कहि
 ये ५ ॥ प्रश्न ६ उपदेस सम्यक्त किसकुं कहिये उत्तर न
 वतत्वनो स्वरूप देव अरिहंत गुरु निग्रंथ

ली जाणित ए ३ तत्त्वना स्वरूप द्रव्यनो स्वरूप इ
 त्यादिक आगमनो स्वरूप गुरु उपदेसथी जाणे ति
 स्कुं उपदेस सम्यक्त कहिये ६ ॥ प्रश्न रुचक सम्यक्त कि
 स्को कहिये उत्तर श्री वीतराग देवनी आज्ञानें रुची स
 हित तहत करी सरदहै लौकीक धर्म जाणें लोकोत्तर
 धर्मजाणें सिद्धनो स्वरूप जाणे एतले श्री वीतरागकी
 बांणिसुं सरव वस्तुनो स्वरूप जाणे वीतरागनी अ
 ज्ञामे रुची घणी उपजे पिण उदे जावकरी संसारक
 अवस्थामे सुं निकल सके नही तिस वास्ते अनेक
 प्रकारे जाव शुद्ध आणे बिषे कपायना फल विपमा
 न जाणे धर्म साधवानी रुची घणी करे पिण उपाय
 थकी बूटसके नही ते जीव चौथे गुण ठाणेछे ते रुच
 क सम्यक्ती जाणीये ७ ॥ प्रश्न ८ कारक समकत कि
 सकुं कहिये उत्तर जो पहिले रुचक समकितमे जाव
 कह्या ते सर्व जाणकर आदरे संसारका सर्व काम
 बांणीनें बढे सातमे गुणठाणेमे प्रवरते तिसको कार
 क सम्यक्त कहिए ८ ॥ प्रश्न ९ दीपक सम्यक्त किस
 को कहिये दीपक कहतां दीवासे आगे उद्योत होई
 पाछे देखतां दीवाने अंधारो रहै एह दृष्टांत भिध्या
 ती अथवा अजवी ओराने उपदेस देईकरत्यारे पि
 ण आपतीरे नही तिसकुं दीपक सम्यक्त कहिये ९
 सम्यक्ती जीवांको दस प्रकारकी रुचीया करणी जो
 साहे ते निहीयेने ॥ जीवमरुची १ उपदेसरुची २

अज्ञारुची ३ सूत्ररुची ४ श्रद्धारुची ५ संक्षेपरुची ६
 अज्ञिगमरुची ७ विस्ताररुची ८ क्रियारुची ९ धर्म
 रुची १० एदस रुचीका जिस जीवको ज्ञान होवे ति
 सजीवको द्वायक समकती कहिजे ॥ नीसरगरुची क
 हता आश्रवरुपकामावरजे संज्ञर निर्जरारुप कामासे
 प्रवरते जातीस्मरण ज्ञानादिकसु जाणे तिसकुं निस
 रगरुची कहिये २ उपदेशरुची कहतां गुरूना उपदे
 सथी जाणनेसरदहे परतीतराखे ते उपदेशरुची क
 हिये २ अज्ञारुची किसकुं कहिये जे प्राणी रागद्वेष
 मोह खयगया अज्ञान मिट गयावे एमे अरिहंत देव
 की अज्ञा परिमाणकरे ते अज्ञारुची कहिये ३ सूत्र
 रुची किणने कहीये केवली ज्ञापित सूत्र १० पूर्व त
 था ११ पूर्व तथा १२ पूर्व तथा १३ पूर्व तथा १४
 पूर्व धारीके कहे सूत्र तिणां ऊपर रुची होवे सुणवा
 नो पढवानो उद्यम करे तिसको सूत्ररुची कहिये ४
 श्रद्धारुची किसकुं कहिये बीतरागदेवके बचन ऊपरें
 आस्ता राखे मिथ्यात्वने बोसरावे तिसको श्रद्धारुची
 कहिये ५ अज्ञिगमरुची किसको कहिये सिद्धांत अर्थ
 सहित जाणे सुणवानी जणवानी चाहघणी राखे सि
 द्धात पढवानो उद्यम करे तिणाने अज्ञिगम, रुची क
 हिये ६ विस्तार रुची किणने कहिये द्रव्यना सगला
 जाव सर्व ज्ञाणें करी सर्व नये विधीनो जाण नवत
 त्वनो जाण होय तेहने विस्ताररुची कहिये ७ क्रि

रथी गुरु तथा परतीर्थीना शास्त्र धर्म ए ३ पदारथे वह
 बोल नकरवा ते केहां ॥ वंदना हाथ जोडवा मस्तक
 नमाववो ए न करवा १ नमसण वचने करी नमस्का
 रनो करवो गुणआमनो करवो तथा मननुहरपे कर
 वो ए न करवा २ दान देवो गडरव अर्थात् अग्नि
 मान पिण न करवो धर्म बुधि ३ अनुप्रदान घणे आदरे
 आवकार सहित वस्त्र पात्रादि दान देवो नही ४ विना
 बोलावे एकवार मीठे वचने कुशल पूठवो सुखे आ
 व्याते आलाप न करिवो ५ संलापते घणोचणो पूठे
 सुखीठो किहार्थी आव्या किहां जास्योते न करवो ए
 ६ जयणा ४९ वह समकितना आगार वह आगारे
 करी समकित पालवो पिण ठीडी टालवानो खपकर
 वो ते कांई बारवार सेविवा नही राजाना आगार रा
 जादिक कहै १ गणसमुदायना आगार सज्जन कवी
 लो कहै २ बलवंतना आगार बलातकारे कोई हठ
 पडे ३ देवताना आगार देवता आवी कहै आहार
 पाणी देवे बांदला करे तो समकित चांगे नही ४ मा
 ता पिताना आगार मातपिता हठ करे मातपिताने
 कहे नक्ति करै ३ दुर्निदने बिपे अने अटवी उजा
 डमे चूले पडा होय तेहना आगार अर्थात् दुर्निदने
 अथवा अटवीमे चूला प्राणी मिथ्या मती तथा मि
 थ्यामतीना गुरु तेहने अनुंकपा हेत दान देवा ते
 आगार ६ ए ६ आगार ६५ ठे समकितनी जावना

एणे करी जाविवा समकित केहवाठे मूल उतावली
 मोह्ण फल प्रते देइ तेणेकरी सगळा धर्मनो मूल जे
 णे मूलेकरी धर्मरूपीयो वृह्ण वठे मोह्ण फल प्रति देइ ते
 णे मूल चूत १ वारणा ॥ जिम धर्म रूपीया नगरमां पे
 सवाने वारणारुप समकितठे जिम नगरमे वारणेज
 पैसाइ तिम २ नीव ॥ धर्मरूपीया महिल तेहना-नीचे
 नीव समानठे जिम वृत्त रूपीयो महिल रहे जो सम
 कित रूपीयो नीव होइ तेणे नीव चूत कहिये ३ नी
 धान चूत ॥ मूल गुण उत्तर गुण रूपीया रत्न तथा ज्ञा
 न दरसन चारित्र रुपरत्न तेहना नीधान समान स
 मकितठे ४ आधार चूत ॥ जिम सर्व जीव संसारना
 पृथ्वी ऊपरे रहेठे तिम चारित्र रूपीया जीवलोकनो
 आधार ते समकितठे ५ जाजन चूत ॥ ते श्रुतशील
 रूपीयोरस समकित रूपीये जांजने जराइ तेणे जां
 जन चूत दुध शंखना ऊपमा जिम दूध संख माहे वि
 राजे तिम खिना धर्म दया रूपीयो विनय धर्म सम
 कितना कोठा मांहिं विराजे अविनासी जाजन कह्यो
 विपयकरीने दुधने विनसाडे नही खाटो करे नही
 ए ६ जावना ६ १ समकितना ६ स्थानक तेणे करी आ
 त्मा उलख्यो जाइ ते किहां अनुभव सिद्धआत्मा चे
 तना लक्षण असंख्यात प्रदेशी सदीव सास्वतो द्र
 व्यठे अवरणी अगंधी अरूपी अफरसी ज्ञानवंतने
 प्रत्यक्ष ठे सिद्ध सरीखोठे १ द्रव्यार्थीक नयने मते शा

स्वतो परज्यायक नयने मते अशा स्वतो अनीत्य क
 रमे कीधोने अनुसारे नित्यते २ पुन्य पापनो कर्ता
 कर्मनोते मिथ्यात अविरत योग कषाय एणिकरीबां
 धिडे जिम माटी मंड चक्र दोरो तेणे करी कुंजार
 सर्व करि तिम ४ कारणे जीव करमकर ३ जुंजइ
 जोगवै पोताना कीधा पिण परकाकाधा नो कोई जो
 गवनार नथी निश्चेज ४ निर्वाण मोक्षपद शाश्वतो ते जे
 हनी उपमा सुखनी न कहिवाइ राग द्वेष रहित पुरपे
 कह्यो अनंत ज्ञानीये कह्योते सत्य ५ मोक्षनो उपाय
 समकित ज्ञान दर्शन चारित्र तप पोतानी समकिते
 आराधवो ते उपाय ६ ए ६ सम्यक्तस्थानक ६७
 एह सम्यक्तके ६७ बोल कहा ॥ और समकितके
 आठ गुण कहैते निसंका १ जिन आगममे सुक्ष्म
 अर्थ कहाते साचा सर्वहै पिण संदेह नाणे अने सात
 जय पिण न आणे ॥ १ ॥ बीजी निकंख्या गुणजे पु
 न्यरूप फलना चाह नराखणी जिहां इठा तिहा क
 र्मनो बंधते २ तीजो निविगंठागुण जे सुग न करवी
 शुभअशुभ पुदगलांनो स्वभावते अने पुन्य उदे शु
 भ संजोग मिल्या खुशी होवे अहंकार करणो नही
 पापने उदये अशुभ संयोग मिल्या दिलगिर होवे
 नही ३ चौथे अमूढद्रिष्टि गुणजे आगममे सुक्ष्म वि
 चार निगोदना ठ द्रव्यना तेसुं मुर्खवि नही जे धारणी
 आवे ते धारे जे धारणी नावे ते सरदहे ४ पाचमो

अबबुह गुणजे एणे आपणें जीवमे अनंत ज्ञानादि
 गुणते ते बिपावणो नही शुद्ध सत्ता जेहवीते तेह
 वी कहवी रागद्वेष अज्ञान कर्मनी उपाधीते जीव
 एणे उपाधीस्मु न्यारोते ५ बटो थिरी करण गुणजे आप
 णो परिणाम ग्यान ध्यानमे थिर करणो डिगावणो
 नही ६ सातमो बळलता गुण जे जीवरसुं ग्यानध्या
 न तप पडिकमण जेलोकीजीये सर्दहणा एक होवे
 तो ते आपणा साधमीते तेहनी चक्किंजे ते बळ
 लता कहीजे अथवा सर्व जीव आपणा सारीखाते
 तिणे सर्व जीवानी दया कीजे ते बळलता गुण जाण
 वो अथवा एणे आपणा जीवना साथी ज्ञानादिक
 गुणते तेहने पोखवा जे ज्ञानादिध्याननो अच्य
 स करिवो ते बळलता गुण जाणवो ७ आठमो प्र
 ज्ञावक गुण जे जगवंतना धर्मनी प्रज्ञावना महिमा
 करवी अथवा आपणो जीव ग्यानादिक गुण
 वधारण ओराने धर्म उपदेशकी बडाई करे ए प्रज्ञा
 वना गुण ८ ए सम्यक्तना ८ गुण कह्या ॥
 समकित शुद्ध करीने चारित्र आराधे तेहना २ जेद
 तिहा निश्चै चारित्र १ विवहार चारित्र २ इहा प्रथ
 म विवहार चारित्र कहेते प्राणातिपात विरमण प्रमु
 ख ५ महाव्रतरुप जे पंचाश्रवतो त्याग ते सर्व विर
 ति कहिजे अने श्रावकना १२ व्रत यूज प्राणातिपा
 ति बेरमण ते देसविरति कहिजे ए २ जेद चारित्र

विवहार चारित्र ते विवहार चारित्र सुखनो कारणे
 हवी करणीरुप साधूना ५ महाव्रत अने श्रावकना १२
 तना विवहार कर्तव्य अज्ञव्यने पिण आवे ते देवगति
 ामे पिण सकाम निर्जरानो कारण नही सम्यक्त रहि
 करणी विवहार रुपते मोक्षनो कारण नही इहां
 ष्ये जे मोक्षनो कार्ण नहीतो एतलो कष्ट क्याने कीजे
 उत्तर ए तो सत्य परंत जिनराजनो मारंग निश्च १
 वेवहार २ ए दोइ नयरोठे जे कोई एक माने तेहने मि
 थ्यात्वी जाणवो जे त्याग बुधे निश्चै ग्यान सहित
 मोक्षनो कारणे तिणने निश्चै ग्यान सहित चारि
 व विवहार चारित्र पालणो मोक्ष मार्ग निश्चै विवहार
 त्याद्वाद नय करी साधकते परंत एकांत वादी साध
 क नही ते जणी एकांत विवहारथी मोक्ष नही अने ए
 कांत निश्चै चारित्रथी पिण मोक्ष नही ते जणी दो
 नो ही चारित्रसु मोक्षते जिम अंधपुरपने कंध उपरी
 णंगु नर चढे तो दोनो मिल मार्ग उलघे तिम नि
 श्चै विवहार दोनो मिल्या संसार उलंघे ते जणी
 ते श्चै व्यवहार दोनोही आराधवा जाग्यते ॥ हिंवे
 शब्द नय ऊपर च्यार निखेपाकी चर्चा लिखीयेते ॥
 जे वस्तु गुणवंत अथवा निगुण तेहना नाम कहि
 घोलाववो ते जापा वरगणाथी शब्द कह्यो ते शब्द
 व्याकरणसे प्रकृति प्रतएधार करी शब्द सिद्ध होय सो
 शब्द नय कहिए तिहां शब्दनो जे अर्थ ते माहि होय ते

शब्द नय कहिजे जैसे अरिहंत कह बोलाव्या ते श
 इना अर्थ करया अरि कहिए कर्मरूप शत्रु हंत क
 हतां हएया ते अरिहंत कहिए अने नामादि अ
 रहंत होय ते मांहिं शब्दार्थ न होय तेहने अरिहं
 त नमाने ते शब्द नय इम तीर्थ ४ करे सो तीर्थक
 र इम शब्द भिद्व होय ते शब्द ते शब्द ४ नाम
 १ थापना २ द्रव ३ चाव ४ ए निखेपा कह्या ते
 विस्तारसुं कहैते हिवे प्रथम नाम निखेपा कहै जे
 आकारते हित गुण रहित वस्तु होय तेहना नाम
 गुण सहित सरीखी वस्तुना दीधा ते नाम निखेपा
 कह्या जिम लकमीना नाम जीव दीधा तथा काली
 डोरीना नाम साप दीधा ते नाम निखेपा तथा जिम को
 ई गोपालदारकना नाम इंद्र दीधो पिण नामना गुण
 सुधरमी सजाकेविपे बरतेते ३२ लाख विमाननी इ
 श्वर्यता करि संजुक्तहै तेह इंद्रमे बे पिण दारीद्री
 ग्रामणीना बालकमे नही ते माटे अर्थ सुन्यते तथा
 ते इंद्रना बीजा परजाये नाम मधवा १ पाक सास
 न २ शक्र ३ सहस्राक्षी ४ इत्यादि नाम ते गोपा
 लदारकने विपे नही एतला नाम नो चाव इंद्रमे
 संजवे पिण निर्गुण नामने विपे न होय पिण गर्व
 गहेली माताइं मोहांधथई व्याकुल चित्तथी आपणा
 मननी अग्निप्राये नाम इंद्र दीधो ते नामनो जे स
 व्दार्थ ते ईश्वर्यता ते मांहिं नथी ते चणी सब्द

नय पोखतां तेहने इंद्र नमाने इति नाम निखेपा १
 बीजाथापना निखेपा तेहना अर्थ कहैते जावरहित
 होय गुणरहित होय पिण जावपणाना अजिप्राय कल
 पीने थाप्या होए ते थापना निखेपा कहिये एतले काष्ठ
 पापाणनी मूरत अथवा चित्राम करी हाथो घोडाना आ
 कार कीधा होय तेहने थापना निखेपा पिण ते थापना
 ना गुणतिनमांहि नथी ते किम काष्ठ पाषाण चित्रा
 मनी गाय दुग्ध दान गुण नही इत्यादिकहेतुकरि
 सरदहीजे थापना निखेपामे जावार्थ कहता जे वस्तु
 नी थापनाले तेहना अर्थतिण मांहिं नथी प्रयोजन
 नसरे ते जणी सब् नय थापना ने थापना माने पिण गु
 ण न कहै जिम इंद्रनी मूरति बनावी मस्तके मुकट और
 कंठे हार काने कुंडल वज्रायुध सुंदर वस्त्र विजूपित
 करी इंद्र थाप्या तेहने ८४ हजार सामानीक देवता
 सेवा करता नही देवीनी जोग संबंधी इडा पूराय न
 ही ते जणी गुणविना थापनाना मोह दसाना बि
 कलपते ते शब्द नयकी अपेक्षाइं ते थापना जाव
 सुन्यते ते थापना निखेपा कहिये हिवे थापना अने
 माम निखेपा मांहिं जेद किसा ते एइ जाव सुन्यतो
 दोनोही निखेपाहै इसा प्रश्नकीधा तव गुरु कइ अ
 होजव निखेपा दोना मांहिं अरथ जेद नथी पिण
 कालथी जेदते नाम निखेपा जावजीव तांई रहै बी
 चमे मिटे नही अने बीचमे मिटैते जिम किणी बा

लक लाकडीका घोडा थापी तिण ऊपर चढी कित
 नीक देर रामत कीधी पाठे तेहज बैल थापी रामत
 कीधी पाठे गाडीरथ इत्यादि जीवथी अजीव थापी
 अजीवथी जीव थापी रामत कीधी इमहिज पिण को
 ईक कुमारी कन्याने गुड्डी थापी ते गुड्डी सामू थापी
 पाठे तेहिज वहु कीधी तेहज गुड्डी दोहर्ता तेहिज
 गुड्डी सखी पणें थापी इम नवी नवी थापना करीएवे इ
 म नवी नवी थापना एम नर मानी पिणथापना नि
 खेपानो दरमारथ लाग निखेपाने विषे नथाए नाम
 घडी घडी नवा नकलापिजे जिम इंद्रना नाम पलट्या
 न जाए थापना इंद्रनी फेरी औरनी कल्पना करजठे
 नाम निखेपा मदा रहै थापना थोडा काल पिण र
 है घणा काल पिण रहै इति थापना २ हिवे द्रव
 निखेपा कहैवे अतीत अनागत काले ते प्रजाएना
 कारणठे ते द्रव निखेपा कहावे अत्र दृष्टांत कहैवे जि
 म घृतादिना घमाठे वरतमानकाले ते घडा माहिं
 घृत नथी परं पूर्वे घी घाल्या होता तिण माटे घ
 तना घमा कहिजे ए अतीत प्रजायें द्रव निखेपा
 कहा हिवे अणागत प्रजाय द्रव निखेपा कहैवे
 जिम कुंजकारे घी घालवाना जाजन घमा तेहनें घी
 लोडी कही बोलावेठे तिण माहिं पहिलां अतीत का
 ले घी नथी घाल्या वरतमान काले ते माहिं घृत
 नथी जे आगमीये काले घी घालवाना कारणठे ति

ए चणी घोलोडी कहियेठे ए अनागत प्रजाए द्रव नि
 खेपा कहिजे दूजा दृष्टांत जिम कोई राजाना प्रधा
 नठे पाठे राजाना मन अंगथथा तेहनी प्रधान मुंद
 री उतारि लीधी तिवारें लोक सहु प्रधान कहै एह
 वरतमान कालें प्रधानपणा तिण मांहिं नथी परंत
 अतीत प्रजाय चणी प्रधान कहिजे ए अतीत प्रजा
 ए द्रव निखेपा कह्या. अने प्रधानना पुत्र कला सा
 म दंड जेद करी निपुणठे वरतमानकालें प्रधान मु
 द्रका तेहने नथी परंत आगमीयें कालें प्रधान पद
 थापवाना कारणठे तेहने लोक पिण प्रधान कहेठे ते
 अनागत कारण द्रव निखेपा कहावे ॥ तीजा दृष्टांत
 जिम अष्टोत्तर सहस लक्षण करी देह विराजे ३
 ज्ञान मत १ श्रुत २ अवधि ३ एतीन ज्ञान सहित ती
 र्थकर गृहवासें वसतां ४ अतिसे करी संजुक्त तेहने
 तीर्थकर कहिये तीर्थकरवाना कारण आगमी काल
 होसी परंतु तेहने अनागत प्रजाए द्रव तीर्थकर
 कहिये जिम सूत्रना पाठ कह्या [तएणसे समणेअग
 वं महावीरे तीसं वासायं आगारमज्ये वसित्ता] ए
 एवा आचारांग तथा कल्पसूत्र पाठ कह्याठे जे
 अतीत प्रजाय कारण द्रव तीर्थकर कहिये तथा ती
 र्थकर निर्वाण गया पाठे तीर्थकरना सरीर रह्या ते
 ह ते अतीत प्रजाय कारण द्रव तीर्थकर कहिये ए अ
 तीत प्रजाये द्रव निखेपा कहिये जिम (समणे

नगवं महावीरे कालगए जाणित्ता) इत्यादि पाठ
 नी निश्राय अतीत द्रव निखेपा कहिये अणुयोग
 द्वारे जाणग सरीर १ नविए सरीर २ जाणग स
 रीर नवियसरीर वहरित्त तत्र निखेपा द्रवना चेद क
 ह्या इतिद्रव निखेपा ३ हिवै नाव निखेपा कहैवेजे वरत
 मान काल गुणवतवे जे वस्तुना नावगुण जेहवाठे ते
 हवा वरतेवे ते नाव निखेपा जिम अरिहंत शब्दना
 अर्थ जे ते वस्तु मांहीं परगट दीसे वे ४ घातियाक
 र्म खय करी अरिहंत पद थया ते नाव अरिहंत जा
 एवा दूजा दृष्टांत जिम पूर्व पुन्योदय करि उत्पात
 सजाने विषे उपजीने सुधर्मी सजाई ईश्वर्यता गुण
 सहित बैठावे ३२ लाख विमाणवासी देव आज्ञा
 मानेवे इंद्राणी हात जोमी ऊनीवे इत्यादि ठकुराई
 सहित वरतेवे ते नावनिखेपा इंद्रमे कहिये इतिना
 व निखेपा ४ ए ४ निखेपा अणुयोगद्वार सूत्रमे क
 ह्या ते शब्द नय अनुसार जे जेहवाठे ते तेहवामा
 ने जिम नाम अरिहंत आकार नही गुण नही ते ना
 म मांहीं शब्दना अर्थ न संजवे ते नणी शब्दार्थ न
 थाय जिम किसी पुरुषना नाम अमरेठे पिण ते म
 रस्ये ते नणी नामके गुण रहित १ जिम किसीक
 नाम धनपालवे पिण ते दोहिला पेट पालेवे धनने
 पाले नथी तेनणी नामना गुण रहित ते नणी शब्द
 नयनमाने तथा नाम संगलवे पिण महा उदंगलवे त

था नाम धरमचंद्र पिण अधर्मनों चांदरे तथा नाम
 लक्ष्मीते पिण परधर घंटी पीसेते इण दृष्टाते वरी
 शब्द नयनी अपेक्षाये जे शब्द गुण रहित होय ते
 नमाने इमाहिज पिण थापना जाणवी गुण रहित जे व
 स्तुते गुण विना निवल कल्पना रूपते पिण गरज न
 सरे जिम थापना गायमे दूधना गुण नथी थापना
 स्त्रीसँ जोग कर्म नथी थापना अरिहंतमा ग्यान गु
 ण नथी इण दृष्टाते शब्द नय गुण रहित थापनाने
 नमाने इमहीज पिण द्रव निखेपा जाणवा अतीत
 अणागत गुण कारण ते द्रव निखेपाते अतीत का
 लें गुण हुंतो अथवा आगमीये काले गुण थासी पिण
 हिवणा गुण नथी अर्थात् वरतमान कालमे गुण न
 थी ते दृष्टांत करी देखावेते किसी बालकनी माता
 मृत थईने कलेवरपरयोते ते बालकने दुध धवराव
 वा गुण नथी तथा कोई पुरुषने रूपवान राजानी
 पुत्री दीठी ते पुरुषने किसी ज्ञानीने कहा ए स्त्री तु
 म्हारे पत्नी पणे थासी इम सांजली परम हरष पा
 या जाण्या ए स्त्री आगमीए काले म्हारी होस्ये तो
 पिण आलिंगण दे सके नही अणागत प्रजाए वरत
 मान कालगुण दे सको नही इमहीज पिण अतीत
 काले पूर्व जव म्हारी स्त्री होती इम निश्चै ग्यानथी
 वचनथी जाणी पिण आलिंगणदेवाय नही इम अ
 तीत प्रजाए वरतमान काले गुणवंत नथी तिण वा

स्ते द्रव निखेपाने शब्द नथ नमाने चाव निखेपा जौ
वस्तुना नामादिक करी निखेपतां तिण वस्तुना सह
त गुणना अर्थ तिण सद्द मांहिथी नीकले ते चाव निखे
पा जाणवा जिम अरिहणवे ते अरिहंत अने तीर्थकरता
ते तीर्थेकर इत्यादि अनेक हेतु जाणवा शब्दना जे अर
थ सहत वस्तु थाय तिणे चाव निखेपा कहिये ते गुणने
वस्तु माने ते शब्द नए मित्यर्थ हिवे कोईएक पाचमा का
लक प्रजावसे इण ४ निखेपाकी वाख्या विप्रीतपणे
करेवे ते इम कहे वे निखेपा च्यारो बंदनीकठे आ
पणा चाव जेलता नामादि निखेपाभे चाव निखेपा
थाय ते जणी बंदनीकठे ते विरुधठे सूत्र देखतातो
चावनिखेपा बंदनीकठे अने ३ निखेपा जेद प्रकास
रुपठे अत्र हेतु कहैठे जगवान गृहवासे वसता जविए
सरीर द्रव तीर्थकरठे तिण मांहे द्रव निखेपाठे अने
साधू श्रावक बांदना न जाण्या ते ऊपर मत पद्धी
कहेठ चतुर संघामिनी थापना नकीवी ते माटे
मिले नही अने बांदे पिण नही इम कहे तेहने दू
जा प्रमाण बतावेठे तीर्थकर मोक्ष गया सरीर रह्या
महुरत प्रमाण ते सरीरमाही (जाणग सरीर) द्रव नि
खेपाठे ते सरीरने पासं गणधर साधू बता
होता ते सरीर जणी बंदनी न करे ते क्यून करे
द्रव निखेपा बंदनीक होय तो गणधर साधूवाने अ
वस्य बांदवा जोइजे अने गणधर साधू बांदता न

जाण्या ते द्रव निखेपामे चाव जेळीने बंदना न की
 धी एअनुमान प्रमाणथी जाणीयेते तो चाव निखेपा
 बंदनीकठे अने जाणनचविये सरीर द्रव निखेपामे
 चाव जिल्या नही तो थापनामे चाव जेळीने बंदणा
 किम होसी ते अनुमान प्रमाणथी उलखणा करवा
 जोगठे जो आपणा चाव जेळी थापनामे चाव नि
 खेपा थाय तो द्रव निखेपामे चाव जिले स्युं नथी इ
 न प्रमाणे आगम प्रमाण देखतां तो चाव निखेपा
 बांदणीकठे इति ४ निखेपाकी चर्चा संपूर्णम् ॥ अर्थ
 आज्ञा अणाज्ञा सावद्य निरवद्य इत्यादि बोलांनी च
 र्चा लिख्यते ॥ ते पिण नय प्रमाणे प्रमाण करि देखि
 ये श्री जिन धर्म आज्ञामेठे आज्ञा बाहिर नथी इम
 सर्व कहैठे पिण एहना विचार आलोचवा अर्थात
 विचारवा अति कठिनठे ते कहैठे जिनराजनी आ
 ज्ञा दोय जेदनीठे एक उपदेस १ बीजी आदेस २
 हिवे ए दोइ आराधना जिनराजनी आज्ञा उलंघा
 ए नही इहां चोचंगी थायठे ते कहैठे प्रथम चागा
 उपदेसवी देवे अने आदेसवी देवे १ ते पहिला चागा
 ते माहिं सिजाए ध्यान पोसह व्रतादि जाणीये १
 अने दूजा चागा उपदेस तो देए पिण आदेस न
 देय ते इस चागा माहिं जिम धावकने उपदेस दीजे
 ठे साधूने आवताने लेणजाय रह्यानी सेवा करे जा
 ताने पहुंचावण जाय तथा साधु आवे तो उजा था

यवो इत्यादि उपदेस देवेते पिण श्रावक पूठे साधू
 ने पहोचावण जावांतां इम पूठ्या साधू आदेस न
 देइ अहो श्रावक जात इसो न कहणा ते बीजा चां
 गामे जाणवा २ तीजा चागा उपदेस दे नही आदे
 स देवे ते मांहीं नदी उतरवानी तथा मेघ वरसते
 बाह्य जोम जावानी मेघ वरसते लघुनीत प्रमुख पर
 ठवानी आज्ञादे पिण उपदेस न देवे अहो शिष्य न
 दी उतरवा मेघ वरसते बाह्य जोम जावामे वडा लाज
 ठे अवस्थ जाएवा जोगठे इम उपदेस तो न देवे
 पिण कारज पड्या आदेस आज्ञा देइ एतीजा चागा जा
 णवा ३ चौथा चागामे आदेस न देवे ते हिंस्यादि का
 रज ४ तथा चौथा चागाना दोय जेदठे एक तो उ
 पदेस न देवे आदेस न देवे निषेध करे अर्थात् मने
 करे ते १८ पाप जाणवा १ अने बीजाजेद उपदेश
 न दे पूठ्या निषेधे पिण नही ते वित्त पूठे निषेधे न
 ही दुषित चूषतके दानादिकको जिस मांहीं पुंन्य पा
 प जेलाठे ते कार्यनी उपदेस आदेस आज्ञा पिण नही
 निषेधपण नही अर्थात् मने करे नही तेहनी साख सूथ
 गडांग सूत्र अध्ययन ११ मे की (जे ये दान पसं
 सांति वहमिठंतिपाणीणो जेदाणंपस्सिसेहंति वित्तिवयंक
 रंतिते ॥ दुहुजवितेण चासंति अत्थिवा नत्थिवापुणो आ
 थंरयस्सहंत्थिण निवाणंपाउणंतिते २) जे मिथ्यात् म
 ते दानादि प्रसंसत्ता प्राणि वध वांठे और दातादि

निषेध करतां घणानी वृत्तीं आजीवकाना भेद करे
 अर्थात् जंग करे इण गाथाको देखतां मिथ्याती-
 दानादिक निषेधे नही क्योंकि साजला पुन्य-पाप
 जेलावे किणी ठामे पुन्य-घणो पाप थोडो केणे ठामे
 पाप घणो पुन्य थोडो इतिज्ञेयम हि वै ७ नय दृ
 ष्टांत करी उतारेवे अनुयोगद्वार सूत्रमे कहरा वासा
 रद्विवा ऊपर नय ७ दिखाडेंवे जिम किसी पुरपने पूब्या
 तुं किहा वसेवे तवते बोल्या लोकमा वसंतुं ए वचन
 नएगम नयरोवे परंतु नयगम नय अशुद्धवे जिसने
 लोकमा वसता कहरा ए अशुद्ध नयगम जाणवी व
 ली तेहनेहीज पूब्या लोकतो ३ है स्वर्ग १ मृत २
 पाताल ३ तुं किसी लोकमे वसेवे तिवारे थोडीसी
 शुद्ध नयगम वाला कहैवे हूं मृत लोकमा वसंतुं ए
 शुद्ध नयगम वाली पूब्या तिरवा लोकमा असंख्या
 ता द्वीप समुद्रवे तुं किसी समुद्रमा वसेवे तिवारे
 बोल्या हूं जंबूद्वीपमा वसंतुं ए और शुद्ध नयगम
 नयरो वचनवे वाली पूब्या जंबूद्वीपमां जरत प्रमुख
 क्षेत्र घणावे किसी क्षेत्रमा तुं वसेवे तिवारे बोल्यो
 मगध देसादि देसमा वसांतां ए और शुद्ध नयग
 म नयरो वचनवे वाली पूब्या मगधदेसमा नगर
 ग्राम घणावे तुं किसी नगर तथा ग्राममे वसेवे ति
 वारे बोल्या नालंदा प्रमुख पाडानो नाम लेई कह्यो
 अमके पाडे वसंतुं ए और शुद्ध नएगम नयरो व

घनठे बली पांडामे घर घणाठे तु किंसा घर मारहे
 ठे तिवारे बोल्या अमुके घरमा मधशाला प्रमुख ना
 नामलीधा ए और शुद्ध नैगम नयरो वचनठे बली
 पूठ्या घरमा जायगा घणीठे तु किसी जायगामे बसे
 ठे तिवारे बोल्यो अमुकी जायगामे वसुंतूं जिसजाय
 गा ढोलीया प्रमुख जिस जायगानो नाम लीधो ए
 वचन अत्यंत शुद्ध नैगम नयरो वचनठे इहा लगे
 नैगम नयरा वचनठे शुद्ध अशुद्ध विकल्प जाणवा
 इति नैगम १ बली पूठ्या घरमा जायगा घणीठे तुं
 किसी जायगामे रहेठे तिवारे बोल्या जिसजायगा ढो
 लीया प्रमुख विठावणा रहेठे इतरी जायगामे रहुंतूं ए सं
 ग्रह नयरो वचन जाणवा जे नणी ढोलीया तथा विठा
 वणा तथा सरीरने जायगारुंधीठे ते सर्व आपणामे
 संग्रह्या ते नणी संग्रह नयरो वचनठे २ बली पूठ्या
 ढोलीया परमुख विठावणामे खेत्र घणाठे तु किंसा
 खेत्रमारहेठे तिवारे बोल्या सरीर अवगाहणा प्रमाण
 खेत्रमा रहांठा ए विवहार नयरो वचनठे जेणे ढो
 लीया प्रमुखनी जायगा टालदीधी जीवनो व्यापार
 वरते हालण चालणरो तेतली जायगालीधी इति
 विवहार नय ३ बली पूठ्या असंख्यात प्रदेशमा स
 रीर अवगाहणा प्रमाण खेत्रमे धर्मास्ति १ अधर्मा
 स्ति २ पुद्गल प्रमुखनी पिण अवगाहनाठे तु कि
 सी अवगाहणामे वसेठे तिवारे बोल्या चेतन गुण

मे वसांठा जे चेतनाठे ते मांहिरे गुणठे अने धर्म १
 अधर्म २ चेतन स्वभावठे ते मांहिं माहिरा गुण नथी इ
 ए न्याये चेतन गुणम वसुंतं एक्रुजु सूत्र नयरो वचन
 ठे वली पूढ्या चेतन गुणनी प्रजाय अणंतीठे तु कि
 सी ग्यान चेतना अज्ञान चेतना इत्यादि चेतनाठे
 तु किसी चेतनामे बसेठे तिवारे बोल्या ग्यान चेत
 नामे वसांठा इहां अज्ञान मिथ्या दृष्टी प्रमुख अशु
 द्ध चेतना टाली ए शब्दनयरो वचनठे ५ वली पूढ्या
 ग्यान चेतन गुणनी प्रजाय अणंतीठे तु किसी ग्यान
 चेतन गुणमा बसेठे मत्यादि ग्यानना चेद घणाठे
 तु किसी चेतना गुणमा बसेठे तिवारे बोल्या आत्म
 स्वरुपमा वसुंतं आत्मानुभव ग्यान चेतना गुणमे
 वसुंतं इहा व्यवहार ज्ञान टाल्या निमा ग्यान चेत
 न गुणमे बतायो ए समजिरुद्ध नयना वचनठे ६ व
 ली पूढ्या आत्मानुभव चेतन गुणमे तो हानि दृद्धि
 घणीठे जाव अपेक्षा घणा स्थानकठे तुं कोणसे ठि
 काणे बसेठे तिवारे बोल्या जे हुं शुद्ध क्हायक जाव
 अवस्था निजरुप सच्चिदानंद शुद्ध ध्यान रूपाती
 त एहवा जे सिद्ध रूप अवस्थाने ठिकाणे वसुंतं एह
 एवंचूत नयरो वचनठे एवं वासा ऊपर ७ नए कही
 हिवे जीव ऊपर ७ नय उतारेठे नएगम नय निम
 ते प्रजाए प्राण सहित सरीरने जीव कहै ते सरीरमाहिं
 धर्मास्तिका ए देस प्रदेश एवं अधर्मास्तिकाए देस १ प्र

देस २ आकाशास्तिकाय देस १ प्रदेस २ तथा पुद्गल
 ल प्रमुख अजीवना चेद सरीरावगाहणात्ते ते जीव
 मां गिण्या १ अथ संग्रह नय निमित्ते असंख्यात प्र
 देसावगाहणाने जीव कहै इहां आकासटाल्या धर्म अ
 धर्म तथा तेहज सरीर सर्वधी पुद्गल जीवमा गि
 ण्या २ तिवारे विवहार नय वाला कहे वासना वि
 प्रयादिकनी लेवेते ते जीवते एणे इंद्री जीवमा गि
 णी अने मोठा पुद्गल टाल दीधा द्रव लेस्या द्रव
 जोग मन प्रमुख जीवमा गिण लीधा कारणे इंद्री ले
 स्या जीवधी न्याराते पिण जीवना व्यवहारते इंद्री
 लेस्या जोगना व्यवहार देखी जीव जाणीजेते ते न
 णी विवहार नयने मते इंद्री लेस्या जोग जीव
 मे गिण्या ३ तिवारे ऋजुसूत्र नयनेमते उपियोग
 ने जीव कहै इण नय निमित्ते लेस्या इंद्री वासना प्र
 मुख सर्व पुद्गल टाल दीधा परंतु शुद्ध तथा अशु
 द्ध उपियोगने जीव कहै ग्यान तथा अज्ञान बेहुने
 जीव कहा जे कारणे अज्ञानमे मिथ्यात मोहनी कर्म
 नी वर्गणा जेली जीवमा गिण लीधी ते ऋजुसूत्र न
 यरो वचनते ४ तिवारे शब्द नय वाला कहैते जीव
 शब्दनी अर्थ मिले तेहने जीव कहै अर्थ (जीव जी
 वित जिविस्सइ) पूर्वे जीवे अवजीवे आगे जीवसी ए
 हवा अर्थ संभव तेहने जीव कहै इण द्रव्यात्माने
 जीव वतायो आत्मानाने गुण सदा जीवते ते नणी

जीव कहैठ इण तैजस कारमण तथा आउखा
 र्मना उपियोगसा पुदगल तथा परगुण ते जीव
 अनादि संगी जीवमा गिण लीधा ए शब्द नयन
 वचनठे ५ तिवारे समजिरूढ नय वाला कहैठे द्रव्य
 त्माने परगुण पिणठे ते जीवमान गिणजे शुद्ध स
 रूप सत्ता जेणे उलखी आत्माना स्वद्रव १ स्वखे
 २ स्वकाल ३ स्वभाव ४ निजगुण रमणरूप सम्
 क दृष्ट अनुभव आस्वदित मोह ग्रह स्थलता रहि
 होय तेहने जीव कहिये एणे क्वायक सम्यक्त प्रमु
 ने जीव कहा ए समजिरूढ नयना वचनठे ३ ति
 वारे एवं नूत नय वाला कहै अणंत ज्ञान अनंत
 सन सुद्ध रूप चेतन कर्म रहित तेहने जीव कहैए
 नयने मते तो सिद्धने जीव माने निमा जीव सि
 है एह एवं नूत नयरो वचनठेए ७ नय जीव ऊपर
 तारी हिवे ७ नय धर्म ऊपरि कहैठे नैगम नयने स
 र्व धर्मने धर्म कहै जे कारणे सर्व पाखंडी जनठे जे
 ला धर्म चाहेठे एहनी बांठा धर्म करवानीठे एणे न्य
 ये करी सर्व धर्मने कहे ते ठाणांगि १० मे ठाणे कहे
 (दसधम्मे पन्नते तंज्जहा गामधम्मे १ नगरधम्मे २
 कुलधम्मे ३ गणधम्मे ४ पासंन धम्मे ५ संघव
 म्मे ६ गिहत्थधम्मे ७ सुएधम्मे ८ चरित्तधम्मे ९
 अत्थिवाय धम्मे १०) इहा गाम धर्म नगर धर्म इ
 त्यादि वचन नैगम नयना जाणियेठे एक अस रूप

ते कहेंगे एवं नैगम नय १ हिवे संग्रह नयवाला कु
 ल धर्मने धर्म कहेंगे बने बडेरा आदरघाते धर्म ए
 णे नय निमते अण्णचार ठोरुया पिण कुलाचारने ध
 र्म माने ते मे अधर्म कुलाचार पिण धर्मने गिणली
 धा ए संग्रह नय २ ऋजुसूत्र नय वाला उपयोग स
 हित वैरागरूप प्रणाम होय तेहने धर्म कहे एणे न
 य निमते यथा प्रवृत्ति करण ना प्रणाम प्रमुख सर्व
 धर्ममा गिएया इसा उदासीनता प्रणामरूप मिथ्या
 तीने पिण थाय ए ऋजुसूत्रना वचनठे ४ हिवे शब्द न
 य कहेंगे शब्द नय वाला सक्तने धर्म माने सुयधर्मे
 १ चरित्तधर्मे २ ए वचन शब्द नयरोठे सम्यक्त धर्म
 ना मूलठे संसार बूमता जीवने उधरि राखे ते धर्म
 कहें ए अचृती समगदिष्टीने पिणथाए ए शब्द नयरो वच
 नठे ५ हिवे समनिरूढ नयवाला चारित्र प्रमुख उ
 पादेय वस्तुने ध्यावे तेहने धर्म कहे प्रवस्तुथी विर
 क इंद्री विषयानिलापारूपहो ए वस्तुना त्यागवो
 ते साधक पदठे तेहने धर्म कहे एणे व्यवहार त्याग
 ने धर्म कहे ए समनिरूढ नयना वचनठे ६ हिवे एवं
 जूत नए निमते ते जीवना मूलस्वभावते धर्म कर्म
 वर्गणाथी जिन थायवो ते धर्म शुक ध्यान रूप द
 पक श्रेण चढवा ते कर्म खएना कारण ते धर्म कहे आ
 त्मा उज्वलपणा थाय ते धर्म कहे एवं जूत नयरो
 वचनठे ए ७ नय धर्म ऊपर लगावी ॥ हिवे सिद्ध ऊ

पर ७ नय लगावेते नैगम नए निमते तो सर्व जीव सिद्ध समानते सिद्धथावानी सक्त सर्व जीवमाते परंतु द्रवात्मा सर्व जीवनी सरीखी ते जणी आगम प्रजाय लेईने तथा द्रवात्माना असंख्यात प्रदेसपणा लेईने सर्व जीवने सिद्ध कहै १ संग्रह नय वाला कहै द्रवार्थिक नयरी अवस्था अंगीकार करी सर्व जव जीवनी सत्ता सिद्ध रूपते सिद्ध जीव १ संसारीजीव २ द्रव एक ते द्रवात्मामे निरुता नही कर्म जेदते परंतु द्रव जेद नथी एकजातते सर्व जव सीजिती ए संग्रह नयना वचनते २ विवहार नय वालो विद्या लब्धि प्रमुख गुण साधीने बाह्य तप प्रमुख करि कार्य सिद्ध कीनो ते सिद्ध कहिजे जिम अमुके विद्या सिद्धते ते बाहिर वस्तु सिद्ध कीनी ते विवहार सिद्ध ए विवहार नयना वचनते ३ ऋजुसूत्र नय वालो सम्यगदृष्टीने सिद्ध कहै जे जणी सिद्धसत्ता आत्माारी उलखी जे अने ध्यानना उपियोग वरतेते सिद्ध अवस्थामे वरतमान समे सिद्ध समान ध्यावेते इण न्याये ऋजु सूत्र नये सम्यक्तीने सिद्ध कहे ए ऋजुसूत्र नयना वचनते ४ शब्द नय वाला जे शुद्ध ध्यान रूप परणामरूढ थयो गजसुकमालनी परे निजगुण सिद्ध कीनो तेह रूप ध्यानने सिद्ध कहै सर्व कार्य सिद्ध काधा जे निजगुण ध्यावेते तेणे ए शब्द नयना वचनते ५ हिचे समजिरूढ नय वाला केवल ज्ञान १ केवल

दरसन १३ मे १४ मे गुणस्थान वरती मुक्तने स
 नमुखहुवा सलेसी अवस्थाने सिद्ध कहे ए समाजेरू
 ढ नयना वचनठे ६ हिवे एवं नूत नयवाला सकल
 कर्म खपाए लोकने अंते विराजमान अष्टगुण संपन्न
 तेहने सिद्ध कहे एह एवं नूत नयना वचनठे ए ७
 नय सिद्ध ऊपर लगावी हिवे ज्ञान ऊपर ७ नय ल
 गावेठे ग्यान ते मुक्ति कार्ण इहा नैगम नयवाला जा
 एपणा नणी अज्ञानने पिण ज्ञान कहे तथा अक्ष
 रादिकने पिण ग्यान कहे एक असग्याननोठे ते न
 णी ज्ञान कहे नगोती सूत्रमे जिम (नाणेअठ वि
 हे) ए नैगम नयरो वचनठे जिम श्रुतज्ञान १४ नेद
 मांहि अक्षर श्रुत १८ जातिनी लीपीना व्यंजन अ
 क्षरना आकार लवध अक्षर ते आकार देखीने जा
 एपणानी लवध उपजे ते मिथ्या श्रुतना अक्षर पि
 ण श्रुत अज्ञानमे आया तेहने पिण आठ ज्ञानमा
 ग्यान कह्या एक अस ज्ञानवरणी कर्मना क्योपस
 मथयो तैतला मुक्तिने अस जाणवा कर्मथी मुकाय
 वा ते मुक्ति कहिजे ते नणी अज्ञानने पिण ज्ञान क
 हे ए नैगम नयरो वचनठे १ हिवे संग्रह नय कहे
 ठे संग्रह नयवाला एकाहि ग्यान कहे ५ ज्ञान ३ अ
 ज्ञान सर्व नाणमे (एनेनाणे) इति वचनात ए संग्र
 ह नयरो वचनठे २ हिवे विवहार नयवालो ज्ञानी
 ने ज्ञानी कहे अज्ञानीने अज्ञानी कहे वा

इस विवहार देखे जैसा कहे अर्च्यंतर जाव न लेवे
 जैसे कोई सूत्रके अर्थ विस्तारसुं धर्म कहता होइ ते
 हने विवहार नय वालो कहे ए बड़ा ग्यानीठे अ
 नंतर स्वरूप न लेवे ए विवहार नय ३ ऋजुसूत्र न
 य वाला जे जे ज्ञानने विषे प्रयोग प्रवर्तता हाय ते
 हज ग्यानी कहिए जैसे षडमस्तने ४ ज्ञान विवहार
 नयने मते कहे अने ऋजुसूत्र नय वाला अतीत
 अनागत माने ते जणी ग्यान कहे एक जो मत ज्ञा
 नने विषे उपियोग वरततो होए तो मत ज्ञानी क
 हे जे कारणे एकसमसे एक ग्यान विषे उपियोग व
 रतेठे जे ज्ञान विषे उपियोग वरते तेहज ज्ञानी कहे
 ए ऋजुसूत्र नयना वचनठे ४ इसहीज अग्यान पि
 ए दर्सन जाणवा ए ऋजुसूत्र ४ शब्द नय वाला स
 म्यक्त सहत ९ पदार्थ जाने तेहने ज्ञान कहे ते शब्द
 नयना वचनठे ५ समनिरूढ नयनी अपेक्षा ए स
 म्यक्त सहत ज्ञानवंत परगुणसे विरक्तहोए तेहने ग्या
 न कहे ग्यानने सनमुखथावो ते परगुणसे विरक्त हो
 णो ते समनिरूढ नयना वचनठे परगुण बो कहीये
 के जो ७२ कला विधि चतुसई लौकिक ते तिस प
 रगुणसे विरक्त होणो ६ एवं जूत नय वालो केवल
 ज्ञानने ग्यान कहे ७ एवं ७ नय ग्यान ऊपर लगावी
 हिवे धर्मास्ति काया ऊपर ७ नय नैगम नय एक प्रदेश
 ते धर्मास्ति काय कहे जे कारणे नयेगम नयवाला

एक अंसने वस्तु माने १ देस प्रदेशादिने अस्तिका
 ए कहे जे कारण अस्तिकाएँ देस प्रदेश आया ए
 सग्रह नय २ विवहार नय प्रदेश प्रदेश विपे जीव
 पुद्गल गतगमण करेते ते धर्मास्तिका विवहार पट
 गुणी हान वृद्ध रूप धर्मास्ति कहे ३ ऋजुमूत्र नय
 जीव पुद्गल चालता धरतमानकाले गत गुण करे
 तेहने कहे अतीत अणगत काल न लेखवे ए ऋ
 जुमूत्र नय ४ सद् नय वाला स्वभावने धर्मास्तिका
 ये तैतले ग्याणादिना उपियोगमुं धर्मास्तिके जाणे
 ५ समजिरूढ नए वाला गुण परवरत्तन जाणे ते ध
 र्मास्तिका गुण प्रवर्त्तताने देखे ते समजिरूढ ६ एवं चू
 त नय धर्मास्तिका अनेकातस्वरूप सप्त जंगी सप्त न
 य प्रमुख करी सिद्ध वचन थाए तेहन कहे एतले नि
 श्चै ग्यानने धर्मास्तिकाहे कए एवं चूत नय ७
 इण प्रकारे धर्मास्तिपिण कहवा २ आकास्ति नैग
 म नय एक आकास प्रदेशने ए आकास्ति कहे १ सं
 ग्रह नय (ए गेलोए एगेअलोए) खंधदेस प्रदेश ने
 द न करे २ विवहार नए अधी लोकना आकास १
 तिरहा लोकना आकास २ उरध लोकना आकास
 ३ लोकाकास ४ अलोकाकास ५ घटकास ६ इत्यादि
 नाम लेई कहे जैसा बाह्य विवहारटे जैसा कहे ते
 विवहार ३ ऋजुमूत्र पटगुणी हान वृद्धि रूप क्रिया
 करता आकास एतले जीव पुद्गलने अवकास दे

ता ते आकास ४ शब्द नय वाला आकास उगाह
 लक्षण विकासपणाने एतले पोलाडने आकास ५ स
 मन्निरूढ आकासना गुण जीव पुद्गल ऊपर थया
 ते आकास ६ एवं नूतनये आकासना द्रवगुण प्र
 जाएना जाणपणाते आकास ७ ए आकास ऊपर
 ७ नय लगावी हिचे कालदरव ऊपर ७ नय कहैते
 नैगम नय अतीत अनागत वरतमानरूप एक सम
 यने कहे एक गुण तीन कालना समएनोते ते असने व
 स्तु कहै इणन्याये १ संग्रह नय अनेद रूपसम आ
 वलका आद सर्पणी उत्सर्पणी प्रयत सर्व काल
 वरतणरूप एकते २ विवहार अढाई द्वीपमा दिनरात
 अएण संवत्सर प्रमुखते अढाई द्वीपबाहिर कालना सं
 ख्या रूप विवहार नथी ते विवहार काल अढाई द्वी
 पमाते दिनरात संख्या विवहार नय ३ ऋजुसूत्र
 नय वर्तमान कालना सम कालते अतीत काल वि
 एस गया अणागत काल अजी आया नथी ते न
 णी काल तो वरतमान समते एऋजुसूत्र नय ४ स
 द नये जीव अजीव ऊपर वरतेते अनंत प्रजाए ते
 हने काल कहै ५ समन्निरूढनए जीव पुद्गलनी
 थित पूर्ण करवाने सनमुख थया तेहने काल कहै ६
 एवं नूत नए कालना द्रव गुण प्रजाएना ग्यान
 पणाने काल कहै ७ हिचे पुद्गल ऊपर ७ नय कहै
 ते नैगम खंधना एक गुणमा गुण नही जिम एक

गुण कालाने काला पुद्गल कहै एक अंसने ग्रहवे
 करी वस्तु कहे ते जणी १ संग्रह नय पुद्गल द्रव
 एकठे ऐसा कहणा ते संग्रह जे कारण पुद्गल द्रव अ
 णंताठे परंत पूर्ण गलण स्वभाव सर्व इमठे ते जणी
 जेदान जेद न करे ते संग्रह जिम ठाणागे (एगे पो
 गलतिकार) ए संग्रह नयका वचनठे २ विवहार
 नय साथे लागा ते उपियोगसा जिम करम वरगण
 नी पुद्गल १४८ प्रकृतता चिन्न चिन्न स्वभाव ते उ
 पियोगसा पुद्गल १ जीवने ठोड्या परकारांतरपणे
 परणम्या नही जहांलगे मसिा पुद्गल २ स्वभावे
 मिले स्वभावे विखर जाय ते अचू पटल इंद्रधनुष
 प्रमुखना पुद्गल ते बीरसा पुद्गल ३ बाह्य विवहार
 देखे जसा कहै ए विवहार नय ३ ऋजुसूत्र नय पूर्ण
 गलणने पुद्गल कहै वरतमानकाले गुण होय सो क
 है ए ऋजुसूत्र नय ४ शब्द नय पूर्ण गलणरी क्रि
 याने पुद्गल कहै एक प्रमाणयामे गुणठे तेहिज अ
 णंत प्रदेशमे गुण एकठे ते शब्द नय ५ समचिरूढ
 नय वाला कहै एक अणुमे बीस गुणी एक एक गुण
 मे एक गुण लगाये अणंत गुणपरजाये ते मांहिं पटगुणी
 हान वृद्धि रूप प्रजायेफिरे तेहने पुद्गल कहै ६ एव चू
 त नय वाला पटगुणी हान वृद्धि प्रगट होय ते पुद्
 गल ७ इति पुद्गल ऊपर ७ नय लगावी इत्यादि
 सर्व पदार्थ ७ नय करी प्रमाण कीजे ए ७ नय माने

तो सस्यक्ती एक नय मानेठे नय न माने २ नय माने ५ नय न माने इम जावत वह नय न माने एक नय नमाने ते मिथ्यातीठे ऊक्तंच [सत्तनयात्रिणेषु णीया सद्वहंतासमदिठी एगोपुणनसद्वहंतो मिढादिठी उनाएवा [१ ए ७ नयसुं वचन सिद्ध थायते प्रमाण अने ७ नयसुं असिद्ध वचन होय ते अप्रमाण ॥ इति सप्त नय चर्चा संपूर्णम् ॥ अथ अजीव मती चरचा लिख्यते ॥ प्रश्न अजीव मती किणने कहिये उत्तर श्री तीर्थकर महाराज ने २४ जानके धान ने तथा इण उप्रांत अनेक जातरा धान होवे तिणमे तथा बीज फलसु न्यारा हुवा पठे तथा तलावका पाणीमे तथा प्रत्येक बनस्पती प्रमुख ठिकाणोमे केवल ज्ञानीने एकेंद्री जीव वत्तायाठे अजीव मती इसमे जीव नथी मानता ते जगवंतनी आज्ञा विराधकठे जैनी साधु श्रावक नाम धरावे पिण पूर्व कहे ठिकाणोमे जगवंते जीव कह्याहै एजीवानी रक्षा करे अनुकंपा करे ते जीवांने बचावणको उपदेस देवे ते उपदेस देणे वाला तथा बचावणे वाला साधु अथवा श्रावक जगवंत महाजकी आज्ञाका अराधकठे अने ए वचनाने नमाने ते मिथ्या दृष्टी जाणवा ॥ प्रश्न केई बीज फलथा न्यारा तथा पठे बीजमे जीव न माने तेहनो उत्तर लिखीयेठे प्रथम आहारके प्रमाणमे सुयगडांगके श्रुतस्कंध दूजा आहार परिज्ञा

अध्ययनमे अग्र बीजादि ४ जातिना बीजये वे दिस
ना आव्या पुद्गलनो आहार वरे और वही कायके
पुद्गलांको आहार जावत् (पुढवी सिणैह माहा
रंति) इत्यादि पाठ देखता तो ऐसा निश्चै नही दी
याहै अग्र बिजादि पृथ्वी ऊपर जलकाही आहार ले
इ इण न्याये पवनादिकना आहार बीजने पिणवे ॥ प्रश्न
किसीकुं ऐसा सदेह ऊपजे पाचथावरमे एक जीव कहा
नही संख्याता असंख्याता अनंता जीव कहाहै तो
बीजमे १ जीव किम मानीये तेहनो उत्तर पत्तादि ७
स्थानमे बीजमे एक एक पन्नवणा सूत्रमे कहाहै ते
हनी निश्चाये और जीव ऊपजे जिम लाखनी गो
ली अग्निसे तपायने तिलामे नाखेतो तिल लाखनी
गोलीसुं चिमटे तिम एक जीवनी निश्चाये संख्याता
असंख्याता जीव ऊपजेवे ते नणी एक जीवनी कहीजे
संख्याता असंख्याता नी कहीजे एणे न्याये एक
जीव कहता संख्याता असंख्याता के पाठमे विरुद्ध
नही निश्चाय झूत जीव चवथा एक रह्यो ते नैगस
नयने मते अतीत प्रजाए अपेक्षाये संख्याता असं
ख्यातानो पाठ विरुद्ध न थाय सर्वज्ञ वचन स्याद्वा
दवे अणंत नयात्मक वे जिसका हेतु पूढ्यो पन्नव
णाजीमे १ वणस्पतीमे (सिय संखेळा सिय आसं
खेळा सिय अणंता) एहवो पाठवे वलि इम कह्यो
(जत्य एगो तत्य नियमा असंखेळा अपज्जता)

तो सिय संखेजानो पाठ किम संनवे इण
 न्याये देखता एकने संख्याता नैगम नय पूर्व प्रजा
 ए अपेक्षाई विरुद्ध नहीं एहना परमाण प्रौढज्यो प
 न्नवणा १८ मा पदमा कायस्थित पदमे सांगारोवतं
 ता अणगारोवतता उपियोगनी काय स्थित अंतर मु
 हुर्तनी कही केवल ज्ञान केवल दर्सननी काय स्थित
 एक समयनीठे प्रथम समय ज्ञान बीजे समयदर्सन
 दर्सन पूर्ण जानठे ते एक समयनी स्थिति परंतु इम
 न कही ४ ज्ञान ३ अज्ञान ३ दर्सननी काय स्थित
 अंतर मुहुर्तनी केवल ज्ञान केवल दर्सननी इम एक
 समयनीठे इम तो नहीं कही जे कारणे संग्रह वच
 न अपेक्षाई १ समयने अंतर मुहुर्त कहीजे इण
 प्रमाणे नयेगम संग्रह नय अपेक्षाई एकने संख्याता
 कहता विरुद्ध नहीं कोई इहा प्रश्न पुठे अनुयो
 गद्वारे प्यालाने अधिकारे दोइने जघन्य संख्या
 ता कहा एकने किम न कहा तेहनो उत्तर सूत्रनो
 प्रमाण उलखज्यो विशेष अविशेषपणे सूत्रमे विस्ता
 र कीधो जिम किये किये ठामे विशेष शब्दे स वेदी
 नी काय स्थित मनयोगी बचनयोगी १ समय कही
 अविशेष शब्दे केवल ज्ञानी एक समयनी स्थितिने
 अंतरमुहुर्त कही इण प्रमाणे एकने संख्याता कहिता
 विरुद्ध नहीं पठे केवलीकहे ते प्रमाणठे १ इण न्या
 य प्रमाणे तथा परं परायसे पिय जाण

है परंपराय नमाना केहनी, परंपराय नमानीजे इम कहै ते सत्य परंतु : सूत्र पाठमे अर्थमे खुलासा होइ ते परंपराय नमानीजे सूत्र पाठ अर्थमे नथी खुल्यो ते परंपराय मानवा योग्यते कोई पूठे बीजमे जीव किसा सूत्रना पाठ अर्थमे कहाँ सूत्र पाठ कहैते ते बीजमे जीव प्रत्यक्षहै ते इरीयावहाँ पक्कमता (वी यकमणे) कोई हरया बीज सरदहे ते संदेह टालण नणी गणधरे (हरीयकमणे) निन्न कहाँ इण पाठ नी अपेक्षाइं निश्चै बीजमे जीव सर्दहीजे तथा अव स्यकमे [वीयनोयणहरिय नोयणाए] हरी (या) बीज (हरीयनोयणाए) कहाँ ते [वीयनोयणाए] किसा कहजे तथा दशवे कालक ४ अध्ययन (वी येसुवा वीयपइठेसुवा हरियेसुवा हरियेपइठेसुवा) इ हा पिण बीज हरी निन्न पणे कहाँ तथा दसवे कालिक अध्ययन पाचमे गाथा (सम्मदमाणी पाणीणी वी थाणो हरियाणीय) इहा इरी बीज निन्नपणे कहाँ तथा उत्राध्ययनमे (वीएसुहरिएसुवा) इत्यादि ठा म सूत्र पाठ देखता बीज सचित जाणीजे कोई बी ज हरयानी रूढ करे तेहना प्रमाण सूत्रथी लिखी एते ॥ जिण बंदन बेला पांच अग्निगम सांचव्यां तिहा [सचिताणं दवाणं विउसरणयाए) तेहना अर्थटीका कारे पुष्प तंबोल कहाँ ते तंबोल इला यची कंकोल प्रमुख हरया संजवता नही इण प्रमा

हांमिश्र, दान न्याय तिहां लाधारे ॥ सू० ॥ २२ ॥
 दोष चाले तेहनी मुंन चाली, ओररे मौनन कोई
 ॥ च्यार ज्ञाप्या जिमठे तिम कहता, साध आरा
 क होईरे ॥ सू० ॥ २३ ॥ एकंत बोल्यां पाप लगे
 हां, बेकंत ते सत बाणारे ॥ पाठ सच्चाबो सारो
 ल्यो, मिश्र अर्थमे जाणारे ॥ सू० ॥ २४ ॥ धर्म
 लठे वृत धर्मरो, अधर्म फल मिश्रठे एमारे ॥ श्राव
 ने कहातीजे ठाणे, तीन वीसते साठारे ॥ सू० ॥ २५ ॥
 गुण दोषण कहनो जिम पाल्यो, बली गुण दोष
 तायोरे ॥ बीरवचन तो विरचे नही, मेलदिखायो न्याय
 रे ॥ सू० ॥ २६ ॥ पाप महा जय पुन्य कहाथी
 पुन्य नही मत्तिकाहिज्योरे ॥ पुन्य पिणठेनर एगजणायो
 मोख मारगमे जोज्योरे ॥ सू० ॥ २७ ॥ गुणने द
 प एकंत सर्वथी, कहता दोष दिखायोरे ॥ देसथक
 गुण दोषण कहैतो ॥ दोष नहीओ न्यायोरे ॥ सू०
 ॥ २८ ॥ मिश्र लगे तिणरी मुंनज करणी, ए बाताते
 सांचीरे ॥ इणरो फलमे तो क्युं नही जाणयो, ए व
 तठेकाचीरे ॥ सू० ॥ २९ ॥ कोई कइ गृहस्थराजग
 डामे, साधाने कयाने पडणारे ॥ जिनमत मेगे बोल
 न चाले, दुध पाणी ज्युं निरणारे ॥ सू० ॥ ३० ॥
 अधर्म दान तेहने चाल्यो, उपादेय धर्मदानारे ॥
 मिश्र दान मेगे बहु ठामे, न्यायसूत्ररो मानारे ॥ सू०
 ॥ ३१ ॥ मौन चालाने तो बोलणो नही, पेलोपरूपै क्युं

हीरे ॥ मिश्रउयाप्यामुंनज चांगी, मुंनवतावेयोहीरे
 ॥ सू० ॥ ३२ ॥ तीजा मिश्रदानने ठेले, पुन्यके पा
 प वतावेरे ॥ मुनकपटसरणो लेवे पिण, माफ ज्वावन
 ही आवेरे ॥ सू० ॥ ३३ ॥ मिश्र धर्म क्रिणकहियो ना
 ही, ले कोई परनोनामोरे ॥ जूठवघामो तेहने लागे,
 आलादियोवेकामोरे ॥ सू० ॥ ३४ ॥ धर्ममिश्रतो पाप
 मिश्र होवे, ते तो दीसेनाहीरे ॥ तीजो ठाम कर्णपख
 वीधी, साचग्रहो मनमार्हीरे ॥ सू० ॥ ३५ ॥ आचा
 रांग पहिलारे वाजे, दान वलाक्रमंदाख्यारे ॥ इहपर
 लोकरे हेते करे, आरंज अनर्थ जाख्यारे ॥ सू० ॥
 ३६ ॥ आचाराग पहिलारेठठे, पाचमउदेसेएहोरे ॥ आ
 त्मपर आगातणाटाली, साधधर्म कहे तेहोरे ॥ सू०
 ॥ ३७ ॥ लौकोककुलिगी मिश्र्यामतरो, दान प्रसंसे
 कोईरे ॥ वक्रायानी विराधना लागे, निद्याअंतरायहोईरे
 ॥ सू० ॥ ३८ ॥ दूजे संवरसोजन दिद्या पूठे, पुन्य के
 ता पाप थायोरे ॥ वेमाहि एकही बोले, तिण हिंस्या
 जूठलगायोरे ॥ सू० ॥ ३९ ॥ आणंदजीकह्यो अन्य
 तारथीने, देणोन कल्पै मोनेरे ॥ सिकडाल गुरुगुण
 थीदीहट, धर्मजाणनद्यंतोनेरे ॥ सू० ॥ ४० ॥ जगज
 मवानोकारण जाणी, साधुअनेराने नदेयरे ॥ सू० ॥ ४१ ॥
 नवमे अध्ययने, ओरने हानान देयरे ॥ सू० ॥ ४२ ॥
 वेकंतरो एकतपरूप्या, मिश्रलागे ज्वावनावेरे ॥ वेकं
 त एकंतवे ज्युं कहीता, सांचोज्वाववत्तरे ॥ सू० ॥ ४२ ॥

इरीयावही संपराई क्रिया, समकतने मिथ्यातोरे ॥ सा
 ता असाताने दिगोनर, साथे बंधनथातोरे ॥ सू० ॥
 ॥ ४३ ॥ समे समे कर्म साते बांधे, साध प्रमादीजायोरे
 ॥ पुन्य पाप पिणसुदगत बांधे ॥ एक समामेदोयोरे
 ॥ सू० ॥ ४४ ॥ सतज्ञापा आराधनाचाली, असत
 विराधनी जाणीरे ॥ सच्चा मोसाते वेहुंकहिए, विवहा
 रएकमे नाणीरे ॥ सू० ॥ ४५ ॥ सतज्ञापा एकंत ध
 र्मठे, असत एकंतठे पापोरे ॥ धर्म अधर्म तीजोहुवे,
 तो क्यां मिश्रजथापोरे ॥ सू० ॥ ४६ ॥ साधथकी पुन्य
 नव निरवदसुं, करी जिणसर थापोरे ॥ सावद्यथी सर्व
 था पुन्य नमाने, ताहे लागे बहु पापोरे ॥ सू० ॥
 ४७ ॥ अनेरानेदीया अन्य प्रकृत, पुन्य अर्थमे घा
 ल्योरे ॥ देस टालसर्वथा पुन्यथापे, ते तो चवडे उऊ
 ड चाल्योरे ॥ सू० ॥ ४८ ॥ श्वान साप बाजने बि
 ल्ली, जेल अल्प बहु आवेरे ॥ आजखो वारो पुन्य प्र
 कृत, पापजदे गत पावेरे ॥ सू० ॥ ४९ ॥ अनुकंपा आ
 णीतपसीते, आरंभ करीनेजीमायोरे ॥ मिश्रथापक
 ने फल पूढ्यां, साफ ज्वाब नही आयोरे ॥ सू० ॥
 ५० ॥ पुन्य पाप कहणो जिण पाल्यो, मिश्र रह्यो
 तेही पाल्योरे ॥ नास्तक मतिसुं मिलता बोले, ऊठो
 ऊगडो जाल्योरे ॥ सू० ॥ ५१ ॥ पुन्य पापएकंत न
 कहणो, मिश्रदान जिहां जाणोरे ॥ मोखमारगमे पाठ
 अर्थठे, कूमकिसाने ताणोरे ॥ सू० ॥ ५२ ॥ आठ

दान एकणमे घाल्यो. मिश्रदानजो नहीठेरे ॥ मुंनः
 थक्यां सुधज्वावनदीथा; पिठतावोला पीठेरे ॥ सू०
 ॥ ५३ ॥ चित्तवित्त पात्रसुद्धसुं धर्म होवे, कुविसर्नासुं
 अधमैरे ॥ दुरवल दुखिया मिश्रदानमे, ओलखल्यो
 ओमभरे ॥ सू० ॥ ५४ ॥ जीव दुखे तिहामोन बता
 ई, निर्णो दीधोदिखावरे ॥ मुंन मुंन कहैज्यां जे म
 नुपां, परमार्थ नहीपावरे ॥ ५५ ॥ साधटाली सर्व
 पाप कहै, जूठ जोडीजरमावरे ॥ मिश्रठेल पुन्यरी
 करजोडा, ते पिणक रीदढावरे ॥ सू० ॥ ५६ ॥ पुन्य
 पाप एकंत दानके, ते तो न्याय उथापरे ॥ पुन्यप्रा
 प मिसरदानतीने, कहिने सांचो सुधथापरे ॥ सू०
 ॥ ५७ ॥ पुन्य पापएकेरी मौनचाली, जेलरी मौनन
 कावरे ॥ निर्वघक वोलणो कहांसुजर्मे, एह उधामो
 न्यावरे ॥ सू० ॥ ५८ ॥ साचा सिंहगाजे जिण ठा
 मे, क्रुरगिदड ते जाजेरे ॥ मुंन कहे तेहनो ले
 ओलो, प्रत्यक्ष पुन्यसुं लाजेरे ॥ सू० ॥ ५९ ॥ ए
 कंते एकंत कहाते, सत्य बेकंत बेकंतौरे ॥ उरकह्यां
 मिश्रजापा लागे, पामे दोष अनंतौरे ॥ सू० ॥ ६० ॥
 ॥ पापीसूतो जला कहावे, ते तो नहणे जीव अपे
 द्वारे ॥ ए पिण अस थकीआगेने, सर्वथकी मतले
 खोरे ॥ सू० ॥ ६१ ॥ प्रमादी सकषाई साधु, जथात
 थनचलावरे ॥ असथकी एसापिणधरमी, पापी क
 ह्या नहीजावरे ॥ सू० ॥ ६२ ॥ जगवती सातमेश्रु

तखंधे, नवमे उदेसे एहोरे ॥ प्रमादी असंवरीसांधु,
 ते करे विक्रिय तेहोरे ॥ सू० ॥ ६३ ॥ जघन्य उ
 र्कृष्टो जिहां नाही, तिहां उधीकजणायोरे ॥ स्वार्थ
 सिद्धअसनी भिनखमे, देखगम्मारो न्यायोरे ॥ सू०
 ॥ ६४ ॥ पापपापथी धर्मथकी पुन्य, वूराजलाएकं
 तोरे ॥ मिश्रमेरजुखिसंतो, नाही, तीजो बोल बेकं
 तोरे ॥ सू० ॥ ६५ ॥ नियमकूडो टिकसे नाही, जिहां
 प्रगटयोसाचोरे ॥ हीरो घणसेती नही जांगे, टूकटूक
 होयेकाचोरे ॥ सू० ॥ ६६ ॥ धर्म अधर्म एकंत नही
 जे, जिहां मिश्रबेदानोरे ॥ पखियो प्रगट बोले नही,
 जाणे सूत्र निदानोरे ॥ सू० ॥ ६७ ॥ एकगाथारे मा
 हिं अटकलो, बीजारो नहीकामोरे ॥ धर्म अधर्म ए
 कंत नही जिहा, मिश्रदान तिणथामोरे ॥ सू० ॥ ६८ ॥
 पापवुरोने धर्म जलोबे, एकंत कहै सवल्योरे ॥ सम
 चे मिश्रनेलथीहुवे, लखसे पारखहोयोरे ॥ सू० ॥ ६९ ॥
 धर्मसंजतने ब्रतपख, पंफित दृष्ट एकेकोरे ॥ धर्म अधर्म
 ने मिश्रथी, हुआतिन तिन अनेकोरे ॥ सू० ॥ ७० ॥
 पाप अठारे एकंत जुना, रूना धर्म समाणारे ॥ या
 मेमेश्र एकही नाही, मिलिया मिश्रकहाणारे ॥ सू० ॥
 ॥ ७१ ॥ पुन्यपाप एकंत नही जिहां, मिश्रदानसही
 जाणोरे ॥ सच्चांमोसाठे जेलापाठमा, मिश्रअर्थने आ
 एयोरे ॥ सू० ॥ ७२ ॥ मिश्रनेलवे एकज वाणी, कि
 हां अर्थ किहां पाठोरे ॥ साचग्रीरसातिरे तिम सम

जी, तीन बीसते साठारे ॥ सू० ॥ ७३ ॥ पापएक
 तने परोनिपेधो, धर्मरी आजा देवेरे ॥ मिश्र ठि
 काणे हाना न कहवे, इम कह्यो जिण देवेरे ॥ सू०
 ॥ ७५ ॥ बायवागा कणीयाइज ठहरे ॥
 ततराते उडजायोरे ॥ सतसर्दा मे काहा टिकमी
 जोलाते नर्मनुलायोरे ॥ सू० ॥ ७४ ॥ नेम
 कियो नही तिण गिरसतरे, घरघरनो पाप
 आवेरे ॥ निर्वद्य दोष तजो नही तिणरो, निर्वद्यकेम
 कहावेरे ॥ सू० ॥ ७६ ॥ पुन्यपापसुन मुन तिणगी,
 सूत्र जे करे उथापोरे ॥ मिश्र रह्याते पाल्यालागे,
 कुड कपटनो पापोरे ॥ सू० ॥ ७७ ॥ बेकंत ठेल्या
 एकंतरहीयो, ते किमकहीजायोरे ॥ मुंनकहे तिणरो
 ओलोलेवे, पिणनसकेसाफ बतायोरे ॥ शु० ॥ ७८ ॥
 बेकंतने बेकंत कहा, सत्य एकतने एकोरे ॥ कुडक
 पट विणपरगटकहसी, ते होसीसत्यवंतरे ॥ शु० ॥ ७९ ॥
 ॥ धर्म सदर गुण जोग दिसादी, बेवे शुजा शुनहो
 थोरे ॥ समंचेती जो मिसर कह्योते, तिणमे ओही
 हीजदोथोरे ॥ शु० ॥ ८० ॥ पापपुन्य धर्म मिसर
 नहीब; एकंत प्रगट नारुथारे ॥ मुंनमिसररो निर्ण
 यकाढयो ॥ ठाना कपट नरारुथारे ॥ शु० ॥ ८१ ॥
 कहे मे तीजो बोलनमानो, बले मानताजायोरे ॥ मुं
 न करीने मिसरविपावे, कपट करे इण न्यायोरे ॥
 ॥ शु० ॥ ८२ ॥ इति ॥

॥ अथ तेरा पंथीयांकी चरचा लिख्यते ॥

॥ दोहा ॥ यासमीकत शुणताथका, राखेरोपञ्च
 पार ॥ तिणेरसिरपर लागसी, चरणपट्टकीमार ॥ १ ॥
 ॥ ढाल ॥ प्रथम उठीया पापीपुरा, गद्धांगुराकांगेरी ॥
 पुन्यहीणनेदुष्ट प्रणामी, बीतरागरा बेरी ॥ १ ॥ सुण
 ज्यो पंचमहाव्रत नही पाले, पक्षीया और निंद्यारे
 चाले ॥ एटेक ॥ गिनाताने गुरुका गुणबे, सूत्र देख
 लो साखी ॥ निगुरानिगुणा जावेनारकी, याजगवंता
 जाखी ॥ शु० ॥ २ ॥ जंडशुरोजीष्टापरजावे, चौखीब
 स्तनचावे ॥ उत्राध्ययन पाचमो गाथा, श्री जिनरा
 जवतावे ॥ शु० ॥ ३ ॥ जीवमातररो सुख नही चावे,
 ऊरखा बोलेकुठा ॥ दानदयारो जाव न जाणे, परत
 खहीयाफूटा ॥ शु० ॥ ४ ॥ बाताजायने करे ज्ञानरी,
 लुडातिणगुंडसी, ऊगमाकोराकुठा बोलो, कुत्रा कुवा
 कज्जां करसी ॥ शु० ॥ ५ ॥ तिगुणा कपट चलावे
 नागा, एक वेस साधरोधारी ॥ दसमी कालक मांहिं
 कथीयो, होसीबोहल संसारी ॥ शु० ॥ ६ ॥ असल
 धर्मरी नही आसता, जोलावनकर जाणे ॥ जवसागर
 मे तिरसीजमतां, उत्राध्येयन प्रमाणे ॥ शु० ॥ ७ ॥
 चकाकहे बीरजीने चोडे, कारलोपनाकीधी ॥ पापत
 णो, तो पंथपकडीयो, निवनरकरी दीधी ॥ शु० ॥ ८ ॥
 चोडे कहो थें बीरने झूठा, तो तुम परतख पापी ॥
 जगतारण जिनराजरी ॥ इतरी व्रात उथापी ॥ शु० ॥

॥९॥ आचारांग नवमे अध्येने; वीरतणीछे बाणी ॥ किं
 चित पापकीयो नही गोतम, जिनसासन सह नाणी ॥
 सु० ॥ १० ॥ श्रवणे वात सुणे नही सखरी, मुंढे बो
 ले मीठा ॥ जीवातणा तो दूस्मनजबरा, परतख जग
 मे दीठा ॥ सू० ॥ ११ ॥ सिद्धतामे जगतजीवनी,
 साता वेदनी सुजी ॥ अन्नयदानने मुक्तसुखारी, गौ
 तमस्वामी बुर्जा ॥ शु० ॥ १२ ॥ संकाघालकहे श्राव
 कने, आलधरे अपराधी ॥ देता दानजावनाफेरे. तां
 ने खूटे बांधी ॥ सू० ॥ १३ ॥ मगजधरने कहे मूरखा,
 जगमे म्हेइज साधु ॥ घात अनंती होसीथारे. फिर
 फिर पडसी बांधु ॥ शु० ॥ १४ ॥ निंदा न करो कि
 णरीपराई. सिद्धतामे साची ॥ परीजमणते परीयाक
 रसी. ब्रेहत कलपमे वाची ॥ शु० ॥ १५ ॥ दान द
 या अनुकंपाकेरी, सरधामानो साची ॥ दान दया वि
 नकोई न तिरीया. येही जिनेश्वर वाची ॥ शु०
 ॥ १६ ॥ इति ॥

अथ त्रीप्नपंथीयाने तेरा पंथीयासे चरचालिरूयते

॥ दोहा ॥ सांजल जो सहुको तुमे, चितराखीजे
 ठाम ॥ परख करो जिन धर्मनी. सजि आतसकाम ॥ १ ॥
 जगवंतने चुक्या कहे. दान दयादिइ उठाय ॥ विने वि
 यावच वंदणा. कुडकुहेतलगाय ॥ २ ॥ ठाम ठाम बहु
 सूत्रमे. दान दया अधिकार ॥ तिणउपर निरखव क
 रू. सांजलजो नरनार ॥ ३ ॥ ढाल ॥ जगतगुरू त्रिस

लानंदनवीर ॥ एदेसी ॥ आचारांग श्रुत खंध पहिले
 कह्योजी. नवमा अध्ययनमे होय ॥ जगवंत किंचित
 पापकीयो नहीजी. चौथा उदेसा लेवो जोय ॥ चतुरन
 र सुणज्यो ज्ञानविचार ॥ १ ॥ एटेक ॥ बावीसपर
 सां आयाथकांजी, मेरुअडिंग जिमथाय ॥ जगवंत च
 लीया चूक्या नहीजी, जोवो आचारांगमाय ॥ च०
 ॥ २ ॥ दोपतो लाग्या थकाजी, विराधक होयजाय
 ॥ प्रायश्चित लीया बिनाजी, केवल ज्ञान किम थाय
 ॥ च० ॥ ३ ॥ जगवती सूत्रमे कह्योजी, पनरमा सत
 करेमाय ॥ केवल ज्ञान उपनापठे बीर कह्योजी ॥
 सुणो गोयमचितलाय ॥ च० ॥ ४ ॥ दया अनुकंपारे
 वासतेजी, गौसालाने दियोरे बचाय ॥ च्यार ज्ञान
 तणाधणीजी, अनुकंपा करीजिणराय ॥ च० ॥ ५ ॥ ठ
 दमस्त साध चूकापठेजी, पूठे जगवंतने जाय ॥ केवल
 ज्ञानी सांसो जाजदेजी, प्रायश्चित देवे जिणराय ॥ च०
 ॥ ६ ॥ दया अनुकंपा सूत्रमे कहीजी, सांजलजो
 चितलाय ॥ सावज अनुकंपा चाली नहीजी, किणही
 सूत्ररे माय ॥ च० ॥ ७ ॥ उपासगदसामे कह्योजी,
 आठमा अध्ययनरेमांय ॥ श्रेणक ढंढेरो फेरीचोजी;
 जीवमारण नही थाय ॥ च० ॥ ८ ॥ जीवभचायां
 पाप हुवे तो, जगवंत बरजता जाण ॥ जगवंत बरज्यो
 को नहीजी, मूरख करे कुडीतांण ॥ च० ॥ ९ ॥ च्यार
 बोल राजाने कह्योजी, कथाकाररे भांहिं ॥ दान समा

इ नवकारसीजी, कपाइ नैसामारण नहीथाय ॥ च०
 ॥ १० ॥ जगवती सतगसातमेजी, बठा बुदेसारे मां
 हि ॥ जीवदया अनुकंपा वीयाजी, साता वेदनी पुन
 बंधाय ॥ च० ॥ ११ ॥ दया अनुकंपा कीथांथकाजी, बं
 धे पुन्यराठाठ ॥ पापतो बंध कह्यो नहीजी, किण
 हीसूत्ररो पाठ ॥ च० ॥ १२ ॥ ज्ञाता पहिले अध्येन
 मेजी, अनुकंपा कहीसार ॥ गजजवसुसलोराखियोजी,
 श्रेणकघर अवतार ॥ च० ॥ १३ ॥ दया अनुकंपा
 करताथकांजी, पामीये सुखराथाट ॥ हाथी घोडा रथपा
 मीयेजी, जिहावहुली कसाई पाट ॥ च० ॥ १४ ॥ ज्ञा
 ता सूत्रमे कह्योजी, पाचमा अध्येनरेमाय ॥ थाव
 चा सुदरसण सुखदेवनेजी; कहो विने मूलधर्म थाय
 ॥ च० ॥ १५ ॥ विनयतणादोय जेदवेजी, आगार
 ने अणगार ॥ च्यार प्रकारे संघनेजी, विनो किया
 खेवापार ॥ च० ॥ १६ ॥ विनोकरे सुधनांयसुंजी,
 कर्मांरीकोडखपाय ॥ जिनजीरा वचन अराधनेजी,
 मुक्ततणा फलपाय ॥ च० ॥ १७ ॥ जगवती सतक
 वारमेजी पहले उदेसे मांहि ॥ उतफलाने पोखलीतणो
 जी, विने कियोसाम्हीलाय ॥ च० ॥ १८ ॥ बंदना की
 धी जावसेजी, दीधो आसन ताय ॥ पोखली उतफला
 ने पूठकेजी, बदे संखेन ते जाय ॥ च० ॥ १९ ॥ संखेन
 बंदन कीयापठेजी, हुजाने ऊपन्यो द्वेष ॥ जगवंतकने
 जायनेजी, संखेने निंदस्या विशेष ॥ च० ॥ २० ॥

जगवंत कहे निंदोभतीजी, संखरा चोखाजाव ॥ संखने
 सहस्रिमावीयाजी, श्रावककरसूधजाव ॥ च० ॥ २१ ॥
 ॥ वंदनमे जो पापथोजी, तो जिनवर वर्जताजाण ॥
 जिनवर वरज्या को नहीजी, बोलेजूठीबाण ॥ च०
 ॥ २२ ॥ जगवती सतग ग्यारमेजी, बारमा उदेसा
 रेमाय ॥ असोज पुत्र आय बंदना करीजी, बीजा
 श्रावककांड चितलाय ॥ च० ॥ २३ ॥ उववाई सूत्र०
 मे कह्योजी, अमरसिष्यसातसे जाण ॥ नमोथुणरापाठ
 सुंजो, बंदणा करी प्रमाण ॥ च ॥ २४ ॥ नसीत सूत्र
 मे कह्योजी, अष्टम उदेसेमाय ॥ न्याति अन्याति
 स्त्रीजणोजी, रात रख्यां प्रायश्चित थाय ॥ च० ॥
 ॥ २५ ॥ जिणअर्थरो निर्णोकरोजी, ज्ञोनस्त्री परिग्र
 हपास ॥ जाणीने राख्याथकाजी, प्रायश्चितठे चउमा
 स ॥ च० ॥ २६ ॥ ब्रेहत कल्प मांहीं कह्योजी, पहले
 उदेसे मांहीं ॥ अस्त्रारहे जिणजायगांची, साधुनरहै
 तिहां जाय ॥ च० ॥ २७ ॥ पुरुष रहे जिणजायगा
 जी, आरज्यांनरहे काय ॥ ब्रेहत कल्प मांहीं
 कह्योजी, पहला उदेसाजोय ॥ च० ॥ २८ ॥ जग
 वती सूत्र मांहीं कह्योजी, पनरमासतकमाय ॥ गोसा
 लो ग्रहस्थेपणेजी, रह्या जिनपासे आय ॥ च० ॥
 २९ ॥ ग्रहस्तीने रखणो नही हुंतोजी, तो जगवंत व
 र्जताजाण ॥ गोसालो नहीजो मानतोजी, जिनरहते
 और ठिकाण ॥ च० ॥ ३० ॥ सूयगडाग पहले क

ह्योजी, दूजा अध्येनरेमाय ॥ च्यार बोलसेवे नहीजी,
 जिनकलपी मुनिराय ॥ च० ॥ ३१ ॥ अडोकिवारु
 जडे नहीजी, वखाण नही दीराय ॥ तिणापिण विठा
 ये नहीजी, काचो नही लेवे मुनिराय ॥ च० ॥ ३२ ॥
 (ऐसे मुनीजिनकल्प इस आरेमे नही होते अ
 ब साधू थेवर कलपीहै) जिन कलपीने वरज्यासही
 जी, थेवरकलपे वरजन कोय ॥ इण मांहिं संक्याहुवे
 तो, दूजोउदेसो जोय ॥ च० ॥ ३३ ॥ ब्रेहतकल्प
 मांहिं कह्योजी, पेहंला उदेसामाय ॥ अवंगद्वार क
 लपे नहीजी, आरज्याने तेनमाह ॥ च० ॥ ३४ ॥
 आडो न जडणो साधनेजी, इसोन कह्योतिणमात ॥
 आज्ञा लेइ खोलणो कह्योजी, देखो मूत्रसारुयात
 ॥ च० ॥ ३५ ॥ आचाराग दुजे कह्योजी, सातमा
 अध्येनरे माय ॥ ग्रहस्ती वार ढक्यो हुवे तो, अज्ञा
 खोले मुनिराय ॥ च० ॥ ३६ ॥ अज्ञाले वार खोलणोजी,
 दसवी कालक माय ॥ पंचमाअध्येनमे देखल्योजी, अ
 ठारमी गाथो थाय ॥ च० ॥ ३७ ॥ आचाराग दुजे
 कह्योजी, पंचम उदेसे माय ॥ संजोगीसाधआयाथका
 जी ॥ आहार पाणीदे मुनिराय ॥ च० ॥ ३८ ॥ अ
 संजोगी साधआयाथकाजी, पाटपाटलादेय संथार ॥
 विनोसांचवे बडा तणोजी, होसी खेवोपार ॥ च० ॥
 ॥ ३९ ॥ उत्तराध्येन तेवीसमेजी, केली गौतम
 सो जाण ॥ पंचप्रकार तिणादियाजी, विठावणको हि

न आन ॥ च० ॥ ४० ॥ व्यवहार सूत्रनी चूलका
 नी, तीजा सुपनविचार ॥ समाचारी जूई जूईजी,
 ओलखजो ततसार ॥ च० ॥ ४१ ॥ दसमी काल
 क्रमे कह्याजी, तीजा अध्येनमंजार ॥ ग्रहस्तीरे घर
 बैठताजी, सताईसमो अनाचार ॥ च० ॥ ४२ ॥
 ब्रेहत कल्प माहें कह्योजी, चौथा उदेसा मांहिं ॥
 घरमे बखाण देणो, बरजगया जिनराय ॥ च० ॥ ४३
 ॥ जो काम पडीया थकाजी, उजा गाथा दे सुणाय ॥
 थिरता होतो बखाणदेजी, जो उतरे उणघरमाय,
 ॥ च० ॥ ४४ ॥ उववाई सूत्रमे कह्योजी, बठबठ पा
 रणोथाय ॥ अंबडने लवध ऊपनीजी, पारणे सो घर
 जाय ॥ च० ॥ ४५ ॥ सक ईसाण इंद्रजणीजी, जगडो
 नारीजी थाय ॥ लड लड अपकाया होवेतो, संत
 कुमार बुभावे आय ॥ च० ॥ ४६ ॥ गौतमस्वामी पू
 ळा करीजी, सूत्रजगोती मांहिं ॥ किण अरथेंसुख
 पामीयेजी, फुरमावो जिनराय ॥ च० ॥ ४७ ॥ जगवं
 त कहे गौतम सुणोजी, चउविधसंघ सुखकार ॥ ही
 येमुयेपतकामीयेजी, सुखनो बहु विस्तार ॥ च० ॥
 ४८ ॥ रायप्रसेणी देखलोजी, परदेसी धर्मसु राग ॥
 सात हजारे गांवनाजी, कीधाच्यारजुनाग ॥ च० ॥
 ४९ ॥ एक नाग राण्या जणीजी, दुजो नागखजान
 ॥ तीजो नागज फौजनेजी, चौथे नागदे दान ॥ च०
 ॥ ५० ॥ कोई तपसीने विप देवेजी, कोई पावे दूधनी

जात, पापकहे दोनो माहेजी ॥ ज्याशीकिए विध मा
 ने वात ॥ च० ॥ ५१ ॥ कोई सतीने सतावताजी,
 कोईक बरजे आण ॥ पापकहे दोनो विशेषी, बोले
 ऊठीवाण ॥ च० ॥ ५२ ॥ बारे सूत्र मांहे कह्योजी,
 श्रीजिननाण्या सोय ॥ अधिकानुवा जो होवे तो, मिठा
 मिठुकडंमोय ॥ च० ॥ ५३ ॥ संवत अठारसे गुणा
 सिमेजी, सहर पिपाभरे माहिं ॥ ऋपचोथमल प्र
 सादसेजी, श्रावक गुमानचद धर्म पाय
 ॥ च० ॥ ५४ ॥ इति ॥

॥ अथ चैत्य मतीयासे चरचा लिख्यते ॥

सासणनायकदियो उपदेस, धर्मकरो ज्युं मिट
 जावे छेस ॥ ज्ञान दरसन चारित तपनाव, इनकुं
 आराध्यां नविजन तरणरोडाव ॥ १ ॥ थे जिनजीरा
 वचनहीये धरोजी, तुमजीवहणीने पूजा काई करो
 जी ॥ एटेक ॥ सतरे नेदी पूजालेईनाम, पटकायजी
 वांराकरोठीहाम ॥ इमकिमरीऊ श्रीवीतराग, जिके अ
 ठारे पापराकर वैठाजी त्याग ॥ थे० ॥ २ ॥ पूजा करा
 वो साधू नामधराय, इसडो अंधेरो नहीं जिन धर्म माय ॥
 माहिरी माताने नल कहीजेजीबाऊ, दिनदोपहरो कि
 मथायजी सांऊ ॥ थे० ॥ ३ ॥ प्रचूने अंगीरचो फि
 र गहिणापहिराय, नाटककरोवलीतालवजाय ॥ धामक
 धैयाकर चावोजी मोख, जिणसांसो पडीयो जावणरो
 देवलोक ॥ थे० ॥ ४ ॥ प्रचूत्यांगी हुवाजाने जोग ल

त आन ॥ च० ॥ ४० ॥ व्यवहार सूत्रनी चूलका
 जी, तीजा सुपनविचार ॥ समाचारी जूई-जूईजी,
 ओलखजो ततसार ॥ च० ॥ ४१ ॥ दसमी काल
 कमे कहाजी, तीजा अध्येनमंजार ॥ ग्रहस्तीरे घर
 वैठताजी, सताईसमो अनाचार ॥ च० ॥ ४२ ॥
 ब्रेहत कल्प माहें कह्योजी, चौथा उदेसा मांहिं ॥
 घरमे वखाण देणो, वरजगंधा जिनराय ॥ च० ॥ ४३
 ॥ जो काम पडीया थकाजी, उना गाथा दे सुणाय ॥
 थिरता होतो वखाणदेजी, जो उतरे उणघरमाय,
 ॥ च० ॥ ४४ ॥ लववाई सूत्रमे कह्योजी, ठठठ पा
 रणोथाय ॥ अंबडने लवध ऊपनीजी, पारणे सो घर
 जाय ॥ च० ॥ ४५ ॥ सक ईसाण इंद्रजणीजी, जगडो
 चारीजी थाय ॥ लड लड अपकाया होवेतो, संत
 कुमार बुभावे आय ॥ च० ॥ ४६ ॥ गौतमस्वामी पू
 वा करीजी, सूत्रजगोतो मांहिं ॥ किण अरथेंसुख
 पामीयेजी, फुरमावो जिनराय ॥ च० ॥ ४७ ॥ जगवं
 त कहे गौतम सुणोजी, चउविधसंघ सुखकार ॥ ही
 येमुयेपतकामीयेजी, सुखनो बहु विस्तार ॥ च० ॥
 ४८ ॥ रायप्रसेणी देखलोजी, परदेसी धर्मसु राग ॥
 सात हजारें गांवनाजी; कीधाच्यारजुनाग ॥ च० ॥
 ४९ ॥ एक नाग राण्या जणीजी, दुजो नागखजान
 ॥ तीजो नागज फौजनेजी, चौथे नाग दे दान ॥ च०
 ॥ ५० ॥ कोई तपसीने विप देवेजी, कोई पावे दूधनी

जात, पापकहे दोनो माहेजी ॥ ज्यारीकिए विध मा
 ने वात ॥ च० ॥ ५१ ॥ कोई सतीने सतावताजी,
 कोईक वरजे आण ॥ पापकहे दोनो विशेषी, बोले
 ऊठीवाण ॥ च० ॥ ५२ ॥ वारे सूत्र माहे कह्योजी,
 श्रीजिननाण्या सोय ॥ अधिकाज्जो जो होवे तो, मित्रा
 मिहुकडमोय ॥ च० ॥ ५३ ॥ संवत अठारसे गुणा
 सिमेजी, सहर पिपाकरे मांहीं ॥ ऋपचोधमल प्र
 सादसेजी, श्रावक गुमानचद धर्म पाय
 ॥ च० ॥ ५४ ॥ इति ॥

॥ अथ चैत्य मर्त्यासे चरचा लिख्यते ॥

सासणनायकदियो उपदेस, धर्मकरो ज्युं मिट
 जावे छेस ॥ ज्ञान दरसन चारित तपनाव, इनकुं
 आराध्यां नविजन तरणरोडाव ॥ १ ॥ थे जिनजीरा
 वचनहीये धरोजी, तुमजीवहणीने पूजा काई करो
 जी ॥ एटेक ॥ सतरे नेदी पूजालेईनाम, पटकायजी
 वाराकरोठीहाम ॥ इमकिमरीके श्रीवीतराग, जिके अ
 ठारे पापराकर वैठाजी त्याग ॥ थे० ॥ २ ॥ पूजा करा
 वो साधू नामधराय, इसडो अंधेरो नही जिन धर्म साय ॥
 माहिरी माताने नल कहीजेजीवाऊ, दिनदोपहरो कि
 मथायजी सांऊ ॥ थे० ॥ ३ ॥ प्रचूने अंगीरचो फि
 र गहिणापहिराय, नाटककरोवलीतालवजाय ॥ धामक
 धेयाकर चावोजी मोख, जिणसांसो पडीयो जावणरो
 देवलोक ॥ थे० ॥ ४ ॥ प्रचूत्यांगा हुवाजाने नोग ल

गाय, थे खलगुलकीधोजी एकणजाव ॥ जोला न जा
 ऐ गाडरीप्रवाय, सीखदीया चोर दडेजी सहाय ॥ थे०
 ॥ ६ ॥ सतरे प्रकारे करीजीवानेराख, ए पूजा कही
 सूत्रनीसाख ॥ जावसुं पूजो श्रीअरिहंत देव, सत्य वा
 सील चदनतुं अग्ररज खेव ॥ थे० ॥ ६ ॥ आचारांग
 प्रश्नव्याकरण पाठ, दया पालो ज्युं बंधे पुनराजीथा
 ट ॥ साठ नाम कह्या दयारा सोय, जिनमे जीव रि
 ख्याते पूजा लेवोजोय ॥ थे० ॥ ७ ॥ महणामहणो
 बाणी तो श्री जिनराज, थे हिंस्या धरम कर काईकीयो
 जी अक्राज ॥ तीर्थकर ल्यो तीनकालरादेख, सूत्र आ
 चारांगमे बाणीजी एक ॥ थे० ॥ ८ ॥ दयारा सागर
 कह्या श्री जगवान, थे जीव हणीने कोई तोमोजी तां
 न ॥ फूलचढावो फिरपाणी ढोल, धर्म वतावो थारे घटमे
 जी घोळ ॥ थे० ॥ ९ ॥ उकायनो कूटोकर मानोजी
 धर्म, इण बातासुं बंधे जादाजीकर्म ॥ आश्रव कह्या प्र
 सण व्याकरण माय ॥ भंडी बुद्धी कह्या श्री जिन
 राय ॥ १० ॥ नवोप्रासाद करावेजी कोय, ज्याने सु
 रगवारमो बतावेजीसोय ॥ आरंज करताजाये मोख
 सरग, तो चक्री केशव क्यो जावेजीनरग ॥ थे० ॥ ११
 ॥ उज्जवणा करिने टलावोजी पाप, बलिरोकडदाम
 दिरावोजी आप ॥ नाम लेई ल्यो प्रचू देवलठाड,
 वेत्यागी थया गया मोख करम तोड ॥ थे० ॥ १२ ॥
 जगमे तार्ण तो हुवा बीतराग, थे करो सो ओकुण

सोजी मार्ग ॥ निरवद्य मारग दाख्यो जिनराज, इण
ने अराध्यासरे आतमकाज ॥ थे० ॥ १३ ॥ बिना
जरतार चोडे सुवे नार, तग वांधे मिलीया चौकी
जीदार ॥ जोवो इणरी किम रहै सर्भ, थे जिवहणी
नें काई कर रह्या धर्म ॥ थे० ॥ १४ ॥ इति ॥

अथ तेरेपंथी (जीपमपंथी) आम्नासे चरचा लिख्यते
इण आरामे निन्हव विगडीया, दुपम पंचम का
लेजी, बोगा लोकाने जरमावे मूरख मांढ्यो जीले
जी, निन्हव जाणो इण चलगतसुं ॥ १ ॥ एटेक ॥ दु
ष्टारी आसरधा देखो, साधपणो दीयोखोयजी ॥ कूडो
मारग काढ्यो कुमती, दान दया उढायादायजी ॥
नि० ॥ २ ॥ साधपणारो सांगजधारथ्यो, पापगिने बु
मायाजीवजी ॥ पंचमाहाव्रत कुमा पमीया, ज्याने नही
दयारी नीवजी ॥ नि० ॥ ३ ॥ गायरे गोकुल वाडा
मे, आण पहंती आगजी ॥ काढे जिणने पाप वता
वे, माठा ज्यारा जागाजी ॥ नि० ॥ ४ ॥ काढण वा
लो धर्मजजाणे, तो लागे पाप अपारेजी ॥ या स
रधाने साधुकहावे, ते जिन आज्ञा वारेजी ॥ नि०
॥ ५ ॥ जरीया चाररो गांठो आवे, मारगमे सूतो
वालजी ॥ दया देख कोई लेवे मानव, तिणने पाप
कहै चंडालजी ॥ नि० ॥ ६ ॥ तीमहला ऊपरसु
वालक पडतो, कोई जेले लेवे ते देखजी ॥ जेले जि
णने पाप वतावे, ए साध नहीवे जेपजी ॥ नि० ॥

७ ॥ कोई किएरोग लोम सोसे, कोई वरजे धर्म जा
 एजी ॥ दोनो जणानेवताके; एदुष्टरा अहिनाएजी ॥ नि
 ८ ॥ कोईक बेठयोकीनीया किचडे, कोई वरजे पुरुष
 सुज्ञानजी ॥ दोनुंजणाने पाप बतावे, मूरख घोर अ
 ज्ञानजी ॥ नि० ॥ ९ ॥ कोईक ग्राम बालणने दुकयो,
 कोई वरजे दया जंमारजी ॥ दोनुं जणाने पाप बता
 वे, तिके निश्च्ये नही अणगारजी ॥ नि० ॥ १० ॥
 कोई सुपातर दानजु देवे, कोई वरजे अज्ञानजी ॥
 दोनोजणाने पाप बतावे; आ पाखंनीयानी बाएजी
 ॥ नि० ॥ ११ ॥ कोई किएहीनेकू वामे नांखे, को
 ई वरजे जाणी धर्मजी ॥ दोनुजणाने पाप बतावे,
 ते मूरख बंधे कर्मजी ॥ नि० ॥ १२ ॥ कोई ऊबकेर
 कोई ऊटके मारे, मुसलमान रजपुतजी ॥ प्राण वचा
 यारो पाप बतावे, ज्यादिया माठी गतरा सूतजी
 ॥ नि० ॥ १३ ॥ दान दयामे पाप बतावे, निन्हव
 नीच करमरा पुतजी ॥ निन्हव सरधा घटमे पैठी,
 जाणे लाग्यो नूतजी ॥ नि० ॥ १४ ॥ कोई सतीरो
 सीलज खंडे, कोई पुन्यवंत राखे पालजी ॥ दोनुज
 णाने पाप बतावे, महा मिथ्यातमे लालजी ॥ नि०
 ॥ १५ ॥ कोईक बेस्याने घर देवे, कोई देवे पोसाने
 सालजी ॥ दोनु जणाने पाप बतावे, ज्यारी सरधा
 हुई आलमालजी ॥ नि० ॥ १६ ॥ कोई नूखाने
 चाठा मारे, कोई रोटी दे प्यावे बांसजी ॥ दोनु जणाने

पाप बतावे, ज्यारी हुवो ज्ञानरो नासजी ॥ नि० ॥
 १७ ॥ मास पारणे कोई जेहरज पावे, कोई पावे
 दुधनवातजी ॥ दोनुंजणाने पाप बतावे, देखोविक
 लारी वातजी ॥ नि० ॥ १८ ॥ गोसालाने बोरबचा
 यो, सूत्र जगोतीरो पाठजी ॥ निन्हव जगवंतने नृ
 ला जाणे, ज्यारी पुन्याई घाटजी ॥ नि० ॥ २० ॥ बरि
 कदे नही होवे जोला, नही लगावे दोपजी ॥ ज्या पु
 रुपाने दोष बतावे ॥ करणी ज्यारी फोकजी ॥ नि० ॥
 ॥ १९ ॥ जगवंतने पिण जारी करमा, लाग्यो जाणे पा
 पजी ॥ मनरा लाडु खावे मूरख, माठो मारग थाप
 जी ॥ नि० ॥ २१ ॥ बुध तो बुडगई निन्हवारी, जिन
 जीने दीयो आलजी ॥ तिके गुरसेंती कहो किम
 वुजे, धर दया विनाने वालजी ॥ नि० ॥ २२ ॥ ही
 रा माहें हुंता जेला, वाने दीया कंकरा टालजी ॥ री
 सां बलता अवगुण बोले, बांधे गुरासुं चालजी ॥
 नि० ॥ २३ ॥ जागल कुटल कर कर जेला. सामा
 मांडे सींगजी ॥ बेसरमाने जारी करमा ॥ होय बैठावा
 वाराधीगजी ॥ नि० ॥ २४ ॥ उर बोलणने नही कोई
 काचा. जमाली ज्युं जोइजी ॥ जगवंत आगे मृखा
 जाख्यो, हुं केवल ज्ञानी होईजी ॥ नि० ॥ २५ ॥
 अरिहंत आगे ऊठज बोलया, तो हिवडास्युं वातजी
 ॥ दान दयामे पाप बतायो. आ विकलपणकी वात
 जी ॥ नि० ॥ २६ ॥ दान दयारो कोई निरणो ॥

तरे बौले वली न बोलजी ॥ पूब्यां उत्तर देवे नही
 पावो, कोई कुहेत देवे मेलजी ॥ नि० ॥ २७ ॥ चि
 त लभाय चहु टामे चाले, गातरी देवे गाठजी नी
 ची गर्दन चाले निन्हव, पिण घटमे घणाजि आं
 टजी ॥ नि० ॥ २८ ॥ दासका जरता धव धव चाले,
 जठे ईरज्या निरती जोयजी ॥ घशा कोसारी मजल
 कर जावे, कपटी श्वान तणी परे जोयजी ॥ नि० ॥
 २९ ॥ फुंक फुंकने पावजमले, बंदरने जिम न्हारजी
 ॥ तिमजीणी चाल चहुटामे चाले, कपटी चले कपट
 आचारजी ॥ नि० ॥ ३० ॥ मूयगफांगे तेरमे अध्ये
 ने, अरिहंत जाख्यो एमजी ॥ निन्हव निकलसी सा
 धाम्हांसु; ए परतद्ध दीठीजेमजी ॥ नि० ॥ ३१ ॥
 मनमै जाणे म्हे मारग काढयो, हुवारहे वडा निवजी
 ॥ अज्ञामेटी श्री जिनवरकी, दई दुरगतिकी नीवजी
 ॥ नि० ॥ ३२ ॥ चोरासी मांहीं चाल्या जासी. दान दया
 उठोई दोजी ॥ साधारी पिण निंद्यामाडी, निन्हव
 दीधो जमारो खोजी ॥ नि० ॥ ३३ ॥ दान दयारी स
 रधां राखो, जिन अज्ञा तत सारजी ॥ निन्हवा के
 री अद्धा त्यागो, जिम होय सुध आचारजी ॥ नि०
 ॥ ३४ ॥ ए सांजलने निन्हव सरधा, नही माने पु
 न्यवेत प्राणीजी ॥ आ सुणने सरधा नीकी राखो, ज्या
 रो होसी परम कल्याणजी ॥ नि० ॥ ३५ ॥ ए
 बतीसी नही कोई बानी. नही इणमे काई धेख

जी ॥ जोकिणरे मनमे हुवे सकां, तो अरू च
रू ल्यो देखजी ॥ नि० ॥ ३६ ॥ इति ॥

॥ अथ मिश्र चरचा लिख्यते ॥

पुन्य जोगे तो नर नव पाप्पो, साध श्रावक व्र
त धारीरे ॥ नव बोलारो निर्णयकीजो, चतुर केई
नर नारीरे ॥ १ ॥ हिंस्याधर्म थाप्पो ने मिश्र उथा
प्पो, ज्यारी अकल गई दपटाईरे ॥ जोला लोकाने न
रममे पाडे, कूडा कुहेत लगाईरे ॥ २ ॥ हिंस्यां धर्म
थाप्पोने मिश्र उथाप्पो ॥ एटेक ॥ नव बोलसेती
पुन्य परूप्पो, दस परकारे दानोरे ॥ उन्नीस बोल
ए तीजा आगममे, जाख गया जगवानोरे ॥ हिं० ॥
३ ॥ धर्म दानमे तो धर्म बतावे, तिणरी साधकरे प्रसं
स्यारे ॥ आठ दानरी न करे प्रसंस्या, तिणमे थो
डी वा बहु हिंस्यारे ॥ हिं० ॥ ४ ॥ अधर्म दान तो
बेस्यादिकनो, ते तो लगाडे पापोरे ॥ स्त्रीसेवन व
हु जीव हिंस्या तो, अधर्म ए थाप्पोरे ॥ हिं० ॥
५ ॥ एक तो सावद्य बले दूजो निरवद्य, दोनुंदान
ज जाणीरे ॥ दोनु माहिं एकलो धर्म बतायो, आ
पाखंजीयारी बाणीरे ॥ हिं० ॥ ६ ॥ निरवद्य दान तो
निग्रंथ केरो, तिणमे नही काई हिंस्यारे ॥ करण
करावण न अनुमोदे, तिणरी साधकरे परसंस्यारे
॥ हिं० ॥ ७ ॥ सावज दान संसारी जीवारो, जिन
मे पुन्य पापवे वेईरे ॥ चतुर हुवे सो विचारी ले

ज्यो, पढे मिश्ररा जागाढे केईरे ॥ हिं० ॥ ८ ॥ अनु
 कंपा आदि आठ दानमे, दोई बात नही गानीरे ॥
 पुन्य पाप थोडाने बहु तो. ते विध जाणे ज्ञानीरे ॥
 ॥ हिं० ॥ ९ ॥ श्रावक उठरप जात संजाले, बकायच
 वदे नेमोरे ॥ आगार राखे तो रांध जिमावे, तो हिं
 स्या गिणे नही केमोरे ॥ हिं० ॥ १० ॥ कोई कहे
 मिश्रकठे चाल्यो, ते सूणजो सूत्रनी साखोरे ॥ मि
 श्र ठिकाणे बहु सूत्रामे, श्री जिनवरने जाख्योरे ॥
 हिं० ॥ ११ ॥ मिश्रदान शत्रुकारज केरा, सूयगडांग
 सूतखंध दूजेरे ॥ पंचम अध्येन बतीसमी गाथा, ते
 देखी चतुर नर बुजेरे ॥ हिं० ॥ १२ ॥ सत्रुकारनो
 साधुने पूढे, देणवालो कोई आणीरे ॥ पुन्यढे के पा
 पढे इम जापे, साधु मौन करे मिश्रजाणीरे ॥ हिं०
 ॥ १३ ॥ जे निपेधे तो अंत्राय लागे, पुन्य कहे तो
 व्रत जांगेरे ॥ व्रसथावररी होवे हिंस्या, तिणरो पा
 प साधुने लागेरे ॥ हिं० ॥ १४ ॥ एकंत धर्म ठिका
 णे बोले; पापरो कर्म निपेधयोरे ॥ मिश्र ठिकाणे कि
 म नही बोले, इहां पुन्य पापना बंधोरे ॥ हिं० ॥ १५ ॥
 सूयगडांग इग्यारमे अध्येने, मोख मारग साख्या
 तौरे ॥ संक्या हौवेतो निचिंता देखो, कोई नही मुं
 डारी बातारे ॥ हिं० ॥ १६ ॥ धरमी अधरमी धर्मा
 धर्मी, तीन करण ॥ तीजे ठोणेरे ॥ तिण ठामे फल
 कह्यो मिश्रनो, मूरख नमाने जाणीरे ॥ हिं० ॥ १७ ॥

मिश्रगुणठाणो तीजो चाल्यो, मिश्र चाल्यो धले योगोरे
 ॥ ए दोनु पाठ समाखांगमे चाल्या, ते सह जो जो
 जे' लोगोरे ॥ हिं० ॥ १८ ॥ सचित अचित मिश्र
 द्रव्ये तीन, नाम राजग्रही वोलाईरे ॥ सूत्र जगो
 तीरो पाठ उघाडो, विन जाण्या खवरनकाईरे ॥
 हिं० ॥ १९ ॥ अराधणी विराधणी मिश्रजाण्या, पा
 ठ पन्नवणामे चाल्योरे ॥ साक्षात सूत्रनी वातनमानो,
 मत ऊठो जिण ऊाल्योरे ॥ हिं० ॥ २० ॥ श्री वीर
 जिणंदने सुरियाजे पुढ्यो, आप कहौ तो नाटक पा
 रूहो ॥ थारा गौत्मादिक साधाने, म्हारी ऋद्धि दि
 खाडुं हो ॥ हिं० ॥ २१ ॥ आज्ञा न दीधो नकारो न
 कीधो, मिश्रजाण मंतराखीरे ॥ अर्थमे ऊघाडो देखो,
 रायप्रसेणीठे साखीरे ॥ हिं० ॥ २२ ॥ दसमीकालक
 मे मिश्र पाणी; कांई उनो कांई काचोरे ॥ पंचम अ
 ध्येन आहार मिश्रते, सूत्रमे जाणो थे सांचोरे ॥
 हिं० ॥ २३ ॥ दोप वयालिसमे वेठामे, दोय मिश्र
 तिहां देखोरे ॥ इणरो निरणो थारे हात न लागे, तिणसुं
 मांडोरागने द्वेषोरे ॥ हिं० ॥ २४ ॥ इत्यादिक इमसू
 त्रमेठे, मिश्रतणा घणा वोळोरे ॥ इण बातरो म्हाने
 इचरज आवे, थे अंतर पाठ क्यो न खोळोरे ॥ हिं०
 ॥ २५ ॥ जिन बचनाकी श्रद्धा न राखे, तिणसुं उ
 लटो पड गयो आटोरे ॥ इण श्रद्धामे नही निक
 ले-दाणो, थे कांई फोकटवाणोरे ॥ हिं० ॥ २६ ॥ ध

रम पद्धामे साध मुनिसर, मिथ्याती, अधर्ममे धा
 ल्यारे ॥ मिश्रपद्धमे श्रावक कहीया, ए तीन पाठ दू
 जे अंग चाल्यारे ॥ हिं० ॥ २७ ॥ पुन्य ठिकाणे पुन्य
 परूपो, पाप ठिकाणे पापोरे ॥ मिश्रठिकाणे मौनज
 राखो, इम सरधा सुधथापोरे ॥ हिं० ॥ २८ ॥ शिव
 धरमी तो धर्म बतावे, ते पंचथावर नही जाणारे ॥
 केईक जैनी हुवाज्यारा जोडायत, ए दोनो बात
 मिली एक ठाणारे ॥ हिं० ॥ २९ ॥ पहले श्रावक केई
 साधारा धरमी, पाठे निह्वारे पासोरे ॥ जाईने हुवा
 हिंस्या धरमी, श्रद्धारो कतीयो कपासारे ॥ हिं० ॥
 ३० ॥ कोईक चूखाने चाठामारे, कोई देवे बासने
 वाटीरे ॥ दोनोने एकंत पाप बतावे, ज्यारी अकल
 किहाने नांठीरे ॥ हिं० ॥ ३१ ॥ दया धर्मरी श्रद्धामी
 धी, सूत्र परखकर जाणारे ॥ कुमी वातरो पद्धन
 करणो, पद्ध धर्मरो मानोरे ॥ हिं० ॥ ३२ ॥ कोई
 तो भोजनरांध जिमावे, कोई सूखडी देवे सुज्ञानीरे
 ॥ पुन्य विशेषरो निरणो कीजो, चतुर हीयामे जा
 णीरे ॥ हिं० ॥ ३३ ॥ मूरख लोक हुवा, वंसज्यारे
 बोले जिम पढायासुवारे ॥ जाणपणारी जुगतन जाणे
 निंदक साधाराहूवारे ॥ हिं० ॥ ३४ ॥ हिंस्या अहिं
 स्या कर दई सरखी, दान अदानज सरीखोरे ॥ कुडोम
 त ओ परतखडीसे, हाथ कंगण स्युं अरीसोरे ॥
 हिं० ॥ ३५ ॥ इम जाणी मिसरको मति उथापो, घ

णा सूत्रनी साखोरे ॥ पुन्य पाप पिण उलखीखलीजो,
 निरवद बीतराग जाखोरे ॥ हिं० ॥ ३६ ॥ निन्हवण
 एकंत ऊठ वतावे, नव बोलांमे पापोरे ॥ ज्यारीश्रद्धा
 सुणने अलगा रहिजो, सुधकीजो घट आपोरे
 ॥ हिं० ॥ ३७ ॥ जिणमे कोई पडोलारे चाई, ते जा
 णो अपबंदार ॥ घोर मिथ्यात ने दुरगति गामी, ते
 तो निन्हवारा बंदारे ॥ हिं० ॥ ३८ ॥ सतरे बोलमे
 सगले ठामे, पुन्य पाप दोय जाणीरे ॥ श्रावक गुणवं
 त वृत्तमे घाल्या, समजे चतुर सुग्यानीरे ॥ हिं०
 ॥ ३९ ॥ आरंजरी तो थे हिंस्या जाणो, अनुकंपा ते
 दानोरे ॥ इम साजलजो श्रे उत्तम प्राणी, लीजो मि
 श्र ठिकाणो मानीरे ॥ हिं० ॥ ४० ॥ त्रसथावरना
 जीव विणासे, ते हिंस्या निश्चैकर जाखोरे ॥ सगला
 सूत्रना अर्थ विचारो, श्रद्धासाची राखोरे ॥ हिं० ॥
 ४१ ॥ दान दयासुं तो शिवपद होसी, इणसे सुख
 अपारोरे ॥ साधारी तो सुणजो बाणी, उत्तम कर जो
 विचारोरे ॥ हिं० ॥ ४२ ॥ आगम पाठ अर्थमे देखी,
 सिजाय जोमी इम जोयरे ॥ अधिको उंगो जाख्या
 होवे तो, मिठामि हुकडं सोधरे ॥ हिं० ॥ ४३ ॥ सा
 त सूत्रनी साखठे इणमे, घणा सूत्रनो समासोरे ॥
 श्री बीतरागना वेणमुणीने, श्रद्धामे नकरोसां सासोरे
 ॥ हिं० ॥ ४४ ॥ हिंस्यारो पाप अनुकंपारो पुन, आ
 श्रद्धावे सूधीरे ॥ हिंस्यागिणे नही त्रस थावररी, अक

ल ज्यारी मुंधीरे ॥ हिं० ॥ ४५ ॥ चर्चा सिजाय कही
जुकीसुं, सोऊतसहर मंजारैरे ॥ पुज्य श्री जैमलजी प्रसा
दे, ऋपरायचंद पर उपगारैरे ॥ हिं० ॥ ४६ ॥ इणरी
तो परतीतजुराखो, जिम होसी सिव पुरवासोरे ॥ सं
बत अठारेसें बर्ष तेतीसे, कही चैत्रजु मासोरे ॥ हिं०
॥ ४७ ॥ साची श्रद्धामे सेठो रहिज्यो, खोटी श्रद्धा
द्यो टारोरे ॥ सूत्र अर्थरो निर्णो करिने, लेजो सुरत
विचारीरे ॥ हिं० ॥ ४८ ॥ इति जीषम पंथीवा तेरा
पंथी जो संवत १८१८ के मे रघुनाथ साधूजीका
चेला जीषम तिसने तेरा पंथी मत चलाया-तिन
को निन्हव नामसे कहिकर चरचा करीहै ते मिश्र
चरचा सपूर्णम् ॥

॥ अथ चेइय मतीयांसै चरचा लिख्यते ॥

॥ ढाल ॥ श्रावक धर्म करो सुखदाई ॥ एदेसी ॥
दया जागोतीठे सुखदाई, मुक्त पुरीकी साईजी ॥
साठ नाम दयारा चाल्या, प्रश्न व्याकरण मांहिं
जी ॥ १ ॥ हिंस्या धर्म मिथ्यामत बाणी ॥ एटेक ॥
हिंस्या आद-अनादरीसेधी, बठरो चूँघण ध्यावेजी ॥
बोटा मोटा करकर हरखे, गुरबिन ज्ञान न पावेजी
॥ हिं० ॥ २ ॥ धर्म अपूर्व करतां दोहिरो, इंद्रिया स्वा
द घटावेजी ॥ हिंस्या करता धामक धैषा, जोलाने
मन जावेजी ॥ हिं० ॥ ३ ॥ धर्म बतारै सुरग-बार
सो, नवो प्रासाद करावेजी ॥ इण बाता देव लोकसि

धावे, तो धनवंत नस्क नजावेजी ॥ हिं० ॥ ४ ॥ ला
 खा कोडांरो द्रव्य लगावे, जोलानर वहिकांवेजी ॥ तीका
 चूरण जापा दिखावे, गोलागूंथ चलावेजी ॥ हिं०
 ॥ ५ ॥ एक सूत्रनी वात नहीं मानोतो, सगला सू
 त्र देखोजी ॥ हिंस्या करकर कुगत पोहोता, तिहांमा
 रतणो नहीं लेखोजी ॥ हिं० ॥ ६ ॥ जिण सासणनी
 नीव दया ऊपर, खोजी हुवे तिको पावेजी ॥ हिंस्या
 मांहिं धर्म बतावे, जलमधीया घृत न आवेजी ॥ हिं०
 ॥ ७ ॥ जिण आलाते पापना थानक ॥ महानसीत
 पाटजथाप्याजी, देवरा जोजग पेट जरीया, हीन अ
 चारी थाप्याजी ॥ हिं० ॥ ८ ॥ देखादेखी बावर प
 डीया, अंधाआगल अंधोजी ॥ पुन्यरा थाट दयासुं
 बंधसी, नहीं हिंस्यासुं सधोजी ॥ हिं० ॥ ९ ॥ पच
 महाव्रत साधुजीलीना, दूरजांगा इक्यासीजी ॥ ते हि
 स्याने रूडी जाणे, तो वरतमे होय विनासजी ॥ हिं०
 ॥ १० ॥ देसथकी श्रावक व्रतपाले, हिंस्याकरे घर
 बैठोजी ॥ जो हिंस्याने आठी जाणे तो, समकतमे न
 ही सेठोजी ॥ हिं० ॥ ११ ॥ हिंस्या मांहिं धरम प
 रूपे, ए अनार्जनी वाणीजी ॥ आचारांग सूयगडाग
 मे सुणता, नरकतणी सेनाणीजी ॥ हिं० ॥ १२ ॥
 ग्याता अंगे द्रोपदा पूंजी, परणेवाने वारेजी ॥ जो
 द्रोपदा श्राविका हुवे तो, पांच धणी किम धारेजी
 ॥ हिं० ॥ १३ ॥ तेहने समकत किण विध आवे,

नियाणो नही पुंगोजी ॥ मदन मास पचावे कान्हो,
 श्रावक आणे सुंगोजी ॥ हिं० ॥ १४ ॥ सुरसुरियाचे
 प्रतिमा पूजी, राजवैसनने ठाणोजी ॥ वीजीवीरीया
 पूजी नही दीसे, वीजे देवइम जाणोजी ॥ हिं० ॥ १५ ॥
 आणंदने आलावे जाखी, प्रग्रही चैतन वंदेजी ॥ सा
 धु होयने निलियाजमाली, ते आणंद नही वंदेजी
 ॥ हिं० ॥ १६ ॥ अरिहंतने अरिहंत साधाने, अंबड
 बंदे धर प्रेमोजी; चेइय अर्थ प्रतिमाने वांदेतो साधु
 ने वांधेसे केमोजी ॥ हिं० ॥ १७ ॥ पर मंदिर दोनु
 ने लेगा, साधुने जाय जुहारोजी ॥ प्रतमाने दोपण
 रयूं लाग्यो, ते पूजंताने वारोजी ॥ हिं० ॥ १८ ॥
 जंधा त्रिद्या चारण वादता, केवल ज्ञानकें ताईजी ॥
 विन आलोया विराधक जाष्या, मानुपोत्र चैत नाही
 जी ॥ हिं० ॥ १९ ॥ चमर इंद्रने अधिकारे चरचा,
 तिहां तुम प्रतिमा जाणोजी ॥ प्रतिमा तो सुर लोक
 मे हुंती, पिण वीर वचाया प्राणोजी ॥ हिं० ॥ २० ॥
 अरिहंत चेइय साधुनो सरणो, तिहां तुम आटोआ
 णोजी ॥ चेइय शद्र बदमस्त जिनेश्वर, तीजो श
 ह्व एम पिठाणोजी ॥ हिं० ॥ २१ ॥ राजा नगरादिक
 सिणगाख्या, सैन्यासुं परवरीयाजी ॥ जिण आरंभमे ध
 रम वतावे, तो लागे सावद किरीयाजी ॥ हिं०
 ॥ २२ ॥ मान बडाई कारण कीधा, ऋद्धिवंत विधक
 र गर्जेजी ॥ संसारघानो बांदो जाणी, जगवंतते नही

वरजेजी ॥ हिं० ॥ २३ ॥ वांदणनी अज्ञा दीधी, ति
 हां तुम धर्म पिठाणोजी ॥ तीखुतो गुण वंदणाकीधी,
 जावे सुणो बखाणोजी ॥ हिं० ॥ २४ ॥ सुरियाजने
 नाटकनी वरीया, जगवंत मौंनज कीधीजी ॥ वांदवा
 कार्ण अज्ञामागी, जगवंत हरखेदीधीजी ॥ हिं०
 ॥ २५ ॥ तीर्थकरने घरमे बैठाणे, साधु न वादे कोई
 जी ॥ तो साधु प्रतिमा किम वदे, अतिसे एक हो
 ईजी ॥ हिं० ॥ २६ ॥ चामर ठत्र सिंहासणवाजे; ज
 गवंत आप विराजेजी ॥ जगवंतरे मूरवा नही कांई,
 देवतणी चतुराई साजेजी ॥ हिं० ॥ २७ ॥ बीजो सा
 धु इण विधसेवे, करमांसुं लोपावेजी ॥ जगवंतरे इरी
 या वहीकिरीया, तीजे समे खपावेजो ॥ हिं० ॥ २८ ॥
 गोसालो निंद्याकर बोल्यो, जगवंत ऋधि किम मानो
 जो ॥ साधकहें जगवंत बीतरागी, तुं धरमरो मरम
 न जाणेजी ॥ हिं० ॥ २९ ॥ गौतमने पाखंमी बोल्या;
 थे सूध व्रत नही पालोजी ॥ ऊठो वेठो हालो चालो, थे
 पाप किसी विधटालोजी ॥ हिं० ॥ ३० ॥ म्हे साधु सू
 धा आचारी, करां बंकायानो पालोजी ॥ थांरी कहणी
 थेईज मरख, विरत विनागो बोलोजी ॥ हिं० ॥ ३१ ॥
 च्यार निखेपा सूत्रें चाल्या, जावविनाकिम मानो
 जी ॥ तीन बोलमे गुण नही लाधे; जाव मिल्या पर
 धानोजी ॥ हिं० ॥ ३२ ॥ सूत्रमे चरचा बहुली चाली,
 कहता लागे बारोजी ॥ हलुकरमी हिंस्यासुंडरसी; ते

हनो खेवा पारोजी, हिंस्याधर्म मिथ्या मत बाणी ॥
 हिं० ॥ ३३ ॥ इति चेइय मतीयासैं चरचा संपूर्णम्
 ॥ अथ सामाईक सूत्रपाठके शब्दार्थ लिख्यते ॥

॥ अथ बंदन नमस्कार करनेका पाठ अर्थः (ति
 खुत्तो) तीनबार [आयाहिणं] आदक्षिणतः एतले
 जीमणा पासाथकी प्रारंभीने (पयाहिणं) प्रदक्षिणा
 प्रते (करीकरीत्ता) करीकरीने (बंदामि) वादूबुं पगें ला
 गुंबुं (नमंसामी) मस्तक नमाडीने नमस्कारकरूबुं
 (सक्कारेमि) सत्कार देवुंबुं (सम्माणेमि) सम्मा
 न देवुंबुं (कल्लाणं) कल्याण कारी [मंगलं] मंगलकारी
 ॥ देवयं ॥ धर्मदेव (चेइयं) बकायना जीवाने सुखदायक
 एहवा ज्ञानवंत प्रते [पज्जवासाभि] पर्युपासुबुं एतले म
 न वचन कायाये करीने सेवा करूबुं (मत्थएण बंदा
 मि) मस्तके करी वादुबुं ॥ १ ॥ अथ रस्तेके चलने
 की क्रियाका पाठ अर्थः (इत्थाकारेण) तुम्हारी इ
 त्था पूर्वक [संदिसह] आज्ञा करोतो (जगवन)
 हे महाजाग्य ग्यानवंत (इरिया वहियं) चलवानो जे
 मार्ग ते माहे थई एहवी जे जीव बाधादिक सपाप
 क्रिया ते थकीहुं (पडिक्कमामि पडिक्कमु निवर्तुं इहां गुरु
 कहे (पडिक्कमह) पडिक्कमो निवर्तो पाप टाळो तिवारे
 सिष्यकहे (इत्थ) प्रमाणवे हुं पिण (इत्थामि) इबुं
 बुं जे [पडिक्कमिउ] पाप कर्मसुं निवर्तन वास्ते (इ
 रिया) रस्ता मांहि (वहियाए) चलता (विराह

णाए) दुखदीनोहोए (गमणागमणे) जावाताने आ
 वतां [पाण] प्राणी जीव (कमणे) पगे करी चां
 प्या होय (बीय) बीजने [कमणे] पगें करी चां
 प्या होय [हरियक्रमणे] नील वर्ण वाली वनस्प
 ती पगेकर चांपी होय (उसा) सूक्ष्म अप्पकाय
 आकाससे पडेते [उत्तिंग] कीनीयाना नागरां (प
 णग) पाचवर्णानी नीलण फूलण [दग] पाणी
 (मट्टी) काची माटी ' भकडा ' कालेकातण मर्कट
 ' संताणा ' जालो पाडते जीव मर्कटना संताण ' सं
 कमणे ' एसर्वने पगेकरी पाम्या तथा मसल्या ' जे '
 जे कोई ' मे ' मे पोते ' जीव ' जीवने ' बिरादिया '
 विराध्या होय दुख दीनो होय ' एगिंदिया ' जेहने स
 रीर रूपि एकज इंद्री होय ते पृथ्वी पाणी अग्नि वायु
 वनस्पतीना जीव ' बेइदिया ' सररीर तथा मुख दोय
 इंद्रीवाला जे संख सीप गंडोला अलसीया एहवा
 जेहने पग न होय ते बेइंद्री ' तेइंदिया तीन ' इंद्रीवाला
 शरीर मुख नाक होय ते कुंथुवा जूं लीख माकम कीडी
 ' चउरिंदिया ' च्यार इंद्री सररीर मुख नाक ने आं
 ख होयते माखी मठर डांस विठु जमरी जे उडन
 वाला जीव जेहने आठ पग तथा मस्तके सीग हो
 यते ' पंचिंदिया ' पांच इंद्रीयवाला जेहने सररीर मुख
 नाक आंख ने कान होयते जलचर १ थलचर २
 खेचर ३ उरपर ४ जुजपर ५ एतिर्येच तथा मनुष

हनो खेवा पारोजी, हिंस्याधर्म मिथ्या मत बाणी ॥
हिं० ॥ ३३ ॥ इति चेइय मतीयांसं चरचा संपूर्णम्

॥ अथ सामाईक सूत्रपाठके शब्दार्थ लिख्यते ॥

॥ अथ बंदन नमस्कार करनेका पाठ अर्थः (ति
खुत्तो) तीनबार [आयाहिणं] आदक्षिणतः एतले
जीमणा पासाथकी प्रारंजीने (पयाहिणं) प्रदक्षिणा
प्रते (करीकरीत्ता) करीकरीने (बंदाभि) वादुबुं पगें ला
गुंबुं (नमंसामी) मस्तक नमाडीने नमस्कारकरुंबुं
(सक्कारेमि) सत्कार देवुंबुं (सम्माणेमि) सम्मा
न देवुंबुं (कल्लाणं) कल्याण कारी [मंगलं] मंगलकारी
॥ देवयं ॥ धर्मदेव (चेइयं) ठकायना र्जावाने सुखदायक
एहवा ज्ञानवंत प्रते [पज्जवासामि] पर्युपासुंबुं एतले म
न वचन कायाये करीने सेवा करुंबुं (मत्थएण बंदा
मि) मस्तके करी वादुबुं ॥ १॥ अथ रस्तेके चलेने
की क्रियाका पाठ अर्थः (इत्थाकारेण) तुम्हारी इ
त्था पूर्वक [संदिंसह] आज्ञा करोतो (जगवन)
हे महाजाग्य ग्यानवंत (इरिया वहियं) चलवानो जे
मार्ग ते माहे थई एहवी जे जीव बाधादिक सपाप
क्रिया ते थकीहुं (पडिक्कमामि पडिक्कमु निवर्तुं इहां गुरु
कहे (पडिक्कनह) पडिक्कमो निवर्तो पाप टाळो तिवारे
सिष्यकहे (इत्थं) प्रमाणवे हुं पिण (इत्थामि) इत्थं
बुं जे [पडिक्कमिउ] पाप कर्मसुं निवर्तन वास्ते (इ
रिया) रस्ता माहिं (वहियाए) चलता (विराह

णाए) दुखदीनोहोए (गमणागमणे) जावाताने आ
 वतां [पाए] प्राणी जीव (कमणे) पगे करी चां
 प्या होय (वीय) वीजने [कमणे] पगें करी चां
 प्या होय [हरियकमणे] नील वर्ण वाली बन्स्प
 ती पगेकर चांपी होय (उसा) सूक्ष्म अप्पकाय
 आकाससे पडेते [उतिंग] कीमियाना नागरां (प
 णग) पाचवर्णानी नीलण फूलण [दग] पाणी
 (मट्टी) काची माटी ' भकडा ' कोलेकातण मर्कट
 ' संताणा ' जालो पाडते जीव मर्कटना संताण ' सं
 कमणे ' एसर्वने पगेकरी पाम्या तथा ममल्या ' जे '
 जे कोई ' मे ' मे पोते ' जीव ' जीवने ' विरादिया '
 विराध्या होय दुख दीनो होय ' एगिंदिया ' जेहने स
 रीर रूपि एकज इंद्री होय ते पृथ्वी पाणी आग्नि वायु
 वनस्पतीना जीव ' वेइंदिया ' शरीर तथा मुख दोय
 इंद्रीवाला जे संख सीप गंडोला अलसीया एहवा
 जेहने पग न होय ते वेइंद्री ' तेइंदिया तीन ' इंद्रीवाला
 शरीर मुख नाक होय ते कुथुवा जूं लीख माकरु कीडी
 ' चउरिंदिया ' च्यार इंद्री शरीर मुख नाक ने आं
 ख होयते माखी मठर डांस विठु जमरी जे उडन
 वाला जीव जेहने आठ पग तथा मस्तके सींग हो
 यते ' पंचिंद्रिया ' पांच इंद्रीयवाला जेहने शरीर मुख
 नाक आख ने कान होयते जलचर १ थलचर २
 खेचर ३ उरपर ४ जुजपर ५ एतिर्येच तथा मनुष

देव नारकी सर्व संसारी जिविते 'अभिहया' साम्हा
 आवतां हएयाहोय 'वत्तिया' एक ढिगले करी या त
 या धूलमें ढक्या होय 'लेसिया' जूमिमे घस्था त
 या लगारिक मसल्या होय 'संघाईया' माहोमाहि
 सररीरने मेलवीने एकठा मेलव्या होय 'संघटिया'
 थोडो स्पर्श करिवे करी दूहव्या होय, परियाविया
 सर्व प्रकारे ताप्या पीमा उपजावी होय 'किलामिया'
 गाढो दुख उपजाव्यो मृतप्रायकीधा 'उद्वविया' उ
 दवजते दसको उपजायो होय त्रास देने हाली चाली
 सके नही एहवाकीधा 'ठाणान' एक स्थान थकी उ
 पानीने 'ठाणं' बाजे ठिकाणे 'संकामिया' मंक्या
 होय 'जीवियान' जीव थकी 'ववरोविदा' मारीया
 होय नाशकीधो 'तस्स' ते संबंधि 'मिजामि, दूकडं'
 पाप कहिये ते दुष्कृत माहिरा मिथ्या एतले निष्फल
 थान ॥ अथ आगे इरियावहीके वास्ते काउसग्ग
 करणेमे आगार पाठ तिसके शब्दार्थः 'तस्स' ते
 पापनीज बली विशेष शुद्धिने अर्थे जे काई आग
 ले करवुं तेहने उत्तरी करण कहिए, एतले तेने हि
 ज 'उत्तरी करणेणं' विशेषे करी बली ऊपर शुद्ध
 करवुं अर्थात् जे अतिचारोने आलोयण प्रमुख पू
 र्वे कीधोते तेहनी बली विशेष शुद्धिने अर्थे कायो
 त्सर्ग करवुं ते कायोत्सर्ग तो 'पायचित्त करणेणं'
 शुद्ध प्रायश्चित्त ते पापनी आलोयणा करवा से होय

ते प्रायश्चित्तपिण ॥ विसोहिकरणेणं ॥ विशुद्धि नि
 र्मलता करवे करीने होय वली विशुद्धि पिण विशल्य
 होय तो थाय माटे ॥ विसल्लो करणेणं ॥ माया १ नि
 याण २ मिथ्यात ३ ए तीन शल्य टालवा थकी थाय
 ए उत्तरी करणादिक च्यार हेतु ये करी स्युं करवोटे
 ते कहेते ॥ पावाण कम्माणं ॥ संसार हेतु रूप जे प्रा
 प कर्म तेहने ॥ निग्घाएणठाए ॥ निर्घातन एतलेते
 दन करवाने अर्थ ॥ ठामि ॥ कायाने एक ठामे करू
 वुं ॥ काउसग्गं ॥ कायाने हलाववी नही ते रूप का
 उसग प्रते करूवुं ॥ हिवे इहां काया हलाववी नही ए
 वी प्रतिज्ञा करीते ते माटे सरीरनुं काई पिण हालवो
 थयांथी प्रतिज्ञातो जंगथाय तेहथी काउसग्गमा वारे
 आगार मोकला राख्याते ॥ अनत्थ ॥ आगे कह्या
 मूजव कायाहले तेहनो आगार माफी ॥ उससिएणं ॥
 ऊंचोश्वासलेवार्थी ॥ निससिएणं ॥ नीचोश्वास मुंकवा
 र्थी ॥ खासिएणं ॥ खासीखोकलार्थी ॥ ठीएणं ॥ ठीक
 आचार्थी ॥ जजाइएणं ॥ जांजली अगर वगासुं ले
 वार्थी ॥ उडुएण ॥ रुकार आचार्थी ॥ वायनिसग्गे
 णं ॥ वायु निकलतासे ॥ जमलिए ॥ अकस्मात् च
 क्रो कर आववार्थी ॥ पितमुठ्ठाए ॥ पितरा कोपसुं मुठ्ठा
 आयांसे ॥ सुहुमेहि ॥ सूक्ष्म थोडोक ॥ अंगसंचालेहि ॥
 शरीर हलाववार्थी ॥ सुहुमेहि ॥ थोमो ॥ खेलसंचाल
 हिं ॥ श्लेष्म तथा मुखना थूकनो चालववार्थी कफगिल

वाथी ॥ सुहुमेहिं ॥ सूक्ष्म थोडी ॥ दिहसंचालेहिं ॥ च
 क्तु द्विष्ट हालववासे ॥ एवमाइएहिं ॥ ए आदि करी
 ने बीजा ॥ आंगारेहिं ॥ आंगारलेताथका सर्पादिक
 तथाज्ञीत पडता तथा बिल्ली कोई जीव ऊपर बल
 घाल्यो होय तथा आगलागी होय इतरा कामार्थ
 अधबीच कावसग्ग पारेतो ज्ञागे नही ॥ अजग्गो ॥
 ज्ञागे नही खंडित हुवे नही ॥ अबिराहित ॥ हानी
 पहोचे नही ॥ हुऊ ॥ होजो ॥ मे ॥ म्हारो ॥ काउ
 संग्गो ॥ कायास्थिर राखवी ॥ जाव ॥ ज्यासुधी ॥ अ
 रिहंताणं जगवंताणं ॥ अरिहंत जगवानने ॥ नमुक्का
 रेणं ॥ नमस्कार करूं त्या सुधी ॥ नपारेपि ॥ पारू
 नही ध्यान संपूर्ण न करूं ॥ ताव ॥ त्यासुंधी ॥ का
 य ॥ म्हारी कायाने सरीरने ॥ ठाणेणं ॥ एक ठिकाणे
 स्थिरपणे राखीने ॥ मोणेणं ॥ अबोल रहीने ॥ जाणे
 णं ॥ एकाग्र ध्यान तेणे करीने ॥ अप्पाणं ॥ म्हारी
 काया ते प्रते ॥ बोसरामि ॥ हुंतजूवू ॥ आ पाठ क
 हीने काउसग्ग ॥ लोगस्स उज्जायगरे ॥ इत्यादि म
 न मांदिं ध्यानं करणा ॥ एमो अरिहत्ताणं ॥ कहिने
 काउसग्ग पारिए ॥ प्रश्न ॥ कितनेक साधु साधवी आ
 वक श्राविका इरियावहिके काउसग्ग करणेने इच्छा
 कारेणके पाठ का काउसग्ग करतेहै ॥ उत्तर ॥ इच्छा का
 रेणका ध्यान मनमे नही चिंतवणा ॥ इच्छाकारेण
 गुरु तथा अरिहंत महाराजकी आज्ञा मुजिव प्रथ

म इरियावहीके वास्ते इडा करेणका पाठ पढा ति
 स्मे रस्तेके चलनेकी क्रियाका मित्रामि दुक्कड हुवा
 फिर तस्स उत्तरी करणका पाठ आगार रखणेका
 कहा तो काउसग्ग पहिले इरिया वहीका पाठ कहा
 था ते कथा वोही ध्यान अर्थात् काउसग्गमे कहेणा
 ऐसा वही कहा नही परंतु इरियावहीके अर्थे चोवीस
 गुणस्तवन मनमे चिंतवन कर काउसग्ग करणा औ
 र इरिया वहीका पाठ प्रथम खुलासा पढणा और
 दूसरे तस्स उत्तरी करणेण का पाठ पढकर काउस
 ग्गमे लोग्गस्म उज्जोयगरे इत्यादि ध्यान करणा तो
 येही इरियावही का काउसग्ग कहाताहै अब का
 उसग्गमे चोवीस जिनस्तवन पाठ तिसके शब्दार्थः
 ॥ लोग्गस्स ॥ पंचास्ती कायात्मक लोकने ॥ उज्जोय
 गरे ॥ उद्योतना करणहार ॥ धम्मतिथ्यरे ॥ धर्म
 रूप तीर्थना करणहार एवा ॥ जिणे ॥ राग द्वेषना
 जीतनहार जे ॥ अरिहंते ॥ श्री अरिहंत तेहनो ॥ कि
 त्तइस्सं ॥ कीर्तन करीमुं तेहमे ॥ चउविसंपि ॥ ऋप
 नादिक २४ परमेश्वरनो नामोच्चारण पूर्वक कीर्तन
 करसुं अने अपिशब्दथकी अन्य जिनानुं पिण कीर्त
 न करसुं ते केहवाठे तोके ॥ केवली ॥ केवल ज्ञानी
 ठे ते तीर्थकरनो हु कीर्तन करिसुं ॥ १ ॥ हिवे ते २४
 जिनना नाम कहेंठे ॥ उसन्न ॥ श्री ऋपन्न देव स्वा
 मीप्रते ॥ मजियं ॥ श्री - अजितनाथ प्रते ॥ च ॥ व

ली ॥ वंदे ॥ वादुंबूं ॥ संभव ॥ श्री संभवनाथ प्रते
 ॥ अग्निनंदण ॥ श्री अग्निनंदननाथ प्रते ॥ च ॥ वली
 ॥ सुमइं ॥ श्री सुमतिनाथने ॥ च ॥ वली ॥ पठमप्प
 हं ॥ श्री पद्म प्रचूस्वामी प्रते ॥ सुपासं ॥ श्री सुपा
 र्श्वनाथजीने ॥ जिणं ॥ राग द्वेपना जीतनहार ॥ च ॥
 वली ॥ चंदप्पहं ॥ श्री चंद्र प्रचुजीने ॥ वंदे ॥ वादुंबूं
 ॥ २ ॥ (सुविहं) श्री सुविधिनाथजीने (च) वली
 एहनं वीजो नाम [पुष्कदंतं] श्री पुष्पदंतजीठे ते
 प्रते [सीयल] श्री शोतलनाथजीने (सिङ्गं) श्री
 श्रेयांसनाथजीने [वासपुळं] श्री वासपुज्य स्वामी
 प्रते (च) वली [विमल] विमलनाथजीने (मणं
 त) श्री अणंतनाथजीने (च) वली [जिण] रा
 ग द्वेपनाजीतनहार एहवा (धर्मं) श्री धर्मनाथजी
 ने ॥ शांति ॥ श्री शांतिनाथजीने ॥ च ॥ वली ॥ वं
 दामि ॥ वादुंबूं ३ ॥ कुंथुं ॥ श्री कुंथनाथजीने ॥ अ
 र ॥ श्री अरहनाथजीने ॥ च ॥ वली ॥ मल्लि ॥
 मल्लिनाथजीने ॥ वंदे ॥ वादुंबूं ॥ मुणिसुवयं ॥ श्री मुनि
 सुव्रतस्वामी प्रते ॥ नमिजिण ॥ श्री नमि जिनने ॥ च ॥
 वली ॥ वंदामि ॥ वादुंबूं ॥ रिठनेमि ॥ श्री अरिठनेमिजी
 प्रते ॥ पासं ॥ श्री पार्श्वनाथस्वामी प्रते ॥ तह ॥ तथा
 ॥ बद्धमाणं ॥ श्री बद्धमानस्वामी प्रते हुं वादुंबूं
 ॥ च ॥ चकार शब्द पादपूर्णाथिठे ॥ ४ ॥ एवं ॥ ए
 प्रकारे ॥ मए ॥ म्हारे जीवे जे ॥ अनिथुआ ॥ ना

म पूर्वक स्तव्या ते २४ परमेश्वर केहवाते तो के
 ॥ विहुय ॥ टाल्याते ॥ रयमला ॥ कर्म रूपी रज तथा म
 ल जेणे एहवाते बली ॥ पहीण ॥ अतिशये करीने
 क्लयकरघाते ॥ जरमरणा ॥ जरा तथा मरण जेणे ए
 हवाजे ॥ चउबीसपि ॥ २४ तीर्थकर तथा अपि श
 द्वर्था बीजा पिण तीर्थकर पूर्ववत लेवा ते सर्व ॥ जि
 णवरा ॥ जिनवर ॥ तित्थयग ॥ तीर्थकरते ॥ मे ॥ म्हा
 रा ऊपर ॥ पसीयंतु ॥ प्रसन्नहो ॥ ५ ॥ कित्तिए ॥
 कीर्तिते ॥ बंदिए ॥ बंदिते ॥ महिया ॥ पूज्यते इं
 द्रादिक पूजे एहवा ॥ जे ॥ तीर्थकर ॥ ए ॥ एप्रत्यक्
 ॥ लोगस्स ॥ लोकने विषे ॥ उत्तमा ॥ उत्तम एहवा ॥ सि
 द्धा ॥ सिद्धथया एतले सिद्धिपाम्या एहवा हे सिद्ध न
 गवंत तुममुक्ने ॥ आरुग्ग ॥ रोग रहित निर्मल ए
 हवो सिद्धपणो जाणवुं ते सिद्धपणो तो ॥ बोहिला
 जं ॥ बोधवीज जे श्री जिन धर्मनी प्राप्ति थाय ते
 वारे प्राप्त थायते ते माटे श्री जिन धर्मनी प्राप्ति
 नो लान्न थवाने अर्थे ॥ उत्तम ॥ प्रधान समाधि ते
 प्रते ॥ दित्तु ॥ देवो ॥ ६ ॥ चंदेसुं ॥ चंद्रमासे ॥ नि
 म्मलयरा ॥ अत्यंत निर्मल ॥ आइच्चेसु ॥ सूर्य समु
 दायसे पिण ॥ अहियं ॥ अधिक ॥ पयासयरा ॥ प्र
 कासना करणहार ॥ सागरवर ॥ प्रधान स्वयंचरमण
 समुद्र तेहनी परे ॥ गंजीरा ॥ गुणेकरी गंजीर एह
 वाजे ॥ सिद्धा ॥ सिद्धो ते ॥ सिद्धिं ॥ मुक्तिजे तेह

ने ॥ मम ॥ मुक्तप्रते ॥ द्विसंतु ॥ देवो ॥ ७ ॥ अथ सा
 मायिक करणेका पाठ तिरुका शब्दार्थ ॥ करेमिचंते
 सामाइयं ॥ इत्यादि ॥ चते ॥ हे पुज्य ॥ सामाइयं ॥
 समता परिणामरूप सामाइवने ॥ करेमि ॥ हुं करुं
 तुं ॥ सावळं ॥ पाप तेणे करी सहित एहवा ॥ जोगं ॥
 मन बचन कायाना योग ते प्रते ॥ पचखामि ॥ निषे
 ध करुंछु ॥ जाव ॥ ज्यांसुधी ॥ नियमं ॥ सामाइक
 व्रतना नियमने ॥ पळवासामि ॥ हुंसेवुंछुं रहुं त्यासुधी
 ॥ दुविहं ॥ दोयकरणसो करणो करावणो ॥ तिवि
 हेणं ॥ तीन योगसुं ॥ नकरेमि ॥ हुं करुं नही ॥ न
 कारवेमि ॥ हुं दुजापासे न करावुं ॥ मणमा ॥ मने
 करी ॥ वयसा ॥ वचने करी ॥ कायसा ॥ कायाए क
 रीने ॥ तरुस ॥ तेसावद्य व्यापार पापने ॥ चंते ॥ हे
 जगवंत ॥ पडिक्कमामि ॥ निवर्तुंछु ॥ निंदामि ॥ हुं
 आत्मानी साखे निंदुंछुं ॥ गरिहामि ॥ गुरुनी साखे
 हुं विशेषे निंदुंछुं ॥ अष्पाणं ॥ म्हारी आत्माने ते
 दुष्ट क्रियाथकी ॥ वोसरामि ॥ वोसिरावुंछु एतले वि
 शेषे करीने तजुंछुं ॥ अथ नमस्कार माहमा नमु
 त्थुणंका पाठ तिरुका शब्दार्थः ॥ नमुत्थुणं ॥ इहां न
 मोस्तु एतले नमस्कारहो अने ॥ एणं ॥ कार जेठे ते
 वाक्यालंकारने, माटे, ठे कोने नमस्कारहो तोके ॥ अ
 रिहंताणं ॥ श्री अरिहंत देवने ॥ जगवंताणं ॥ ज
 गवंतने ॥ आइगराणं ॥ धर्मना आदिनाकरणारेन ॥ ति

त्थयराणं ॥ तीर्थनास्थापनार एतले साधु, साधवी
 श्रावक श्राविका ए' ४ जातिना तीर्थना स्थापनारने
 ॥ सयसुबुद्धाण ॥ पोताने मेले सस्यक्त प्रकारे तत्वना
 जाण थया ॥ पुरिसुत्तमाणं ॥ पुरस माहिं उत्तम ॥ पु
 रिससींहाणं ॥ पुरुष माहे पुरुषार्थ सिंहसमान ॥ पुरिस
 वर पुंडरीयाणं पुरिसमाहे पुंडरीककमल समान ॥ पुरिस
 ॥ पुरुष माहिं ॥ वर ॥ ॥ प्रधान गंधहृत्थीणं गंध हस्ती स
 मानवे ॥ लोगुत्तमाणं ॥ लोक माहिं उत्तमवे ॥ लोगनाहा
 ण ॥ लोकना नाथवे ॥ लोगहियाणं ॥ लोकना हितकारावे
 ॥ लोगपईवाणं ॥ लोकने विशे प्रदीप समानवे ॥ लो
 गपज्जोयगराणं ॥ लोकमाहे उद्योतना करणारवे ॥ अ
 ज्ञयदयाणं ॥ अज्ञयदानना देणारवे ॥ चखुदयाणं ॥
 ज्ञानरूपी नेत्रोना देणारवे [मग्गदयाणं] मोक्ष मा
 र्गना देणारवे (सरणदयाणं) सरणना देणारवे [जी
 वदयाणं] संजमरूप जीवतना दातारवे (वोहिदया
 णं) समकितरूप बोधना दातारवे (धम्मदयाणं)
 धर्मना दातारवे ॥ धम्मदेसियाणं ॥ धर्मना उपदेसना
 दातारवे (धम्मनायगाणं) धर्मना नायकवे (धम्म
 सारहीण) धर्मरूपरथना सारथिवे (धम्म) धर्मे
 विशे (वर) प्रधान (चाउंरत) च्यार गतिना अंत
 करवा माटे (चक्रवट्टीणं) चक्रवर्ती समानवे (दि
 वोताणं) संसार समुद्रमां द्वीप समान दुखना निवा
 णं करनारवे (सरण) आधार [गइ) चार गति

मांहि [पडठा) पडतां जीवने (अप्पनिहय) न
 ही हणाय यहवो (बर) प्रधान [नाण] ज्ञान (दं
 सण) दर्शन एतले देखवो तेने (धराणं) धरणार
 ॥ बियट्ट ॥ गयुठे (बडमाणं) बडमस्थपणो एतले
 कर्म रूपी आवर्ण जेहने एहवा ॥ जिणाणं ॥ रागद्वे
 षजीत्याठे जेणे (जावयाणं) बीजाने राग द्वेषथी जि
 ताव्याठे ॥ तिन्नाणं ॥ संसार रूपी समुद्रसे पोते त
 रयाठे अने ॥ तारयाणं ॥ बीजाने संसार समुद्रथी
 तारनारठे ॥ बुद्धाणं ॥ पोते तत्व ज्ञानने समज्याठे
 ॥ वोहियाण ॥ बीजाने तत्व ज्ञान समजावणार ॥ मुत्ता
 णं ॥ पोते चातुर्गतिक विपाक विचित्र कर्मथी मुक्काणा
 ठे तथा ॥ मोयगाणं ॥ बीजा जव्य प्राणीने कर्मथी मु
 कावणारठे ॥ सवनुणं ॥ सर्वज्ञठे ॥ सबदरिसिणं ॥ स
 र्व पदार्थना देखणारठे ॥ सिव ॥ सर्व उपद्रव रहित
 एहवा ॥ मयल ॥ अचल ॥ मरूय ॥ रोग रहित ॥ म
 णंत ॥ अनंत अंत करी रहित ॥ मखय ॥ अक्षय
 सास्वताठे ॥ मवावाह ॥ व्याधि पीडा रहित ॥ मपुण
 रावति ॥ जे गतिसे फिर संसारने विशे अवतार ले
 वो नथी एहवी ॥ सिद्धिगइ ॥ सिद्ध गतिठे एहवो
 ॥ नामधेयं ॥ नाम जेहनु एहवा ॥ ठाणं ॥ स्थान
 कने ॥ संपत्ताणं ॥ पाम्याठे अर्थात मोक्ष नगर प्रते
 पाम्याठे एहवा अरिहंत जणी ॥ नमो ॥ म्हारे नम
 स्कार होजो ते जिन जगवांन केहवाठे तो के ॥ जि

णाणं ॥ कर्मरूपी शत्रुने जीतणार तथा ॥ जियज
 याणं ॥ इह लोकादिक सातजय प्रते जीतणारठे ॥
 अथ सामाइक पारवानो पाठ तिसको शब्दार्थः ॥ न
 वमां सामायक व्रतके विषे जे कोई अतिचार ला
 गया होय ते आलोजं ॥ नोसा सामाइक व्रतमे जो
 कोई कोस लग्या होय ते कहंतुं ॥ मन १ वचन २
 कथा ३ जोग माठा बरताया होय ॥ मन वचन का
 य ए तीनों योग खोटे बरताये होय ॥ सामाइक
 मे समता न आणी होय ॥ सामाइक करतां समता
 नाव नहीं कीया होय ४ ॥ अण पूगीपारी होय ॥
 महर्त पूरा हुया पहिले पारी होय ५ ॥ तस्स मिडामि
 दुक्कडं ॥ ते दुष्कृत मिथ्या होजो ॥ दस दोष मनके
 दस दोषवचनके बारे दोष कायाके ए ३२ दोषांमे जो
 कोई पाप दोष लाग्या होय तस्स मिडामि दुक्कडं ॥
 दस दोष मनके तेना नाम सामाइकमे जस बाठे १ वमाई
 बाठे २ लोच बाठे ३ जयथीकरे ४ नियाणे सहित करे ५
 संदेह करे ६ सामाइकनो फलठे वा नहीं ७ गुरुकी
 विने जक्ति रहित करे ८ अहंकार सहित करे ९ अ
 काले तथा औसर विनाकरे १० दस दोष वचनके च
 पलताई से बोले १ क्रोध वचन बोले २ विने रहित
 बोले ३ गुणगुणाट कर बोले ४ काम रागे कर बोले ५ क
 लहकारी वचन बोले ६ बाद कर बोले ७ हास्य
 करी बोले ८ विकथा कहे ९ असंजतीने आवो जा

वो कहे १० कायाके १२ दोष बाहनी तथा बखनी
 पालठी घालीने बैठे १ अथिर पणे वैसे २ दृष्टि वि
 कारे करवो ३ अनेराकाम करवो ४ सहसा लड वि
 ना कारणे ५ काया पसारे ६ अलस्य करे ७ कडका
 मोडे ८ मैल उतारे ९ विण पूजे खाज करे १० वि
 न कारणे पग दबावे ११ ऊघवो १२ ए ३२ दोष टा
 लकर १ सामाइक करतां ९२ क्रोड ५९ लाख
 हजार ९ से पचीस पल्ल एक पल्लका ८ जाग की
 जे जिस्मेसे तीन जाग ऊपर इतनो आउखो देव ग
 तिने बंधे नरक गतिरो आउखो इतनो द्य करे
 यह एक सामाइकका फलठे इति सामाइक सूत्र श
 द्वार्थ संपूर्णम्

॥ अथ १० दश पञ्चखाण सूत्र पाठ तथा
 शब्दार्थ सहित लिख्यते ॥ उग्गेसूरे नमुकार सहियं
 पञ्चखामि चतुर्विहपिआहारं असणं पाणं खाइमं
 साइमं अन्नत्थणा जोगेणं १ सहसागारेणं २ बोसरा
 मि ॥ १ ॥ जाषार्थः सूर्यउग्यापठे नवकार सहित
 दोघनी प्रमान पूरा थया पठे जिहां लगे ३ नवकार
 पढ्या विना पारुं नही तालगे पचखुंतुं ते ४ प्रकारे
 आहार अन्न १ पाणी २ मिठाइ ३ फलमेवादि ४
 अजाणपणे झूलके मुखमे बस्तु पमेतो पचखाण फूटे
 नही १ जवरदस्त मुखमे घाले तो पचखाण फूटे
 नही ए दो आगारठे ॥ १ ॥ उग्गेसूरे पोरसी पच

खामी चतुर्विहंपिआहारं असणं पाणं खाइमं साइमं
 अणत्थणाजोगेणं १ सहस्सागारेणं २ पठिनकालेणं ३
 दिसामोहेणं ४ साहुवयणेणं ५ सवसमाहि वतीयागारेणं
 ६ वासरामि एवं साठ पोरसीयं नावार्थं ॥ इहां आगारमे
 २ आगाराथं पूर्ववत जाणने मेघधूंवरि करि सूर्य ढाक्या
 होय तिस वास्ते पूरी खबर पोरसीमे नपके तो पचखा
 ण पारता जंग नथी ३ दिसा चूला होय याने पूर्व
 पश्चिमकी खबर न रही भ्रमचित करी पचखाण जं
 ग नथी ४ साधुकहे साधुसे पहर दिन तथा दोढ पहर
 दिन आयो इम सुणीने पचखाण पारे तो जंग नही
 ५ वली जिह्वांताई समाधि सरीरमे होवे तिहां ताई
 जिवारे सूलगदिक अस्माध होवे तिवारे बिकल थयो
 रोग दूर करवाने अर्थे उपधी लेवोतो जंग नही ६ ॥
 उग्गए सूरें पुरमहं पचखामि चतुर्विहंपिआहारं अ
 सणं पाणं खाइमं साइमं अणत्थणाजोगेणं १ सहस्सा
 गारेणं २ पठन कालेणं ३ दिसामोहेणं ४ साहुवय
 णेणं ५ महत्तरागारेणं ६ सवसमाहि वतीयागारेणं
 ७ वासरामि ॥ ३ ॥ अर्थ इहा आगार ७ वहतो पू
 र्ववत जाणणे १ मोटो कोई धर्म कार्य वास्ते पचखा
 ण पारे तो जंग नही मित्यर्थ ॥ उग्गए सूरें एगा
 सणं विआसणं पचखामि दुविहं तिविहं पिआहारं
 असणं पाणं खाइमं साइमं अणत्थणाजोगेणं १ स
 हसागारेणं २ सागारियागारेणं ३ आउट पसारें ४

गुरु चूठाणं ५ परिठावणियागारेणं ६ महत्तरागारे
 णं ७ सवसमाहिवत्तियागारेणं ८ बोसरामि ॥ ४ ॥

जावार्थ इस एकासनमे एक वक्त आहार करे वा दो
 वक्त ते उप्रांत पचखान जो दो आहार पचखेतो अ
 सनखादिम पचखे और तीन आहार पचखेतो अ
 सन खादिम स्वादिम पचखे तथा १ आहार पाणी
 सहित पचखे तिसमे ८ आगार ४ आगारके अर्थ
 पहिले लिखआयेहै और ४ आगारार्थ यहै एक आ
 सन बैठा और गृहस्थ आवे तव आसन उरहा प
 रहा करता पचखान जंग नथी ३ हाथ पग संको
 चतां पसारता आसन चलावै तो नेम जंग नथी ४
 एक आसन बैठया गुरु आवे तिनकी आसनसे उ
 तर कर विनयकरे तो नेम जंग नथी ५ आचार्य उ
 पाध्याय ग्लान थया ते आहारादिक आण्यो तिनके
 वारुने पिण उनसे किया न जाय तो एकासन मा
 हि वा आयंदल उपवास माहिं खाता नेम जंग नथी
 ए आगार साधुके पचखाणमेहै परंतु श्रावकके पचखान
 करानेमे नही [परिठावणियागारेणं] ६ मित्यर्थ मूरे उ
 ग्गे एकलठाणं पचखामि चउबिहंपिआहारं असणंपाणं
 खाइमं साइमं अनत्थणा जोगेणं १ सहसागारेणं २ सा
 गारियागारेणं ३ गुरु चूठाणं ४ परिठावणियागारेणं ५
 महत्तरागारेणं ६ सवसमाहिवत्तियागारेणं ७ बोसरामि
 ॥ ५ ॥ जावार्थ एक आसन पर बैठकर हाथपग घ

णा हलावे नहीं एक हाथसे जिमे फिर ४ आहारमे
 से कोईसा आहार करे नहीं तेह एकलठाणा इसमे
 आगार ७ है तिनके अर्थ पूर्ववत मित्यर्थ ॥ सुरे उग्गे
 आयंबिलं पञ्चखामि तिविहंपि आहारं असणं खाइ
 मं साइमं अन्नत्थणा जोगेणं सहस्सागारेणं २ लेवा
 लेवेणं ३ गिहत्थ संसठेणं ४ उखित्तविवेगेणं ५ परिठा
 वणियागारेणं ६ महत्तरागारेणं ७ सवसमाहि वत्ति
 यागारेणं ८ बोसरामि ॥ ६ ॥ जावार्थ आंबिल ते घृता
 दि तथा रसादि रहित एक पाणीसेती आहार करे
 एक वार उप्रांत पाणी आगार रखकर तीन आहार
 का त्याग करे जिसमे ८ आगार माहिथी ५ आगा
 रार्थ पूर्ववत और तीन आगार अर्थ इस तरेहै ते ले
 प विगय खरड्यो बरतन वा सागादिक बरतन तथा
 हाथ खरड्या होय तिसके हाथसे तथा सागादिक र
 हित बरतनसे आहार कर्ता नेम जंग नहीं ३ और
 जो गृहस्थे अपने वास्ते हाथ वा करवा आदिक वि
 गयमे खरड्या होय तिसी हाथसे वा करवादिकसे
 आहार देयतो ते आहार करता नेम जंग नहीं ४
 और जो घृतादि विगय बरतन ऊपरसे आहार लेइ
 तो नेम जंग नहीं ५ इत्यर्थ ॥ उग्गएसुरे अन्नतठं पञ्च
 खामी तिविहंपिआहारं असणं खाइमं साइमं अण
 त्थणा जोगेणं १ सहस्सागारेणं २ (परिठावणियागारेणं
 ३) महत्तरागारेणं ४ सवसमाहिवत्तियागारेणं ५ बो

संरामि ॥ ७ ॥, जावार्थ सूर्यउदय पवे जक्तार्थ जिहां
 कोई जक्त नथी ते अजक्तार्थ उपवास कहिए जै
 से उपवासकु चउथजक्त पचखाण कहतेहैं ते चार
 जक्त कौणसी प्रथम जक्तमे सांजके शैस दिनकीमे
 आहारादिक त्याग दूसरी जक्त वो जोकि ४ प्रहर
 रात्रीकी तिसरी जक्त वो जो कि ४ प्रहर दिन हु
 आ चौथी जक्त वह जोकि ४ प्रहर की अगली रा
 त्री हुई और पांचमी जक्तके दिवसेमे आहार लेवे इ
 सवास्त उपवासकु चउथ जक्त आहारके त्यागनेसे
 अजक्तार्थ कहिये तिसमे च्यार आगार तथा ५ आ
 गार (परिठावणीयागारेणं) ए पाठ गृहस्थके पच
 खाणमे नहीं इनके अर्थ पूर्ववत मित्यर्थः ॥ उग्गएसूरे
 पाण अहार पुरमह पचखामि अन्नत्थणा जोगेणं १
 सहस्सागारेणं २ पन्नकालेणं ३ दिसापेहेणं ४ सा
 हवयणेण ५ महतरागारेणं ६ सबसमाहि वत्तियागा
 रेणं ७ पाणस्सलेवेणवा १ अलेवेणवा २ अत्तेणवा
 ३ बहुलेणवा ४ ससणिद्वेणवा ५ असणिद्वेणवा ६
 वासरांमि जावार्थ सूर्यउदयसे दो प्रहर दिवस ताई
 पाणीनो पचखाण जिसमे ७ आगारार्थ पूर्ववत प
 रंतु पाणी ६ प्रकारका आगार खजूर पाठा निगो
 यानो पाणी १ अलेपजल ते कांजी प्रमुख उकाल्यो
 पाणी २ धोलो चावलानो धोवण पाणी ३ उष्ण नि
 र्मल पाणी ४ सथिसहित उसामणादि पाणी ५ सी

तते नाज आदिक अंस रहित मेवादि धोवण फा
 सु पाणी ६ ए पाणी आगार उप्रांत ३ आहारका
 नेम ॥ ७ ॥ दिवस चरम पचखामी चउबिहंपि आ
 हारं असणं पाणं खायमं साइमं अणत्थणाजोगेणं १
 सहस्सागारेणं महत्तरागारेणं सवसमाहि वत्तियागारेणं
 ४ बोसरामि ॥ ८ ॥ जावार्थ इहा एकता दिवस चर्म
 तथा चव चर्म दिवस चर्म त संध्यासमे पचखेजि
 हांतक सूर्य उदय नही होय और जे चव चर्म जा
 व जीव ताई करे ते संथारा कहिये अपनी आयुका
 ओसर जाणीने करे जिस दिवस चर्मके ४ आगार
 तिनके अर्थ पूर्ववत् मित्यर्थ उग्गए सूरें गांठि सहि
 अं मुठि सहिअं पचखामि चउबिहं पिआहारं असण
 पाणं खाइमं साइम अन्नत्थणाजोगेणं १ सहस्सागारे
 णं २ महत्तरागारेणं ३ सवसमाहि वत्तियागारेणं ४ बो
 सरामि ॥ ९ ॥ जावार्थ इस पचखाणमे वस्त्र तथा डो
 रेमे गांठ देई खोले तिहां तक पचखान तथा मुठि
 पचखाण समे करी खोलते समे मुठि चीडीवर खोलुं
 नही तिहांतक ४ आहारनो पचखाण ते इहां ४ आगा
 र पूर्ववत् इत्यादि अजिग्रह नेम मित्यर्थ ॥ उग्गए सूरें
 निविगइ एकासणं पचखामि तिविहंपि आहारं अस
 णं खाइमं साइमं अणत्थणाजोगेणं १ सहसागारेण
 २ लेवालेवेणं ३ गिहत्थसंसठेणं ४ उखित्तविवेगेणं
 ५ पडुचमखिएणं ६ पारिठावणीयागारेणं ७ महत्तरागा

रेणं ८ सवसमाहि वतियागारेणं ९ बोसरामि ॥ १० ॥
 जावार्थ इह विगय पचखानेमे तो यथा प्रमाण क
 स्या होय तैसा करे ते दूध दही घृत तेल गुड ओ
 र निविगइनुं एकासण सहित ते उप्रांत तीन तथा ४
 आहार नो पचखाण मे ९ आगार ते आठ आगार अर्थ
 पूर्ववत (पडुचमखीएणं) तेरोटी करणे वाली स्त्री थोमा
 सा मोंण रोटीमे दाधा होय तथा हाथ घृतका मसल्या
 हो नरम रोटीके होणेकुं ते रोटी लेता पचखाण नं
 गे नही ते आगारहै मित्यर्थ ॥ देसावगासीयं उ
 वचोगं परिचोगं पचखामी अणत्थणा जोगेणं १ स
 हसागारेणं २ महत्तरागारेणं ३ बोसरामि ॥ १ ॥
 जावार्थ दिसनी मर्यादा जिस मांहिं करीये ते देसा
 विगासी संजर नाम (उपजोग) एकवार जे वस्तु
 जोगमे आवे दंतणादिक (परिजोग) जे वस्तु वा
 रवार जोगनेमे आवे ते स्त्री वस्त्रादिक तेहनी मर्याद
 करे जिसमे आगार ३ पूर्ववत इत्यर्थ ॥ अथ १४
 नेम के नाम सचित १ दध २ विगइ ३ पणही ४ तंबोल
 ५ बत्य ६ कुसुमेसु ७ सयण ८ बाहण ९ बिलेवण
 १० अबंज ११ दिसि १२ न्हाण १३ जत्तेसु १४ इ
 ति श्री प्रत्याख्यानागाराणि संपूर्णम्

अथ सामाईक करनोके विधि लिख्यते

प्रथम तिखुतोके पाठसे बंदना करि निज गुरुकी
 आज्ञा लेय जो अपने गुरु और किसी देसमे हो

यतो ज्ञावे करी आज्ञा लेवे क्योंकि गुरों का उपदे
 स और आज्ञा धर्म कार्यमे हमेसा करने कीहै तथा
 अपने नगरमे जो साधु होय तिनकी आज्ञा लेवे
 और नवकार एक और पढे और अरिहंतो का पाठ इ
 ठा कारणका पाठ तिससउत्तरी का पाठ कहिने लोग
 सस उज्जोगरे के पाठका काउसग १ करे पढे एमो
 अरिहताणं शब्द कहिने काउसगग पारे (ध्यानके
 विषे मन वचन कायाका जोग माठा बरता होय त
 सस निवामि दुक्कडं) कहे खुली लोगसस उज्जोगरे
 कहे गुरु तथा साधुकी आज्ञा लेईने करेमी जते के
 पाठ से सामाइक करे आपकरे जिसमे तो (वोसरा
 मि) पाठ कहे और किसी साधुमी जाई को पच
 खान करावे तो वोसिरे २ कहे फिर वामा गोडा उ
 चा याने उंचा करीने दाहिणा गोदा जिमीसे लगाइ
 कर दोय वार नमुत्थुणं का पाठ पढे दूसरा नमुत्थु
 णं के आगे [ठाणं सपावियो कामसस नमोजिणा
 णं] इम कहे और सामाइक पारता इठा कारण
 तसस उत्तरी कहिकर पूर्ववत काउसगग करीने दोय
 नमुत्थुण पढीने नवमा सामाइक व्रतका पाठ पढक
 र तीन नवकार पढे ॥ इति श्री सामाइक अर्थ वि
 धि तथा दस पबखान शब्दार्थ संपूर्णम्

॥ अथ अष्टादश दोष रहित जिनस्तवन लिख्यते ॥

परमेष्ठी पद मनमे धारी, कहुं मे देव स्वरूप ॥

दोष अष्टादश रहित जिनेश्वर, सुंदररूप अनूप
 १ ॥ चतुर नर वीतराग जिन सेवो, जिम उत्तम
 दत्तुम लेवो ॥ चतुर० ॥ टेक ॥ दान लाज जोग उ
 जोगजु, बलवीर्य अंत्राय ॥ पाचो ह्यकर अनंत ब
 के, सुरनर सेवे पाय ॥ च० ॥ २ ॥ हास्य रतार
 जय दुगंछा, सोक नहीलवलेस ॥ मनमत्थ मोह
 ग्यानरू निद्रा, नही अविरत जिनेस ॥ च० ॥ ३
 राग द्वेष ए दोष अठारे, त्यागे श्री जिनराय ॥ अ
 र देव ऐसा नही जगमे, जो अरिहंत पदवीपाय ॥ च
 ॥ ४ ॥ अनंत ग्यान दरसनके धारी, चारित्र तप
 अनंत ॥ अनंत बली तारक जग स्वामी, जय जं
 न जगवंत ॥ च० ॥ ५ ॥ नरक देव तिरयंच म
 प्यनी, आवा गमनविचार ॥ अविचलपदवी सिद्ध त
 णी तुम, पामी अधिक उदार ॥ च० ॥ ६ ॥ ऋपर
 ज कहे करनाल नगरमे, देव स्वरूप बखान ॥ वि
 न आग्या आराधिक प्राणी, पामे शिवसुखथान
 ॥ च० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ नमीराज ऋषीकी सिंजाय लिख्यते ॥

॥ वीतराग पद सेवीयेजी, कीजै सुध परि
 णाम ॥ नमी राजा मिथुला तणोजी, जोगे सुख अ
 जिराम ॥ सोजागी धनधन नेमीराय ॥ १ ॥ पूर्व क
 रम उदेथकीजी, उपन्यो दाघजु रोग ॥ नारी तव च
 दन धिसेजी, सीतलताके जोग ॥ सोजागी धनधन

नेमीराय ॥ २ ॥ शौर शब्द सुणता थकाजी, उप
 ज्यो मन वैराग ॥ जीवसदाबे एकलोजी, इम
 जाणी जग त्याग ॥ सो० ॥ ३ ॥ जातीसुमरण ज्ञान
 सैजी, लीधो मंजम चार ॥ नगरी बाहिर आवियाजी,
 तनसे ममत निवार ॥ सो० ॥ ४ ॥ सक्रइंद्रतिहां आ
 इकेजी, प्रश्न बहुविध कीध ॥ निर्मल बुद्धि जोगसैं
 जी, उत्तर सगले दीध ॥ सो० ॥ ५ ॥ अहो अच
 र्जबे ताहिराजी, खिमावंतगुणगेह ॥ करजोडी सिर
 नामकेजी, गयोसुधर्मे तेह ॥ ॥ सो० ॥ ६ ॥ नमी
 ऋपीतपसाधकेजी, मुक्तगये महाराय ॥ जन्म मरण स
 हु टालेजी, अजर अमर पद पाय ॥ सो० ॥ ७ ॥
 श्री जिन वाणीबे खरीजी, उत्राध्येनविचार ॥ नोंमे
 अध्ययने चाखीयाजी श्री जिन बहु विस्तार ॥ सो० ८ ॥
 संवत उनीसे इक्यावनेजी, कठप नामे ग्राम ॥ नेमी
 गुण चौमासमेजी, कहै ऋपरायजुस्वाम ॥ सो० ॥ ९ ॥

॥ श्री गुरुच्योनमः ॥

॥ अथ रामचंद्र लक्ष्मण कथा सजाय लिख्यते ॥

कालसे डररे, नादान कालसे डररे ॥ कालका सब ज
 गहै खाजा, कि खयगये बडे बडे राजा ॥ कालेलगर
 दून पकड उठावे इंद्र और चक्री राजाक्या कालसे
 डररे ॥ १ ॥ निज समकितकु तुंगहिरे, निश्रंथ धर्म
 तुलहिरे ॥ नर नवको सुफल करलेरे ॥ जगतका रूया
 लसबजूठा ग्यानी निज आतमू मीठा ॥ का० ॥ २ ॥

है क्रोधमान दुखदाई, मायाकी गिरहलगाई, लालच
 से लाज गमाई, हुवा मोहकरम बिच अंधा, जगत
 का सब कुठा धंदा ॥ का० ॥ ३ ॥ जूमपरबडे चक्रवारी कां
 पत जिन प्रथवीसारी, अरे तेरी कालसे यारी विचार कर
 मनमे तुं प्रानी सुफल कर अपनी जिंदगानी ॥ का० ॥ ४
 लंकाका राजा रावन, दल फौज घटा जिम साव
 न सुत, इंद्रजीत मेघवाहन, आनमरदादा जिन तोरी ॥
 करी परनारीकी चोरी ॥ का० ॥ ५ ॥ कुंनकरन जविह्नन
 जाई, औरांकी गिनती नाही, सोनेकी लंकवनाई हु ॥
 वा जूपत सिरताज करेता तीन खंरुका राज ॥ का० ॥ ६ ॥
 एक दिन दरवार. सजीला कर रह्याथा राव हठीला,
 रंग विनोदमे खुसनीला राजतपरहाथा अखंडित आ
 या इक जोतिसका पंफित ॥ का० ॥ ७ ॥ जूपत कहै पांडे
 तसें यूं, में तीन खंरुका हुं, नही लडने लायक को
 इमोसुं ॥ पंडितकह आगमका हाल होवेगा, किस्के हा
 थमेरा काल ॥ का० ॥ ८ ॥ तबपंडित यूं वतलावे परनारी
 तुम मन जावे; तुं उस्को चुराकरल्यावे, जद उस्का
 पति चढि आवेगा ॥ देखल बहतेरा उठावेगा
 ॥ का० ॥ ९ ॥ है सती सतवंती, उतकृष्टी सीलगुनवं
 ती, तीन लोकमे जसवंती ॥ कंत उस्केका बीर होगा
 के, शवणसोतुऊमारेंगा ॥ का० ॥ १० ॥ नलकुवेर
 समान जोडी, जो धनुष अर्नवात्रत मोडी, जोबर
 राय बंध तोमी ॥ संवुककासीसउतारेगा, कि शवण

सोतुऊ मारेगा ॥ का० ॥ ११ ॥ जो जय सुग्रीव मि-
 टावे, तारा उसकी दिलवावे, कपियोंको दासवनावे ॥
 साहसकी विद्या जगावैगा के, रावण सोतुऊमारेगा ॥
 का० ॥ १२ ॥ आरै अंजनीसूत जाका पायक, हो ती-
 न लोकमे नायक, परजा कहती सुखदायक ॥ सि-
 ला जो कोड उठावेगा के, रावनसोतुऊमारेगा ॥ का०
 ॥ १३ ॥ लज्जातेरी सक्तीसेती, जो सती विसल्याव-
 रसी, जो चक्रसुदर्शन लेसी, जविह्वानको दासवना-
 वैगाके, रावनसोतुऊ मारेगा ॥ का० ॥ १४ ॥ है नग-
 र अजुध्यास्वामी, हो जसरथ के घर आमी, सुतराम
 लक्ष्मन दो नामी ॥ ले आठमा बासुदेव अवतार, करे
 रावन तेरा संहार ॥ का० ॥ १५ ॥ जोतिसकी ब्राता
 सुनकर, चूपतगुस्सेमे जरकर, पंक्तिसें बोलयावसक
 र सिरउन दानोका भंगवाताहुं, कि निमतीको ऊठकह-
 लाता हु ॥ का० ॥ १६ ॥ मेरे वीर जविह्वान आओ
 तुम नगर अजुध्याजाओ, सिर जसरथजनक लेआ
 ओ ॥ चैनतो मुजे उसदम आवेगा, कि उनका खो-
 ज मिटावेगा ॥ का० ॥ १७ ॥ अरेहोनहार नहीं मि-
 टती, करमोकी बडीहै सक्ती, ततेवीर कुठ नहीं च-
 लती ॥ जविह्वान बलसीर उतार आया, पर उनका
 नेद नपाया ॥ का० ॥ १८ ॥ तव हुवा नचिंता राजा
 कर आनंद मंगल वाजा, धन दौलत संपत साजा
 ॥ हुई रामलक्ष्मनकी जोमी, तेब मंदिरमे कोमी

॥ का० ॥ १९ ॥ वह जनक राजाकी जाई, जसरथ
 सुतको परनाई, सब लोगोंके मनजाई ॥ बढे दिन
 पर दिन हररोज, अनीतका नही राजमे खोज ॥ का०
 ॥ २० ॥ जसरथ वैरागमे आया, रामजीको तिलक
 कराया केकईके मन नही चाया ॥ वचन पूरनप्री
 तमकीजे, जरथको राजतिलक दीजे ॥ का० ॥ २१ ॥
 ब्रवीयोंका वचनहै अणामिद्व, मशहूर त्रियाकी ए हद्व,
 दिख्यामे कर दई खटपट ॥ रामजी पिता पासआया,
 जरथको टीका दिलवाया ॥ का० ॥ २२ ॥ तव राम
 चलेथेवनको, लीयासाथ बीरलबमनको, सतवंती के
 हैथी उनको ॥ रामजी लारे मुकलीजे, दगा अबला
 को क्या दीजे ॥ का० ॥ २३ ॥ तव नगर रोवेथासा
 रा, रामज बनखंड सिधारा, परजाको कौनसहारा ॥
 जरथ सिरपीटे दोनु हाथा, गजबकरदीयाकेकई मा
 ता ॥ का० ॥ २४ ॥ परकारज जग करते, दूखीया जन
 के दूखहरते, जो दुरजन सो सहुकरते ॥ रामजी दं
 डक बनमे आये, कि जटायू पंख्यादि हरखाये ॥ का०
 ॥ २५ ॥ बनफलका आहारनितकरणा, अरिहंत दे
 वका सरणा, सिंहोंको किससे मरणा ॥ गुजरे वरस
 जब बारा, तवमुनीये होनीका चारा ॥ का० ॥ २६ ॥
 इक दिन लक्ष्मनजु अकेला, फल लेण गया अल
 वेला, हुआ खडग हांससे मेला ॥ परिख्या कार
 खरग चलाया, सीस संबूकका उडाया ॥ का० ॥ २७ ॥

जव सरूपनखा चढि आई, सिरकटा लहास सुतपाई
 जाय लंकादई दूहाई ॥ वीरातेरे राजमंजारे, मुऊप
 तिदेवर सुतमारे ॥ का० ॥ २८ ॥ है दडकमे दो आ
 दम, ऐसे को नही देखे हम, रूपतो उनका इंदरसम
 ॥ रावनमुऊन जरआवे ऐसी, राजयह तेरा नही रह
 सी ॥ का० ॥ २९ ॥ इकबात में और कहतीहूं, नारी उ
 नकी इंद्राणीजुं, बरनन नही होवेमुऊसु ॥ अगर तुं
 उसको देखेगा, कि राजकुसाराचूलेगा ॥ का० ॥ ३० ॥
 अबलाहैरूपें एहवी, मनपनी नही वहदेवी, एक वा
 रजो देखे तेवी ॥ मंदोदरि आदिकसवरांनी, सगली
 जाय खिस्यांणी ॥ का० ॥ ३१ ॥ अकासे मेह जिमगरजे,
 मोरसुनत द्वियोलरजे, अरेहोनी आके सरजे बैठी पु
 ष्पक नाम विमान; वहरावन पहेचा अटवी आन ॥
 का० ॥ ३२ ॥ तिहां देवी राव विचारो, कहो कारज
 हमरासारो, रामजीको इहांसेटारो ॥ रामजी जवतक
 नही जावे, हाथसीता नही आवे ॥ का० ॥ ३३ ॥
 देवीने नेदवतायो, सिंघनाद करीजरमायो, हरलवन
 न पासे आयो ॥ रावनने पकडसीयाकाहाथ, चलवो ले
 अपनीसाथ ॥ का० ॥ ३४ ॥ जिममुसापकड मंजारी, कु
 ठ बस नही चलतानारी, योंतडफैथीराजदुलारी ॥ वा
 गमे लंकाके दरम्यान, उतारा पुष्पनाम विमाण ॥
 का० ॥ ३५ ॥ हुई रावन दिलखुस्याली, वो रोती सिता
 वाली, हरलक्ष्मन विपतनिहाली ॥ फिरे सिता कार

न जमते, कै आंसूहरकै नहीथमते ॥ का० ॥ ३६ ॥
 सुग्रीव कपियोकाराजा, आया निज दुखके काजा लव
 मनजी दीना साजा ॥ साहसको परजंव दिखलाई कि
 ताराजनकी दिलवाई ॥ का० ॥ ३७ ॥ उपगार कपी
 ने मान्या, वासुदेव आठमाजान्या, हुये एकठे सब
 रांना ॥ लक्ष्मनने कोरु सिलाजुठाई, कि संक्यासब
 उनकी मिटाई ॥ का० ॥ ३८ ॥ लंकाकी करी तईयारे,
 हुयेसुजट एकठे सारे, सवने फोजा श्रंगारे ॥ लंकाप
 रचढकर आये, रामजी दलबादल ल्याये ॥ का० ॥ ३९ ॥
 रावण घरमचती खलबल, जविहान आयाथाचल
 वीरामोहिन पडतीकल ॥ सिता कारन पतिक्यौखो
 वे, हासिलइसमे क्याहोवे ॥ का० ॥ ४० ॥ रीसाना
 रावहठीला, होकर कहरा नीलापीला, ते वचन घाव
 क्यौमेला, जविहान सुहपति दिखलावे ॥ वचन मु
 जे तेरा नही जावे ॥ का० ॥ ४१ ॥ खिस्यानानाजवि
 हान जाई, आया रामदलाके मांहिं, हरजीसुनमान व
 धाई ॥ हुवापुन्य पूरा रावनका, विठडाजब जाईतनका
 ॥ का० ॥ ४२ ॥ मंदोदरी यौ समजावे, कंतसीया हा
 थ नही आवे, सीता सतीसत न डिगावे ॥ जो आप
 इंद्र घर आवे, तोजी सीया हाथ नही आवे ॥ का०
 ॥ ४३ ॥ हर जांतरावमे चेरी, प्रीतम तु मानलेमेरी,
 यह हठ नही अगी तेरी ॥ सतीको जो सतावेगा,
 कि चैन हरगिज नही पावेगा ॥ का० ॥ ४४ ॥

सीताको उलटी देकर, बिन अंदेसे राज अपनाकर,
 जो रामनमाने तिसपर ॥ निसंक तुं लमीयोउनसे
 तो. कवीन होगी तेरी हेठी ॥ का० ॥ ४५ ॥ सीता
 को जानले होनी, यह घरमेटीमीदेनी, तीन खंड
 की संपत्त खोनी ॥ कंधमे जोडु दोनो हाथ; गोडदे तु यह
 हठकी बात ॥ का० ॥ ४६ ॥ जब होनहार जो आवे,
 आवे कोई समजावे. हरगिज नही आडी आवे ॥
 करम गति जब आके सरजे, चले नही कोई कितना वर
 जे ॥ का० ॥ ४७ ॥ वे येक समैमै नूपति. गरजा
 या देखकर संपति, मान कीहै करमागति ॥
 हठीला लडनेको ध्याया, साम्हने लठमनजी आया
 ॥ का० ॥ ४८ ॥ इंद्रकी दई जो सक्ती, जगमे वी
 जलीयों चमकती. लठमनके अंगे लगती ॥ वीर जब
 मरबामे आया, रामदलसारा घबराया ॥ का० ॥ ४९ ॥
 है सील बिरत अधिकाई; जब सती विसल्या आई,
 सक्तीको दई चगाई ॥ चेत हुवा दूसरथराज कुंवार,
 रामके दलमे जै जै कार ॥ का० ॥ ५० ॥ जब मरन
 मोत दिन आया, रावणने चक्रचलाया; लठमनने हाथ
 फैलाया ॥ हाथपर चक्र आन वैठा, सोचैतवराव म
 न धेठा ॥ का० ॥ ५१ ॥ मेंजूठीराडउठाई, जो सीता
 सती चुराई, नाहकको लालगमाई ॥ निमती होता
 दीसे साचा, कहा था जो ज्ञानीने वाचा ॥ का०
 ॥ ५२ ॥ तिन औसर नविद्वान वीरा. कहे नाई म

त होइ अधीरा, यह जान मतखोवै बीरा ॥ सीता तु
 दे मिल हरसे, राजकर अपना मुखसे ॥ का०
 ॥ ५३ ॥ अयलोनी नरपत राजा, सवनर हे काल
 के खाजा, बत्रीयोको यह नहीं साजा ॥ होवैगी जो कु
 व होनी, बात नहीं जीतो सीता देनी ॥ का० ॥
 ५४ ॥ चक्रगयातो क्याहै, मेरा मुष्टप्रहार बुराहै, में
 बत्री जन्मलीयाहै ॥ नबिद्वन जानदे वाको, मारुंगा
 हाथो हाथ ताको ॥ का० ॥ ५५ ॥ लडमनने चक्रच
 लाया, रावणने बहोत इठाया, आखिरको राव गिरा
 या ॥ मारागयात्रिखंमी राजा, ये सब हैं पुन्यके का
 जा ॥ का० ॥ ५६ ॥ ये जगहैं निसकासुपना. मूरख
 इसमे क्यों खपना, साचा है निज गुणका जपना मो
 हमे क्यों हो रह्या अंधा, जगतका सब कूठा धंधा
 ॥ का० ॥ ५७ ॥ सीताको रामजी लेकर; फिर आए
 अजुध्या चलकर, तव आनंद हुए घरघर ॥ काल जब
 लडमनका आया, धरी रही सब इहांकी इहां भाया
 ॥ का० ॥ ५८ ॥ हारे कूठा जग यह जाना, जिन
 लियासाधका वाना, जाय सिवपुरकीना थाना ॥ रा
 मकी कथा जो गावेगा, अचलपद निश्चै पावेगा
 ॥ का० ॥ ५९ ॥ पुज्य पंडित रतनचंद्र स्वामी जस
 कीरत जगमे नामी. सिख तारन नवियनकामी ॥ उन्नी
 से इकीसके साल. आगरे आन पहुंचा काल ॥ का०
 ॥ ६० ॥ जिन समकित धर्म बताया, मिथ्यात अं

धेर मिटाया, दूखजामन मरण हटाया ॥ चैन तो उ
सदम पावेगा, ग्यानी निज आतमध्यावेगा ॥ का०
॥ ६१ ॥ तु दान सुपातर देरे, तपकर लाहा लेरे, निज
शुक्ल जावनाकरे ॥ सीलसतसुखकाहै साजा, पूरण
हो मन बंठित काजा कालसे डररे ॥ ६२ ॥ इति ॥

॥ श्री बीतरागायनमः ॥

॥ अथ श्री कृष्ण जन्म सिंहाय लिख्यते ॥

गाफिल मतिरहरे, नादान गाफिलमतरहरे ॥ गा
फिलगरवाणां, चलेगये बडे बडेराणा ॥ गाफिलमत
रहरे ॥ टेक ॥ साधांकी संगति गहिरे, जिनबानी
को सरदहिरे, नरभवको सुफलकरलहिरे ॥ यह कुटुंब
सब स्वार्थका, नला तु करलेनिजजीयका ॥ गा० ॥ १ ॥
हारेक्रोधमानवस डोले, मायाकी गाठ न खोले ॥ ला
लचसुं ऊकता तोले ॥ बनातुंजावसुधजीका, तमासा
चहलवार्जीका ॥ गा० ॥ २ ॥ हारे जुगां बीच बडेबड
राया, होगये दलवादलकी राया, तुजेक्याबडाबनवा
या ॥ दिलोबीच खोजनाकजि, किलाहासु मरण का
लीजे ॥ गा० ॥ ३ ॥ मथुराको राजा कंस, तेह उप
न्यो जादो वंस, पकडयो उग्रसेन अवतंस ॥ कुलकी
मर्यादा जिनमेटी, कि परणयो जरासिंधवेटी ॥ गा०
॥ ४ ॥ देवसेन नूपकी जाई, वसुदेवको परणाई, कं
सकी पूर्वमित्राई ॥ जीवजसा देवकी संगे, करतो क्री
डा मनरंगे ॥ गा० ॥ ५ ॥ तब ऐवंता मुनिराय, तप

कर दुर्बलकाय, तिसही आंगणमे आय जीवजसाम
 दमे ठाकी, मुनिवरमे बाणिकहे वांकी ॥ गा० ॥ ६ ॥
 तुमने घर क्यों त्यागा, तप कठिन करणक्यों लाग्या,
 इमसुन मुनितामसजाग्या ॥ है मुग्धा कहै क्याबा
 णी, है कोई वरसाकी राणी ॥ गा० ॥ ७ ॥ यह है
 देवकी राणी, इसके पुन्यवंत प्राणी, गरज जनम सा
 तमो जाणी ॥ तुऊ पतिको वो मारेगा, कि तेरा मान
 उतारेगा ॥ गा० ॥ ८ ॥ मुनिवरकीसुण इमबाणी,
 जीवजसा मन मुरजाणी, यह वाता कंसने जाणी ॥
 जतन करे हो अगवांनी, ऊठी करवा मुनवाणी ॥ गा०
 ॥ ९ ॥ हारि वसुदेव पै आवे, वातासुललचावे, व
 सुदेव नेद नही पावे ॥ माग्या गरज देवकीका, सा
 तों तीन जवनटीका ॥ गा० ॥ १० ॥ सुलसा देव
 ता सुमरी, जिनमाग्या कुमरनेकुमरी, देवने सकहे
 जवरी ॥ ठह नंदन उठवाया, किसेठ घर महोत्तव मडवा
 या ॥ गा० ॥ ११ ॥ जब जनमे सारंगपानी, तालोकी
 ऊढतो ऊलपानी, सिंहोंकी दाढा बंधानी ॥ ऐसे पु
 नवंत प्रांनी, कि जमना नेददीयो पानी ॥ गा०
 ॥ १२ ॥ जसोदा पुत्री जाई, तिसही रात्री माई, ते
 राजा देवे आई ॥ कंसके नर तव जागे, सातमा
 गर्ज तदा मागे ॥ गा० ॥ १३ ॥ कंसने कन्या ली
 धी, तस विन्ननासिका कीधी, अबलाजाणी दीधी ॥
 मनसे जय सहुजाग्या, कि सुखमे राज करणलाग्या

॥ गा० ॥ १४ ॥ मुरारी नंद घर आया, गवालन
 नाला बिदवाया, जसोधा हाथाहुलराया ॥ कान्हजी
 कुनर पद खेले, कि माखन गौरसमे मेले ॥ गा०
 ॥ १५ ॥ कदोही सापनको साहे, कदोही महीगहि
 लावे, कदोही अंगनजलवाहे ॥ फिरेलालजी निसंका,
 बजावे कंसपरंका ॥ गा० ॥ १६ ॥ है पिताअंर तन
 धारी, तस सूरति मोहनप्यारी, देखे सहूनरओरनारी,
 अधरपर वंसरीरागे कि, दान महियनका मागे
 ॥ गा० ॥ १७ ॥ देवकी दरसनको आवे, नवीनवी
 वस्तुजु ल्यावे, जले जले वस्त्र पहिरावे ॥ चिरजीवो
 नंदके लालकि, वैरी अंजन जदूपाला ॥ गा० ॥ १८ ॥
 एक दिन सचापुरानी, तिहां आया जोतिसग्यानी,
 तिहां बोले नूपतिवानी ॥ नहीकोई या जगमे ऐसा,
 कि मुऊसुं जंगकरे जैसा ॥ गा० ॥ १९ ॥ तव बिबु
 ध वचन इम बोले, नूपतिनाश्रुत पटखोले, तुम जो
 ले जावे जोले ॥ जो जादो बंस उद्वारेगा कि, नूप
 ति सो तुऊ मारेगा ॥ गा० ॥ २० ॥ हारे पूतना द
 मसी ॥ जाकी नीतमे दृष्टीजमसी, जो विद्रावनभे रम
 सी, गोवरधन गिरधारेगा कि, नूपत सो तुऊमारे
 गा ॥ गा० ॥ २१ ॥ हारे नाग है काली, नाथेगा
 नाथा डाली, अरी जन पै नजर कराली ॥ गोकलगा
 म बधारेगा कि, नूपतसो तुऊमारेगा ॥ गा० ॥ २२ ॥
 हारे जु मल्लसे जंगी, त होइकरंगी, जाकी

गमे कीरतचंगी ॥ जो गज दंत उखाडेगा कि, नूपति
 सो तुऊ मारेगा ॥ गा० ॥ २३ ॥ हारे सोवैनाग
 की सिज्या, जाकी सतजामा होय नज्जा, धारे तीन
 खंडीकी लज्जा ॥ जो मनमान बिडारेगाकि, नूपति
 सो तुऊ मारेगा ॥ गा० ॥ २४ ॥ हारे सारंग धनुप
 चढावे, जो गवाकोमदी बाहे, पंचायन संख बजावे ॥
 ऐसा बलधारक प्राणी, अज्ञा तीन खंडमे मानी
 ॥ गा० ॥ २५ ॥ हारे देवकी नंदा; बमुदेवतनुज आ
 नंदा, द्वारापतितेज दिनंदा यह सुनी विबुधतनी बानी
 कंसकी जाती धुजाणी ॥ गा० ॥ २६ ॥ गोवरधन धा
 रयो निजहाथे, ते काली नागने नाथे, गोपीया फि
 रती हरी साथे ॥ ऐसे पुन्यके पुंजे कि, फिरतेमधुवनके
 कुंजे ॥ गा० ॥ २७ ॥ जाई बलनद्र सहाई, किस
 को संक्या नही काई, गुजरी दाधि बेचन जाई ॥
 मुरारीकाण नही राखे, कि दहिजर अंगुलीया चाखे
 ॥ गा० ॥ २८ ॥ लालजी मुऊकुं मत बेने, कंसकी न
 गरी अतिनेडे, वध्यो तुं गूजरके खेडे ॥ कंसकी चढ
 ती पुन्याई, कि फिरे तीन खंरू दूहाई ॥ गा० २९ ॥
 कहै कृष्णमे किस्से डरहुं; कंसको कीटोमे करहुं, अ
 वरनको राज पद धरहुं ॥ जाय पुकारो कंस आगे
 के, मोपे डंड सदाभागे ॥ गा० ॥ ३० ॥ इम वरस
 सोलाजवबिते, कंसको वांता सवचिते, नामाकाब्याह
 मंरुलीते ॥ सब नूपत

डाए ॥ गा० ॥ ३१ ॥ हारे सूपते सब बैठे, मुरारी मथुरामे
 बैठे, मल्लसे युद्ध करणसेठे ॥ कंसकी नजराद आया, खड
 गले मारणको ध्याया ॥ गा० ॥ ३२ ॥ कर मांहिं वां
 सकी लकनी, कंसकी चोटी तव पकडी, फिरतजुं डोर
 की चक्री ॥ माराहै घाव लकनीका, चलाजु चाक च
 क्रीका ॥ गा० ॥ ३३ ॥ हारे सजासबसंकी आई जीव
 जसा सकलंकी, बोले बांणी वंकी मारधामुजप्राय अति
 प्यारा, ऐसा अहीर हत्यारा ॥ गा० ॥ ३४ ॥ बुला
 या उग्रसेन गजा, कंसको अबकरि काजा, वजायाजी
 तकावाजा ॥ जीवजसा कहे इमबानी, करुंगी मो
 समसवरांनी ॥ गा० ॥ ३५ ॥ तव उग्रसेन वो हक्कारी
 पिता पै जाय पुकारी, कहीवात तिन विस्तारी ॥ सु
 नीने जरासिंधकोप्यो, के जादोपे ऊंमरोप्यो ॥ गा०
 ॥ ३६ ॥ सजा सब मिलमसलतकीनी, विबुधपै वात
 पुठलीनी, ज्ञांमकी ममता तजदीनी ॥ दिसाश्रुध प
 श्रिमको जाना; जिहांहै खारा महिराना ॥ गा० ॥ ३७ ॥
 हारे जादो सब चाजे, राजाके बेटे गाजे, जादो जाय
 किहां पाजे ॥ जोर कर काली कुमर चढीयो, विचमे दे
 धी जूगडीयो ॥ गा० ॥ ३८ ॥ हारे समुद्र पै आये,
 तप तैला करवाये, लौनस्थित देवत आये ॥ तिन
 इंद्रपै विनती कीनी, यांतो नगरी वसादेनी ॥ गा०
 ॥ ३९ ॥ हारे सोवनमई दगरे, जहां है मनीके कंगुरे,
 सोवनमई घरसगरे ॥ नौ जोजनकी चौडाईके, लंबो

वारे जोजनताई ॥ गा० ॥ ४० ॥ वसे जादो इस
 पुरमे, ऐसी नगरी नही कोई दूरमे, कीये गोख जा
 लीयां जरमे ॥ यह सुरगपुरी समनगरी, वस्तु तिन
 मांहिं नरी सगरी ॥ गा० ॥ ४१ ॥ रवी किरण कांति
 समदीसे, हरि मंदिर अधिक जगीसे. सबबचानवे
 सहस वतीसे ॥ सबही भदिल ऊंचेके, इकवीस मज
 लोके ॥ गा० ॥ ४२ ॥ हारे मंदिरकीसानी, सब सप्त
 चून गिणलीनी, वसे जहां पुन्यवंत प्राणी ॥ जहां हे
 राज भाधोंका, जगमे जोरा जादोंका ॥ गा० ॥ ४३ ॥
 तहां जब नदीपके जाये, व्योहारी चलकर आये,
 निजवस्तमोल नही पाये ॥ सबही राजग्रहीआवे,
 जीवजसासे बतलावे ॥ गा० ॥ ४४ ॥ हारे जब न
 दीपकी वाता, हम देखी द्वारका आतां हरिजसको
 पारन पाता ॥ यह सुनी जीव जसा वानी, कि मनमे री
 स बहुआणी ॥ गा० ॥ ४५ ॥ तिहां जरासिंध चढध्य
 यो, हरजी पिन साम्हो आयो, हरजोर देख दुख
 पायो ॥ तिन तव विद्या जरा मूंकीके, गिरे सब पत्थ
 रकीटूंकी ॥ गा० ॥ ४६ ॥ तव नेमनाथ बरदीनो,
 हरजी सब जाग्रतकीनो, कर चक्र सुदरसन लीनो ॥
 हरजी पर आय जसथुनीयो, बलतो जरासिंध
 हणीयो ॥ गा० ॥ ४७ ॥ नयो
 नाथ सकल
 उदय जब

॥ गा० ॥ ४८ ॥ हारे हरिसम सूर, यह तो राज
 गुणाकरपूरा, पिण करमकटे नही कुरा तिने ॥ पिण ए
 ह दसा पामीके, अवरा केमटले खामी ॥ गा० ॥ ४९ ॥
 नजो श्री नेमनाथ शया, सब पापपटलहटाया, अचल
 सुख मोखना पाया ॥ दिलोधर विने चंद वंदे कि, न
 न मांहीं अती आनंदे ॥ गाफिल मति रहोरे ॥ ५० ॥

॥ अथ उपदेशी सजाय लिख्यते ॥

॥ ढाल ॥ चतुर नर चेतीए, नीकोनर नव पाया
 रे ए देशी ॥ मनुष जमारो पायकेरे, सेवो श्री अरिहंत ॥
 निग्रंथ गुरु मन धारकेरे, दयाधर्म ल्योतंत ॥ १ ॥
 मिथ्यामत त्याग जो, सुधसमकित धारोरे ॥ टे
 क धर्म बिहुणी जेघडीरे, वीती निर्फल होय ॥ धर्म
 सहित जे मानवीरे, सुफल जनम तसुजोय ॥ मि०
 ॥ २ ॥ अल्प पुण्ये नर ऊपजेरे, पंचमदुखम काल ॥
 धर्म पावे ते दोहिलारे, पमे मोहके जाल ॥ मि० ॥
 ॥ ३ ॥ कुविश्रमे शतारहेरे, सेवे चार कषाय ॥ दान
 सील तपकिमरुचेरे, सुद्ध जाव नही जाय ॥ मि०
 ॥ ४ ॥ निंद्या विकथानातजेरे, पाप अठारा सेय ॥
 सुमता मनसे बीसरीरे, कुमतामे चितदेय ॥ मि०
 ॥ ५ ॥ तन धन जोवनपाईकेरे, केरे अती अनिमा
 न ॥ पर नवका तसडर नहीरे, ते मूरख अज्ञान
 ॥ मि० ॥ ६ ॥ थोडी उमरके वीचमेरे, बांधे गाढा पा
 प ॥ दुरगतिमे ते ऊपजेरे, जोगे बहु संताप ॥ मि०

॥ ७ ॥ नर तिर्यैच और नारकीरे, किलमुखी देव
 सुजान ॥ च्यारो गतिके दुखकोरे, श्री जिन कि
 याहै बखान ॥ मि० ॥ ८ ॥ दोस नदीजे परसिरेरे-
 जोगवता दुखकार ॥ सुन करणीकर निर्मलीरे- पर
 नवको आधार ॥ मि० ॥ ९ ॥ मात पिता सुत
 नारजारे, उनका स्वारथ प्यार ॥ परनव साथीको
 नहीरे, एक धर्मठे सार ॥ मि० ॥ १० ॥ विक्रम सं
 वत आवीयारे, उनीसै सेतीस ॥ ऋखराज कहै जि
 न धर्मथीरे, पूगेम नकी जगीस ॥ मि० ॥ ११ ॥ ये
 सेनपुर ग्रामेरे, कह्यो तिहां सुविचार ॥ सुणता न
 णता नावसुरे, आत्मको निस्तार ॥ मि० ॥ १२ ॥ इति
 ॥ अथ बारे नावना सिक्काय लिख्यते ॥

॥ ढाल ॥ जीवरे तु सीलतणा कर संग, एदेसी ॥ सकल
 करम दल जीतकेरे, सिद्धथये जिनराय ॥ नाखी नावना
 रे नदिजनने सुखदाय ॥ १ ॥ जीवरे तु नावन ज्ञान बि
 चार ॥ टेक ॥ तन धन जोवन थिर नहारे, अधि
 र कहा नगवान ॥ इण ऊपर मुरजो मर्तारे, रंग
 पतंग समान ॥ जी० ॥ २ ॥ मात पिता सुत काम
 नीरे, इणमे सणन कोय ॥ च्यारो सणै धारतारे, नि
 श्रैकु गति न होय ॥ जी० ॥ ३ ॥ नरसुरपशु नव
 नारकीरे, इन च्यारो गतिमे होय पुन्य पाप करमा
 वसेरे. हिये विचारी जोय ॥ जी० ॥ ४ ॥ धनधा
 कुटंबजेरे. कोईन साथी होय ॥ पुन्य पाप निज जो

गवेरे, सदाही इकेलो जोय ॥ जी० ॥ ५ ॥ जीव
 देहमे रम रह्यारे, ज्युं फूलनमे वास ॥ ममता तज
 समता करेरे, सुध चैतनपरकास ॥ जी० ॥ ६ ॥
 सरीर अपावन जाणीयेरे, गर्वन धर मनमांय ॥ शुद्ध
 आत्माधर्मथीरे. कहै श्री जिन राय ॥ जी० ॥ ७ ॥
 करम आवे अविरतथीरे, तेहनो आश्रवनाम ॥ जै
 सें नावा विद्रमेरे. पाणी आवणरो काम ॥ जी० ॥ ८ ॥
 समकित सुधी बिरतसेरे, आवतरोके कर्म ॥ ज्ञानी
 जाखे एहवारे, संवर मोटो धर्म ॥ जी० ॥ ९ ॥ पू
 वे कर्म कीया घणारे, कहत न आवे पार ॥ द्वादस
 तपसे निज्जारारे, कर्ता करमनिवार ॥ जी० ॥ १० ॥
 धर्म विना इस जीवकरे; कोई न राखणहार ॥ नर्क
 कूप दुखजाणकेरे, धर्म ग्रहो सुखकार ॥ जी० ॥ ११ ॥
 स्वर्ग मृत रचना कहीरे. और पाताल विचार ॥ इन
 मे अनादी वायरारे, धन तन दधिआधार ॥ जी०
 ॥ १२ ॥ उत्तम कुल संगत मुनीरे, श्रद्धापावन सार ॥
 दूर्लभ श्री जिनवर कहीरे, मनुष जनम मतिहार
 ॥ जी० ॥ १३ ॥ एकही बारे जावनारे, जावतां जन्म
 सुधार ॥ ऋपराज कहे सुधजावसुरे, करनाल नगरमंजा
 र जी० ॥ १४ ॥ संवत उनीसे कह्यारे, उपरअधिक पंचा
 स तब कहीबारे जावनारे ॥ जाविजन पुरण आस ॥ १५
 ॥ अथ बारे जावनाके नाम लिख्यते ॥

अनित्य जावना ॥ असर्ण जावना-२ संसार जा

वना ३ एकत्व जावना ४ अन्य जावना ५ अशु
चि जावना ६ आश्रव जावना ७ संवर जावना ८
निर्जरा जावना ९ धर्म जावना १० लोक स्वरूप
जावना ११ बोध दूर्लभ जावना १२ डांति

॥ अथ स्याद्वाद सिक्काय लिख्यते ॥

॥ ढाल ॥ जिनेस्वर धन धन थारा ज्ञान ॥ एदे
सी ॥ सत गुरु चरण. नमी करीजी, ॥ जिन वाणी
जनधार ॥ स्याद्वाद वाणी कहीजी ॥ नही एकत वि
चार, चतुर नर जोवो जिन उपदेश ॥ १ ॥ एटे
क ॥ एकांत भती मिथ्यामतीरे, नही समजे जिणवै
ण ॥ सूत्र सिद्धांत सहु देखताजी, खुले अचित्रनैण
॥ च० ॥ २ ॥ स्त्री वासोमुनी तजेजी, उत्राध्येन वि
चार ॥ साध साधवी रहे एकठाजी, ठाणांगे पंचप्र
कार ॥ च० ॥ ३ ॥ असंखजिव अपविंदमेजी, कहे
पल्लवणाभांय ॥ कल्प सूत्रमाहे कहेजी, नदी उलं
घाजाय ॥ च० ॥ ४ ॥ श्रावक करमादानकाजी. त्रि
विधेकर परिहार ॥ हलनिहावा, सातभेजी. अंग मां
हिं अधिकार ॥ च० ॥ ५ ॥ करफरसंतांही सहीजी, व
हुवेदन हरिकाय ॥ परुतां सुनिवरते ग्रहेजी, आचा
रांगे माहिं ॥ च० ॥ ६ ॥ नूणलीयो अणजाणतेजी,
ते जोगे अणगार ॥ आचारांगे इम कहेजी, स्या
द्वाद अधिकार ॥ च० ॥ ७ ॥ समय मात्र परमादकुं
जी, न करे उत्राध्येन ॥ तीजो पोरसी परमादमेजी

दसविकालक वैण ॥ च० ॥ ८ ॥ अंधाने अंध नही
 कहेजी, दसविकालक मर्याद ॥ न्याता सूत्रमे मुनि
 कहेजी, नाग श्री अवगुनवाद ॥ च० ॥ ९ ॥ सहस वती
 से कृष्णकेजी, नारी न्याता माय ॥ सोलासहस अं
 तगढेजी, नाखी श्री जिनराय ॥ च० ॥ १० ॥ अ
 बिरती सुरसूत्रमेजी, पिणसीलव्रत तप जाण ॥ ठा
 णांगे नाप्यासहीजी, एस्याद्वाद परिमाण ॥ च० ॥ ११ ॥
 आठमे अंगे जिन कह्याजी, कृष्ण वारमाजाण ॥ चोथे
 अंगे तेरमाजी, दोनो सत्य व्याख्यान ॥ च० ॥ १२ ॥
 असंधैणि सुरनारकीजी, जीवानीगम मांहीं ॥ उत्रा
 ध्येन उनीसमेजी, मासजु पिंडकहाय ॥ च० ॥ १३ ॥
 विराधक पंचमांगमेजी, नवनपती सुरथाय ॥ ज्ञाता
 मे सुकमालिकाजी, दूजेस्वरगे जाय ॥ च० ॥ १४ ॥
 विनव्याकरणे अर्थजेजी, करे ते अनर्थ होय शब्द
 शास्त्र जिसरी तिसेजी, तिसवीध अर्थजु जोय ॥ च०
 ॥ १५ ॥ हेय त्याग गेय जाणीयेजी, और उपादेय
 साध उत्सर्ग अने अपवादनेजी, विधि चरितानुवाद
 ॥ च० ॥ १६ ॥ नय संस्थित निश्चै वलीरे; नयवि
 वहार मर्याद ॥ जिनवर आगममे कह्याजी, अनेकां
 त विधिवाद ॥ च० ॥ १७ ॥ बहुश्रुती जाणेसहीजी
 जिन वाणी रसस्वाद ॥ मूरख तो समजे नहीजी,
 ऊठोकरे विवाद ॥ च० ॥ १८ ॥ ज्ञानी गुरुने सेवता
 जी, कुमती जावे दुर ॥ सुमती आवे शुध मनेजी,

पावे सुखनरपूर ॥ च० ॥ १९ ॥ ऋपराज कहे न
 वियन प्रेतजी, न करोखेचातान ॥ जिन बाणी जैवं
 तणेजी; ल्यो तुम धर्म पिढान ॥ च० ॥ २० ॥ वि
 क्रम संवत वरतताजी, उन्नीसे पंचास ॥ चतुरमास
 करनालमेजी, तिहां स्याद्वाद प्रकास ॥ च० ॥ २१ ॥

अथ स्याद्वाद के प्रश्न उत्तर लिख्यते

॥ प्रश्न ॥ श्री कृष्णके ३२ हजार तथा १६ हजा
 र राणी किसतरे ॥ उत्तर ॥ सोले तो बडी रा
 णी गिण लिधी १६ हजार बोटी राणी न गिणी ते
 कार्णे १६ हजार और ३२ हजार हजारमे दोनो तरे
 की गिणलीधी १ ॥ प्रश्न ॥ कृष्णजीका जीव बारवा
 तथा तेरवां तीर्थकर किसतरे ॥ उत्तर ॥ अवसर्पणी
 कालके हिसाबसे १२ उतसर्पणी कालके हिसाबसे १३
 आदनाथजी अवसर्पणी कालके प्रथम जगवान हु
 ये इनके गिणतसे बारमे और उतसर्पणी कालमे
 जैसे महाबीर सराखे प्रथम श्रेणक राजाकाजी पद्म
 नाज जगवान होवेंगे इनकी गिणतसे तेरवा १३ कृ
 णजीव जगवान होवेंगे २ ॥ प्रश्न ॥ देव वा ना
 रकी संघणी असंघैणी किसतरे ॥ उत्तर ॥ देव वा
 नारकीमे सक्तिरूपहै हाडरूपनही तिस वास्ते संघैणी
 वा असंघैणी दोनो कहा ३ ॥ प्रश्न ॥ ४ विराधक
 सुकमालको साधवी दुसरे स्वर्गमे गई ते किसतरे
 ॥ उत्तर ॥ मुल महाव्रताम दोस नही लगाया उत्तर

गुण ब्राधक हुई ४ इत्यादि सूत्रोमे अनेक अपेक्षा अर्थात् रीती है जो बुद्धीमान पुरुषो के समझने योग्य है।

॥ अथ ग्रंथ पूर्ण संग्रह करके विषे वर्णन लिख्यते ॥

॥ श्री जिन धर्म मांदि मोक्षमारग ग्यान दर्शन चारित्र तप इनकार्णसे जव आत्मानिर्मल करिके अनंत ज्ञान अनंत दर्सनव धारक होताहै इस वास्ते इहां इन प्रश्नोमे सूत्रावेपाठ विशेष करिके लिखेहै दया धर्ममे प्रणाम स्थि करणे वास्ते क्यों कि जव प्रणाम धर्ममे स्थिर होत तव वृतादि धर्म करणेका विशेष लान होताहै और यहां जो सूत्र सिद्धातसे विरुद्ध लिख्याहै तथा सूत्र पाठ वा अर्थमे जो कोई तरेका फर्क लिख्य होय तिसकी साध साधवी श्रावक श्राविका इन च्यार तीर्थोकी शाखसे मुऊको तस्स मिळामि दूकड और सत्यार्थ सागर नाम ग्रंथ अनेक सूत्र वा शस्त्राके अनुसार संग्रह कर लिख्याहै सोई इसमे तव बुद्धी करिके कोई वचन अजाणते अशुद्ध लिखहो यतो सूत्रानुसार सुधारकर चतुरविध सध मेरे ऊपर द्विमा करे और मेने यह ग्रंथ किसीसे चरचा के लीये नही लिखा और न वाद विवाद के वास्ते सिर्फ एक स्वधर्मी जनोके स्वधर्म जाणने के लिये लिखाहै परंतु मेरी जो कोई अज्ञान बुद्धी का लेख होय तो तिसपर कोई ख्या

